सन्त कबीरक मैथिली पदावली



डॉ. कमला कान्त भण्डारी

सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणा कें मूल रूपें डॉ. सुभद्र झा प्रस्तुत कयलनि । एहि अवधारणाक संपुष्टि मे ओ काशी आ मगहर कें कबीरक जन्म-भूमि नहि मानि मिथिला कें हुनक जन्मभूमिक गरिमा प्रदान करबाक हेतु विभिन्न तर्क देलनि । विभिन्न आलोचक ओ विद्वानलोकनि हिनक तर्कक खण्डन कय हिनक अवधारणा कें संदिग्ध सिद्ध करबाक चेष्टा कयलनि अछि । मुदा, जहिना काशी कें कबीरक जन्मस्थान मानब अनुमानाश्रित अछि, तहिना मिथिला मे कबीरक जन्मस्थान होयबाक संभावना कें सेहो स्पष्टतः नकारल नहि जा सकैछ । एहि तथ्यक विशिष्ट आधार अछि—मिथिला मे कबीरपन्थी मठ ओ कबीर पन्थक विकासक निरन्तरता, ब्राह्मणेतर मैथिल सम्प्रदाय मे कबीरपन्थक विशेष प्रचार, कबीरपन्थक विशिष्ट ग्रन्थ सभ मे विपुल मैथिली पदावलीक समावेश, कबीरक पदावली मे मैथिली शब्दक प्रयोग, लोककंठ मे कबीर भणित पदावलीक विपुलता तथा एहि मे मैथिल लोकजीवनक स्फुट चित्रण ।

सन्त कबीरक मैथिली पदावली

डॉ. कमला कान्त भण्डारी

सर्वाधिकार : कमला कान्त भण्डारी
प्रथम संस्करण : १९९८ ई०
प्रकाशक : भण्डारी प्रकाशन
सिनुवारा (अड़ेर)
मधुबनी–८४७२२२
मुद्रक : मित्रम् प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
नयाटोला, धरहाराकोठी पटना–८००००४
लेखक सँ पत्राचार : ५/२५, आर० ब्लॉक, पटना–८००००१
मूल्य : सजिल्द–तीन सय पचास टाका
साधारण–दू सय पचास टाका

SANT KABIRAK MAITHILI PADAWALI

(CRITICISM)

by

KAMLA KANT BHANDARI

विषय-सूची

भूमिका

कबीरक जीवन आ साहित्यक सुदीर्घ अध्ययन-परम्परा अछि । नाभादासकृत 'भक्तमाल' मे कबीरक पहिल उल्लेख भेटैत अछि जे १५५० इसवीक धतपतक रचना थिक । तकराबाद अबुल फजल लिखित 'आईन-ए-अकबरी' (१५९६ ई.) मे सेहो प्रसंगवश कबीर सम्बन्धी किछु सूचना अछि । तहिया सँ देश-विदेशक सैकड़ो विद्वान कबीरक अध्ययन कयलनि अछि, आ ई क्रम अनवरत चलि रहल अछि ।

कबीरक अध्ययन मुख्यत: दू दृष्टिकोण सँ कयल गेल अछि– धार्मिक तथा वैज्ञानिक। धार्मिक दृष्टिकोण सँ कबीरक अध्ययन कबीर-पंथी सभ तँ करबे कयलनि अछि, कबीर सँ प्रभावित विभिन्न सम्प्रदायक अनुयायीलोकनि सेहो कयलनि अछि । कबीरक इच्छा छलनि वा नहि, मुदा हुनक शिष्यलोकनि हुनका नाम पर एकटा पंथक जन्म देलनि जकर प्रचार सम्पूर्ण भारत मे भेल, एतेक धरि जे विदेशो मे ई पसरि गेल । कबीरक जीवन, साहित्य तथा सिद्धान्त सँ सम्बद्ध बहुत काज कबीरपंथी संस्था द्वारा भेल अछि । कबीर-पंथक जे चारिटा प्रमुख शाखा कहल जाइत अछि (छत्तीसगढ़ी शाखा, कबीर चौरा शाखा, धनौतीक भगताही शाखा एवं जागूशाखा) से सभ कबीर-पंथक प्रचार-प्रसार हेतु ढेर पोथी छपलक अछि । अमरसुख निधान, अनुरागसागर, निर्भयज्ञान, द्वादश पंथ, बीजक, कबीर कसौटी आदि अनेक कबीर-पंथी कृति मे कबीरक परिचय तथा स्तवन भेटैत अछि ।

कबीरपंथीक अतिरिक्त किछु स्वतंत्र सम्प्रदायक प्रवर्त्तक तथा अनुयायीलोकनि सेहो कबीर केँ अपन गुरु मानैत हुनक जीवन ओ साहित्यक प्रसंग लिखलनि अछि । दादूपंथी, निरंजन पंथी, दरियादासी, धरणीदासी, शिवनारायणी प्रभृति साम्प्रदायिक पंथक पोथी मे कबीर भेटैत छथि । एहि प्रकारक किछु पुस्तक अछि : अनन्तदासक 'परचै', रघुराज सिंहक 'रामरसिकावली', दरिया साहबक 'ज्ञान-दीपक', भगवदाचार्यक 'रामानन्द-दिग्विजय' आदि । भक्तिभाव सँ लिखित वा संकलित-सम्पादित एहन कृति मे कबीरक जे जीवन-वृत्त भेटैत अछि ताहि मे चमत्कारपूर्ण घटनाक वर्णन द्वारा कबीर केँ लोकोत्तर सत्ताक रूप मे प्रतिष्ठित करबाक प्रयास रहैत अछि। तकर कारण अछि । भक्त लेल सभ सँ पैघ वस्तु होइत अछि विश्वास। विश्वासक आधार पर प्रतिपादित ज्ञान केँ ई सभ पूर्ण मानैत छथि । ओहिपर विवाद वा तर्क नहि कयल जा सकैत अछि । तेँ एहि कोटिक रचनाकारक आँखि कबीर सँ बेसी कबीर-पंथ पर टिकल रहलनि अछि । हुनक प्रयास ई रहल अछि जे कबीर-पंथक विश्वासक सन्दर्भ-विशेषक अनुकूल कबीरक छवि प्रस्तुत कयल जाय । एहि प्रयास मे कबीर ओहिठाम पहुँचि गेलाह अछि जाहिठाम जयबा सँ हुनका परहेज छलनि । जेना, सन्त दरिया साहब अपन

पोथी 'ज्ञान दीपक' मे अपना कें कबीरक अवतार मानने छथि। जाहि अवतारवादक कबीर विरोध कयलनि तकर अनुगमन हुनक मान्यताक अनुकूल नहि कहल जा सकैत अछि। किन्तु, मे भेल अछि। कहि चुकल छी जे एकर कारण थिक भक्तिभावक अतिरेक। साम्प्रदायिक पंथक प्रचार-प्रसारक इच्छाक प्रमुखता। एहि भावना सँ प्रेरित दृष्टिकोणक अवदान-रूप मे जे कबीर सोझाँ अबैत छथि हुनक अपन स्वरूप छनि, अपन छवि-छटा आ मान-मर्यादा छनि।

ज्ञान सम्बन्धी दोसर व्यवस्था वैज्ञानिक दृष्टिकोणक अछि। एहि व्यवस्था मे ज्ञान कें अपूर्ण मानल जाइत अछि। ज्ञान एकटा विकासशील प्रक्रिया थिक। एकर मूलाधार अछि जिज्ञासा। जिज्ञासाक शान्ति तर्क आ विवेक द्वारा होइत अछि। एकरे कहल जाइत छैक वैज्ञानिक दृष्टिकोण। एहि दृष्टिकोण सँ सेहो कबीरक अध्ययन होइत रहल अछि। साहित्यकार-अन्वेषक तथा इतिहासकार द्वारा कयल गेल कार्य बहुधा एहि कोटि मे अबैत अछि। श्याम सुन्दर दास (कबीर ग्रन्थावली), अयोध्या सिंह उपाध्याय (कबीर वचनावली) रामकुमार वर्मा (सन्त कबीर कबीर का रहस्यवाद), हजारी प्रसाद द्विवेदी (कबीर), परशुराम चतुर्वेदी (कबीर साहित्य की परख, उत्तरी भारत की सन्त परम्परा), डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत (कबीर की विचारधारा) डॉ. केदार नाथ द्विवेदी (कबीर और कबीर-पंथ), शिवदान सिंह चौहान (कबीर: एक विश्लेषण), डा. भगवत प्रसाद दूबे (कबीर काव्य का भाषाशास्त्रीय अध्ययन) तथा डा. शुकदेव सिंह (कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन) आदि साहित्यकार-अनुसन्धानकर्त्ता सभक कृति एहि प्रसंग विशेष उल्लेखनीय अछि। एकटा बात मुदा ध्यान देबाक थिक। लेखक धार्मिक दृष्टिकोणक रहथु वा वैज्ञानिक-दुनू प्रकारक रचनाकार दुनू कोटिक पोथी पर विचार-विमर्श कयलनि अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे दृष्टिकोण-भिन्नता अध्ययन-क्षेत्र कें व्यापके बनौलक अछि। तखन एतेक धरि अवश्य जे वैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ लिखित पुस्तक मे कबीरविषयक ज्ञानक दरबाजा खुजल रहैत अछि। ओना, हिनकालोकनिक सभ तथ्य आ निष्पत्ति सहमति योग्य हो से बात नहि, किन्तु ई सभ कबीरक अध्ययन मे जाहि पद्धति कें अपनौलनि अछि से बहुधा तर्काश्रित रहैत अछि। विवेचन विवेक-सम्मत होइत अछि। एहन पोथीक खास विशेषता ई थिक जे एकर अध्ययन सँ प्रसंगाधीन सभ जिज्ञासा शान्त हो वा नहि, ओ मरैत नहि अछि। बेसी काल तँ यैह होइत अछि जे पोथी जिज्ञासा शान्त करबाक संगहि जिज्ञासा उत्पन्न सेहो करैत अछि।

डॉ. कमला कान्त भण्डारी लिखित 'सन्त कबीरक मैथिली पदावली' कबीर विषयक एकटा जिज्ञासा थिक। हम सभ जनैत छी जे एतेक पंथ आ ग्रन्थक अछैत कबीर सँ सम्बन्धित अधिकांश तथ्य पर मतभेद अछि। कबीरक जन्म-तिथि आ जन्म-स्थान, माता-पिता आ पत्नी-संतान सँ लऽकऽ शिक्षा-दीक्षा तथा ज्ञान धरि मत-मतान्तरक विषय बनले अछि। अध्ययनकर्त्तालोकनि एकर कारण तकबाक क्रम मे तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक एवं

सामाजिक परिस्थितिक विवेचन कयलनि अछि, संगहि [illegible] कबीरक जीवन-स्थितिक विशेष सन्दर्भ कें सेहो उनटौलनि-पुनटौलनि अछि। मूल कारण चाहे जे हो, परिणाम यैह अछि जे कबीरक जीवन आ सिद्धान्त एखनहु जिज्ञासा जगबैत अछि खोजक माँग करैत अछि। एहिठाम ई नहि बिसरबाक थिक जे कबीरक व्यक्तित्व अन्तत हुनक कृतित्वक देन अछि। तें आवश्यक अछि जे कबीर-साहित्यक अन्वेषण बेसी सँ बेसी कयल जाय तथा ओकर अध्ययन मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाओल जाय। प्रसन्नता अछि जे भण्डारीजी एहि दिशा मे ठोस डेग उठौलनि अछि। कबीरविषयक पाठ-भेदक खुरिहान मे हिनक पाठक बोझ कम भरिगर नहि अछि।

प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. श्री सुभद्र झा कबीरक जन्म-स्थानक सम्बन्ध मे आइ सँ बियालिस वर्ष पूर्व एकटा नवीन तथ्य प्रस्तुत कयलनि। स्वाभाविक छल जे हुनक मान्यताक प्रसंग विचार-विमर्श हो। विद्वानलोकनि जखन आचार्यप्रवर डॉ. श्री सुभद्र झाक अवधारणाक खण्डन-मंडन कऽ रहल छलाह तखन एकटा शोध-कर्ताक रूप मे भण्डारीजी गुरुदेवक विचार कें विस्तार देबा मे लागल रहथि। एहि क्रम मे ई कबीर साहित्यक अध्ययन तँ करबे कयलनि, कबीर-पंथी आश्रम मे जा कऽ सेहो काज कयलनि। तकरे प्रतिफल थिक प्रस्तुत पुस्तक।

भण्डारीजी एहि पोथी मे डॉ. श्री सुभद्र झाक कबीरविषयक मान्यता कें जाहि वैदुष्यक संग विस्तार देलनि अछि से सर्वथा प्रशंसनीय अछि। संभव अछि जे कबीर मैथिल छलाह-एहि निष्पत्ति सँ किनको मतभेद हो, किन्तु तकरा बादो एहि तथ्य कें नकारल नहि जा सकैत अछि जे भण्डारीजी कबीर-साहित्य आ कबीर-पंथक अध्ययन कें एकटा नव आयाम देलनि अछि। कबीरक मैथिली पदावलीक ई पहिल संग्रह थिक। तहिना मिथिलाक कबीर-पंथक इतिहास आ गतिविधिक एतेक व्यापक तथा प्रामाणिक विवरण पहिल बेर प्रस्तुत भेल अछि। एतबे नहि, कबीर भणित मैथिली पद तथा विद्यापति-गीतक तुलनात्मक अध्ययन विचारक एकटा अभिनव आधार प्रदान करैत अछि।

विद्यापति तथा कबीरक जीवन-स्थिति मे अन्तर छल, कबीर विद्यापति सँ बादक कवि छलाह, तथापि दुनू कवि-विचारक मे अनेक विन्दु पर समानता अछि। विद्यापति दरबारक कवि भइयो कऽ ठाकुर कें 'ठक्क' कहलनि तँ कबीर दू धाप आगाँ बढि कऽ समाजक जातिगत संरचने पर प्रहार कऽ देलनि। विद्यापति पुरुषार्थक प्रवक्ता छलाह। अपन कृति 'पुरुष-परीक्षा' मे तँ सहजे, गीत मे सेहो ओ पुरुषार्थक आवश्यकता तथा महत्ता कें रेखांकित कयलनि अछि। तत्कालीन सामाजिक स्थिति मे मनुष्यक आत्मबल कें जगयबाक लेल ई आवश्यक छल। कबीर सेहो मनुष्यक आत्मबल, आत्मज्ञान तथा आत्माभिमान पर जोर दैत छथि। ओ स्पष्ट कहैत छथि :

मोको कहाँ ढूँढे बन्दे मैं तो तेरे पास में
ना मैं देवल ना मैं मसजिद ना काबे कैलास में
ना तो कोनो क्रिया कर्म मे, नहीं योग वैराग में
खोजी होय तो तुरतैं मिलिहौं पल भर की तालास में ।

कबीरक एकटा एहने प्रसिद्ध पद अछि :

कबिरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ
जो घर जारै आपना चलै हमारे साथ ।

कबीर एहिठाम पलायन आ विरागक नहि, शक्ति आ आस्थाक बात कहैत छथि । हुनक कथनक यैह अन्तर्ध्वनि आगाँ चलि कऽ 'एकला चलो रे' मे मुखर भेल अछि ।

विद्यापति आ कबीरक समाज-दृष्टि काव्य-प्रकृतिक अनेक विन्दु पर तँ मिलिते अछि, काव्य-रूप आ काव्य-भाषाक स्तरपर सेहो समधर्मा अछि । दुनू कवि अपन बात कहबाक लेल मुक्तक काव्यक मार्ग चुनलनि । संस्कृत-साहित्यक महाकाव्य-परम्परा दुनू मे सँ किनको अभिभूत नहि कयलक-जखन कि जायसी, सूर आ तुलसी पर्यन्त ओहि सँ प्रभावित भेने बिना नहि रहि सकलाह । एकर अतिरिक्त, विद्यापति तथा कबीरक भाषा-संवेदना मे सेहो विलक्षण समता अछि । विद्यापति उत्तर भारतक पहिल कवि छलाह जे साहित्य-रचनाक लेल संस्कृतक मोह छोड़ि कऽ लोकभाषाक आश्रय लेलनि । जन-सामान्य सँ संवाद स्थापित करबाक लेल ई अनिवार्य छल । कबीरो भाषा कें 'बहता नीर' मानि कऽ विद्यापतिक बाटक बटोही बनैत छथि । एहि मे सन्देह नहि जे विद्यापतिक अपेक्षा कबीरक भाषा मे जनोन्मुखता बेसी अछि, मुदा से ध्यान देबाक दोसर बात थिक । पहिल बात थिक लोकभाषाक प्रति दुनूक आग्रह । जन-सामान्यक दैनन्दिन स्थिति सँ सम्बन्धित विषय हो अथवा आत्मा-परमात्मा सँ सम्बद्ध गूढ़ दार्शनिक चिन्तन-लोकभाषाक प्रयोग विद्यापति अथवा कबीरक लेल बाधक नहि होइत अछि। ई बात ओहिना नहि भेल अछि । जनोन्मुख समाज-दृष्टिक भाषिक अभिव्यक्ति कें संयोग मात्र कहि कऽ टारब उचित नहि । एहि प्रसंग व्यापक अध्ययन तथा विशद विवेचनक प्रयोजन अछि । विद्यापति तथा कबीरक साहित्य मे जे अन्तर अछि तकरा ध्यान मे रखैत समानताक सूत्र कें अधोरेखित करब एकटा महत्त्वपूर्ण कार्य थिक । एहि दिशा मे भण्डारीजीक प्रयास सार्थक हो, सैह कामना अछि ।

मोहन भारद्वाज

पटना
२५-७-९८

निवेदन

भारतीय भक्ति आन्दोलन ओ सन्त साहित्यक इतिहास मे सन्त कबीरक अन्यतम स्थान अछि । औपनिषदिक ज्ञानकाण्ड, वैष्णव भक्ति तत्त्व, सूफी प्रेम तत्त्व तथा नाथपंथ ओ सिद्धाचार्यलोकनिक हठयोगसाधनाक संग मुस्लिम एकेश्वरवादक अद्भुत सम्मिश्रण सँ उद्भूत हिनक निर्गुण ब्रह्मोपासना पद्धति ओ रहस्यवादी विचारधारा विशृंखलित भारतीय धर्मसाधनाक मार्गदर्शक बनल । संगहि अवतारवाद, पुनर्जन्म, रोजा-नमाजक बाह्याचार, मूर्तिपूजा, आत्मस्मार्त कर्मकाण्ड तथा हिंसा ओ विलासिताक प्रति हिनक विरोध सामाजिक-धार्मिक जगत मे एक गोट क्रान्ति साबित भेल, जकर परिणामस्वरूप जर्जर हिन्दुत्व ओ अभिमानी मुस्लिम साम्प्रदायिक विचारधाराक समन्वय संभव भए सकल । क्रमशः सन्त कबीर सामाजिक-धार्मिक जगतक विशिष्ट सुधारवादी सन्त ओ नेताक रूप मे प्रतिष्ठित भेलाह ।

परवर्ती काल मे हिनक शिष्य परम्परा तथा अनुयायीलोकनिक विस्तृत परम्परा सँ कबीरदर्शनक खूब प्रचार-प्रसार भेल तथा हिनका नाम पर एकटा साम्प्रदायिक पंथक उदय भय गेल, जकरा कबीरपन्थ नामे जानल जाय लागल । एहि पन्थ मे कबीर भणित ओ अन्य साधकलोकनिक पदावलीक भक्तिपूर्वक गायन होइत रहल अछि, जाहि सँ सन्त कबीरक सिद्धान्त ओ साधनाक मूर्त रूप स्थिर देखि पड़ैछ । मिथिला मे सेहो कबीर पन्थक प्रचुर प्रभाव जनसामान्य मे रहल अछि तथा एहिठामक ग्रामाञ्चलहु मे कबीरपन्थी मठक बहुलता देखल जाइत अछि। मिथिलाक कबीरपन्थी सन्त ओ भक्तलोकनिक बीच प्रचलित पदावली मे मैथिली भाषाक तत्त्व प्रचुर परिमाण मे उपलब्ध अछि । राग, ताल, लय, अभिव्यक्ति-शैली, शब्दावली ओ अन्य समस्त दृष्टिजे ई पदावली मैथिली भाषा-साहित्यक अमूल्य निधि थिक ताहि मे कोनो सन्देहक अवसर नहि अछि ।

सन्त कबीरक साहित्य मे हिनक जीवन, जन्म आदिक सम्बन्ध मे कोनो स्पष्ट उल्लेख नहि भेल अछि । स्वभावतः हिनक प्रादुर्भाव, जन्मस्थली, काल, जाति, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा-दीक्षा, गुरु, शिष्यपरम्परा, कबीरपंथी शाखा आदिक सम्बन्ध मे कोनो सर्वमान्य निष्कर्ष दिस विद्वानलोकनि सहमति नहि देखौलनि अछि । तथापि विभिन्न अन्तः साक्ष्य ओ बहिःसाक्ष्यक आधार पर हिनक प्रादुर्भावादिक विवेचन होइत रहल अछि ।

मिथिला मे कबीरपन्थक एकटा प्रमुख केन्द्र विद्दूपुर अछि, जे एहि पन्थक जागू शाखाक गुरुगादी थिक । तकर अतिरिक्त मिथिलाक विभिन्न नगर ओ ग्रामाञ्चल मे एहि पंथक विभिन्न शाखा सँ सम्बद्ध ओ किछु स्वतंत्रो उपशाखा तथा मठ सभ देखि पड़ैछ । मिथिलाक कबीरपन्थी

लोकनिक बाह्याचार ओ संस्कारादि मे सामान्य कबीर पन्थीक अपेक्षा किछु विशिष्टता सभ देखि पड़ैछ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधन स्रोतक तीन प्रकार अछि: मुद्रित, पाण्डुलिपि ओ मौखिक स्रोत । मुद्रित साधन स्रोत बहुधा मैथिलेतर क्षेत्र सँ प्रकाशित अछि आ एहि सभ मे संकलित पदावलीक संकलन-क्षेत्रक वृहत्तर परिधि रहबाक कारणें एहि मे विशुद्ध मैथिली पदावली अत्यल्प संख्या मे पाओल जाइछ । संकलनकर्त्ता बहुधा पदक मूल भाषाक तोड़-मरोड़ कय देलनि अछि, जकर कारणें एहन कतोक पदावली मे सधुक्कड़ी मैथिली भेटैछ आ अनेक पद विशुद्ध मैथिली पद नहि लगैछ, तैयो एकर शब्द निर्माण प्रक्रिया कतोकठाम मैथिली तत्त्व सँ युक्त बुझना जाइछ । मैथिल कबीरपन्थी सन्तलोकनिक द्वारा संकलित ओ मुद्रित सन्त कबीर भणित पदावली बहुधा मैथिली पद थिक । सहजयोग सत्संग केन्द्र, अड़ेर बरहीटोल सँ प्राप्त पाण्डुलिपि 'आदि संदेशा सन्त कबीर' सन्त कबीर भणित मैथिली साहित्यक विशिष्ट स्रोत थिक । डॉ० सुभद्र झा द्वारा संकलित पाण्डुलिपि सेहो विशिष्ट ओ महत्त्वपूर्ण अछि । अनुसन्धानक क्रम मे जे कतोक प्रकीर्ण पाण्डुलिपि ओ श्रुत परम्पराक पदक एकत्रीकरण संभव भेल अछि, सेहो सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक विशिष्ट स्रोत थिक ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक पाठालोचन सँ ई स्पष्ट होइछ जे एहि पदावलीक मिथिलापाठ ओ इतर स्रोत सँ प्राप्त पाठ मे कतोकठाम पर्याप्त पाठान्तर अछि । ई पाठान्तर भाषादोषजन्य, लिपिदोषजन्य ओ ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरूप भेदक पाठान्तर अछि । मिथिलाक विभिन्न स्रोत सँ प्राप्त पाठ मे बहुधा लिपिदोषजन्य ओ ह्रस्वदीर्घक स्वरूप-भेद देखि पड़ैछ। मैथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त पदावलीक अपेक्षा मिथिला स्रोतक पदावली बहुधा विशेष शुद्ध देखल गेल अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषातात्त्विक विवेचन सँ ई स्पष्ट होइछ जे एहि मे आधुनिक मैथिलीक विशिष्ट तत्त्व सभ यथावत वर्त्तमान छैक । देशज ओ ठेठ शब्दक एहि मे बाहुल्य अछि । तद्भव ओ विदेशजोक प्रयोग भेल अछि । तत्सम प्रयोग अल्प अछि। हठयोगक आध्यात्मिक दर्शनक साम्प्रदायिक शब्दावलीक एहि मे विपुल प्रयोग देखल जाइछ। एहि पदावली मे संज्ञाक गुरुतम रूपक बहुश: प्रयोग अछि । सर्वनाम, विशेषण ओ अव्यय तथा क्रियापदक प्रयोग मैथिली भाषाक अनुकूलन मे अछि । शब्दसाधनक प्रत्यय ओ उपसर्ग विधान तथा विभक्ति प्रयोगक स्थिति एहि पदावली मे मैथिली भाषाक सामान्ये स्वरूपक अछि।

सन्त कबीरक वरीय समसामयिक विद्यापतिक भाषाक तुलना सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक संगे कयला सँ स्पष्ट होइछ जे अभिव्यक्ति पक्षक रस-प्रवाह, अलंकार योजना,

छन्दविधान, भणिता-प्रयोग आदि मे दुनू पदावली मे साम्यक अनेक बिन्दु भेटैत अछि । तत्बे नहि, व्याकरणिक दृष्टियें सेहो दुहू पदावली मे पर्याप्त साम्यक परिसर दृष्टिगोचर भेल अछि।

डॉ० सुभद्र झा सन्त कबीरक रचनाशैली, ? गत पदावलीक भाषा ओ अन्य कतिपय प्रमाणक आधार पर सन्त कबीरक मिथिला मे जन्म लेनिहार कविक अवधारणा उपस्थित कयलनि जे विविध आलोचना-प्रत्यालोचनाक बादो निरस्त होयबाक स्थिति मे नहि अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मैथिलीभाषा साहित्यक विशिष्ट सामग्री थिक । विद्यापतिकालीन साहित्यक एहि विशिष्ट सामग्री कें मैथिली साहित्येतिहासक लेखकलोकनि ने गृहीते कयलनि अछि आ ने मूल्यांकने, जाहि सँ मैथिली साहित्येतिहासक एकटा विशिष्ट सामग्री अवडेरल रहल अछि, जखन कि ई मैथिली साहित्यक विशिष्ट निधि थिक ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक प्रामाणिकता संदेहास्पद कहल जा सकैछ, मुदा ई पदावली कबीर विचारधाराक मिथिला भाषाक माध्यमे अभिव्यक्ति थिक, ताहि मे सन्देह नहि कयल जा सकैछ । कबीरदर्शनक अभिव्यक्तिमूलक ई विपुल साहित्य अवश्ये मैथिली साहित्यक अमूल्य अंश थिक । मैथिली साहित्यक आलोचकलोकनि द्वारा साहित्येतिहासक स्वतंत्र धाराक रूप मे एकरा मान्यता भेटब अपेक्षित अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली अध्ययनक एकटा व्यापक क्षेत्र उपलब्ध करबैत अछि। कबीर कें बुझबाक लेल तँ एहि पद सभक अध्ययन आवश्यक अछिए, मैथिलीक सन्त साहित्यक सम्यक् एवम् सर्वांगीणअनुशीलन हेतु सेहो ई आधार दैत अछि । तें आवश्यक अछि कबीर भणित मैथिली पद कें संकलित करब । ध्यानीय थिक जे कबीरक मैथिली पद भाषिक संक्रमणक प्रक्रिया मे अछि । जनकंठ मे व्याप्त पदक स्वरूप आओर बदलि जाय ताहि सँ पूर्व ओकर संकलन एवम् संरक्षण अपेक्षित अछि । हम एहि दिशा मे प्रयास मात्र कयलहुँ अछि । एखन बहुत-किछु करबाक प्रयोजन अछि ।

जहिना कबीर भणित मैथिली पदक संकलन मे शीघ्रता अपेक्षित अछि तहिना ओकर अध्ययन मे सेहो व्यापक दृष्टिकोण राखब अनिवार्य अछि । सन्त कबीरक मैथिली पदावली अध्ययनक कतोक नव-नव क्षितिजक उद्घाटन करैत अछि । सन्त कबीरक मैथिली पदावलीक भाव-भूमि मुख्यत: बौद्ध-सिद्धाचार्य एवम् नाथपंथीलोकनिक हठयोग-साधना रहल अछि। सन्त कबीरक मैथिली पदावलीक अध्ययन एहि पृष्टिभूमि मे करब आवश्यक अछि । एहि बिन्दु पर सेहो हम प्रस्तुत पुस्तक मे दिशा-संकेत मात्र कयलहुँ अछि । आशा अछि, सन्त कबीरक अध्ययनकर्त्ता एकरा आगाँ बढ़ौताह ।

हम ई बात नि:संकोच कहय चाहैत छी जे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक सर्वांगीण अध्ययन एखन शेष अछि । हुनक मैथिली पदावलीक वैज्ञानिक पाठालोचन, भाषा-तात्त्विक

अध्ययन, काव्यशास्त्रीय विश्लेषण, ध्वनिशास्त्रीय विवेचन तथा समाजशास्त्रीय प्रासंगिकता आदि अनेक बिन्दु अछि जाहि पर विशद रूप सँ काज करब अपेक्षित अछि । एतबे नहि, मैथिली क साहित्य ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक तुलनात्मक अध्ययन तथा मिथिलाक कबीरपंथी सन्त साहित्यक सांगोपाङ्ग विवेचन अध्ययनक एकटा नव दिशाक संकेत करैत अछि। एहि सम्बन्ध मे कार्य करब जरूरी अछि । कहबाक तात्पर्य एतबे जे सन्त कबीरक तथा हुनक मैथिल शिष्यलोकनिक पदक विस्तृत अध्ययन होयबाक चाही । हम यदि एहि क्षेत्र मे सूत्रपात कऽ सकल होइ तँ हमर श्रम सार्थक होयत । एकर निर्णय सुधी पाठकलोकनि करताह ।

प्रस्तुत पुस्तक प्रसिद्ध भाषाशास्त्री ओ विश्रुत विद्वान् डॉ. सुभद्रझाक कृपापूर्ण निर्देशनक परिणाम थिक । हिनक छत्रच्छाया मे कबीरविषयक अध्ययनक सौभाग्य हमरा भेटल। हिनक ममत्व, उदारता तथा मार्गदर्शन हमरा सतत उत्साहित करैत रहल अछि । हम कृतज्ञ छी पूज्य गुरुवर डॉ० रामदेव झाक जे हमर अध्ययन कें पूर्णता दिस अग्रसर करबा मे अत्यधिक सहयोग कयलनि । सामग्री-संकलन सँ विषय-उपस्थापन धरि मे ई जँ अपन बहुमूल्य समय दऽ कऽ सहायता नहि कयने रहितथि तँ पोथी एहि रूप मे नहि आबि सकैत। शोधप्रबन्धक पुस्तकाकार प्रस्तुति तथा ओकर प्रकाशनक श्रेय छनि मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ आलोचक श्री मोहन भारद्वाज कें । हुनक प्रेरणा तथा दिशा-निर्देश हमरा पाथेय प्रदान कयलक अछि । हमर अनुरोध पर ओ एहि पोथीक भूमिका लिखलनि अछि ताहि लेल हम हुनक हृदय सँ आभारी छी ।

सन्त कबीरक अध्ययन मे हमरा सर्वाधिक सहयोग भेटल अछि कबीर पन्थी सन्तलोकनि सँ—विशेषत: मिथिलाक सन्त सभक । सन्त कबीर सँ सम्बद्ध मिथिलांचलस्थित प्राय: एहन कोनो स्थान नहि अछि जाहिठाम हम नहि गेल होइ आ ओहिठामक कबीरपन्थी सन्तलोकनि हमरा सहयोग नहि कयने होथि । सूचना ओ सामग्रीक संकलन मे एहि सन्तलोकनिक सहयोग कें हम कहियो नहि बिसरि सकैत छी । एहि क्रम मे हम विशेष रूप सँ आभारी छी सन्त विद्यानन्द साहेब तथा सन्त बौआ साहेबक जे हमरा नाना प्रकारक सहयोग देलनि । महात्मा मुनीन्द्र साहेबक कृपाक स्मरण होइते हम भाव विह्वल भऽ जाइत छी । ओ हमरा एकटा हस्तलिखित पाण्डुलिपि उपलब्ध करौलनि जाहि मे सन्त कबीर तथा हुनक शिष्यलोकनिक सैकड़ो मैथिली पद संकलित अछि । हमर अध्ययनक मूलाधार ओएह पाण्डुलिपि छल । महात्मा मुनीन्द्र साहेब आब एहि धराधाम मे नहि छथि; किन्तु, हुनक असीम कृपाक हेतु हम चिरऋणी रहब । हुनक प्रबल इच्छा रहनि जे शोधकार्य सम्पन्न कय हम एकरा शीघ्रातिशीघ्र पुस्तकाकार प्रकाशित करी । हुनक जीवन-काल मे ई काज नहि भऽ सकल तकर हमरा हार्दिक खेद अछि ।

हम जनैत छी जे एहि कृतिक प्रकाशन सँ हार्दिक प्रसन्नता हेतनि सुहृद्वर प्रो. श्री रामदेव

भण्डारी, सांसद तथा श्री मणिकान्त आजादजी कें । हिनकालोकनिक आत्मीयता हमर जीवनक सम्बल रहल अछि । एहि पोथीक प्रकाशन तँ ओकर एकटा अंश मात्र थिक । तें हिनकालोकनिक प्रति औपचारिक आभार-प्रदर्शन हमरा केहनदन लगैत अछि ।

शोध-कार्य हो अथवा पुस्तक-प्रकाशन—हमरा लेल ई सभ कहियो संभव नहि होइत यदि हमरा गुन्देश्वरी देवीक कान्तासम्मित सहयोग नहि भेटल रहैत । एहि कार्य मे हमरा जतेक समय लागल अछि ताहि मध्य विभिन्न प्रकारक बाधा-विपत्ति अबैत रहल, किन्तु ओ हमरा मूलकार्य मे लगौने रहलीह । तें ई कृति वस्तुत: हुनक मनोभावना तथा सहभागिताक देन थिक। चि. आशुतोष, अर्चना आ आलोकक बालसुलभ चंचलता हमरा बाधा दैत छल अथवा काज करबाक उत्साह से कहब कठिन अछि । हम बुझैत छी जे मानसिक दुविधाक क्षण मे ओकरा सभ दिस हमर ध्यानाकर्षण हमरा लेल नीके होइत छल ।

अन्त मे मित्रम् प्रेसक श्री अरुण आचार्यक प्रति आभार व्यक्त करब हमर कर्तव्य अछि जे पोथीकें छापि तँ देलनि । प्रेसजन्य अशुद्धि लेल पाठक क्षमा करताह, से विश्वास अछि।

कमला कान्त भण्डारी

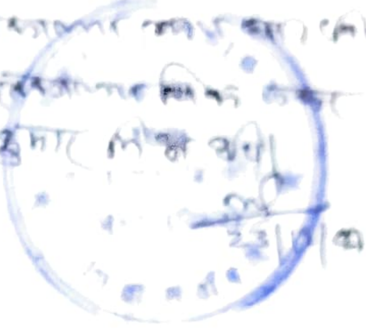
शास्त्रीनगर, पटना
२५ अक्टूबर,–१९९८ ई.

आभार

कबीरविषयक एहि पोथीक लेखन आ प्रकाशन मे हमरा पन्द्रह वर्ष सँ अधिक समय लागल अछि। एहि अवधि मे हम सैकड़ो कबीरपंथी सन्त आ रचनाकारक ओहिठाम गेलहुँ। हुनकालोकनि सँ भेंट कयलियनि। ओ सभ सामग्री देलनि, विचार देलनि। हुनके सभक सहयोग आ प्रोत्साहनक परिणाम थिक प्रस्तुत पुस्तक। हम हुनकालोकनिक हृदय सँ आभारी छी।

एहिठाम सभक नामोल्लेख करब त' संभव नहि अछि, तथापि किछु विशेष उल्लेखनीय सहयोगी सभ मे छथि :

प्रो. अवध नारायण साहु (मधुबनी), श्री अवध दास (सीमा, मधुबनी), पं. श्री अचिन्त दास (जदुपट्टी, मधुबनी), श्री अघनू दास (अड़ेर, सिनुवारा), डॉ० आर. बी. यादव (ब्रह्मोत्तरा), डॉ० कमल किशोर प्रसाद वर्मा (लदौरा, समस्तीपुर), श्री कैलाश दास (बीरनौध, भागलपुर), श्री गंगाशरण शास्त्री (काशी), श्री गिरिजानन्द गोस्वामी (तुर्की), श्री जगजीवन दास (अड़ेर, बरहीटोल), श्री जीवछ दास ''भजनाहा'' (सीतापट्टी, मधुबनी), श्री जलेश्वर दास (परजुआरि), श्री ठाकुर दास (रोसड़ा), श्री धर्मस्वरूप शास्त्री (पूर्णिया कोर्ट), श्री नन्द किशोर शर्मा (वारिसलीगंज), श्री फलहारीदास (ब्रह्मोत्तरा), श्री बौआ साहेब (भरवाड़ा, दरभंगा), श्री माधव गोस्वामी (समस्तीपुर), श्री रामदयालदास (बिद्दुपुर), श्री रामावतारदास (सतमलपुर), श्री रामनन्दनदास (इन्नरूआ, मुंगेर), श्री रामजीवनदास (रोसड़ा), डॉ० रामदेव दास (मधुबनी), श्री रामचरित्र दास (ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर), श्री रामस्वरूप दास (जामनगर, गुजरात), श्री राजकुमार झा (बरुआर), श्री रामराज दास (अड़ेर, बरहीटोल), .प्रो. डॉ. रामराज शर्मा (नौबतपुर), श्री राजेन्द्र यादव (ब्रह्मोत्तरा), श्री राजेन्द्र यादव (अड़ेर, सिनुवारा), श्री रामगुलाम दास (लदौरा), श्री रामदेव दास (डूब्बाजोत, किशनगंज), श्री रामरती देवी (डूब्बाजोत, किशनगंज), श्री रघुनन्दन गोस्वामी (बन्नी), श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र (दिल्ली), श्री लक्ष्मी साहु (अड़ेर, सिनुवारा), श्री विद्यानन्द दास (रोसड़ा) श्री विवेक दास (काशी), श्री विलियम डायर एस. जे. (हजारीबाग), श्री श्यामलाल दास (ब्रह्मोत्तरा), श्री शीतल दास (परबत्ता), श्री साधुशरण गोस्वामी (बलिया), डॉ. सुकदेव सिंह (काशी), श्री सियाराम दास (अन्धराठाढ़ी), श्री सेवा दास (दुहबी), श्री सर्वा दास ''सुजन'' (शेरगढ़)।



माय आ बाबू कें

जनिका

पोथीक प्रकाशित रूप देखि

आओर प्रसन्नता होइतनि

आशीष कुमार मिश्र
भारत धार
23/12/07

विषय प्रवेश

भारतीय सन्त परम्परा ओ मध्यकालीन साहित्येतिहासमे सन्त कबीर एकटा युगपुरुषक रूपें अवतरित भेलाह तथा अपन सहज धर्मसाधना ओ लोकशिक्षणपरक काव्यक माध्यमे भारतीय सांस्कृतिक जगतकेँ अपन विशिष्टतासँ आलोड़ित कय देलनि । लोकश्रुतिक अनुसार विधवा ब्राह्मणीक कोखिसँ अवतरित तथा मुसलमान जोलहा परिवार मे पालित ई सन्त हिन्दू धार्मिक व्यवस्थाक बाह्याडम्बर तथा मुसलमानी धार्मिक व्यवस्थाक कमजोर तन्तु सभपर प्रहार कय एक दिशि जँ कट्टरवादी साम्प्रदायिक लोकनिक आलोचनाक पात्र बनलाह तँ दोसर दिशि समाजक एकटा बृहत् वर्गक हेतु पूज्य आचार्यक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह । परवर्ती कालमे हिनक नाम पर एकटा धार्मिक पन्थक विकास भए गेल जे कबीरपन्थक नामे जानल जाय लागल ।

मो० हिदायतुल्लाह भारतीय सन्त परम्पराक दुइ गोट पुरातन सन्तक पद हिन्दुस्तानक प्रत्येक ग्राम मे सुनल जयबाक चर्चा कएलनि अछि । ई दुनू सन्त कबीर ओ तुलसीदास छथि जे भारतीय सन्तपरम्पराक एहि दुनू मनीषीक लोकप्रियताक द्योतक थिक ।[1]

सन्त कबीरक प्रादुर्भाव भारतीय संस्कृतिक ओहि संक्रमणकाल मे भेल छल जखन आक्रान्ता मुस्लिमसमुदाय द्वारा भारतीय राजनीतिक क्षितिज केँ क्रमशः आत्मसात् कय लेल गेल छल । विजेता मुसलमान आक्रान्ताक हाथ मे शासन सूत्र आबि गेलाक बाद हिन्दू जनताक संग दुर्व्यवहार चरम सीमा पर छल । विभिन्न प्रकारक धार्मिक करारोपण, सामूहिक हत्या, धर्मान्धतापूर्ण शोषण ओ दमन हिन्दू जनता केँ अपमानित ओ विवशतापूर्ण जीवन जीबाक हेतु बाध्य कय देने छल । काजी मुगीसुद्दीनक ई परामर्श जे ओ अलाउद्दीन खिलजी केँ देने छल, सँ हिन्दू जीवनक दारिद्य ओ प्रताड़नाक उद्घाटन होइछ । राज्य मे हिन्दूक की स्थिति होअए ताहि विषय मे खिलजी शासक अलाउद्दीन द्वारा पुछला पर मुगीसुद्दीन कहने छल-'शैरियत मे हिन्दू केँ करदाता कहल गेल अछि आ जखन कखनो कोनो कर ग्रहण पदाधिकारी ओकरा सँ चानी माँगैक तऽ ओ बिना कोनो फरियाद कैने सोना दऽ दैक । यदि कर वसूली करयवला ओकरा मुँह मे थूकै चाहैक तँ बिना कोनो आपत्ति केँ ओ मुँह खोलि दैक । (तुलनीय-तुरूक डेराबय थूक सँ) अन्यान्य इस्लामी धर्माधीशक विचार मे हिन्दूक हेतु दुइयेटा मार्ग छलैक-मृत्यु अथवा इस्लाम धर्मक आलिंगन ।[2]

सन्त कबीरक वरीय समसामयिक महाकवि विद्यापति **कीर्त्तिलता** मे हिन्दू जनताक अधोगतिक वर्णन एहि शब्दें कयलनि अछि :

धरि आनए बाँभन वटुआ
मथाँ चडावय गाइक चुडुआ ।
फोट चाट जनउ तोड़
उमर चढ़ावए चाह घोर ।

धाआउरि धाने मंदिरा साँध,
देउर भाँगि मसीद बाँध ।
गांरि गोमठ पुरिल मही,
पएरहु देना एक ठाम नहीं ।
हिन्दु बोलि दुरहि निकार,
छोटेओ तुरका भभकी मार ।
हिन्दूहि गोट्टओ गिलिए हल
तुरूक देखि होअ भान ।'

एतावता शराब ओ कबाब, अनाचार, भंग ओ विलासिता आ सर्वोपरि धर्मान्धता जँ मुस्लिम संस्कृतिक परिणति छल तँ दोसर दिस हिन्दू जनता संत्रस्त ओ सीदित जीवनक हेतु बाध्य छल ।

स्वभावतः हिन्दू धर्मक ओ संस्कृतिक एहि विपर्यय काल मे हिन्दू जनताक ह्दय मे गौरव, गर्व आ उत्साहक हेतु अवकाशे नहि रहि गेल । ओकरा समक्षहि देवमन्दिर गिराओल जाइत छलैक, देवमूर्ति तोड़ल जाइत छलैक, पूज्य पुरुषक अपमान होइत छलैक आ ओ किछु करबा मे असमर्थ भए गेल छल । एहन स्थिति मे अपन वीरता ओ गौरवक गान तँ ओ कय नहि सकैत छल ने बिना लज्जित भेने सुनिये सकैत छल । परवर्तीकालमे जखन मुस्लिम साम्राज्य दूर धरि स्थापित भए गेल, परस्पर युद्धरत राज्य सभ सेहो नहि रहि गेल । एहि भारी राजनीतिक संक्रमणक कारणें बहुत दिन धरि हिन्दू समुदाय कँ उदासी घेरने रहलैक आ अपन पौरुष सँ हताश जातिक हेतु भगवानक शक्ति ओ करुणाक दिस ध्यान देबाक अतिरिक्त कोनो दोसर मार्ग नहि रहि सकलैक ।'

हतोत्साह हिन्दू मानस अपन स्वतंत्र अस्तित्वक रक्षाक हेतु आ मूलभूत संस्कार कँ बचयबाक हेतु निरन्तर यत्नशील छल । ओकरा लग परम्परा सँ प्राप्त गीताक ई आप्त वाक्य छलैक–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥'

दोसर दिस श्रीमद्‌भागवत्‌क भगवानक आराधना ओ लोकसंग्रहक भावनाक स्वर एके संग जयदेवक मधुरकोमलकान्त पदावलीक रूप मे अनुगुञ्जायमान छलैक जाहि मे घोषित कयल गेल छल–

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो,यदि विलासकलासुकुतुहूलम् ।
मधुरकोमलकान्त पदावलि, श्रृणु तदा जयदेव सरस्वतीम्'

दिव्य प्रेम संगीतक एहि धार मे लोकक सुखद पक्ष समक्ष अयलैक आ क्रमशः हिन्दूसमाज जड़ता सँ हटैत गेल । जयदेवक देववाणीक ई स्निग्ध पीयूष धारा जे समयचक्र मे दवल पड़ल

छल, अवसर पबैत देरी लोकभाषाक सरसतामे परिणत भए मिथिलाक काकिलकंठ महाकवि विद्यापतिक सरसवाणीक रूप मे प्रकट भेल तथा परिवर्तीकाल म सम्पूर्ण पूर्वांचल आ ब्रजधरि कें आप्लावित कय देलक ।

कबीरक पूर्वकाल मे भारतीय धर्मसाधना ओ दर्शनक क्षेत्र पूर्णतः विश्रृंखलित भए गेल छल । जीव, जगत ओ ईश्वर सम्बन्धी हिन्दू विचारधारा संक्रमणक विविध अवस्था मे जेना-तेना जीवि रहल छल । वैदिक कर्मकाण्डक विधि, तीर्थाटन, पर्वस्नान आदि अर्थशून्य भए गेल छल । औपनिषदिक ज्ञानकाण्डक सीमा समुन्नत ओ विकसित मस्तिष्कक थोड़ लोक मे संकुचित छल । गीताक कर्मयोग, संन्यासयोग आदि सामान्य जनक स्तरपर प्रचलित नहि भए सकल छल । पौराणिक बहुदेववाद ओ मूर्तिपूजा हिन्दू धर्मसाधना मे अनेक सम्प्रदायक जन्म दए देने छल जाहि मे वैष्णव, शाक्त, शैव आदि विविध मतावलम्बी अपना-अपना ढंग सँ धर्म साधना मे लागल छलाह । ततः पर बौद्ध ओ जैन धर्मदर्शनक प्रादुर्भाव भेला सँ नास्तिकतावादक स्थापना भेल । राजकीय संरक्षण पाबि बौद्धदर्शनक खूब प्रचार-प्रसार भेल, जकर परिणामस्वरूप सम्पूर्ण उत्तरी भारत सँ वैष्णव धर्म अलोपे जकाँ भए गेल ।

मुदा सनातन हिन्दू धर्मक हेतु संघर्ष चलिते रहल । डा० रामदेव झाक शब्द मे 'मिथिलाक उद्योतकर, कुमारिल, प्रभाकर, मण्डन, वाचस्पति, उदयन ओ अन्ततः गंगेश उपाध्याय जाहि प्रकारें बौद्धदर्शन पर प्रहार कयल जे क्रमशः निरस्त होइत विलुप्त भए गेल । बौद्ध तर्कजाल ब्राह्मण मीमांसक ओ नैयायिक लोकनिक प्रतिभाक समक्ष कुंठित भए गेल । फलस्वरूप पण्डित समाजपर बौद्ध दर्शनक किञ्चितो प्रभावक अवशेष नहि रहि सकल ।'

जहिना-जहिना बुद्धिवादी समाज सँ बौद्धविचारकलोकनि निराश होइत गेलाह तहिना-तहिना समाजक निम्नवर्ग मे अपन प्रभाव विस्तारक चेष्टा करैत गेलाह । गुह्यसाधना, ध्यान, धारणा, समाधि, योग-टोनक चमत्कार, रहस्यमय उक्ति, जनभाषामे रहस्यात्मक विचारधारायुक्त पद्य रचना आदि साधनक बल पर अपन अस्तित्वक रक्षा करैत रहलाह ।'

एहि अवधि मे धर्मक भावात्मक अनुभूति अथवा भक्तिक सूत्रपात महाभारत, पुराण ओ श्रीमद्‌भावगतक प्रभाव-परिसर सँ भेल, मुदा विद्वानलोकनिक अनुमान अछि जे उत्तर भारत मे पल्लवित एहि विचारधारा पर जखन बौद्ध तथा ओहि सँ विकसित वज्रयान, सहजयान आदि द्वारा विरोध उत्पन्न कयल गेल तखन एहि भागवत धर्मक प्रचारकसभ दक्षिण भारतक राजालोकनिक आश्रय मे चल गेलाह जतय बौद्ध प्रभाव विरल छल ।'

बौद्ध धर्म कें निरस्त करबा मे शंकराचार्यक अवदान भारतीय अध्यात्म जगत मे एकटा क्रान्तिक स्वरूप मे अवतरित भेल । ई दक्षिण भारतीय सन्त वैदिक ज्ञानमार्गक प्रतिष्ठा कय ईश्वर, वेद ओ प्राचीन भारतीय शास्त्रक प्रति फेर सँ जनता कें श्रद्धावान बनौलनि । कहल जा सकैछ जे वर्तमान हिन्दू धर्मक न्यों देलनि ।

दक्षिण भारत मे वैष्णव-भक्ति पूर्णरूपेण विकसित भेल । ईसाक पाँचम सँ दशम शताब्दी मे एतय आलवार संतलोकनिक आचार्य युगक प्रादुर्भाव भेल, जाहि मे रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी आदि अनेक सन्त भेलाह, जे द्वैतवाद, अद्वैतवाद,

[illegible] वैष्णवभक्तिक [illegible] द्रविड़ देश मे प्रचलित भक्ति कें प्राचीन [illegible] राष्ट्रीय धर्म बना देलनि । एहि आचार्य [illegible] [illegible] प्रत्यावर्तित भेल आ पुनश्च भारतीय [illegible] वैष्णव भक्ति [illegible] भारत मे [illegible] करबाक प्रयत्न कएलक ।

[illegible] क्षेत्र मे वैष्णव भक्ति कें सर्वसुलभ करबाक [illegible] के रूपक शैली मे श्रीमद्‌भागवत [illegible] आन्दोलनक [illegible] क्रमविकास कें रूपक शैली मे [illegible] भक्ति) द्रविड़ देश मे उत्पन्न भेलहुँ कर्नाटक मे [illegible] गेलहुँ । [illegible] पालनपोषण भेल, मुदा गुर्जर मे जीर्ण भए गेलहुँ । [illegible] शनैः शनैः वृन्दावन अयलहुँ जतय हम सुन्दर रूप प्राप्त [illegible] उत्पन्न वैष्णव भक्तिक क्रमिक प्रचारदशाक [illegible] रूपक दक्षिण भारत मे उत्पन्न [illegible] सिद्ध करैत जे क्रमशः द्रविड़ मे उत्पन्न भक्ति आन्दोलन कर्नाटक [illegible] गुजरात [illegible] मुदा गुजरातक परिस्थिति संभवतः लगातार [illegible] कें [illegible] गुजरात [illegible] आनए भक्ति प्रचारक सौविध्य नहि भेटलैक। [illegible] कारण [illegible] रहबाक कारण [illegible] वृन्दावन मे एहि भक्ति आन्दोलन कें पर्याप्त प्रश्रय भेटलैक ।

[illegible] कबीरक कालधरि वैष्णवभक्ति बद्धमूल भए गेल छल ।

[illegible] कबीरपूर्व भारतीय धर्मसाधनक क्षेत्र मे नाथपंथक उदय वस्तुतः बौद्धसाधनाक वज्रयानक [illegible] हठयोग पर आधारित ई पन्थ गोरखनाथक समय धरि पूर्ण [illegible] गोरखनाथक हठयोगसाधना ईश्वरवाद कें लऽ कऽ चलल छल ई [illegible] मुसलमानक हेतु सेहो आकर्षण छलैक । एहि सम्प्रदाय मे ईश्वरोपासनाक [illegible] प्रकट करैत घटक भीतर ईश्वरकें प्राप्त करबा पर जोर देल गेलैक अछि ।

कबीरक समय धरि मुसलमान विजेता जातिक रूप मे सम्पूर्ण भारत मे पसरि गेल छल। [illegible] सँ पता लगैत अछि जे महमूदगजनीक आक्रमणहु सँ पूर्वे सँ किछु मुसलमान सिंध [illegible] मे बसि गेल छलाह, जाहि मे किछु सूफी सेहो छलाह । सूफी फकीर ओ पीर [illegible] उद्योग मे लागल छलाह । हिनकालोकनि पर नाथपंथक योगसाधनाक सेहो प्रभाव पड़ल । ई लोकनि ब्रह्म कें माशूका तथा आत्मा कें पुरुष रूपमे मानि दुहुक एहि सम्बन्ध पर आधारित साधनापद्धतिक प्रचार करैत छलाह ।

एहि तरहें स्पष्ट होइछ जे संतकबीरक पूर्ववर्ती भारतीय साधना अनेक वाद मे पड़ल [illegible] विभिन्न प्रकारक धार्मिक प्रवृत्ति पसरल छलैक । सन्तकबीर ओहि समस्त प्रवृतिक [illegible] कें ग्रहण कयलनि तथा अपन काव्यक माध्यमे ओकर प्रचार-प्रसार मे लगलाह। [illegible] तत्कालीन धर्म आ समाजक समस्त अधलाह तत्व सभ कें इंगित करैत ओहि सभ पर प्रहार करैत रहलाह ।

सन्त कबीर पर पूर्ववर्ती साम्प्रदायिक भावनाक प्रभाव-परिसरक विश्लेषण करैत श्री परशुराम चतुर्वेदीक सर्वथा समीचीन मत अछि जे कबीर साहित्यक अध्ययन सँ पता [illegible] अछि जे ओकर रचयिताक सर्वाधिक आकर्षण वैष्णव समाज ओ जोगी समाजक [illegible] सन्त कबीर नहि केवल वैष्णवधर्म तथा ओकर भक्ति साधनाक समर्थन करैत जानि

[illegible] अपितु अनेक [illegible] पूर्ण [illegible] विशिष्ट [illegible] अनेक [illegible] अतिरिक्त [illegible] [illegible] कएने छथि [illegible] [illegible] छथि तथा [illegible] कार्य कें [illegible] अछि

सन्त कबीर [illegible] भारतीय अद्वैतवादक किछु [illegible] आ सूफी फकीरक [illegible] प्राप्त कयलनि । [illegible] अहिंसावाद आ [illegible] लेलनि । एहि तरहें हिनक वचन मे कतहु भारतीय अद्वैतवादक [illegible] कतहु योगीलोकनिक नाड़ी-चक्रक, कतहु सूफीलोकनिक [illegible] कतहु [illegible] खुदावादक, आ कतहु अहिंसावादक । [illegible] तात्त्विक दृष्टि सँ [illegible] पूर्ण अद्वैतवादी [illegible] आ संकेत आ ने एकेश्वरवादी । हुनक [illegible] हिनक [illegible] एकटा एहन सामान्य भक्ति पद्धतिक प्रचार [illegible] अछि जे हिन्दू आ मुसलमान [illegible] योगदान संभव भए सकय तथा भेदभावक किछु [illegible] बहुदेवोपासना अवतार तथा मूर्तिपूजाक खण्डन ई मुसलमानी जोशक [illegible] करैत छलाह तथा मुसलमानक कुरबानी, नमाज, रोजा, आदिक असारता देखबैत ब्रह्म, माया, जीव, [illegible] आदिक चर्चा पूर्ण हिन्दू ब्रह्मज्ञानीक रूप मे करैत छलाह । सारांश मे ई [illegible] बाह्य विधि सँ ध्यान हटाए, जकर कारणें धर्म मे भेदभाव पसरल छल, विशुद्ध [illegible] आ सात्विक जीवनक प्रचार कराए चाहैत छलाह ।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्लक अनुसार जे ब्रह्म हिन्दू विचारपद्धति मे ज्ञानमार्गक [illegible] छल ओकरे सन्त कबीर सूफी पद्धति पर उपासनेक विषय नहि अपितु प्रेमक विषय सेहो बना लेलनि आ ओकरे प्राप्ति हेतु हठयोगसाधनाक समर्थन कयलनि । एहि तरहें ई भारतीय ब्रह्मवादक संग सूफीमतक भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगीक साधनात्मक रहस्यवाद ओ वैष्णवलोकनिक अहिंसावाद ओ प्रपत्तिवादक सम्मिश्रण कय अपन पन्थ ठाढ़ कयलनि ।

उपासनाक बाह्यस्वरूप पर आग्रह करयवला तथा कर्मकाण्डक प्रधानता देखयवला पंडित आ मुल्ला पर ई सांघातिक प्रहार कयलनि तथा राम-रहीमक एकता बूझि हृदय कें शुद्ध आ प्रेममय करबाक उपदेश देलनि । देशाचार आ उपासनापद्धतिक कारण मनुष्य-मनुष्य मे जे भेदभाव उत्पन्न भए जाइत छैक ओकरा दूर करबाक प्रयास हिनक वाणी निरन्तर करैत रहल ।"

भारतीय धर्मसाधना आ समाजक एहि विशिष्ट प्रवर्तक कें स्वामी रामानन्दक शिष्यपरम्पराक भक्त कहल जाइत अछि । उक्ति प्रसिद्ध अछि-

भक्ति द्रविड़ उपजी, लाए रामानन्द ।
परगट करी कबीर ने, सप्त द्वीप नौखंड ॥

एहि सँ स्पष्ट अछि जे सन्त कबीर सामान्य जनता मे भक्त कविक रूप मे विख्यात

छलाह, मुदा ई निर्गुण मतक प्रवर्तकक रूप मे वस्तुतः एकटा समाजसुधारक संत छलाह जे विभिन्न धर्मपद्धति कैँ एकाकार कए तत्कालीन हिन्दू ओ मुसलमान धर्मक कट्टरवाद कैँ निरस्त कए दुहूक समन्वयक दिशि उन्मुख भेलाह तथा दुहू धर्मावलम्बीक वाह्याडम्बर ओ पाखण्डक प्रति रोष अभिव्यक्त कय लोकजगत मे समता ओ विशुद्ध जीवनपद्धतिक प्रचार कयलनि ।

रामानन्दक शिष्य होइतो सन्त कबीर वैष्णव सम्प्रदायक अवतारवाद ओ मूर्तिपूजाक विरोध कयलनि । तकर अतिरिक्त ई हिन्दू ओ मुसलमान दुनू धर्मक बाह्याडम्बर पर पर्याप्त प्रहार कएलनि, छूआछूत ओ जातिगत भेदभावक सामाजिक पद्धतिपर तीक्ष्ण आघात कएलनि आ सबसँ पैघ बात ई जे तत्कालीन समस्त धार्मिक विचारधाराक समन्वय कय विशिष्ट भक्तिधारा निर्गुण पन्थक स्थापना कयलनि ।

परशुराम चतुर्वेदी सन्त कबीर द्वारा प्रवर्तित साम्प्रदायिक भावनाक विश्लेषण करैत सत्ये कहलनि अछि जे 'सन्त कबीर संभवतः प्रत्येक संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना सँ मुक्त छलाह आ हुनक मुख्य अभिप्राय कोनो एहन विचारधाराक जन्म देब छल जे स्वभावतः सर्वमान्य बनि सकय तथा जाहि मे कोनो अन्य उल्लेखनीय प्रवृतिक संचारक पूरा-पूरा गुंजाइश होइक। तदनुसार ओ अपना समक्ष उपस्थित समस्या पर अधिक सँ अधिक व्यापक दृष्टिकोण सँ विचार करबाक प्रयत्न कयलनि आ एहि तरहें प्राप्त परिणामक मूल्यांकनक भार प्रत्येक व्यक्तिक निजी अनुभव पर छांड़ि देलनि । तें सन्त कबीर कैँ एहि ऊँचाई सँ देखला पर जतय निर्गुण ओ सगुणक प्रश्न स्वयं समाप्त भय गेल आ अद्वैत भावना मे भक्तिक सम्मिरण सँ मस्तिष्क पक्ष आ हृदयपक्ष मे सामंजस्य उपस्थित भए गेल ओतहि शून्य, सहज, प्रेम तथा योग सदृश शताब्दी-दर-शताब्दी सँ प्रचलित शब्दक वास्तविक रहस्य सेहो स्पष्ट भए गेल तथा व्यर्थक वितंडावादक प्रवृति बहुत हद धरि निर्बल प्रतीत होमय लागल ।[१४]

परवर्त्ती सन्तकाव्य परम्परा मे सन्त कबीरक निर्गुण ब्रह्मवादक पर्याप्त विरोध भेल तथा भक्ति कैँ ज्ञान सँ अधिक महत्वपूर्ण कहल गेल । सन्तकवि सूरदासक **भ्रमरगीत** एकर प्रमाण थिक जाहि मे ज्ञानयोग ओ निर्गुण ब्रह्मक सर्वथा उपहास करैत भक्तिक समर्थन कएल गेल अछि । सूरदासक गोपीलोकनि निर्गुण ब्रह्मोपदेशक उद्धव सँ पुछैत छथिन–

निर्गुन कौन देस को वासी ?
मधुकर ! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी ।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि को, दासी ।।
कैसे बरन, भेस है कैसो, केहि रस में अभिलासी ।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे कहैगो गाँसी ।
सुनत मौन हे रहयो ठगो सो सूर सबै मति नासी ।।[१५]

गोपीलोकनिक कहबाक तात्पर्य छनि जे निर्गुणक कोनो आधार नहि छैक । निर्गुण ब्रह्मक कोनो निश्चित रूप नहि । ओकर आकांक्षा ओ निर्देश निश्चित नहि । एहि तरहें सब प्रकार सँ अज्ञात सत्ताक आराधना कोन प्रकारें कयल जा सकैछ । दार्शनिक दृष्टि सँ सूरदासक **भ्रमरगीत** प्रतीकात्मक रचना अछि जाहि मे श्रीकृष्ण ब्रह्म, गोपीलोकनि जीवात्मा, उद्धव ज्ञानाभिमान

तथा गोपी-विरह परमात्माक प्राप्तिक हेतु आत्माक आकुल आवाज अछि, तथापि अनेकठाम कविक सगुण ओ निर्गुणधाराक भाव मे समानता सेहो देखि पड़ैछ ।

ज्ञानयोग ओ भक्तियोगक अन्तर होइतो सन्त कबीर ओ सूरदासक पद मे जीव ओ जगतक प्रति समाने अवधारणाक निरूपण देखि पड़ैछ । सांसारिक अनित्यताक सम्बन्ध मे महाकवि सूरदासक पद अछि–

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ।
ता दिन तेरे तन-तरूवर के सबै पातझरि जैहैं ।
या देही की गरब न करिये स्यारकाग गिध खैहैं ।
तीनिनि में तन कृमि कै विष्ठा, कै ह्वै खाक उड़ैहैं ।
कँह वर नीर, कहाँ वह शोभा, कहँ रंगरूप दिखैहैं ।
जिन लोगन सो नेह करत हैं, तेइ देखि घिनैहैं ।
घर के कहत सवारे काढ़ो भूत होइ धरि खैहैं ।
जिन पुत्रनिहि बहुत प्रतिपाल्यो, देवी देव मनैहैं ।
तेई लै खोपरी बास दै, सीस फोरि बिखरैहैं ।
अजाहुँ मूढ़ करौ सतसंगति, संतनि मैं कछु पैहै ।
नरवपु धरि नाहि जन हरि को, जम की मार सो खैहैं ।
सूरदास भगवंत भजन बिनु वृथा सु जनम गवैहै ।[१६]

एहि तथ्य कैँ सन्त कबीर एहि पदसभ मे अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि–

खीर खाण्ड घृत-पिण्ड समारा
सो तन लै बाहर कै डारा
जिहि सिर रचि रचि बाँधहु पागा
सो शिर रतन विदारै कागा
हाड़ जरै जस लकड़ी झूरी
केश जरै जस तृण की कूरी ।[१७]

तथापि

दुलहिन बनि कए जयबह सुसुरारि गोड़िया ।
काँचे बँसवा कटाएब, ओकर डोलिया बनाएब
ओइ मे लागि जायत उजरि ओहार गोड़िया ।
चारि कहरिया मिलि आएल तोहर डोलिया उठाएल
तोरा राखि देलकौ नदिया किनार गोड़िया
खढ़ के उकबा बनाएब तोरा मुँह मे लगाएब
तोहर जरि जयत सुन्दर मकान गोड़िया ।।
साहेब कबीर मंगल गायब गाके लोगबा समुझाएब ।
तोरा छूटि गेल सोलहो श्रृंगार गोड़िया ।।[१८]

परवर्ती सन्त कवि तुलसीदास सगुण ओ निर्गुणक समन्वय कय विशिष्टाद्वैतवादक समर्थन कयलनि । हिनक किछु उक्ति सभ अछि–

एकु दारूगत देखिअ एकू ।
पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥[१९]

x x x

निर्गुण ब्रह्म सगुन वपु धारी ॥[२०]

एहि तरहें सन्त कवि तुलसीदास ज्ञानयोग ओ भक्तियोग केँ समाकार करबा मे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत रामभक्तिक प्रचार कयलनि आ घोर निराशा ओ निरवलम्बता मे पड़ल हिन्दू समाजक जीवन मे पुनः नव उत्साहक स्फूर्ति करौलनि, जकर परिणति साम्प्रतिक जीवनपद्धतियहु मे देखल जा सकैछ ।

एतावता सन्त कबीरक निर्गुण भक्तिधारा भारतीय समाज, साहित्य ओ धार्मिक व्यवस्थाक हेतु एकटा विशिष्ट ज्योतिपुञ्जक रूप मे प्रकट भए तद्युगीन समाजक मार्गदर्शक भेल । दलित-शोषित हिन्दू समाज केँ एहि भक्तिधाराक प्रभावात् मुस्लिम एकेश्वरवादक प्रति तनाव मे कमी अयलैक, रूढ़िमय धार्मिक ओ सामाजिक व्यवस्थाक प्रति आत्मचिन्तक अवसर भेटलैक । सन्त कबीरक कटुक्तिपूर्ण वाक्य हिन्दू आ मुस्लिम कट्टरतावाद ओ वाह्याडम्बर, अश्लीलता, विलासिता आदि पर प्रहार कयलक । हिनक मिश्रित धर्मसाधनाक मार्ग मानव जीवनक चरम लक्ष्य दिस दुनू समुदाय केँ इंगित कय सामाजिक समन्वय तथा शान्तिपूर्ण ओ सहज जीवनपद्धतिकेँ पुनः स्थापित करबाक प्रयास कयलक ।

कबीर-दर्शन सँ प्रभावित भए बहुतो लोक हिनक जीवनकाल मे हिनक शिष्यत्व ग्रहण कयलनि तथा हिनक दर्शनक प्रचार-प्रसार मे लागि गेलाह । परवर्तीकाल मे हिनक दर्शनक प्रचारार्थ एकटा धार्मिक पन्थक निर्माण भए गेल । एहि पन्थक प्रचार-प्रसार हेतु हिनक चारि गोट शिष्य क्रमशः जागूदास, भागूदास, सुरतगोपाल ओ धर्मदास विद्दूपुर, धनौती, काशी, ओ दामाखेड़ा मे गुरुगादीक स्थापना कएलनि । एहि चारू कबीरपन्थी मठक माध्यमे कबीर दर्शनक प्रसार सम्पूर्ण भारत ओ विदेशहु मे अनेकठाम भेल । एहि प्रमुख मठ सभक द्वारा ग्रामाञ्चलहु मे अनेक कबीरपंथी मठक स्थापना कएल गेल आ कबीरदर्शन जनसामान्य धरि पहुँचल । विभिन्न मठाधीशलोकनिक प्रतिक्रियास्वरूप क्रमशः कबीरपंथीक कतेको शाखा ओ उपशाखाक निर्माण होइत रहल ।

कबीरपन्थी चारि प्रमुख मठ मे एकटा केन्द्र मिथिलाक विद्दुपुर होयबाक कारण मिथिलो मे कबीरपन्थक प्रसारक प्रचुर अबसर भेटलैक । एहिठाम गृही ओ वैरागी दुहू प्रकारक कबीरपन्थी मठाधीशलोकनिक छाया मे कबीरपन्थक चारू शाखाक विभिन्न उपशाखा सभ विद्यमान अछि। किछु शाखा उपर्युक्त गुरुगादीक प्रभाव सँ सर्वथा मुक्तो अछि ।

कालक्रम मे बाह्योपचार सँ वर्जनापरक कबीरदर्शन स्वयं विभिन्न बाह्योपचार सँ ग्रस्त भए गेल । टीका, माला, व्रत-उत्सव, बन्दगी, नौका, आरती आदि क्रमशः एहि पन्थक बाह्योपचारमध्य सम्मिलित होइत गेल ।

कबीरदर्शनक प्रसार मे सन्त कबीरक विभिन्न ग्रन्थावलीक प्रमुख भूमिका रहल अछि। एहि मे धार्मिक ग्रन्थक रूप मे बीजक कबीरपन्थक सर्वमान्य ग्रन्थ थिक । तदतिरिक्त कबीरक विचार धारा **कबीर ग्रंथावली**, **कबीर वचनावली**, **सद्गुरु कबीर वचन संग्रह** आदि मे संकलित भेटैछ, जाहि मे अधिकांशक संकलन लोककंठ ओ विभिन्न पाण्डुलिपिक आधार पर सामान्यतः मिथिलाक बाहरे भेल ।

कबीरक कृति मध्य हिनक मैथिलीक पदावलीक महत्वपूर्ण स्थान अछि । मिथिलाक लोककंठ ओ विभिन्न पाण्डुलिपि मे सन्त कबीर भणित बहुत पदावली दृष्टिगोचर होइछ । एहि पदावलीक मुख्य भावभूमि हठयोगसाधना सँ सम्बद्ध अछि । मैथिलेतर प्रान्तहु मे संकलित-सम्पादित कबीरपन्थी ग्रन्थ सभ मे मैथिली पद भेटैत अछि । एहि ग्रन्थ सभ मे कतोक पद पूर्णतः विशुद्ध मैथिलीक पद थिक तँ कतोक मे मैथिलीक भाषिक तत्वक समावेश देखि पड़ैछ । सन्तकबीर ओ कबीरपन्थक मैथिल पृष्ठिभूमि मे एहि पदावलीक विवेचनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण अछि ।

सन्दर्भ-निर्देश

१. Md. Hedayetullah-**Kabir-the apostle of Hindu Muslim unity**, Motilal Banarsidas, 1977, Page-134.
The Words of two men of the past can still be heard in every village of Hindustan. Those are Tulsidas, the abandoned child of a beggar Brahman tribe and Kabir, the despised weaver of Banaras."

२. डॉ० कौलेश्वर राय-**दिल्ली सल्तनत**-किताब महल, इलाहाबाद, सन् १९८३ ई०,पृ०-१३६ ।
"According to shariat, Hindus are called payers of frilaute (Kharajguzar) and when the revenue officer demands silver from them, they should without question and with all humanity and respect feader gold. If the officer throws dirt into their mouths, they must without reluctance open their mouths wide to receive." Quazi Muglisuddin

३. बाबूराम सक्सेना-सं०**कीर्तिलता**-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत-२०३८, द्वितीय पल्लव, पृ०-४४

४. रामचन्द्र शुक्ल-**हिन्दी साहित्य का इतिहास**-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी संवत, २०३८, पृ०-४३

५. **गीता**-अध्याय-४, श्लोक ७-८ गीता प्रेस, गोरखपुर

६. जयदेव-**गीत गोविन्द**-ठाकुर प्रसाद एण्ड बुकसेलर राजदरवार, वाराणसी, १।३।

७. डॉ० रामदेव झा-कालाम **शैवसाहित्यक भूमिका**, मैथिली अकादमी, पटना सन् १९८२ ई०, पृ०१२७-१२८

८. तत्रैव, पृ० १२८

९. डॉ० पारसनाथ तिवारी-**कबीर वाणी संग्रह**, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई० पृ०-८० ।

१०. **श्रीमद्भागवत महात्म्य**, श्लोक ४८-५०

११. पं० परशुराम चतुर्वेदी-**कबीर साहित्य की परख**, भारती भंडार, प्रयाग, संवत-२०११, पृ०-४ ।

१२. पं० रामचन्द्र शुक्ल-**हिन्दी साहित्य का इतिहास**-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत-२०३८, पृ०-४९-५० ।

१३. तत्रैव,- पृ०-५५ ।

१४. पं० परशुराम चतुर्वेदी-**उत्तरी भारत की सन्त परम्परा**, भारती भण्डार, प्रयाग, सं० २००८, पृ०-१३३-१३४ ।

१५. पं० रामचन्द्र शुक्ल-सम्पादक-**महाकवि सूरदासकृत भ्रमरगीतसार**, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली-२ १९७९ ई०, पृ-७५ ।

१६. डॉ० ललितेश्वर झा-सम्पादक-**अष्टछाप पदावली**, हिन्दी साहित्य परिषद, ल० न० मि० वि० दरभंगा, १९८४ पृ०-९ ।

१७ मूल बीजक घनौती पाठ, शब्द-१०४, पृ०-२३८ ।

१८. रामदेव दास सँ प्राप्त निर्गुण ।

१९. **रामचरितमानस** मूल गुटका, गीता प्रेस सं०-२०४६, पृ०-४९ ।

२०. तत्रैव पृ०-९८

प्रथम अध्याय

सन्त कबीर ओ कबीरपन्थक विकास

पन्द्रहम शताब्दी मे भारतीय इतिहास एक गोट नव युगक प्रतीक्षा कय रहल छल । एकर संस्कृतिकेँ विकट आघात-प्रतिघातक सामना करय पड़ि रहल छलैक । एकर आदर्श पल्लवित भय रहल छलैक । मुसलमान शासकलोकनिक बढ़ैत प्रभाव इस्लाम केँ अत्यधिक शक्तिसम्पन्न एवं व्यापक बना देने छलैक । हिन्दू धर्म इस्लाम केँ अन्यान्य विदेशी धर्म जकाँ आत्मसात नहि कय सकल, किएक तँ इस्लाम सत्ताक संग जागल छल आ ओकर प्रवृति हिन्दू विरोधी छलैक । हिन्दू आ मुसलमानी संस्कारक विषमता देशक धार्मिक वातावरण मे घोर अशान्ति उत्पन्न कय देने छल । अनेक हिन्दू मुसलमान भए गेल छलाह आ अनेक अपन सत्यनिष्ठा पर संत्रस्त छलाह ।

हिन्दू निराशावादी भए गेल छलाह । मुस्लिम शक्तिक निरन्तर बढ़नुक प्रभावक सामूहिक रूप सँ प्रतिकार करबाक क्षमता हिनका मे नहि रहल छल । देशक राजनैतिक, सामाजिक ओ धार्मिक संगठन मे क्रमशः होइत ह्रास सँ हिन्दू जनता पतनोन्मुख छल । दोसर दिस विदेशी शासकक राजनैतिक ओ धार्मिक अत्याचार निरन्तर बढ़ैत जा रहल छल । राज्य संरक्षण प्राप्त इस्लाम धर्म ओ ओकर परिग्रहण सँ ऐश्वर्य प्राप्तिक लोभक संगहि शासकलोकनिक धार्मिक असहिष्णुताक भावनाक कारणें पद-पद पर साम्प्रदायिकताक आगि पजरि रहल छल । एहि विषम वातावरण मे मनुष्यक विश्वास अपनो पर सँ उठि रहल छलैक । तखन धर्म ओ ईश्वर पर जनसामान्य कोना विश्वास राखि सकैत ! अधर्मक राज्य चारूकात पसरि गेल छल । धर्मक नाश भय रहल छल । मनुष्यजातिक कष्ट निरन्तर बढ़ि रहल छल । रक्षाक कोनो उपाय दृष्टिगोचर नहि भय रहल छलैक । चारूकात भय ओ आतंकक वातावरण बनि गेल छल । एहन स्थिति मे धार्मिक दृढ़ता कोना जीवित रहि सकैत छल !

एक दिस जँ राजनीतिक निरंकुशता भय ओ आतंकवाद केँ प्रोत्साहित कय रहल छल तँ दोसर दिस सुफी मतक शांतिप्रिय ओ आध्यात्मिक दृष्टि हिन्दू आ मुसलमान दुनू केँ धार्मिक समझौताक प्रेरणा दय रहल छी । दुनू केँ एक देश मे निवास करबाक छलैक । क्यो अपन अस्तित्व समाप्त करबाक स्थिति मे नहि छल । तथापि विग्रहक मार्ग दुनूक उन्नति केँ अवरुद्ध कयने छलैक । अतएव धार्मिक समझौताक जे परिस्थिति बनल ताहि सँ एकटा नवीन युगक सूत्रपात भेल आ एहि युगक सूत्रपात करबामे भारतीय सन्त परम्पराक एक गोट विशिष्ट आधार-स्तम्भक रूप मे संत कबीरक अवतरण भेल । हिन्दू धर्म केँ जातिबंधनक यंत्रणा सँ मुक्त कराय, पदाधिकारक प्रलोभन ओ भौतिक जीवनक ऐश्वर्यप्राप्तिक व्यामोह सँ जनता केँ विचलित कय अपन धर्म पर दृढ़ रहबाक संबल प्रदान करैत सन्त कबीर निर्गुण ब्रह्म, एकेश्वरबाद ओ समतावादी सिद्धान्तक सामान्य जनताक भाषामे प्रचार कयलनि तथा धार्मिक विश्वास केँ अधिक व्यावहारिक ओ जनसुलभ बनेबाक प्रयास कयलनि । धर्म आ जीवनक अनुगुम्फन कय ई धार्मिक कट्टरता पर सशक्त प्रहार कयलनि जाहि सँ भारतीय संस्कृति मे पारस्परिक सहिष्णुताक भाव पुनश्च प्रतिष्ठापित भेल ।

[illegible] मुसलमान मे धार्मिक सहिष्णुताक भाव सँ आबि कयल संगति दुहु केँ आत्मान्वेषणाक सेहो पर्याप्त परिसर भेटल। जाति पाँति छुआछूत आदिक भेदभाव सँ ग्रस्त हिन्दू संस्कृति केँ समतावादक दिस तथा मूर्तिपूजा, तीर्थाटन आदि स्वाभाविक पाखंड ओ अंधविश्वास द्वारा ईश्वर प्राप्तिक बाह्याडम्बर केँ आत्मशुद्धिमूलक भावभक्ति दिस कबीर उन्मेषित कयलनि। इस्लामो धर्मक कतेक बाह्याचारपरक आडम्बर पर ई कड़गर चोट कयलनि। एहि तरहेँ भारतीय सामाजिक धार्मिक जीवन मे एकटा मौलिक परिवर्तन परिलक्षित भेल आ समन्वयवादी आ सुधारवादी सन्तक रूप मे कबीरक क्रान्ति द्रष्टाक स्वरूप उजागर भेल। हिनक चिन्तनधाराक नेओ ततेक गँहीर पड़ल जे कबिराहा मत एकटा विशिष्ट साम्प्रदायिक परम्पराक रूप मे उभड़ल आ साम्प्रतिको धार्मिक-सामाजिक जीवनक एकटा विशिष्ट नियामकक रूप मे परिलक्षित होइछ। एहि परम्पराक अग्रणी नेताक रूपमे हुनक वचन, साखी ओ दोहाक रूप मे एखनो सामाजिक-धार्मिक परिवेश केँ आलोडित कइये रहल अछि तथा विशिष्ट साहित्यक रूप मे मान्य अछि।

कबीर साहित्यक प्रखर भाषा ओ तीक्ष्ण भावव्यंजना सँ जाहि काव्यक सृजन भेल से लोकजगतक विराट परिसर सँ रसग्रहण करबाक कारणेँ अनेकठाम साहित्यिक मर्यादाक भने अतिक्रमण कय गेल अछि, मुदा एहि सँ साहित्य आ धर्म मे युगान्तर परिवर्तन अयलैक। हिन्दू आ मुसलमानक बीच साम्प्रदायिक सीमा तोड़ि कय दुनू केँ एके भावधारा मे बहा कय लय जयबाक अपूर्व सामर्थ्य कबीरक काव्य मे छल। ई सामर्थ्य जनताक बीच बाजल जायवला अपरिष्कृत भाषा पर आधारित छल। एहि मे धार्मिक पाखंड आ अंधविश्वास केँ तोड़बाक विद्युत-वेग छलैक। अपन स्वतंत्र ओ निर्भीक विचारधारा द्वारा कबीर सुधारक नवीन मार्गक अन्वेषण कयल आ हुनक ई समदृष्टिए हुनका सार्वजनिक ओ सार्वभौम बना देलकनि।

कबीरक जन्म

सन्त कबीरक जन्मक सम्बन्ध मे अनेकानेक प्रवाद प्रचलित अछि। कबीर पन्थक साम्प्रदायिक ग्रन्थ सभक अवलोकन सँ जे अवधारणा बनल अछि तकरे कबीरक उत्पत्ति सँ सम्बद्ध मानबाक बाध्यता अछि। प्रसिद्ध इतिहासकार पं० रामचन्द्र शुक्लक शब्द मे कहल जाइत अछि जे काशी मे स्वामी रामानंदक एक गोट भक्त ब्राह्मण छलाह जनिक विधवा कन्या केँ स्वामीजी धोखा सँ पुत्रवती होयबाक आशीर्वाद दय देलथिन। कालक्रम मे ओहि कन्या केँ पुत्ररत्नक प्राप्ति भेलैक जकरा ओ लोकलज्जावश लहरतारा नामक पोखरि मे फेंकि आयल। अली आ नीरू नामक जोलहा दम्पति ओहि बालक केँ पओलक आ पोसलक। यैह बालक आगू जा कय कबीर नामे प्रसिद्ध भेल।[1]

कबीरपन्थक अन्य कतेक ग्रन्थ मे हिनका अलौकिक रूपेँ आकाशमार्ग सँ ज्योतिस्वरूप अवतरित कहल गेल अछि, यथा—

> गगनमंडल से उतरे, सद्गुरु पुरुष कबीर।
> जलज माँहि पौढ़न कियो दुहुं दीन के पीर ॥[2]

एहि अवधारणा [illegible] प्रतीक सेहो [illegible] अछि।

> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]
> [illegible]

सन्त कबीरक जन्म स्थानक सम्बन्ध मे जाहि गोट स्थान उपस्थित अछि, विभिन्न विद्वान हिनका क्रमशः मगहर, बेलहरा, काशी आ मिथिला मे प्रादुर्भूत मानलनि अछि।

मगहर नामक गाम उत्तरप्रदेशक बस्ती जिला मे गोरखपुर सँ १५ कि० मी० दूर अवस्थित अछि। संत कबीरक एहि कथन केँ आधार बनाय किछु विद्वान हिनक जन्मस्थान मगहर मानैत छथि—

> पहिले दरसनु मगहर पाइओ पुनि कासी बसे आई।
> जैसा मगहक तैसी कासी हम एकै करि जानी ॥[3]

मुदा मगहर केँ सर्वसम्मति सँ कबीरक लीलाक संवरण-स्थल मानल गेल अछि। संत कबीरक एक गोट पद मे कहल गेल अछि—

> सगल जनमु सिवपुरी गवाइआ।
> मरती बार मगहरि उठि आइआ।
> बहुत बरस तपु कीआ कासी।
> मरनु भइआ मगहर की वासी।
> कासी मगह सम बीचारी।
> ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥[4]

मगह वस्तुतः मगधक अपभ्रंश अछि आ ई संभव जे सन्त कबीर मगहक स्थान पर मगहर शब्दक व्यवहार कएने होथि।

बनारस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (१९०९ ई.) मे आजमगढ़ जिलाक बेलहरा गाम केँ कबीरक जन्मस्थान कहल गेल अछि। एहि गाम मे बेलहर नामक एक गोट तालाब अछि जे लहरतालाब नामे प्रसिद्ध अछि। पं० चन्द्रबली पाण्डे बेलहर तालाब सँ लहरतालाक भाषा वैज्ञानिक विकास मानैत ओहि तालाब केँ कबीरक प्रादुर्भाव-स्थल मानैत छथि। मुदा कबीरपन्थी मान्यता, साहित्य ओ अन्य कोनो साक्ष्यक अभाव मे ई मत अमान्य भए गेल अछि।

काशी केँ कबीरक जन्मभूमि मानबाक परम्परा दीर्घकाल सँ आबि रहल अछि। काशी मे कबीरचौरा सँ दू माइल उत्तर-पश्चिम मे लहरतारा नामक पोखरि अछि जकरा कबीरपन्थी लोकनि निश्चित रूप सँ सन्त कबीरक जन्मस्थान मानैत छथि। सम्प्रदायेतर व्यक्ति ओ इतिहासलोकनि सेहो एहि स्थान केँ कबीरक जन्मस्थल मानैत छथि। मुदा एहि लहरताराक अस्तित्व बीसम शताब्दी सँ पूर्वक नहि भेटैछ। तेँ ई अवधारणा खण्डित होइछ। मुदा सन्त कबीरक अनेक पद मे काशीक उल्लेख भेल अछि यथा

तू ब्रहमनु मै कासीक जुलहा ।

x x x

किआ कासी किआ उखरू मगहरू ।

अनन्तदासक परिचयी मे कबीर कैँ काशीक निवासी कहल गेल अछि–

कासी बसै जुलाहा अंक । हरि भगतिन की पकड़ी टेक ।

एहि तरहक विभिन्न अन्त: ओ बहि: साक्ष्यक आधार पर काशी कैँ कबीरक जन्मभूमि मानल गेल अछि ।

सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक आवधारणाकेँ सर्वप्रथम डा० सुभद्र झा आधार प्रदान कएलनि । १९५६ ई. क नवम्बर मासक बिहार युनिवर्सिटी जर्नलक भाग २ मे हिनक एक गोट निबन्ध प्रकाशित भेल–"सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद ।" एहि निबन्ध मे डा. झा अनेक प्रमाणपुरस्सर ई स्थापित कएलनि अछि जे सन्त कबीरक जन्मभूमि मिथिला छल । हिनक प्रथम तर्क ई अछि जे साधारणतया लोक ई मानैत छथि जे सन्त कबीरक जन्म काशी मे भेल छल । यद्यपि एकर समर्थन मे एकोटा विश्वसनीय प्रमाण नहि भेटैछ। हँ, एतेक अवश्य सत्य अछि जे ओ अपन जीवनक अधिकांश भाग काशी मे वितओने छलाह जे निम्नलिखित पाँती सभ सँ स्पष्ट होइत अछि–

बहुत बरख तप कीया काशी ।
सकल जन्म शिवपुरी गँवाया ।
मै काशी का जुलहा । इत्यादि ।

वस्तुत: सन्त कबीरक जन्मस्थानक सम्बन्ध मे हुनक जाहि पद सभक आधार पर काशी केँ हुनक जन्मस्थान मानल जाइत अछि से निर्विवाद नहि अछि । सन्त कबीर अपन कोनो पद मे स्पष्ट रूपें अपन जन्म-स्थानक सम्बन्ध मे नहि कहलनि अछि आ जाहि प्रमाणसभक आधारपर हुनक जन्मस्थान काशी कहल जाइत अछि से बहुधा जनश्रुति ओ अनुमान पर आधारित अछि ।

डा० पारसनाथ तिवारी एहि सम्बन्ध मे कहलनि अछि जे लहरतारा, जे काशीक कबीरचौरा सँ उत्तरपश्चिम दिस लगभग दू माइल पर अछि, समस्त कबीरपन्थी द्वारा निरपवाद रूप सँ कबीरक जन्म स्थान मानल जाइत अछि । सम्प्रदायेतर व्यक्ति सभ मे अधिकांशक झुकाव आब एकरे कबीरक जन्मस्थली मानबाक पक्ष मे भेल जा रहल अछि । किन्तु लिखित रूप मे एकर परम्परा बीसम शताब्दी सँ पूर्वक नहि भेटैछ । कबीरक जन्म स्थानक रूपक मे लहरताराक उल्लेख सर्वप्रथम स्वामी परमानन्ददासक **कबीर मंशुर** (सं०१९६६वि०) बाबू लैहना सिंह कृत **कबीर कसौटी** (सं० १९७१ वि०) तथा स्वामी युगलानन्द कृत **कबीर चरित्र बोध** (सं० २००६ वि०) मे भेटैछ । रामानन्दी सम्प्रदायक ग्रन्थक रचनाकाल सं० १५१५ वि० देल गेल अछि, मुदा महात्मागांधी पर्यन्तक उल्लेख भेटि गेला सँ एकरा अत्याधुनिक ग्रन्थ मानल जयबाक चाही आ एकर साक्ष्य पर आँखि मूनि कए विश्वास नहि करक चाही। एहि प्रसंग मे काशीक उल्लेख अवश्य किछु प्राचीन रचना सभ मे भेटैत अछि, मुदा तकरो परम्परा अधिक सँ अधिक सं० १८०० वि० धरि सिद्ध कयल जा सकैछ, ओहिसँ पूर्व नहि। 'काशी मे हम प्रगट भये हैं रामानन्द चिताए' आदि पंक्ति जाहि पद सभमे भेटैछ ओकरा कबीरक प्रामाणिक रचना मानबा मे अनेक कठिनता अछि ।" एतावता डा० तिवारी सेहो एहिसँ सहमत छथि जे काशी मे कबीरक जन्मभूमि होएब निर्विवाद नहि अछि ।

डा० केदार नाथ द्विवेदी यद्यपि काशी कैँ कबीरक जन्मभूमि मानबा सँ सहमत भेलाह अछि, मुदा हुनको आधार सशक्त नहि, अपितु परंपराक अनुपालन पर आधारित अछि । काशी कैँ कबीरक जन्मभूमि मानबाक आधार कैँ ओ संदिग्ध कहलनि अछि । हुनकहि शब्द मे 'कबीरक जन्मभूमि काशी मानबाक परम्परा दीर्घकाल सँ चलि आबि रहल अछि । हिन्दीक विद्वान एकर प्रमाण रूप मे **कबीर ग्रन्थावली** आ **गुरु ग्रन्थ साहब** मे कबीरक नामे प्राप्त रचनाक बहुधा उल्लेख कयलनि अछि । कबीर ग्रन्थावली मे काशीक ठग सभक वर्णन भेल अछि आ ओहिठाम ढोंगी पंडितक कौचर्य कयल गेल अछि । मुदा एहि प्रकारक रचना सभ सँ यैह ज्ञात होइत अछि जे कबीरक कार्यक्षेत्र संभवत: काशी छल आ विभिन्न बौद्धिक धरातलक व्यक्तिक सम्पर्क मे अयबाक कारण कदाचित हुनक अनुभव सेहो काशीए मे पुष्ट भेल छल । एहि पांती सभक आधार पर काशी के कबीरक जन्मभूमि सिद्ध नहि कयल जा सकैछ । 'जनम जनम हम कासी सेइया' सँ सेहो ई ध्वनित नहि होइछ जे कबीर काशी मे जन्म लेने होएताह । **कबीर ग्रन्थावली** मे कबीर ब्राह्मण समुदाय कैँ संबोधित करैत कहलनि अछि 'तू बाभन मै काशीका जुलहा' एहि पाँति सँ ई सोचबाक अवसर भेटैत अछि जे संभवत: कबीर काशी मे जन्म लेने होथि'।" एतावता डा० द्विवेदी कबीरक जन्मभूमि काशी मानबा कैँ संभावनाक आधारे पर स्वीकृति देलनि अछि ।

एहि तरहें कबीरक जन्मभूमि काशी नहि छल होयत तकर संभावना हिन्दीक आलोचकलोकनि सेहो स्वीकार कएलनि अछि जे डा० सुभद्र झाक मतक अनुकूल अछि। डा० झा काशीक संग कबीरक सम्बन्ध पर विचार करैत कहलनि अछि जे कबीरक रचना मे एकटा पंक्ति अवश्य भेटैत अछि जाहि सँ आपातत: ई ज्ञात होइछ जे हुनक जन्म मगहर मे भेल छल आ जखन ओ किछु पैघ भेलाह तँ काशी चल गेलाह–

पहिले दरसन मगहर पायो
पुनि काशी बसे आई ।

पुनश्च डा० झा अपन एहि मत कैँ सेहो खण्डित करैत दरसनक अर्थ ज्ञानक प्रत्यक्षीकरण कयलनि अछि । आ कहलनि अछि जे कबीरदास कैँ ज्ञानक उपलब्धि सर्वप्रथम मगहर मे भेल छल तें मगहरो हुनक जन्मभूमि नहि छल ।"

एतावता काशी ओ मगहर कैँ कबीरक जन्मभूमि नहि मानि डा० सुभद्र झा अनेक तर्कक आधार पर ई सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि अछि जे सन्तकबीर मिथिलाक मूल निवासी छलाह तथा एहिठामक लोकव्यवहार ओ प्रचलित धर्म सँ नीक जकाँ परिचित छलाह । अपन मतक समर्थन मे हुनक पहिल तर्क छनि जे 'जतय मुसलमानक आक्रमण सँ पीड़ित उत्तरीय भारतक अन्य देश मे ज्ञान तथा भक्तिक धारा बहि रहल छल ओतए मिथिला मे स्मार्त तथा मीमांसकक प्रबलता छल । सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोण सँ कबीरदासक समय मे मिथिलाक

अवस्था दोसर प्रान्त सभ सँ भिन्न छल । संभव अछि कबीरदास कँ अन्य प्रान्तक लोकक दशाक ज्ञान तखन भए गेल होइन जखन ओ मिथिला मे रहैत छलाह तथा बाहरी परिस्थितिक प्रभाव हुनका मन पर ततेक ने पड़लनि जे मैथिलक शक्तिपूजा ओ एहिठामक प्रचलित कर्मकाण्डक महत्ता सँ हुनक विश्वासे उठि गेलनि । संगहि हुनका एकरा प्रति ततेक घृणा भेलनि जे ओ सर्वथा ज्ञानमार्गी भए गेलाह तथा अपना कँ वैष्णव बना देलनि। हुनक वैष्णवक ओ अर्थ नहि अछि जे आन वैष्णवलोकनि करैत छथि अर्थात विष्णुक भक्त। एहि तरहें कबीरदासक मत मे शक्तिक अर्थ शक्तिक उपासक नहि अछि । यदि एतेक भेद हुनक शब्दक अर्थ मे रहैत तँ ओ शाक्तक प्रति जाहि उग्रताक संग अपन घृणा व्यक्त कयलनि अछि, से नहि कएने रहितथि । ओ तँ शाक्त सँ मत्स्यमांस भोजी तथा वैष्णव सँ शाक भोजी बुझलनि अछि । यैह अर्थ आइयो मिथिला मे वैष्णव तथा शाक्त पदक हेतु प्रचलित अछि। दक्षिणदेशीय वैष्णव शाक्तक घर मे भोजन नहि करैत छथि तथा बंगाली वैष्णव खूब माछ खायल करैत छथि तथा घर मे शक्तिपूजक मैथिल मे कतोक एहन छथि जे आइयो माछ-मांस नहि खाइत छथि तथा भोजादिक अवसर पर हिनका वैष्णव कहल जाइत छनि, यद्यपि हुनका गरदनि मे ने तुलसीक माला रहैत छनि ने ओ वैष्णव जकाँ चन्दन करैत छथि ।'

यदि कबीरदास काशी अथवा मगहरक रहितथि तँ मत्स्यभोजीक एहि उग्रताक संग खण्डन करबाक अवसर हुनका नहि भेटितनि । परंपरा सँ काशी मे मैथिलो माछ-मांस नहि खाइत छथि । माछ खायवला कँ कबीरदास कुत्ताक भाइ पर्यन्त कहि देलनि अछि–

साकत सुनहा दूनों भाई
एक नीदै एक भौंकत जाई ।

'मिथिलाक ई चालि अछि जे जे व्यक्ति माछ नहि खाइत छथि तकर बहुत निन्दा कएल जाइत अछि । संभवत: कबीरदास हुनकालोकनि सँ परास्त भए हुनकालोकनि कँ एहि तरहें गारि पढ़ब आरंभ कए देने होथि । आइयो जँ कोनो मैथिलक ओतए कोनो कण्ठीधारी जुमि जाइत छेक तँ ओकरा लोक खोझबैत छथि । अतएव जे माछ नहि खाइत छथि से मैथिल सँ दूर रहय चाहत छथि । कबीरदास कहलनि अछि–

वैश्नो की छपरी भली ना साकत का बड़ गाँव ।
साकत बाभण मति मिलै, बैसनो मिले चंडाल ।
अंक माल दै मेटियै मानौं मिले गोपाल ।

काशी तथा मगहर सँ उत्पन्न सन्तक एहि प्रकारक उक्ति संभव नहि अछि । निश्चिते कबीरदास जतय जन्म लेने छलाह । ओहिठामक ब्राह्मण मत्स्यभोजी छलाह । की भगवान महावीरक अनुयायी जैनलोकनिकेँ छोड़िकय कोनो आन सम्प्रदायक लोक मत्स्यभक्षणक एहन जोरदार खण्डन कएलनि अछि जतेक कबीरदास कएने छथि ? जतय मत्स्यभक्षणक परम्परा नहि रहतैक ओहिठामक सन्त कँ ओकर विरुद्ध कहबाक कोनो आवश्यकता नहि रहतैक की सूर, तुलसी, मीर नामदेव आदिक ग्रन्थ मे मत्स्यभक्षणक खण्डन एहि प्रकारें भेटैछ । एतय इहो ज्ञातव्य अछि जे भगवान महावीर मिथिलाक छलाह ।[7]

मुदा कतेक हिन्दी आलोचक डा० सुभद्र झाक एहि मत सँ सहमत नहि छथि । डा० पारसनाथ तिवारी डा. सुभद्र झाक एहि मतक खण्डन करैत कहलनि अछि जे कबीरक रचना मे शाक्तक सम्बन्ध मे जे उल्लेख भेटैछ, ताहि आधार पर कहल जा सकैछ जे कबीरक दृष्टि मे शाक्त ओ अछि जे भक्त नहि हो, रामक नाम नहि लैत हो, जकरा मे सज्जनता कनेको नहि होइक, प्रत्युत जे दम्भी, विषयासक्त, भ्रष्टाचारी आ निन्दक हो । एकर विपरीत वैष्णव ओ अछि जे रामक भक्त हो, सज्जन-सदाचारी तथा कामिनी-कंचनक छल सँ मुक्त हो । दुनूक विभाजन मे कबीरक सर्वाधिक यत्न ओकर रामभक्त होयबा अथवा नहि होयबा पर, विषय भावनाक भोग अथवा त्याग पर बूझि पड़ैछ, नहि कि माछ खयबा पर अथवा नहि खयबा पर । उदाहरण हेतु ओ **कबीर ग्रंथावली**क ई पद प्रस्तुत कएलनि अछि–

बैस्नौं की कूकरि भली, साकत की बुरी माइ ।
वह बैठी हरि जस सुनै, वह पाप बिसाहन जाइ ।।
भगत हजारी कापड़ा तामै मल न समाइ ।
साकत काली कामरी भावै तहाँ बिछाइ ।
कबीर साकत कोइ नहीं, सवै बैस्नौं जानि ।
जिहि मुखि राम न उचरै, ताहि तन की हानि ।।
हंस न मरै मरिहैं संसारा । हमको मिला जिआवनहारा ।
साकत मरहिं संत जन जीवहिं । भरि-भरि राम रसाइन पीवहिं ।।[8]

कबीर जे शाक्तक निन्दा कयलनि अछि ओ डा० सुभद्र झाक अनुसार शाक्तक प्रतिक्रियाक परिणामस्वरुप अछि । मुदा हुनक निन्दा मध्यकालक किछु एहनो संत कयलनि अछि जनिक मिथिलासँ कोनो सम्पर्क नहि छलनि । उदाहरणार्थ गुरु नानक तथा रामदासक वाणी मे सेहो शाक्तक निन्दा भेटैत अछि । वस्तुत: कबीरक समय मे सेहो बौद्धसिद्धक साधना सँ प्रभावित कौलसाधना प्रचलित छल जाहि मे नारीक साहचर्य आवश्यक बुझल जाइत छल । कबीरक शाक्त वस्तुत: वैह कौल साधक छलाह जकरा ओ बेर-बेर विषयासक्त कहलनि अछि ।[9]

डा० पारसनाथ तिवारीक मतक समर्थन मे डा० केदारनाथ द्विवेदी कहलनि अछि जे डा० सुभद्र झाक मतक विरोध **कबीर ग्रन्थावली**क अनेक पंक्ति सँ ध्वनित होइत अछि जे कबीर मांसाहारीएटाकेँ शाक्त नहि कहलनि अछि, अपितु ओहनो लोक कँ शाक्त कहलनि अछि जनिक ह्दय मे रामक भक्ति नहि अछि तथा जे मानवोचित गुण सँ रहित छथि। यथा–

मारी मरुं कुसंग की, केला काठै वेरि ।
वो हालै वो चीरिये, साषित संग न बैरि ।
मेरो संगी दोइ, जणा, एक वैष्णो एक राम ।
वो दाता है मुकति का वो सुमिरावे नाम ।।

कबीरकेँ वैष्णव रामभक्तिक कारणें प्रिय छनि । एकर अतिरिक्त शाक्त विरोध मे सन्त कबीर नहि केवल वैष्णव शब्दक अपितु संत शब्दक सेहो प्रयोग कएलनि अछि, जेना–

साकत मरै संत जन जीवै ।
भरि भरि राम रसाइन पीवै ।।

डा० केदारनाथ द्विवेदी डा० सुभद्र झाक एहू मतक खण्डन कएलनि अछि जे शक्तिक उपासक मैथिल वैष्णव जकाँ तुलसी माला धारण नहि करैत छथि, मुदा माछ नहि खयबाक कारणें भोजादिक अवसर पर वैष्णव कहल जाइत छथि आ कबीरकेँ वैष्णवक यैह परिभाषा मान्य छनि । हुनक अनुसार वस्तुतः कंठीमालाधारीए वैष्णवक प्रति कबीरक रुझान छलनि **कबीर ग्रन्थावली** मे एहन अनेक रचना अछि जाहि सँ ज्ञात होइछ जे वैष्णवक छाप ओ तिलक पर सेहो कबीरक ध्यान छलनि, यथा–

वैसनौं भया तौ का भया, बूझा नहीं बिवेक ।
छापा, तिलक बनाइ करि, दग्ध्या लोक अनेक ।।

एहि तरहें डा० सुभद्र झाक उपरोक्त मतकेँ विरुद्ध जे मत भेटैत अछि तकरा आधार पर हिनक मैथिलत्व सम्बन्धी अवधारणाक खण्डन सर्वथा सशक्त नहि कहल जा सकैछ। डा० झाक दोसरा तर्कक आधार अछि जे कबीरदास स्वयं कहलनि अछि जे–

लोगा तुमही मति के भोरा ।
ज्यों पानी-पानी मे मिलिगो
त्यों दुरि मिल्यो कबीरा ।
ज्यों मैथिल को सच्चा वास
त्योंहि मरण होय मगहर पास ।।

एहि सँ स्पष्ट अछि जे कबीरदासक अन्तकाल मे हुनका मन मे जन्मभूमि मिथिलाक प्रति आभ्यन्तरिक ममता वर्त्तमान छलनि । मरणकाल मे हुनका केवल तीन गोट प्रान्तक स्मरण भेलनि-मिथिला, काशी तथा मगहर । एक दिस तँ ओ मिथिला आ मगहर केँ एक समान कहलनि अछि तँ दोसर दिस काशी आ मगहरकेँ समान बुझलनि अछि–

बहुत बरख तप किया काशी ।
मरण भया मगहर वासी ।
काशी-मगहर सम वीचारी ।।

डा० सुभद्र झाक एहि तर्कक खंडन डा० तिवारी करैत कहलनि अछि जे एहि तर्कक पुष्टि मे **बीजकक** जे उद्धरण देल गेल अछि तकर पाठ वस्तुतः भ्रमात्मक अछि । **बीजकक** समस्त हस्तलिखित ओ मुद्रित संस्करण मे वासक स्थान पर व्यास पाठ भेटैत अछि जकर आधार पर कबीरक मिथिला निवास सिद्ध नहि कयला जा सकैछ । डा० केदारनाथ द्विवेदी सेहो एहि मतक संमर्थन करैत बीजकक पाँती एहि रुपें प्रस्तुत कएलनि अछि–

जो मैं थीकों सांचा व्यास ।
तोर मरन हो मगहर पास ।।

डा० सुभद्र झाक तेसर तर्क कबीरदासक एहि पद पर आधारित छनि जे ओ अपन प्रधान शिष्य धनी धर्मदास केँ संबोधित करैत कहलथिन अछि–

सावन भादव बरिसै मेहा ।
एते सबद हम कहयौ विदेहा ।।

ई पद सर्वज्ञासागर सँ उद्धृत अछि । डा० सुभद्र झा एहिठाम विदेह शब्दक अर्थ मैथिल कएलनि अछि नहि कि जीवन्मुक्त । हुनका अनुसार ई पद तखन कहल गेल छल जखन कबीर जीवित छलाह । मुदा कबीरदास शंकरक समान जीवनक अवस्था मे मुक्त होएब संभव नहि मानैत छलाह । कबीरपन्थ मे शरीर छोड़लाक बादे आत्मा ओ परमात्माक साक्षात्कार संभव अछि ।

मुदा डा० पारसनाथ तिवारी हुनक एहू तर्क पर शंका प्रकट कएलनि अछि । हुनका अनुसार **सर्वज्ञासागर** कबीर ग्रंथक परवर्ती रचना अछि जकर रचयिताक ठीक पता नहि । ओहि मे आएल विदेह शब्दक अर्थ मैथिल लगएबा केँ ओ हास्यास्पद कहलनि अछि । हुनका ईहो कथन मान्य नहि छनि जे कबीर अथवा कबीरपंथी जीवन्मुक्तिक सिद्धानत केँ नहि मानैत छथि । तथ्य एकर स्पष्ट विपरीत अछि । स्वत: सन्त कबीर जीवन्मुक्तिकेँ सिद्धान्त केँ श्रेयस्कर कहलनि अछि, यथा–

अब मन उलटि सनातन हूवा ।
तब जाना जब जीवत मूवा ।।

डा० केदारनाथ द्विवेदी सेहो डा० पारसनाथ तिवारीक मतक समर्थन कएलनि अछि । हुनका अनुसार धर्मदास केँ निर्विवाद रूपसँ कबीरक समसामयिक सिद्ध नहि कयल जा सकैछ । डा० पारसनाथ तिवारी अपन मतक समर्थन मे कहलनि अछि जे परवर्ती कबीरपंथीलोकनिकेँ सेहो यैह सिद्धान्त मान्य छनि । सर्म्पूण संत साहित्य मे मरणोत्तर मुक्ति तथा स्वर्गनरक आदिक कल्पनाक प्रति अविश्वास प्रकट कयल गेल अछि आ जीवित अवस्था मे मोक्ष प्राप्ति पर बल देल गेल अछि । कबीर तँ कहलनि अछि जे–

पिंड परे जिव जैहै जहाँ । जीवित ही लै राखौ तहाँ ।।

सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक संपुष्टि मे डा० सुभद्र झाक अन्य तर्क अछि हुनक ई साखी–

बोली हमरी पूर्व की, हमे लखा नहिं कोइ ।
हमकों तो सोई लखै, धुर पूरब का होय ।

डा० झा कहलनि अछि जे सन्त कबीर काशी मे रहैत छलाह । काशी मे रहिकय ओ ई कहने छलाह । अवश्ये हुनक भाषा काशीक धूर पूरब (दूरपूर्व) प्रदेशक भाषा छल । **अर्थात्** भोजपुरी क्षेत्रहुँ सँ दूर मिथिलाक ।

मुदा डा० पारसनाथ तिवारी हुनक एहि तर्क केँ खंडित करैत कहलनि अछि जे पूरबीक अर्थ मैथिलीए मानल जाए से आवश्यक नहि । प्राचीनकाल सँ मध्यप्रदेश सँ पूर्व मे बाजल

जायवला बोली सभ कें पूर्वी कहल जा सकैत छैक ।[28] मुदा डा० तिवारीक ई तर्क सर्वथा निरापद नहि कहल जा सकैछ ।

कबीरपन्थी श्री रामनन्दन दास एहि साखीक आध्यात्मिक व्याख्या कय वस्तुत: पूर्वी कें आध्यात्मिक भाषा सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि अछि । हुनक अनुसार 'एहि साखी सँ ई निष्कर्ष नहि निकालबाक चाही जे सन्त कबीरक बोली पूर्वी छल, अपितु एकर भाव ई अछि जे सन्त कबीर जे किछु गप्प कहैत छलाह से पारमार्थिक होइत छल । तें सांसारिक व्यक्ति हुनक बोली कें नहि बुझि सकैत छल । हुनक बोली तँ वैह बुझि सकैत छल जे निश्चयं आध्यात्मिक होएत । आगू ओ कहलनि अछि जे जखन सन्त कबीर अपन भगवद् दर्शन अथवा रामक परिचायक अलौकिक अनुभव कें लौकिक वाणी मे व्यक्त करैत छथि तँ ओकर भाव कें परखि लेब सरल नहि रहि पबैत छैक, किएक तँ ओ खूब दुर्वोध भए जाइत छैक, यैह हुनक पूरबक बोली हृदयाकाशक शब्द, हुनक आध्यात्मिक अनुभव छनि। एहि मर्म कें वैह परखि सकैछ जे धूर पूरबक हो अर्थात् ओही पन्थक पथिक हो, स्वयं साधक हो, रामधरि पहुँचल हो ।[29]

श्रीदासक आध्यात्मिक विवेचनाक अनुसार 'जाहि तरहें सन्त कबीर योग सँ युक्त छलाह तहिना प्रत्येक भाषाक जानकार सेहो छलाह । यैह कारण अछि जे हुनक कविता मे अनेक भाषाक दर्शन होइत अछि । ततबे नहि, हुनक भाषा जतहि देखल जाइछ, ओहि देशक भाषा मे हुनक कविता पाओल जाइछ । अतएव ई निश्चयपूर्वक नहि कहल जा सकैछ जे हुनक कविता पंजाबी भाषा मे अछि की मराठी अथवा बंगाली मे ।[30] एतावता सन्त रामनन्दनदास परोक्ष रूपें डा० सुभद्र झाक अवधारणा कें सम्पुष्टे कएलनि अछि आ स्वीकार कएलनि अछि जे सन्त कबीरक भाषा पर मैथिलीक सुनियोजित छाप रहब कें अस्वीकारल नहि जा सकैछ । एहि तथ्य कें डा० पारसनाथ तिवारी सेहो स्वीकार करैत कहलनि अछि जे, 'कबीर छाप सँ नहि केवल मैथिली मे प्रत्युत पंजाबी, गुजराती, मराठी तथा अन्य प्रान्तीय भाषा सभ मे सेहो अनेक पद भेंटैछ ।' मुदा एहि तथ्य पर आधारित भए कबीर कें कोनो प्रान्त विशेषक निवासी सिद्ध करब निरापद नहि कहलनि अछि । एकरा ओ कबीरक लोकप्रियताक अभिधान देलनि अछि ।[31]

कबीरक भाषिक व्यापकता पर विचार करैत आचार्य रामनन्दनदास कहलनि अछि जे 'युगीन परिस्थिति सँ बाध्य भए सन्त कबीर कें भाषिक विश्रृखलता कें अपनाबए पड़लनि। ओ समय मुसलमानक छल । ओ सभ संस्कृत ग्रन्थ कें नष्ट कय चुकल छलाह । संस्कृत विद्वान कें जान बचायब मुश्किल छलनि । विद्यालय पुस्तकालय नष्ट कय देल गेल छल। एहन परिस्थिति मे संस्कृतेतर भाषा नहि अपनयबाक अतिरिक्त दोसर चारा नहि छल । यैह सोचि कय कबीर उभय पक्ष कें मान्य मध्यमार्गीय हिन्दी भाषाकें अंगीकार कयने होयताह जाहि मे संस्कृत, फारसी, बंगला, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मगही, मैथिली, गुजराती इत्यादिक समावेश छल । सन्त कबीर कविक रूपमे तँ आयल छलाह नहि, अतएव ओ जनसाधारण कें मुक्ति दिअयबाक हेतु ओकरा बुझबा योग्य भाषाकें अपनौलनि ।[32] श्री दासक एहि मत सँ कबीरक मैथिलत्व सम्बन्धी अवधारणाक पुष्टिए होइत अछि ।

श्री परशुराम चतुर्वेदी अपन ग्रंथ **कबीर साहित्यकी परख** मे कहलनि अछि जे धूर पूरब कोनो एहन स्थान अथवा प्रदेश कें सूचित करैछ जे जतय कहल जा रहल अछि ओहि ठाम सँ कोनो नितांत पूर्वी छोर पर पड़ैत छल आ ओहिठामक भाषा एहन विचित्र होइत छल होयत जकर कारण सन्त कबीरक उक्ति और अधिक रहस्यमय बनि जाइत होयत तथा ओकरा बुझब अत्यन्त कठिन भय जाइत होयतैक । ओ कबीरक एकटा अन्य पंक्तिक सूचना दय पूरब शब्दक व्याख्या कयलनि अछि । ओ पंक्ति अछि–

पूरब दिशा हंस गति होइ ।
है समीप संधि बूझै कोई ।

परशुराम चतुर्वेदीक कहब छनि जे एतय पूरब दिशा द्वारा ओहि मौलिक स्थितिक संकेत देल गेल अछि जतय जीवात्मा ओ परमात्माक बीच कोनो प्रकारक अन्तरक अनुभूति नहि रहैछ, ओ दशा सहज साधनहि सँ उपलब्ध भय सकैछ, मुदा ताहि हेतु कोनो विरले पुरुष समर्थ भए सकैत छथि ।

अतएव कबीर साहेबक साखीक आध्यात्मिक दृष्टिकोण सँ विचार करैत ओ 'बोली हमरी पूरब की हमें लखै नहि कोय हमको तो सांई लखै, धुर पुरब का होय' पदक अर्थ करैत कहलनि अछि जे हमर कथन मौलिक दशा सँ सम्बन्ध रखैछ, जाहि कारणें हमरा क्यो बूझि नहि पबैछ। हमर बात वैह बूझि सकैछ जे ओकर अनुभव कय लेने हो ।[33]

एहि तरहें परशुराम चतुर्वेदीक मत मे डा० सुभद्र झाक पूर्वोक अर्थ मैथिली समीचीन नहि बूझल जा सकैछ, मुदा श्री चतुर्वेदीक ई मत आध्यात्मिक विवेचनक आधार पर अनुमानाश्रिते अछि । तें सशक्त ओ प्रमाणिक नहि मानल जा सकैछ ।

संत कबीरक साधु शब्दावली पर विचार करैत डा० रामखेलावन राय 'दीपक' कहलनि अछि जे कबीरक भाषा कें लय कय लेखकलोकनि मे अनेक मत मतान्तर अछि । किछु लेखकक मत छनि जे कबीरक शब्द बनारस, मिर्जापुर तथा गोरखपुर लगपासक बोलीक थिक तँ अनेक हिनक भाषा कें ठेठ प्राचीन पूर्वी कहलनि अछि । किनको कबीरक ग्रन्थावलीक भाषा मे पंजाबीपन सेहो देखि पड़ैत छनि ।

एहिं तरहें मतमतान्तर अछि, मुदा हमरा दृष्टि मे एकेटा तथ्य अबैत अछि जे संतकबीर दूर-दूर धरि देशाटन कएलनि आ क्षेत्रीय स्थानीय शब्दक स्वाभाविक रूप सँ प्रयोग कएलनि जे आइ मतमतान्तरक विषय बनल अछि ।[34]

श्री यज्ञदत्त शर्मा कबीरक भाषा पर विचार करैत कहलनि अछि जे 'कबीरक भाषा कें कोनो सीमा विशेष मे बान्हब सर्वथा भ्रम अछि ।' हिनक भाषा मे अनेक प्रकारक प्रचलित भाषा ओ बोलीक शब्दक सम्मिश्रण देखि पड़ैत अछि । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिनक भाषा कें सधुक्कड़ी कहि कय संतोष कय लेलनि अछि । सधुक्कड़ीक अर्थ भेल साधुलोकनिक मिलल-जूलल भाषा, जाहि मे ने तँ कोनो भाषाक प्रतिबन्धे छैक न प्रदेश विशेषक । ई भाषा मूल रूप सँ हिन्दीए अछि, मुदा ओहि पर प्रादेशिक भाषाक प्रभाव सेहो पूरा नहि छैक । एकर प्रधान कारण ई अछि जे कबीरक वाणी हनक भक्तक अनुरूप अपन स्वरूप बनओलक आ

चूँकि पंजाब, राजस्थान आ उत्तरप्रदेश तीनू स्थान पर हिनक शिष्य रहैत छलथिन तें हिनक रचना मे प्रधान रूप सँ पंजाबी, राजस्थानी, आ पूर्वी हिन्दीक स्वरूप देखि पड़ैछ ।[३५]

यद्यपि कबीरदास कहलनि अछि जे 'बोली मेरी पूरबी' तथापि खड़ी ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी, फारसी, आदि अनेक भाषाक पुट हुनका उक्ति पर चढ़ल अछि । पूर्वी सँ हुनक की तात्पर्य से तँ नहि कहल जा सकैछ । हुनक बनारस निवास पूर्वी सँ अवधी अर्थ लेबाक पक्ष मे अछि, मुदा हुनक रचना मे बिहारीक सेहो पर्याप्त मेल अछि । एतय धरि जे मगहर मे आ जे पद सभ कहलनि अछि ताहि मे मैथिलीओक किछु संसर्ग देखि पड़ैछ । यदि बोलीक अर्थ मातृभाषा लेल जाय आ पूरबीक बिहारी तँ कबीरक जन्मक विषय पर नवे प्रकाश पड़ि जायत ।[३६]

एहि तरहें यज्ञदत्त शर्मा जे अनुमान सभ उपस्थापित कयलनि अछि तकर आधार पर कबीरक जन्मभूमि मिथिला होयबाक अवधारणा सम्पुष्ट होइछ । जेंकि हुनक भक्तमंडली मिथिलो मे प्रचुर छल तें एहिठामक भाषा सँ तँ ओ प्रभावित छले होयताह ।

कबीरक मैथिलत्व विषयक डा० सुभद्र झाक अवधारणाक संबन्ध मे विलियम डायर एस० जे० अपन पोथी **'कबीर: सिंगर आफ द डिवाइन'** मे कहलनि अछि जे– One recent scholar, seeing how many kabir manuscripts were in Maithili, tried to prove that kabir came from Mithila, an effort at least testified to Kabir's influence on Bihar.[३७]

ओ अपन पोथी मे ई स्वीकार कएलनि अछि जे बिहारक भूमि ओहि भूमिक रूप मे प्रतिष्ठापित कएल जा सकैछ जतय कबीर रहैत छलाह आ घूमल छलाह ।[३८]

एही मतक समर्थन श्रीगंगाशरण शास्त्री सेहो कयलनि अछि । हुनक शब्दमे 'कबीर साहेबक वाणी मे......मुजफ्फरपुर, मिथिला क्षेत्रक बोली तत्वक सम्मिश्रण स्वाभविक अछि ।[३९] **कबीर जीवन चरित्र** मे ओ कहलनि अछि जे 'सन्त कबीर अपन सन्त मंडलीक संग रामभक्तिक प्रचार-प्रसार करैत मिथिला पहुँचलाह आ कतेको मैथिल पण्डित ओ तांत्रिक सँ भेंट कएल । ओ मंडली दरभंगा, खगड़िया आ मुंगेर आदि स्थान पर भ्रमण कयलक आ रामचर्चा कएलक । एतय मैथिल पण्डित सभ सँ कबीर केँ विरोधक सामना करय पड़लनि। कारण, एतुका लोक सामान्यतया स्मार्त रहथि तथा राम मात्रक भक्तिक घोर विरोधी । तें प्रचारकलोकनि केँ डेग-डेग पर बाधा उपस्थित कएल गेल । मैथिली पण्डित आ सन्तमंडलीक बीच कतेको दिन धरि शास्त्रार्थ चलैत रहल जाहि मे पण्डित सभ केँ पराजित कय श्रुतिगोपाल साहेब जीति गेलाह । तहिआ सँ मिथिलाक लोकसभ सन्त कबीरक सिद्धान्त केँ अपनोओलनि आ कबीरक पन्थक प्रचार-प्रसार मिथिलहु मे बढ़तहि गेल ।[४०]

शास्त्रीजीक उपरोक्त कथन सँ स्पष्ट अछि जे कबीर पन्थक मिथिला मे व्यापक प्रभाव पड़ल । मिथिला निवासक अवधि मे सन्त कबीर मैथिली भाषहि मे रचना कएने होयताह आ उपदेश देने होयताह । प्रचुर मैथिली पदावली मिथिला ओ मैथिलीक संग हुनके संपृक्तिक संकेत दैत अछि ।

एहि तरहें संत कबीरक जन्मभूमि ओ भाषाक सम्बन्ध मे यावन्तो तर्क उपस्थापित कएल

गेल अछि आ ओकर खण्डन ओ मण्डन होइत रहल अछि । ताहि आधार पर ई निश्चय नहि कहल जा सकैछ जे सन्त कबीर मैथिल छलाह आ हुनक भाषा एकमात्र मैथिली छल । तखन एतबा तँ अवश्यं स्पष्ट अछि जे एकांगी विचारधारा केँ छाड़ि देला पर विद्वानलोकनि हिनक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक दावा केँ नकारि नहि सकैत छथि । संगहि कबीरक भाषा पर मैथिलीक विशिष्ट छाप, हुनक भणिता मे प्राप्त शताधिक मैथिली पद, हुनक शिष्य परम्पराक द्वारा रचित विपुल मैथिली पद आदि सेहो एहि अवधारणाक संपुष्टि करैत अछि ।

कबीर पन्थक प्रमुख पोथी सभ जेना **बीजक, कबीर साहेब की शब्दावली, कबीर शब्दावली, कबीर वचनावली, कबीर ग्रन्थावली, कबीर वाणी, आदि सन्देशा सन्त कबीर, कबीर भजनमाला** आदि मे मैथिलीक विपुल प्रयोग भेटैत अछि जेना–

रूइया आंटि आंटि कइलि गुनाआंन ।
घर नहि खरची दोबरि घुनाआंन ।
किअए हो सजनी, कइसे कए लुगबा पहिरब।
कइसे दिन काटब रे की ।

एहि पदमे रूइया, कएल, खरची, आदि शब्द, विभिन्न क्रिया सभ, लगनीपरक भास आदि मे मैथिलीक सुन्दर निदर्शन देखि पड़ैछ । **बीजक** मे प्रयुक्त पीतर पाथर पूजने लागे,[४१] जोलहा तान बान नहि जानै,[४२] कंस जरै जस घास की पूली[४३] चारि ब्रिछ छौ शाखा वाके पत्र अठारह भाई,[४४] आदि मे मैथिलीक पुट देखि पड़ैछ । बीजकक किछु पद तँ पूर्णतः मैथिलीक पदावली थिक । एही पद मे खासकए क्रियापदक स्वरूप द्रष्टव्य अछि, जेना रखलौं, पड़लौं, गहलौं आदि–

माई मै दूनो कुल उजियारी ।
बारह खसम नैहरै खायो । सोरह खायो ससुरारी ॥
सासु नन्द पटिया मेलि रखलौं । भसुरहि परलौं गारी ॥
जारों मांग मैं तासु नारि की । जिन सरवर रचल धमारी ॥
जना पाँच कोखिया मिलि रखलौं । और दुइ औ चारी ॥
पार परोसिनि करे कलेबा । संगहि बुधि महतारी ॥
सहजे बपुरे सेज विछावल । सूतलि मैं पाँव पसारी ॥
आवों न जावों मरों नहिं जीवों । साहेब मेटल गारी ॥
एक नाम मैं निजु कै गहलौं । ते छूटल संसारी ॥
एक नाम मैं बदिकै लेखैं । कहै कबीर पुकारी ॥[४५]

एहिना एकटा अन्य पद मे सेहो तहिना, अछलौं, अइली आदिक प्रयोग विशुद्ध मैथिलपरक अछि । पदक स्वरूप एना अछि–

अब हम भैलि बहुरि जल मीना ।
पूरब जनम तप का मद कीना ॥

तहिया मैं **अछलौं** मन बैरागी ।
तजलों लोग कुटुम राम लागी ।।
तजलंउ मैं कासो मति भइ भोरी ।
प्राननाथ कहु का गति मोरी ।।
हमहिं कुसेवक कि तुमहिं अयाना ।।
दुइमा दास काहि भगवाना ।।
हम चलि अइलों तुम्हरे सरना ।
कतहु न देखौं हरिजी के चरना ।
हम चलि **अइलौं** तुम्हरे पासा ।
दास कबीर भल कैल निरासा ।।[६]

बीजकक अतिरिक्त कबीर साहित्य मे खासकय सोहर, समदाउनि, मंगल लगनी घांटो, झुम्मरि, कोहबर तथा निर्गुण भजन मे मैथिलीक पुष्कल पदावली दृष्टिगोचर होइछ। उदाहरणार्थ ई मंगल पद द्रष्टव्य–

आजु सुदिन शुभ-शुभ घड़ी जे पिआ दरसन देल ।।
मेटल सकल करम भरम आतम परिचय भेल ।।[१]।।
मातु पिता सुत परिजना कंओं नहि लागल संग ।
पिआ अनुराग बसल चित चरनकमल पर संग ।।[२]।।
गावथि पाँच सोहागिनी पुलिकित देल आशीष ।
मूल शब्द चित्त राखल मेटल पाँच पचीस ।।[३]।।
जे सुख तीनो भुवन मे नहि सेहओ मोरा पुरल आस ।
गुरु के दयाफल पाओल गाओल कबीर धर्मदास ।।[४]।।

एहि तरहें सन्त कबीरक प्रामाणिक संग्रह सभ मे सेहो विपुल मैथिली पदावली भेटैत अछि। एहि प्रकारक पद मे मैथिली शब्द, मैथिली शिल्प, मैथिली जीवन पर आधारित बिम्ब आदि सन्त कबीरक मैथिलीत्व विषयक अवधारणा कें सम्पुष्ट करैछ। उदारहणक हेतु ई पद द्रष्टव्य अछि–

खेल ले नैहरवा दिन चार ।
पहिली पठौनी तीन जन आये, नौवा ब्राह्मन बारि ।
बाबुलजी मै पैंया तोरी लागौं, अबकी गवन दे टारि ।।
दुसरी पठौनी आपै आये, लेके डोलिया कहार ।
धरि बहियाँ डोलिया बैठारिन, कोउ न लागै गोहार ।
ले डोलिया जाइ बन मे उतारिन, कोइ नहीं संगी हमार ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इक घर है दस द्वार ।।[१०]।।

एहि पद मे द्विरागमनक अवसर पर पहिने दिन मे जेंबाक हेतु नाउ बाभन ओ बटुक कें पठएबाक प्रथा आ तत्पश्चात वरक स्वयं अएबाक लोकव्यवहारक सुन्दर चित्र उरेहल गेल

अछि। मैथिलीक तेसर संज्ञा रूप नैहरवा, लोकजीवनक शब्दावली पहिली, पठौनी, अबकी आदिक प्रयोगक कारणें एहन पदक शब्दावली कें बिहारी वा भोजपुरी कहबाक भ्रम [illegible] जाइत रहल अछि, मुदा थिक ई सभ विशुद्ध मैथिलीए।

सन्त कबीरक पद मे ठेठ मैथिलीक प्रयोग पुष्कल रूपें भेटैत अछि [illegible] हबकुनिआ, गाछी, छेवाओल, सूतब, रूसल, आनत, एमरी, अहिवात, पतिआए, [illegible] लोर, ओहार, चंगेरी, पटकुनिआ आदि। एहि प्रकारक ठेठ मैथिलीक प्रयोग सँ कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक पुष्टि होइत अछि। प्रस्तुत शोधकर्ता कें कबीर भणित [illegible] सँ अधिक पद प्राप्त भेलनि अछि जकर भाषा निःसंकोच रूपें मैथिली कहल जा सकैछ। कबीरपन्थक अन्यान्य संत जेना धर्मदास, साहेबरामदास, इन्दुमति आदिक कबीरपन्थी पद सभ मे सेहो मैथिलीपदावलीक बाहुल्य देखि पड़ैछ।

सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक संपुष्टि एहु तथ्य सँ होइत अछि जे मिथिला मे सन्त कबीरपन्थक प्रचार जन-जन मे अछि। ब्राह्मणेतर मैथिल वर्ग मे कबीरपन्थक विशद प्रचार रहबाक कारण एकर विशिष्ट अध्ययन अद्यावधि नहि भए सकल अछि, तथापि मिथिलाक एहन कोनो व्यक्ति नहि भेटताह जे सन्त कबीरक निर्गुण भजन सँ परिचित नहि होथि। कबीरपन्थ मिथिला मे ततेक प्रचारित भेल जे नहि केवल मिथिला मे कबीरपन्थी मठक स्थापना ओ विकास भेल, प्रत्युत अनेक स्थलक नाम कबीरक आधार पर राखल गेल यथा कबीरपुर, कबीरचक, इत्यादि। सम्प्रदायक रूप मे कबीरपन्थी होइतहुँ एहिठामक कबीरपन्थी सामान्य मैथिल जीवन व्यतीत करबाक कारणें गामघर मे देखार नहि बुझना जाइत छथि, मुदा आचार-पवित्रता आ दासत्व तथा कबीर मतक प्रति निष्ठा एहिठामक कबीरपन्थी मे विशेष रूपें देखल जाइत अछि। कबीर पन्थक चारिटा प्रमुख शाखा मे एकटा प्रधान शाखा जागू शाखाक मठ विदुपुर (जिला वैशाली) मे अवस्थित अछि जकर विभिन्न शाखा सभ मिथिलाक विभिन्न कोण मे अवस्थित अछि आ निरन्तर विकास-पथ पर अछि।

डा० सुभद्र झा कबीरक मैथिलीत्व विषयक अवधारणा कें सम्पुष्ट करबाक दृष्टिऐं हस्तलिखित सूत्र सँ कबीरदासक दस गोट मैथिली पदक संकलन कय प्रकाशित करओने छलाह। एहि मे दूटा मंगल, दूटा सोहर, एकटा झुम्मरि, एकटा समदाउनि, तीनटा भजन आ एकटा चेतावनी गीत अछि। एहि गीत सभक भाषा विद्यापति सँ मिलैत अछि। उदाहरणक हेतु ई समदाउनि द्रष्टव्य अछि–

मिलि चलु सखिआ दिवस भेल रतिआ चित भेल जगसञे उदास ।
पाँच भइआ के एक बहिनि दुलहिन निसदिन फिरए उदास ।।
सासुर हमरो दुरि बसु साजन नैहर नहि भेल वास ।
लाले लाले डोलिआ सबुजी रंग ओहरिआ लागि गेल बतीसो कहार ।
गांड़ लागु पैआ पड़ु अगिला कहरिआ तिल एक डोली बिलमाए ।।[११]

मिथिलाक लोकजीवन मे समदाउनि लोकगीत अत्यन्त प्रशस्त अछि। कन्याक द्विरागमनक

अवसर पर ई गीत विशेष रूपें गाओल जाइत रहल अछि। एहि मे नायिकाक नैहरक प्रति प्रेम ओ करुणाक भावक अनुगुम्फन रहैछ। कन्याक विदाकालक ई करुण आ मर्मभेदी गीत शैली मृत्युकालक कारुणिक दृश्यहु कें जखन आत्मा भौतिक शरीर कें छोड़ि अज्ञात लोक दिस प्रस्थान करैछ, अपन विषयवस्तुक अंग बना लेलक अछि। संत कबीरक निर्गुण काव्यधारा मे वस्तुतः मृत्युकालक कारुणिक दृश्ये कें प्रतीक रूपें चित्रित कएल गेल अछि। कथ्य, शिल्प, शैली, ओ वस्तुक दृष्टिये संत कबीरक ई पद विशिष्ट मैथिली पद थिक ताहि मे सन्देह नहि कएल जा सकैछ। खास कय डोलीक रंग लाल होयब, ओहारक सबुजरंग होयब, बतोसटा कहारक डोली उठयबाक हेतु प्रयुक्त होएब तथा किछु दूर गेला पर कन्या द्वारा कहारक विनती कए डोली बिलमाए नैहरक जलग्रहण करबाक परिपाटीक उल्लेख मिथिलाक लोकजीवनक विशिष्ट तथ्य कें इंगित करैछ आ सामान्यतः एहिठामक समस्त समदाउनि गीत मे देखि पड़ैछ। यथा–

एक कोस गेली सीता दुइ कोस गेली तेसरेमे यमुना किनार।
गांर लागू पइञा परू अगिला कहरिया तिल एक डोली बिलमाएब।
गोरलागू पइञा परू पछिला कहरिया चुरू एक पानि पिआएब ।।[४९]
गोरलागू पैयाँ परू अगिला कहरिया, तिल एक डोली बिलमाउ।
बाबा के पोखरिमे झिलमिल पनियाँ चुरू एक पनियाँ पिआउ ।।[५०]

तदतिरिक्त मिथिला मे बहिनिक डोलीक संग भाइक जयबाक लोकव्यवहारक सेहो एहि मे उल्लेख भेल अछि।

डा॰ झा द्वारा संकलित कबीर भणित मैथिली पदावली तँ दृष्टान्त रूपें देल गेल अछि, मुदा कबीर पन्थक विभिन्न ग्रन्थ ओ लोककंठ तथा हस्तलेखक आधार पर प्रस्तुत शोधकर्त्ता द्वारा जे विपुल मैथिलीक पदावली संकलित कएल गेल अछि, से कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणाक संपुष्टिक मानदण्ड कहल जा सकैछ। भाव, भाषा, शिल्प ओ बिम्बक आधार पर एहि पदावली कें विशुद्ध मैथिली पदावलीए मात्र नहि कहल जा सकैछ, अपितु एकर विपुलता ई सिद्ध करैछ जे सन्त कबीर मूल रूपें मैथिल जीवनपद्धति सँ परिचित छलाह। तें हुनक मैथिलत्वक अवधारणा सशक्त अछि। उदाहरणक हेतु ई पद दृष्टव्य अछि–

दूर गमनसञों साहेब आएल-द्वारे पै भै गेल ठाढ़ हे।
कहाँ गेल किअए गेल अभागलि सुहबे द्वारे अनूप मेहमान हे।
एक हम छी राजा के बेटी मोरा बुते उठलो न जाय हे।
एतबे बचनिञा सुनलनि साहेब घोड़ा पीठ भए गेल सवार हे।
अपने जाइछी साहेब दूर गमनमा मोरा कहाँ छोड़ने जाइ हे।
तोहरा के हउए धनी माए बाप सहोदरा हमरा के नाम अधार हे।
धर्मदास चले गुरु के नगरिया साहेब कबीर संगसाथ हे।

एहि भावपरक एकटा कोबर गीत अछि जाहि मे नवविवाहित युगलक नोंक-झोंकक स्फुट वर्णन भेल अछि–

तीनि भुवन घुमि अयला से रामचन्द्र दुलहा, भए गेल कोबर घर मे ठाढ़ हे।
कहाँ गेली किए भेली सीता सुहबे, करु गय कोबर घर बिछान हे।
एक त हम छिअइ प्रभु राजाजी के बेटिया, दोसर पंडित के बहीन हे।
तेसर जे छिअइ प्रभु अम्मा के दुलारिन, हमरा सक नहि होएत बिछान हे।
एतबा वचन जब सुनलनि दुलहा, भए गेल घोड़ा पिठ सवार हे।
घर सँ बहार भेली कनिञा सुहबे, धए लेल घोड़ा के लगाम हे।
अपने तँ जाइछी प्रभु देश रे विदेशवा, हमरा के कोन उपाय हे।

एहिना मिथिलाक लोकजगत मे परिछनि, चुमाओन आदिक अवसर पर गाओल जायवला लोकगीतक पद एहि मंगलगीत मे भेटैछ–

मंगल बोलु सतगुरु हे।
अरही वनके खरही कटाओल वृन्दावन बोट बाँस हे।
रिमझिम रिमझिम बून्द बरसि गेल भिजल नैहरवाके लोक हे।
अगर चन्दन लए घर निपाओल गजमोती चौका पुराएल हे।
अलस कलस केर पुरहर बैठाओल मानिकलेसु प्रहलाद हे।

एहि तरहें एहि निर्गुण भजनमे ठेठ मैथिलीक प्रयोग द्रष्टव्य अछि–

भजन

आगिआ लगओले तू नैहरवा, सुन गे लुचिया।
नहिरा के लोक सब बड़ दुःख देल।
चलहि के बेरिया बन्धन तोड़ि लेल।
नहिरा के लोक सब बड़ कुटिचाल।
करै अछि कुकर्मी बजाबए लागल गाल
नहिरा के लोक सभ बड़ बदमास।
अगिआ लगाओल अगहन मास।
कहहि कबीर बड़ नीक भेल।
जरि गेल नैहरवा झगड़वा छुटि गेल ।।

एहि तरहें स्पष्ट अछि जे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली पुष्कल परिमाण मे अछि जे राग, ताल भास मे तँ मैथिली लोकगीतक अनुकूल अछिए, संगहि मिथिलाक लोकजीवनक सूक्ष्म परिचय सेहो दैछ जे कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणा कें सम्पुष्ट करैछ।

काल

सन्त कबीरक कालनिर्धारणक सम्बन्ध मे सेहो विद्वानलोकनि मे एकमत्य नहि छनि। एकर खास कारण ई अछि जे हिनक जन्मतिथि ओ अवसान तिथि सँ सम्बद्ध जे साक्ष्य सभ दृष्टिगोचर होइछ, से सभ एकदोसराक अनुपूरक नहि बुझना जाइछ। उदाहरणार्थ कबीरपन्थी मत मे प्रचलित दोहा, स्वामी रामानन्दक शिष्यत्व, सिकन्दरलोदी द्वारा सन्तकबीर कें

दण्डविधान आदि । तथापि विद्वानलोकनिक मत कबीरपंथी परम्पराक एहि दोहाक चारूकात आघूर्णित अछि–

चौदह सौ पचपन साल गये, चन्द्रवार एक टाट ठए ।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी प्रगट भए ॥[१२]

तदनुसार सन्तकबीरक जन्म संवत् १४५५ जेष्ठ पूर्णिमा सोम अर्थात् १३९७ ई० मे भेल छल ।

एहि सँ सम्बद्ध अन्य दोहा सभ अछि ।

जेठ मास बरसायत पगु द्वारे चँन्द्रवार ।
बालक को तन ठाकीआ परगटे सरोवर तीर ॥
x x x
चौदह सौ छप्पन जेठी पूनम चन्द्र सुवारा ।
श्री कबीर साहब का जनहित काशी मे अवतारा ॥

सन्त कबीरक जन्मतिथिए जकाँ हिनक निर्वाणक तिथि सेहो विवादस्पदे अछि ।

नाभादासकृत भक्तमालक टीका, धर्मदास द्वादस पंथ, कबीर परिचयी तथा कबीर पन्थी परम्पराक अनुसार हिनक मृत्यु सँ सम्बद्ध दोहा सभ निम्नलिखित अछि–

पन्द्रह साँ उनचास मे मगहर कीन्हों गौन ।
अगहन सुदी एकादशी मिलौ पौन मे पौन ॥
x x x
सुमंत पंद्रासौ उनहतरा हाई ।
सतगुरु चले उठ हंसा ज्याई ।
बरस सउ लग कीनी भगती ।
ता पीछे पाइ है मुक्ती ॥
x x x
संबत पन्द्रह सौ पछतरा कियो मगहर को गौन ।
माघ सदी एकादशी रलौ पौन मे पौन ॥

एहि तरहें संत कबीरक मृत्यु तिथिक विवाद मे २६ वर्षक अन्तर देखि पड़ैछ । डा० रामकुमार वर्मा हिनका शतायु मानि हिनक मृत्यु काल १४९७ ई० मानैत छथि जे कबीर परिचयी पर आधारित मान्यता अछि ।[१३]

नाम उपनाम

कबीर शब्दक अर्थ अरबी मे सब सँ महान अर्थात् परमात्माक बोधक अछि । जनश्रुतिक अनुसार जखन नीमा एवं नीरू दम्पती बालक केँ उठओलक आ ओकर पालनपोषणक हेतु सहमत भए गेल तखन कुल परम्पराक अनुसार काजी केँ बजाकय ओकर नामकरण संस्कार करावय चाहलक । काजी कुरानशरीफ उनटाय बालकक नाम उचारलक । कबीर नाम उचारला पर साधारण जोलहाक बेटाक नाम परमात्मापरक नहि रखबाक अनौदात्यक कारणें काजी दोसर-तेसर नाम राखय चाहैत छल, मुदा बेर-बेर कुरान एही नामक प्रकाश दैत रहलैक आ विवश काजी केँ कबीर नामहि केँ स्वीकृति देमय पड़लैक ।[१४] तें कबीरक नामकरण मे कोनो मतवैभिन्य नहि भेटैछ । मुदा कबीरक नामक संग कबीरपन्थी ग्रन्थ सबहिमे दास ओ साहब शब्द उल्लिखित भेटैछ । साहेब शब्दक प्रयोग सन्त कबीर ईश्वरक हेतु कयलनि । अछि, यथा–

ना जाने साहब कैसा है ।
मुल्ला होकर बांग जो देवे, क्या तेरा साहब बहरा है ।

मुदा कतोक पद मे साहेब शब्द हिनके हेतु प्रयुक्त भेटैत अछि । यथा–

साहेब कबीर सब रँग रँगिया, सब रँग से रँग न्यारा ।

एहन स्थलक हेतु ई कहल गेल अछि जे साहेब शब्द परिवर्ती कबीरपन्थी साहित्य मे गुरु केँ आदर देबाक हेतु जोड़ल गेल आ स्वयं संत कबीरक जाहि पद मे हुनका हेतु साहेब शब्द देल गेल अछि से प्रक्षिप्त अछि ।[१५]

दास शब्दक प्रयोग कबीर साहित्य मे अत्यधिक भेल अछि यथा–

दास जुलाहा नाम कबीरा, बनि-बनि फिरौ उदासी ॥
x x x
दासु कबीर तेरी पनह समाना । भिसतु नजीकि राखु रहमान ॥

भक्तिकालीन सन्त परम्पराक कविलोकनि अपनाकेँ ईश्वरक दास सिद्ध करबाक हेतु अपना नामक आगाँ दास शब्द जोड़ैत छलाह । यथा, सूरदास, नन्ददास, केशवदास, मलूकदास, रैदास आदि । संभवत: संतकबीर सेहो ओही परम्पराक पालन मे अपना केँ दास कहने होथि।

जाति

संत कबीरक जातिक सम्बन्ध मे सेहो विद्वानलोकनि दूटा मत प्रस्तुत कयलनि अछि । एहि मे अधिक सशक्त मत कबीरक जोलहा जाति मे जन्म लेबाक साक्ष्य प्रस्तुत करैछ, यथा कबीरदासहिक शब्द मे–

दास जुलाहा नाम कबीरा
बनि बनि फिरौं उदासी ॥
x x x
तू ब्रहमनु मैं कासीक जुलहा
x x x
जाति जुलाहा नाम कबीरा ॥

तनना बुनना तज्या कबीर राम नाम लिख दिया शरीर ॥

कहै कबीर राम रस भाते जोलाहा दास कबीरा हो ॥

जाति जुलाहा क्या करें हिरदे बसे गोपाला ॥

रामदेव की सेवा चूका पकड़ि जोलाहा कीन्हां ॥ आदि ।

एकर अतिरिक्त परवर्ती सन्त परम्पराक विभिन्न कवि लोकनि सेहो कबीर कैं जोलहे जातिक रूप मे मान्यता देने छथि, यथा–

जाकं ईद बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहिं । मानी अहि सेष सहीद पीरा ॥
जाकं बाप बैसी करी, पूत ऐसी करी तिहूर लोग परसिध कबीरा ॥

रैदास बुनना, तनना तिआगि के प्रीति चरण कबीरा ॥
नीचा कुला जो जोलाहरा भइयो गुनीय गंभीरा-**धन्ना** ।

नामदेव, कबीर जुलहो, जन रैदास तिरै ।
दादू बेगि बार नहि लागै हरि सौं सबै सरै-**दादू** ॥

तथापि एकटा पद मे कबीर अपन जातिक रूप मे कोरिक उल्लेख कयने छथि–

हरि को नाम अभय पद दाता कहै कबीरा कोरी ।

डा० पीताम्बर बड़थवालक कहब छनि जे कबीर कोनो प्राचीन कोरी किन्तु तत्कालीन जोलहा जातिक छलाह जे मुसलमान होयब सँ पूर्व जोगीक अनुयायी छल । डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी सेहो एही निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे कबीर जाहि जोलहा वंश मे पलित भेल छलाह से ओहि बयनजीवी नाथ मतावलंबी गृहस्थ जोगी जातिक मुसलमानी रूप छल जे वास्तव मे ने छल हिन्दू छल ने मुसलमान ।

वस्तुत: सन्त कबीरक पालन जोलहा जाति मे भेल छल जे एखनो बयनजीवी जातिक रूप मे प्रसिद्ध अछि । हिनक पदावली मे कारगह, राछ तानी, भरनी आदि वयन सम्बन्धी सामग्री ओ प्रक्रियाक वर्णन एहि तथ्य कैं सिद्ध करैछ । ई जोलहा जाति हिन्दू कोरी छल कि मुसलमान धर्मावलम्वी ताहि पर विद्वानलोकनिक दृष्टिकोण मे भेद रहबाक कारण तथ्यात्मक निष्कर्ष नहि निकलि सकल अछि । वयनजीवी जाति हिन्दूअहु मे अछि आ मुसलमानो मे । सन्त कबीरक सम्बन्ध मे जे किंवदन्ती अछि, सेहो सिद्ध करैछ जे हिनक जन्म हिन्दू कुल मे भेल छल आ ई मुसलमान जोलहा द्वारा पालित भेल छलाह । वस्तुत: हिनका ने हिन्दू

धर्मावलम्वी द्वारा, ने मुसलमान धर्मावलम्वी द्वारा सामाजिक सम्मान भेटि सकल। स्वभावत: प्रतिक्रियास्वरूप ई दुनू धर्मक वाह्याडम्बरक अन्वेषण कय कय ओहि सभ पर तीव्र प्रहार करैत एकटा समन्वयवादी विचारधाराक प्रचार कएलनि । हिनक पदावली मे हिन्दू वातावरण ओ मानसिकताक चित्र हिनक सद्य: धर्मान्तरित जोलहा परिवारक सिद्ध करैछ।

सन्त कबीर वयनजीवी जातिक छलाह से हुनक अनेक पद सँ परिलक्षित होइछ । जेना

हम धरि सूतु तनहि नित ताना । कंठि जनेऊ तुमार ॥
कहतु कबीर कारगह तोरी ।
सूतै सूत मिलाए कोरी ॥
तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ।
हरि का नामु लिलि लिओ शरीर ॥

एहि तरहें स्पष्ट अछि जे कबीरक जोलहा व्यावसायिक जाति मे प्रतिपालित भेल छलाह। आ व्यावसायिक ज्ञान रखैत छलाह ।

पारिवारिक जीवन

सन्त कबीरक पदावली साहित्य सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे हिनक पारिवारिक जीवन सुखमय नहि छल । अपन एकटा पद मे ई अपन पिताक प्रति अत्यन्त श्रद्धाभावक अभिव्यक्ति कएने छथि–

बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥
सेज सुखाली मुखि अंभ्रितु दीन्हा ॥
तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥
आगै गइआ न बाजी हारी ॥

तथापि

पिता हमारो बड गोसाई
तिसु पिता पहि हउ किउकरि जाई ॥

स्पष्टत: सन्त कबीरक पिता कबीरकैं दुखी आ निराश भेला पर हुनका आशा ओ उत्साह दैत छलथिन ।

दोसर दिस कबीरक माता कबीर सँ प्रसन्न नहि छलथिन । कबीर जे सत्संग करैत छलाह, रामनामक माला जपैत छलाह, ताना-बाना सँ ध्यान हटौने रहैत छलाह तथा गंगाजल आनि कए माए सँ आंगन निपबैत छलाह, से हुनक माए कें अखरैत छलनि । हुनक एकटा पद मे कहल गेल अछि–

नित उठि कोरि गागरि आनै लीपत जीउ गइओ ।

ताना बाना कछु न सूझै हरि हरि रस लपटिओ ।।
हमार कुल कउने रामु कहिओ ।
जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइओ ।।

एकटा पद मे ई संकेत भेटैत अछि जे किछु कालक बाद कबीरक माताक देहान्त भए गेलनि आ तखन ओ अपना केँ अधिक सुखी अनुभव करय लगलाह । भने शीतकालहु मे हुनका वस्त्राभावो किएक ने रहल हो मुदा, सत्संगक बाधा तँ उठि गेल छल–

मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ।
पहिरउ नहि दगली लगै न पाला ।।

कबीरपन्थी महात्मालोकनिक अनुसार सन्त कबीर गार्हस्थ्य जीवन व्यतीत नहि कयने छलाह । तथापि संत कबीरक अनेक पद सँ हुनक गार्हस्थ्य जीवन होयबाक अनेक स्थल पर संकेत भेटैत अछि, जेना एकटा पद मे कहल गेल अछि–

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ।
ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ।।
तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ।
हरि का नामु लिखि लीओ शरीर ।।
जब लगु तागा वाहउ बेही ।
तब लगु बिसरै रामु सनेही ।।

अर्थात हुनक माए नुकाकए कनैत रहैत छलथिन जे जखन कबीर तानब-बुनब अर्थात अपना व्यवसाये छोड़ि देलनि अछि आ सदिखन रामरटन मे लागल रहैत छथि तखन हुनक नेना सभक जीवन कोना रहि सकत ।

सन्त कबीरक रचना सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ओ एकटा गृहस्थ जकाँ अपन जीवन व्यतीत करैत छलाह । एहन मान्यता अछि जे हिनक पत्नीक नाम लोइ छल ।

एकटा पद मे कहल गेल अछि–

तुटे तागे निखुटी पानि ।
दूआर ऊपरि झिलकावहि कान ।।
कूच बिचारे फूए फाल ।
इआ मुंडीआ सिर चढ़िबो काल ।।
इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ।
आवत जात नाक सर होई ।।
तुरी नारि की छोडी बाता ।
राम नाम वा का मनु राता ।।
लरकी लरिकन खैबो नाहि ।

मुंडीआ अवसित भाग जाति ।
इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ।
हम कउ साथरु उनि कउ खाट ।।
मुंड पलोसि कमर बधि पोथी ।
हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ।।
मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ।
ए मुंडीआ बूडत की टेक ।
सुनि अंधली लोई बे पीर ।
इन्हि मुंडीअन भजि सरनि कबीर ।।

एहि पद सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे सन्त कबीर साधु संगति मे पड़ि कय घर परिवारक प्रति अनासक्त भए गेल छलाह जाहि सँ हुनक पत्नी अत्यन्त दुखी रहैत छलथिन । साधुलोकनिक निरन्तर आगमनक कारण हुनक पत्नी लोई केँ साको दम धरल रहैत छलनि । साधुलोकनि भोजन देबाक कारण घरक लोक केँ भूजे भरी पर रहि जाए पड़ैत छलैक । साधुलोकनि केँ खाट भेटैत छलनि मुदा घरक लोक केँ धरती आसन कए पड़बाक लेल बाध्य भए जाइत छलाह । 'लरकी लरिकन खैबो नाहि' सँ स्पष्ट अछि जे कबीर केँ अनेक धियापुता छलनि जकरा लेल आहार नहि जुटि पबैत छल । अन्तमे कबीर लोई केँ सम्बोधित कय कहैत छथि जे एही साधुसंगति सँ ओ भगवानक शरण मे चलि गेलाह अछि।

अन्य जनश्रुतिक आधार पर कहल गेल अछि जे लोई कबीरक पत्नी छलीह । ओ एकटा बनखंडी महात्माक पोषितकन्या छलीह । अनेक पद मे लोइ केँ लोकक अपभ्रंसक रूप मे स्वीकारि विद्वानलोकनि लोइ केँ कबीरक पत्नी नहि मानैत छथि ।

एकटा दोसर उद्धरणक अनुसार कबीर अपन पत्नीक नाम धनिया कहलनि अछि जकरा संन्यासीलोकनि रमजनिआ कहय लागल छलाह । एहि पद मे कहल गेल अछि जे मुंडीलोकनि कबीरक घर मे आगि लगा देने छलाह आ ओ हुनका बेटा केँ सगुण रामक भक्तिक हेतु बाध्य कय देने छलाह । कबीरक एहि पद मे ओ माए केँ सम्बोधित करैत कहलनि अछि जे साधुलोकनि हुनक जातिए केँ नाश कय देलथिन अछि । पद एहि तरहें अछि–

मेरी बहुरीआ को धनिआ नाउ ।
ले राखिओ राम जनीआ नाउ ।
इन्ह मुंडीअन मेरा घरू धुंधरावा ।
बिटवहि राम रमऊआ लावा ।
कहतु कबीर सुनहु मेरी माइ ।।
इन मुंडीअन मेरी जाति गवाई ।

एहि पद सँ ई स्पष्ट होइछ जे कबीर केँ एकटा बेटा सेहो छलनि जे निर्गुण ब्रह्मक उपासक कबीरक घरहि मे साधुसंगति सँ सगुण ब्रह्मक उपासक भए गेल छल ।

कबीरक एकटा पद मे हुनक दुइ गोट विवाह होयबाक उल्लेख अछि । सम्भव अछि जे पहिल पत्नी सँ पारिवारिक जीवन सुखी नहि रहला पर कबीर दोसरा विवाह कय लेने होथि।

कालान्तर मे पहिल पत्नी दोसर व्यक्ति सँ विवाह कय लेलथिन, मुदा अधिक दिन धरि जीवित नहि रहलथिन । हुनक मृत्यु सँ कबीर कँ संतोष भेल छलनि । सन्त कबीरक ओ पद अछि–

पहिली कुरूप कुजाति कुलखनी साहुरे पेईअै बुरी ।
अब की सरूपि सुजानी सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥
भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ।
जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥
कहु कबीर जब लहुरी आई बड़ी का सुहाग टरिओ ।
लहुरी संगि भई अब मेरे जेठी अउरू धरिओ ।

अर्थात् हमर पहिल पत्नी कुरूप, कुजाति ओ कुलक्षणी छलि जकरा हमर पिताजी सेहो खराब बुझैत छलथिन । मुदा एहि बेर जे पत्नी आयलि अछि से सुन्दरि, सुजाति आ सुलक्षणी अछि आ शीघ्र गर्भवती भए गेल अछि । नीक भेल जे पहिल पत्नी मरि गेल । आब जे आयलि अछि से जुग जुग जीबय । छोटकी पत्नीक अयला सँ बड़कीक सोहाग स्वत: समाप्त भए गेल अछि । छोटकी आब हमरा संगे अछि आ बड़की दोसर कँ धय लेलक अछि ।

यद्यपि एहि पदक आध्यात्मिक अर्थ मे पहिल पत्नी कँ माया ओ दोसर कँ भक्ति मानल जाइत अछि । मुदा सन्त कबीरक पारिवारिक जीवन सँ सेहो एकरा जोड़ल जाइत रहल अछि ।

संत कबीर कँ कमाल का निहाल नामक दूटा पुत्र ओ कमाली तथा निहाली नामक दुइ गोट पुत्री छलनि । एहि सब मे कंवल कमाले टा जीवित रहि सकल, बाकी सभक देहावसान भए गेल छल । कबीरक ई पुत्र व्यापार करबा मे तथा धन प्राप्तिक प्रवृति मे लागल छल। कबीर एकरा नीक नहि बुझैत छलाह । एहि सम्बन्ध मे ओ कहलनि अछि–

बुड़ा वंश कबीर का, उपजिओ पूत कमाल ।
हरि का सुमिरण छाडि कै, घर लै आया माल ॥

दन्तकथाक आधार पर कमाल आ कमाली कबीरक सन्तान नहि मानल जाइत छथि। कहल जाइत अछि जे हिनक माता-पिताक देहावसान भए गेला पर ई कबीर कँ भेटल छलथिन आ कबीर हिनकालोकनिक पालनपोषण कयने छलाह । एक अन्य मतक अनुसार ई दुनू मृतावस्था मे भेटल छलथिन जकरा कबीर पुनर्जीवन देने छलथिन । यैह सन्तति आगू हिनक पुत्र-पुत्रीक रूप मे ख्यात भेलथिन ।

शिक्षा-दीक्षा

मुसलमान जोलहा कुल मे पालित होयबाक कारण सन्त कबीरकँ सुसंगठित रूपें शिक्षा नहि प्राप्त भए सकलनि । एकटा पद मे ओ कहलनि अछि–

मसि कागद छुयों नहि कलम गह्यो नहि हाथ ।
चारिउ जुग का महातम कबिरा मुखहि जनाई बात॥

एकटा अन्य पद अछि–

बिदिआ न परउ बादु नहीं जानउ ।
हरिगुन कथत सुनत बउरानउ ।

सन्त कबीर पुस्तक ज्ञानक तिरस्कार कएलनि अछि । किएक तँ ओहि सँ अहंकारक वृत्ति बढ़ैत छैक । हुनक मत मे सत्संगहि सँ जीवनक तत्व बूझल जा सकैत छैक आ ओहो सँ भक्तिक जागरण संभव छैक–

किआ पड़ीअै किआ गुनीअै ।
किआ बेद पुराना सुनीअै ॥
पड़ै सुनै किआ होइ ।
जउ सहज न मिलिओ सोइ ॥

कबीरक गुरु के छलथिन एहि विषय मे सेहो मतान्तर अछि । हिनका गुरु मे पूर्ण विश्वास छलनि । अपन पदावली मे ई अनेक स्थल पर गुरुक वन्दना कयलनि अछि, मुदा गुरुक नामक संकेत नहि कयलनि अछि । यथा–

सतिगुरु मिले त मारगु दिखाइआ ।
जगत पिता मेरे मनि भाइआ ॥

x x x

गुरुचरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ।
कवन काजि जगु उपजै विनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥

x x x

गुर किंचत किरपा कीनी ।
सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥

x x x

हम तिस का बहुँ जनिआ भेउ ।
जब हूए क्रिपाल मिले गुरुदेउ ॥

x x x

पांच नारद के मिटवे फूटे ।
कहु कबीर गुर किरपा छटे ॥

x x x

कहु कबीर हम अैसे लखन ।
धंनु गुरदेब अति रुप बिचखन ॥

कबीरक गुरुक रुप मे विद्वानलोकनि एकमत नहि छथि । किछु गोटे परमात्मा कँ कबीरक गुरु मानैत छथि तँ किछु लौकिक रूप मे । पीताम्बर पीर, शेख तकी ओ स्वामी रामानन्द कँ कबीरक गुरु मानबाक आधार अधिक सशक्त अछि । एकटा पद मे कबीर कहलनि अछि।

कबीर गुरु [illegible] बनारसी [illegible] [illegible] तीर ।
[illegible] नहीं बीसरा [illegible] गुण [illegible] [illegible] ।

[illegible] म ओहि समय म रामानन्द अत्यन्त प्रभावशाली आ प्रसिद्ध संत पुरुष [illegible] [illegible] [illegible] रामानन्द [illegible] प्रचार कय रामनामक महत्व प्रतिपादित करैत [illegible] [illegible] [illegible] कबीर कें [illegible] मे [illegible] [illegible] । **भक्तमाल** म रामानन्द शिष्य [illegible] [illegible] [illegible] कबीरक [illegible] [illegible] अछि

श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जग तारन कियो ।
अनन्ता नन्द कबीर सुखा सुर सुरा पद्मावती नर हरि ।
पीपा भावानन्द रैदास धनासेन सुर सर की घर हरि ।
[illegible] शिष्य प्रशिष्य एक ते एक उजागर ।
[illegible] मगल आधार सर्वानन्द दशधा के आगर ।
बहुत काल वपु धारि कै प्रनत जनन को पार दियो ।
श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जगतारन कियो ।

कबीर आ रैदास सम्वाद म रैदास कबीर कें अपन गुरु भाइ कहलनि अछि । एहि [illegible] पर रैदासक गुरु रामानन्द कबीरक गुरु सिद्ध होइत छथिन । एहि सम्बन्ध म दोहा अछि

[illegible] [illegible] कबी सतवादी । सबलों सज्यां लगाई ।
[illegible] सिधारया निबला तारया; सुनी कबीर सत गुरुभाई ।।

[illegible] अन्य पद म स्वयं कबीर कें रामानन्दक शिष्य कहल गेलनि अछि–

काशी म प्रगट दास कहाय नीरू के गृह आये ।
रामानन्द के शिष्य भये भवसागर पंथ चलाये ।।

[illegible] अछि जे कबीर रामानन्दक शिष्य बनय चाहैत छलाह । मुदा रामानन्द मुसलमान कें शिष्य नहि बनबय चाहैत छलाह । कबीर बुद्धिमान तँ छलाहे । ओ युक्ति सँ काज लेलनि रामानन्द प्रातःकाल एक पहर पुर्वहि गंगाघाट पर स्नान हेतु जाइत छलाह । कबीर एक दिन [illegible] मे [illegible] घाटक सीढ़ी पर पड़ि रहलाह । स्नानक हेतु जाइत काल रामानन्दक पैर कबीरक [illegible] म लागि गेलनि तँ ओ 'राम राम कह' बाजि उठलाह आ कबीर ओही नाम कें अपन गुरुमंत्र मानि लेलनि।

एहि तरह स्वामी रामानन्दहि कें कबीरक गुरुक रूपमे अधिकांश विद्वान स्वीकार करैत छथि। मुदा कबीरपंथी मुसलमान हुनका शेख तकी अथवा पीताम्बर पीरक शिष्य कहैत छथि। [illegible] रामचन्द्र शुक्ल शेख तकी कें कबीरक गुरु नहि मानलनि अछि, प्रत्युत, हुनका शेख [illegible] संग सत्संग करबाक उल्लेख कयलनि अछि ।

[illegible] पीर कें कबीरक एहि पदक आधार पर हुनक गुरु मानल जाइत अछि–

हज [illegible] [illegible] तीर
जहाँ [illegible] पीताम्बर पीर

[illegible] [illegible] सँ पीताम्बर पीरक [illegible] [illegible] [illegible] हुनका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

देशाटन

सन्त कबीरक [illegible] सँ [illegible] [illegible] [illegible] हुनक [illegible] [illegible] हुनक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कबीरदासो सँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हेतु ई अनेक स्थान पर गेल छलाह । [illegible] कबीर [illegible] [illegible] हेतु [illegible] [illegible] [illegible] जौनपुर, मानिकपुर इत्यादि स्थान पर गेल छलाह । एहि [illegible] सँ पद अछि

मानिक पुर हि कबीर बसेरी । [illegible] सुनी [illegible] [illegible] [illegible] ।।
ऊजी सुनी जौनपुर थाना । [illegible] सुनी [illegible] के [illegible] ।

कबीरक अनेक बेर हजक हेतु काबा जयबाक उल्लेख सेहो हुनक पद सँ [illegible] अछि

कबीर हज काबे हउ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
साईं मुझ सिउ लरि परिआ तुझ किन्हि [illegible] [illegible] ।।

मुदा ई पद सभ सन्त कबीरक हज जयबाक [illegible] उल्लेख करैत, [illegible] सँ सिद्ध होइछ जे ई हज पर विश्वास नहि करैत छलाह । [illegible] सँ [illegible] [illegible] सँ [illegible] [illegible] अछि जे कबीर अनेक बेर हज पर काबा गेलाह मुदा हुनका सँ [illegible] [illegible] [illegible] जे [illegible] [illegible] हुनका सँ मुँह फुला लेलथिन । दोसर पद म कहल गेल अछि जे कबीर काबा सँ हजक हेतु गेलाह तँ रस्ता मे परमात्मा भेटलथिन आ [illegible] [illegible] जे [illegible] [illegible] [illegible] काबाक आज्ञा के देने छलीक ।

एकटा पद म कबीरदास हज कें [illegible] किनारा पर इंगित कैल कहलनि अछि

हज हमारी गोमती तीर ।
जहा बसहि पीतंबर पीर ।।
वाहु वाहु किया खूबु गावता है ।
हरि का नामु मेरे मन भावता है ।।
नारद सारद करहि खवासी ।
पासि बैठी बीबी कवलासासी ।।
कंठे माला जिहवा रामु ।
सहंस नामु लै लै करउ सलामु ।।
कहत कबीर राम गुन गावउ ।
हिंदू तुरक दोऊ समुझावउ ।।

एहि पद सँ ई स्पष्ट होइछ जे सन्त कबीर जाहि कोनो सन्त स्थान पर जाइत छलाह तकरे हज मानि लैत छलाह । विभिन्न कबीरपन्थी साहित्य आ अन्य साक्ष्यक आधार पर ई

पुरी, आसाम, गागरानगढ़, द्वारिका, मथुरा, वृन्दावन, मक्का, बगदाद, बुखारा, समरकन्द, मालवा, शुक्लतीर्थ आदि स्थानक भ्रमण कयने छलाह ।

लोक व्यवहार

सन्त कबीर पूर्णतः व्यवहारविद् छलाह । ओ अत्यंत स्पष्टदृष्टियुक्त निर्भीक तथा क्रियात्मक छलाह । ओ धार्मिक विश्वासक मामला मे कोनो धर्म अथवा सम्प्रदायक पक्षपाती नहि छलाह तें हिन्दू ओ मुस्लिम दुनू सम्प्रदायक गलत रीति-नीतिक आलोचना कएलनि । अपन प्रतिदिन आवश्यकताक हेतु ओ भगवान सँ जे सामग्री सभ अपन परिवार चलएबाक लेल मंगलनि अछि ताहि सँ हुनक स्पष्टवादिता, कर्मनिष्ठा ओ संतोषक अभिव्यक्ति भेल अछि। संगहि एहि पद सँ हिनक आत्मविश्वास, ईश्वर पर निर्भरता एवं भाव-भक्तिक हेतु कर्मयोगी होयबाक सेहो संकेत भेटैछ। पद एहि प्रकारें अछि–

भूखे भगति न कीजै । यह माला अपनी लीजै ।।
हउ माङ्गउ संतन रैना । मै नाही किसी का देना ।।
माधो कैसे बनै तुम संगे । आपि न देहु त लैवउ मंगे ।।
दुइ सेर मागउ चूना । पाउ घीउ संगि लूना ।।
अध सेर मांगउ दाले । मोकउ दोनउ वखत जिंवाले ।
खाट मांगउ चउपाई । सिरहाना अवर तुलाई ।।
ऊपर कउ मागउ खीधा । तेरी भगति करै जनु बीघा ।[८४]

एहि तरहें कबीर कें सुविधाजनक सामान्य जीवन मे राम भगतिक आश्रयक प्रति अपार श्रद्धा छलनि ।

शिष्यपरम्परा

सन्त कबीरक विशाल व्यक्तित्व आ असीम आध्यात्मिक ज्ञान सँ प्रभावित भए अनेक व्यक्ति हुनका निकट ज्ञानार्जनक हेतु अबैत होयताह । एहि मे अनेक हुनक शिष्य बनल होयताह। दादूपंथी राघोदासक **भक्तमाल** मे कमाल, कमाली पदमनाम, रामकृपाल, नीर, धीर, ज्ञानी, धर्मदास ओ हरदास कें कबीरक शिष्य कहल गेलनि अछि । तत्वा ओ जीवा कें सेहो कबीरक शिष्य कहल जाइत अछि। कबीरपन्थी साहित्य मे वीरसिंह, नबाब बिजलीखाँ, सुरतगोपाल, धर्मदास, तत्वा, जीवा, जागूदास, भागूदास, ज्ञानीजी, मलूकादास गरीबदास आदि कें हिनक शिष्यक रूपमे गनाओल गेल अछि । एकर अतिरिक्त शिवनारायण, रतनाबाइ, नानक, कमलानन्द, नित्यानन्द, रामदेव, साहेबदास, भुवनाचार्य, निजानन्द, अखण्डानन्द, गुरुबगस, साहेब, शीलनिधि, मलूकदास, सरोवरदास, आदि कें सेहो कबीरक शिष्य परम्पराक कहल गेल अछि । अतएव कहल जा सकैछ जे कबीरक शिक्षाक प्रभाव बहुत पैघ जनसमुदाय पर पड़ल जाहि मे अधिकांश हिनक समर्थन ओ प्रचार कयलथिन ।[८५]

साधना ओ सिद्धान्त

सन्त कबीर एकटा क्रान्तिकारी कवि छलाह । परम्परा सँ समागत मान्यता कें कोना युगक अनुकूल परिवर्तित कयल जा सकैत छैक तथा कोन सीमा धरि ओकर खण्डन वा मण्डन कयल जा सकैत छैक, से अन्तर्दृष्टि सन्त कबीर मे छलनि । यैह कारण छल जे शास्त्रीय ज्ञानक उपेक्षा करैत सन्त कबीर जनमानसक आवेग आ आकांक्षा कें बुझलनि तथा जाति भेद, वर्ण भेद एवं कर्मकांडक विरोध करैत एहन विश्वधर्मक परिकल्पना कयलनि जाहिमे विभिन्न वर्गक लोक बिना कोनो बाधाक समान रूप सँ एक पाँती मे बैसि सकैत छलाह ।

सन्त कबीरक जीवनकाल मे भारत मे सामान्य जनता पाखंडी-प्रचार, अंधविश्वास आ धर्मक बाह्याडम्बर सँ दिग्भ्रमित छल । धर्मक एहि विकृत स्वरूपक प्रति प्रतिक्रियाक रूप मे कबीरक धार्मिक विचारधाराक अवतरण भेल । कर्मकाण्डी धर्मव्यवस्थाक कुरीतिक प्रति कबीरक विचारधारा मे विद्रोही भावनाक प्राधान्य देखा पड़ैछ । ओ हिन्दू तथा इस्लाम दुहू धर्मक कुव्यवस्थाक मुक्तकण्ठ सँ खण्डन कयलनि । कबीर जाहि धार्मिक विचारधाराक प्रसार कयलनि से सहज धर्म कहल गेल तथा ओहि मे कोनो कठिन धार्मिक व्यवस्थाक प्रति अभिव्यक्ति नहि कयल गेल ।[८६]

कबीर कोनो मत विशेषक प्रतिपादन नहि कयलनि अछि आ ने अपना कें कोनो दार्शनिकक रूप मे प्रतिष्ठित कयलनि । ने हुनका मे द्वैतवादक स्पष्ट निदर्शन भेटैछ ने अद्वैतवाद, द्वैताद्वैतावाद, विशिष्ट द्वैतवाद अथवा सूफीए मतक । वस्तुतः ओ महान घुमक्कड़ छलाह आ जतय कतहु सत्संग मे गेलाह ओहिठाम सँ प्राप्त मत पर विचार कयलनि तथा जखन ओहि मत मे आलोचनाक कोनो वस्तु देखि पड़लनि तुरत स्पष्टवादिताक संग ओकरा पर आघात कयलनि। हिन्दू आ मुसलमान दुनूक बाह्याडम्बर पर हुनक कटुक्ति सँ पूर्ण एकटा पद अछि–

अरे ! इन दोहुन राह न पाई ।
हिन्दू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई ।
वेस्या के पायन तर सौबे यह देखे हिन्दुवाई ।।
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गा मुर्गी खाई ।
खाला केरी बेटी व्याहै घर हि करै सगाई ।।
बाहर से इक मुर्दा लाये धोय चढ़वाई ।
सब सखियाँ मिलि जेवन बैठी घर भर करै बड़ाई।
हिन्दून की हिन्दूवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो कौन राह हैव जाई ।।[८७]

कबीरक दृष्टिकोण विशुद्ध आध्यात्मिक छल । तत्कालीन समाज विकृत समाज छल। ओहि समाज मे समुचित राजनीतिक ओ सामाजिक व्यवस्था तँ नहिये रहि सकल छल, उचित धार्मिक व्यवस्था नहि छल । सर्वत्र रूढ़िवादिता, प्राचीन परम्पराक मान्यता ओ आचारभेदक दर्शन होइत छल। एहन समय मे कबीर एहि प्रकारक धार्मिक मान्यताक स्थापना कएल जतय

भगवत् प्राप्तिक मार्ग सर्वजनसुलभ छल । कबीर अध्यात्मवाद मे विश्वास करैत छलाह आ जीवन भरि हुनक प्रयास रहल जे ओ धर्मक नव-नव तत्वकें जानि सकथि । कबीरक समक्ष जे कोनो आध्यात्मिक तत्व अबैत गेलनि, ओ ओकरा मानैत गेलाह आ ओकरा स्थिर करबाक प्रयास कयलनि ।

संतकबीर कर्मकाण्डीलोकनि सँ घृणा करैत छलाह । ओ अहंकरवादी पर विश्वास नहि करैत छलाह । श्राद्ध, तर्पण, दान, सँ व्यक्ति कें मोक्ष भेटैत छैक, से कबीर कें ग्राह्य नहि छलनि । अंधविश्वास आ कर्मकाण्ड कें कबीर आलोचनाक विषय बनौलनि । सन्त कबीर आचरणक पवित्रता, हृदयक सरलता, निष्कपटता, सत्य भाषण, काम-क्रोध ओ तृष्णाक त्याग कें महान बुझैत छलाह। कबीरक धर्म हृदय ओ मनक शुद्धि तथा कपट सँ दूर रहबा पर आधारित छल । एहि हेतु ओ मन्दिर, मस्जिद मे भजन-पूजन कें आवश्यक नहि बुझैत छलाह। एहि सम्बन्ध मे हुनक एकटा प्रसिद्ध पद अछि–

अवधू भजन भेद है न्यारा ।
क्या गायें क्या लिखि बतलायें क्या भरमें संसारा ।।
क्या संध्या तर्पन के कीन्हें जो नहिं तत्त विचारा ।।
मुँड मुड़ायें सिर जटा रखायें क्या तन लाये छारा ।
क्या पूजा पाहन की कीन्हें क्या फल किए अहारा ।
बिन परिचें साहिब हो बैठे विषय करै व्योपारा ।
ज्ञान ध्यान का मर्म न जानै बाद करै अहंकारा ।
अगम अथाह महा अति गहरा बीज न खेत निवारा ।
महा सो ध्यान मगन है बैठे काट करम की छारा ।
जिनके सदा अहार अन्तर मे केवल तत्त विचारा ।
कहे कबीर सुनो हो गोरख तारौं सहित परिवारा ।।८९

कबीर मानव कें एक धर्म, एक समाज आ एकेटा नैतिक बन्धन मे बान्हय चाहैत छलाह। विषमता कें ओ समूल नष्ट करय चाहैत छलाह । सन्त कबीर एहन समाजक स्थापना करय चाहैत छलाह जाहि मे समानताकें आधार हो । साधनाक क्षेत्र मे कबीर धर्म आ कथन दुनू कें ग्रहण करबाक शिक्षा दय वैराग्य ओ कर्मयोगक समन्वय कयलनि । ई जीवन मे अपन समस्त कर्त्तव्यक पालन करैत क्रमशः वैराग दिस अग्रसर भए भगवत्-प्राप्तिक मार्गक संपोषण कयलनि ।

संत कबीर भक्त कें भगवानक शरण मे जयबाक उपदेश देलनि अछि । एकरा जप, अजपा-जप ओ प्राप्ति सँ संभव कहलनि अछि । सूफी प्रेम आ भारतीय भक्ति-मार्गक समन्वय हिनक पदावली मे भेटैत अछि ।

धर्मक मामला मे कबीर मध्यम मार्गक अनुसरण कयलनि अछि । हिन्दू आ मुसलमान धर्मक खराब तत्वक आलोचना कय ई दुनूक समर्थन प्राप्त कयलनि ।

सन्त कबीरक काल मे धार्मिक संकीर्णता पराकाष्ठा पर छल । हिन्दू आ मुसलमान एक दोसराक कट्टर विरोधी छलाह । सन्त कबीर कें ई सह्य नहि छलनि । एकटा पदमे ओ कहलनि अछि–

अलहु एक मसीति बसतु है अवरू मुलकु किस केरा ?
हिन्दू मूरति नाम निवासी दुइ महि ततु न हेरा ।।

हिन्दू धर्म सेहो कर्मकांडक कठोरता ओ छुआछूत सँ ग्रस्त छल जातिभेद आ वर्णभेद सँ ग्रस्त जनता कें संगठित करबाक हेतु ओ धर्मक गूढ़ तत्व इंगित करैत मानवतावाद कें प्रतिष्ठा दिऔलनि। एकटा पद मे कहल गेल अछि ।

गरभ वास महि कुल नहि जाती ,
ब्रह्म बिन्दु ते समु उतपाती ।
कहु से पंडित वाभन कब के होए ,
वाभन कहि कहि जनम मत खोए ।
जो तूं वाभन-वाभुनी जाया–
तऊ आन बाट काहे नहि आया ?
तुम कत वाभन हम कत सुद ?
हम कत लोहु तुमकत दूध ?
कहु कबीर जो ब्रह्म विचारे
सो वाभन कहियतु है हमारे ।।

संत कबीर तत्कालीन समाज मे प्रचलित विभिन्न विचारधाराक आकलन कए ओकरा एकाकार कएलनि । ओ विचारधारा सभ छल–नाथ सम्प्रदायक आत्मानुभाव ओ योगसाधना, विट्ठल सम्प्रदायक प्रेम भावना, स्वामी रामानन्दक भक्ति साधना, सूफी मतक रहस्यवादी मादकता तथा वेदान्तक एकेश्वरवाद । अपन सृजनात्मक अन्तर्दृष्टि द्वारा कबीर विट्ठल-सम्प्रदायक प्रेमाशक्ति कें, रामानन्दक भक्ति साधना कें तथा नाथ सम्प्रदायक योग साधना कें वेदान्तक एकेश्वरवाद सँ मिलौलनि तथा एहि दुहूक बीच सूफी रहस्यवादक सम्प्रेषण कएलनि । एहि तरहें कबीरक विचारधारा मे तत्कालीन समस्त विचारधाराक समन्वय भेटैत अछि ।

कबीरक विचारधाराक ई प्रभाव भेल जे हिन्दू आ मुसलमान, ब्राह्मण आ शुद्रक बीच जे दरारि छल से पारस्परिक सहानुभूतिक बन्धन मे आबद्ध भए गेल । समाज शास्त्रक गंभीरतम तथ्य सँ प्रभावित भए सकल । मानव जाति कें संगठित ओ विवेकसम्पन्न बनएबाक कबीरक अवदान हुनका देशहि मे नहि अपितु विदेशहु मे आदर ओ सम्मानक पात्र बना देलक ।

कबीरपन्थ

कबीर पन्थक स्थापना कहिया भेल एहि सम्बन्ध मे कोनो स्पष्ट प्रमाण नहि अछि, तथापि ई अनुमान कएल जाइत अछि जे संत कबीरक निधनोपरांत हुनक समर्थकलोकनि कबीरपंथक

स्थापना कएने होयताह । कबीरपन्थक अनेक रचना मे एहि तथ्यक उल्लेख भेल अछि जे कबीर अपना जीवनकालहि मे अपन प्रधान शिष्य धर्मदास कें पंथस्थापनाक आदेश देने छलथिन आ हुनक ४२ वंश कें गद्दीक उत्तराधिकारी संहो बना गेल छलथिन ।[1]

तथापि कबीर जाहि सार्वभौम धर्मक उपदेश देने छलाह तकरा देखैत एकरा साम्प्रदायिक स्वरूप देबाक हुनक मनोवृतिक सूचना आ मीमांसा कबीर साहित्य मे नहि देखि पड़ैछ ।

सन्त कबीर प्रतिभाशाली आ आत्मज्ञानी संत छलाह । तें हुनक व्यक्तित्व सँ प्रभावित भय अनेक व्यक्ति हुनक शिष्यत्व ग्रहण कयने होयताह तथा कतोकक व्यवहार पर प्रसन्न भए कबीर हुनका अपन प्रियपात्र बनौने हाएथिन्ह ।

कबीर पंथक प्रमुख चारि गोट शाखा अछि–

१. काशी शाखा ।
२. धनौतीवला भगताही शाखा ।
३. जागू शाखा ।
४. छत्तीसगढ़ी शाखा ।

काशीशाखाक प्रवर्त्तक महात्मा सुरतगोपाल कहल जाइत छथि । ई दक्षिणात्य ब्राह्मण छलाह। हिनक पहिल नाम सर्वाजीत छल । हिनक बुद्धि अत्यन्त कुशाग्र छलनि आ अल्पहिकाल मे नाना शास्त्रक ज्ञान प्राप्त कय लेने छलाह । कबीर सँ परास्त भए ई हुनका अपन गुरु बनौलनि आ ताही दिन सँ हिनक नाम श्रुतिगोपाल अथवा सुरतगोपाल भए गेलनि । एहि शाखाक अन्तर्गत कबीरचौरा मठ काशी, लहरतारा, मगहर तथा कबीर बाग, गया अबैत अछि । एकर अतिरिक्त नडियाद आ अहमदाबाद मे सेहो एहि शाखाक मठ अछि ।

कबीर चौरामठ काशीक कबीरपन्थीक प्रमुख मठ थिक । एहिठाम कबीरक जन्म आ जीवन सँ सम्बद्ध अनेक सामग्री सुरक्षित अछि । लहरतारा काशीक एकटा स्थल अछि जतय जनश्रुतिक अनुसार पोखरिक तट पर कबीरक जन्म भेल छल । मुदा आब ओतए पोखरिक अवशेषो नहि अछि, केवल कबीरपन्थी मठ टा अछि ।

मगहर गोरखपुर सँ १६ मी दूर बस्ती जिला मे पड़ैत अछि । एतय आमी नदीक कछेर मे दूटा मठ अछि–एकटा मुस्लिम कबीरपंथी मठ आ दोसर हिन्दू कबीरपंथी मठ । कबीर बाग, गया मे कबीरचौरा, काशीक अधीनस्थ एकगोट मठ अछि जकर संस्थापक रामरहसदास कें मानल जाइत छनि ।

छपरा जिलाक धनौती नामक ग्राम मे भगताही शाखाक प्रधान मठ अछि । एहि शाखाक प्रथम आचार्य भगवान गोसाई के कहल जाइत छनि । एहि शाखा मे दूटा मठ अछि–एकटा बड़का आ दोसर छोट । एहि शाखा मे भक्तिभावक प्रधानता अछि । एहिठाम कबीर कें अवतारक रूप मे नहि अपितु आदर्श संतक रूप मे देखल जाइत छनि । एहि शाखाक अन्तर्गत नारंगा, मानसर, तुर्की, दामोदरपुर, चनाव (छपरा), तुर्की (मुजफ्फरपुर), शेखावल (बेतिया) तथा बड़हरवा, सवैया बैजनाथ (मोतिहारी) इत्यादि मठ सभ अबैत अछि ।

जागूशाखाक प्रधान मठ विदूपुर मुजफ्फरपुर, साम्प्रतिक वैशाली जिला मे अवस्थित अछि। एकर प्रर्वतक संत जागू दास छलाह । कहल जाइछ जे जागूदासक माता-पिता हिनका कटक मे संतकबीर कें प्रदान कय देने छलथिन । पश्चात ई राजनगर स्थित अन्धराठाढ़ी मे रहय लगलाह आ तकर बाद समस्तीपुर जिलाक शोभन-बसन्तपुर गाम मे मठक स्थापना कएलनि।

जागूशाखाक मठ मे हिन्दू आ मुसलमानक बीच कोनो अन्तर नहि राखल जाइछ । एकर अनेक शाखा दरभंगा, हरिपुर, शंदावाद, तेतारपुर, बैकुंठपुर, इमायतपुर, मुरिया, शोभन, बसन्तपुर, अन्धराठाढ़ी, भागराजपुर, आ दशहरा मे मुजफ्फरपुरक जंडड, तागौल, कौलहारा, गाजीपुर, गनियारी, आ नावानगर मे, गयाक बागटाड़, देवरा आ गंगावाग मे तथा लखनऊ, बमहा, चंपारण, बहरौली आदि नगर आ ग्रामीण क्षेत्र मे अछि । नेपाल मे एहि शाखाक ५३ गोट मठ कहल जाइछ ।

छत्तीसगढ़ शाखाक प्रवर्तक धनी धर्मदासजी कें कहल जाइत छनि । ई उच्चकोटिक महात्मा छलाह । हिनक समाधि पुरी मे अछि । एहि शाखाक अन्तर्गत कुदुरमाल, रतनपुर मउ, धमधा, पूना, बनुदेलखंड, जामानगर, कवर्धा, दामाखेड़ा बभनी, खरसिया, सागर, खैरा, बड़ौदा, नागपुर, सूरत आदि मे कबीरपन्थी मठ अछि ।

एकर अतिरिक्त कबीरपन्थक विकास हेतु कालक्रम मे अनेक मठक विकास भेल जे कहियो कोनो शाखा विशेषक अन्तर्गत रहल होयत, मुदा बाद मे स्वतंत्र भए गेल होयत । यथा–कबीर चौरा, जगदीशपुरी (उड़ीसा) हटकेसर (म० प्र०), बुरहानपुर (म० प्र०), फतुहा (बिहार), लक्ष्मीपुर बगीचा रोसड़ा (बिहार), जौनपुर (उ० प्र०) आदि, एकर अतिरिक्त कबीरपन्थ मे अनेकानेक पन्थोक विकास सेहो भेल अछि यथा द्वादशपंथ, सतनामी पंथ, निरंजनी सम्प्रदाय, कबीरवंशी, रामकबीरपंथ, ऊदापंथ, पनिका कबीरपंथी, धामी पंथ आदि ।

एहि तरहें कबीरपंथ सम्पूर्ण भारत मे निरन्तर प्रगति कय रहल अछि, खासकय उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यभारत आ गुजरात मे एकर संगठन बेसी मजगूत छैक । एकर अतिरिक्त बम्बई, पूना, हैदराबाद, मुलतान, लाहौर, करांची, बंगलोर ओ गोहाटी मे सेहो कबीरपंथी मठ अछि। विदेश मे ई पंथ त्रिनीडाड, मारीसस, ब्रिटिश गायना, डेमरारा, द० अफ्रिका, फिजी, लंका, वर्मा, भूटान, अरब, फारस, काबुल ओ नेपाल धरि पसरल अछि ।।[8]

सन्दर्भ-निर्देश

१. पं० रामचन्द्र शुक्ल–**हिन्दी साहित्य का इतिहास,** नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं०–२०४२, पृ०–५३ ।
२. रामनन्दन दास–**श्रीसद्गुरुकबीर,** श्रीमान् महन्त रामवतार साहब, स्थान-सतमलपुर (समस्तीपुर) सन्–१९७४, ई०, पृ०–१५ ।
३. तत्रैव ।
४. डॉ० राम कुमार वर्मा–**संत कबीर,** साहित्य भवन प्रा०लि०, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९६६ ई० पृ०–१७८ ।
५. तत्रैव, पृ०–१७ ।
६. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीर-वाणी संग्रह**, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई०, पृ०–१३ ।
७. डॉ० रामकुमार वर्मा–**संत कबीर,** साहित्य भवन, प्रा०लि०, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई०, पृ०–१८० ।
८. तत्रैव, पृ०–१४३ ।

९. डॉ० राजकुमार वर्मा–**कबीर एक अनुशीलन**, साहित्य भवन (प्रा०) लि०, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–१९८३ ई०, पृ०–९५ ।
१०. डॉ० सुभद्र झा– **जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार**, नवम्बर १९५६ ई०–वाल्यूम–२, **''सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद''**, पृ०–१।
११. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीरवाणी संग्रह**, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई०, पृ०–१३–१४ ।
१२. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीर पन्थ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, सन् १९६५ ई०, पृ०–६८ ।
१३. डॉ० सुभद्रा झा– **जर्नल आफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार,** वोल्यूम–२, नवम्बर १९५६ ई०, पृ०–१ ।
१४. तत्रैव–पृ०–३ ।
१५. तत्रैव–पृ०–१–२ ।
१६. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीर वाणी संग्रह,** राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ । ई०, पृ०–११ ।
१७. तत्रैव, पृ०–११ ।
१८. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीर पन्थ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन् १९६५ ई० पृ०–६७ ।
१९. तत्रैव ।
२०. डॉ० सुभद्र झा–**जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार** वौल्यूम–२, नवम्बर १९५६ ई०, पृ०–२ ।
२१. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीरवाणी संग्रह,** राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण, १९७५ ई० पृ०–११–१२ ।
२२. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकत्ता–**कबीर और कबीर पन्थ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन् १९६५ ई०–पृ०–६७ ।
२३. डॉ० सुभद्र झा–**जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार,** वाल्यूम–२, नवम्बर १९५६ ई०, पृ०–३ ।
२४. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीरवाणी संग्रह,**-राका प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई०–पृ०–१२ ।
२५. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकर्त्ता-**कबीर और कबीर पन्थ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन् १९६५ ई० पृ०–६७ ।
२६. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीर वाणी संग्रह**–राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण सन् १९७५ ई०, पृ०–१२ ।
२७. डॉ० सुभद्र झा–**जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार** वाल्यूम–२, नवम्बर १९५६ ई० पृ०–३ ।

२८. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीर वाणी संग्रह**–राका प्रकाशन इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई०, पृ०–१२ ।
२९. रामनन्दनदास–**श्रीसदगुरु कबीर**–श्रीमान महन्त रामावतार साहब स्थान सतमलपुर (समस्तीपुर) सन् १९७४ ई०, पृ०–१६७ ।
३०. तत्रैव–पृ०–१६६–१६७ ।
३१. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीरवाणी संग्रह**, राका प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण १९७५ ई० पृ० १२–१३ ।
३२. रामनन्दन दास–**श्री सदगुरु कबीर**–श्रीमान् महन्त रामवतार साहब, स्थान–सतमलपुर (समस्तीपुर) सन् १९७४ ई०, पृ०–१५५ ।
३३. परशुराम चतुर्वेदी–**कबीर साहित्य की परख**–भारती भण्डार, प्रयाग, प्रथम संस्करण स० २०११, पृ०–२०८ ।
३४. विवेकदास–सम्पादक–**कबीर साहब**–कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, सद्गुरु कबीर मन्दिर कबीर चौरा मठ, वाराणसी प्रथम संस्करण १९७८ ई० पृ०–२४४ (लेख–संतकबीर की साधु शब्दावली–डा० रामखेलावन राय 'दीपक' सँ उद्धृत) ।
३५. यक्षदत्त शर्मा–**कबीर साहित्य और सिद्धान्त**–अक्षरम, सोनीपत (हरियाणा) १९८४ ई०, पृ०–३७ ।
३६. डॉ० श्यामसुन्दर दास–**कबीर ग्रन्थावली**–नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संस्करण २०१३ वि० पृ०–७१ ।
३७. विलियम डायर, एस० जे०–**कबीर सिंगर ऑफ द डिवाइन**, नव ज्योति प्रकाशन पटना पृ०–४ ।
३८. तत्रैव, पृ०–१
३९. गंगाशरण शास्त्री-**कबीर शब्दावली**–कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी कबीर चौरा मठ काशी, सन् १९७६ ई०, पृ०–१३ ।
४०. गंगाशरण शास्त्री–**कबीर जीवन चरित्र** (कबीरचौरा पाठ) कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, कबीर चौरा मठ, वाराणसी, १९७६ ई०, पृ०–२१७ ।
४१. गंगाशरण शास्त्री-**बीजक** (कबीरचौरा पाठ) कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र वाराणसी १९८२ ई०, पृ०–१२५ ।
४२. तत्रैव–पृ०–३१६ ।
४३. तत्रैव–पृ०–२५८ ।
४४. तत्रैव–पृ०–१६२ ।
४५. तत्रैव–पृ०–२०५ ।
४६. तत्रैव–पृ०–२६७ ।
४७. हजारी प्रसाद द्विवेदी–**कबीर**-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तेसर संस्करण १९८५ ई०, –२८७ ।

४८. डॉ० सुभद्र झा–**जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार** नवम्बर १९५६ ई०, वाल्यूम–२, पृ०–५ ।

४९. डॉ० इन्द्रकान्त झा–सम्पादक, **मैथिली व्यवहार गीत**, कमल प्रकाशन, पटना–१, सन् १९८७ पृ०–१४० ।

५०. तत्रैव–पृ०–१४१ ।

५१. तत्रैव–पद सं०–२५६, पृ०–९७–९८ ।

५२. डॉ० रामकुमार वर्मा **कबीर एक अनुशीलन** साहित्य भवन (प्रा०) लि०, इलाहाबाद, १९८३ ई०, पृ०–२९ ।

५३. तत्रैव–पृ०–५० ।

५४. डॉ० लक्ष्मीदत्त वी० पंडित–**संत कबीर**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९७७ ई०,पृ०–३७ ।

५५. यज्ञदत्तशर्मा–**कबीर-साहित्य और सिद्धान्त**, अक्षरम् सांनीपत (हरियाणा) १९८५ ई० पृ०–१३ ।

५६. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीर पन्थ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन् १९६५ ई०, पृ०–७२ ।

५७. डॉ० रामकुमार वर्मा–**संत कबीर**, साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद, १९६६ ई०, पृ०–११६ ।

५८. तत्रैव–पृ०–१२६ ।

५९. तत्रैव–पृ०–१२९ ।

६०. तत्रैव–पृ०–९२ ।

६१. तत्रैव–पृ०–९३ ।

६२. तत्रैव–पृ०–१५५ ।

६३. तत्रैव–पृ०–९२ ।

६४. तत्रैव–पृ०–१२९ ।

६५. डॉ० लक्ष्मीदत्त बी० पंडित–**संत कबीर**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९७७ ई०, पृ०–३४ ।

६६. डॉ० रामकुमार वर्मा–**संत कबीर**, साहित्य भवन प्रा० लि० इलाहाबाद, सन् १९६६ ई०, पृ०–१६९ ।

६७. डॉ० पारसनाथ तिवारी–**कबीरवाणी संग्रह**, साहित्य भवन प्रा० लि०, राका प्रकाशन इलाहाबाद, १९७५ ई० पृ०–२२–२३ ।

६८. डॉ० रामकुमार वर्मा–**संत कबीर**, साहित्य भवन प्रा०लि०, इलाहाबाद, १९६६ ई०, पृ०–१२३ ।

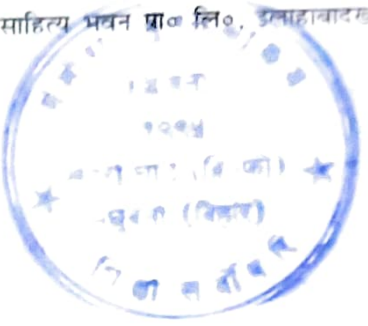
६९. तत्रैव–पृ०–१२२ ।

७०. डॉ० रामकुमार वर्मा–**कबीर एक अनुशीलन**, साहित्य भवन (प्रा०) लि०, इलाहावाद, १९८३ ई०, –३७ ।

७१. डॉ० लक्ष्मीदत्त बी० पंडित–ल०–**संत कबीर**, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, सन १९७७ ई०, पृ०–३४ ।

७२. तत्रैव–पृ०–३४ ।

७३. डॉ० राजकुमार वर्मा–**संत कबीर**, साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद १९६६ ई०, पृ०, १५३ ।



७४. तत्रैव–पृ०–१३६ ।

७५. तत्रैव पृ० ९२ ।

७६. तत्रैव–पृ०–९० ।

७७. तत्रैव–पृ०–१३३ ।

७८. तत्रैव–पृ०–१७० ।

७९. तत्रैव–पृ०–१७२ ।

८०. तत्रैव–पृ०–१७४ ।

८१. पं० रामचन्द्र शुक्ल–**हिन्दी साहित्य का इतिहास**, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सम्वत–२०३८, पृ०–५३ ।

८२. डॉ० रामकुमार वर्मा–**संत कबीर**, साहित्य भवन प्रा०लि० इलाहाबाद, १९६६ ई० पृ०–२६८ ।

८३. तत्रैव–पृ०–१०३ ।

८४. तत्रैव–पृ०–१४० ।

८५. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–**कबीर और कबीर पन्थ**–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९६५ ई०, पृ०–८४–८५ ।

८६. डॉ० रामकुमार वर्मा–**कबीर एक अनुशीलन**–साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद, सन १९८३ ई०, पृ०–५७ ।

८७. यज्ञदत्त शर्मा– **कबीर साहित्य और सिद्धान्त**, अक्षरम् सांनीपत (हरियाणा) १९८४ ई० पृ०–१०१ ।

८८. डॉ० लक्ष्मीदत्त बी० पंडित–**संत कबीर**, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, १९७७ ई०, पृ०–७८।

८९. तत्रैव–पृ०–९३ ।

९०. डॉ० रामकुमार वर्मा–**कबीर एक अनुशीलन**, साहित्य भवन (प्रा०) लि० इलाहाबाद, १९८३ ई० पृ०–५८ ।

९१. तत्रैव–पृ०–५९ ।

९२. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–**कबीर और कबीर पन्थ**–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९६५ ई० पृ०–१५९ ।

९३. तत्रैव–पृ०–२०९ ।

द्वितीय अध्याय

मिथिला मे कबीरपंथ ओ ओकर मैथिल वैशिष्ट्य

पन्थ शब्दक मूल रूप पथ थिक जकर अर्थ होइछ मार्ग । संतसाहित्य मे पथ शब्दक स्थान पर बसोकाल पन्थ शब्दक प्रयोग भेंटैत अछि । पन्थ, धर्म ओ सम्प्रदाय भिन्न-भिन्न भावक द्योतक थिक । धर्म कोनो व्यक्तिक नैसर्गिक वृत्ति मेँ लय विधिपूर्वक अनुष्ठित कर्म तथा आचारक बोधक थिक । मुदा परम्परानुसार एकर प्रयोग ईश्वर, परलोक आदि विषयक प्रचलित प्रणाली विशेषक हेतु कयल जाइछ जकरा आधार पर हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, इसाई धर्म आदि शब्दक व्यवहार होइत अछि । एके धर्म मे किछु विशिष्ट परम्परा केँ जन्म दय किछु विशिष्ट व्यक्ति पृथक सम्प्रदायक रचना कय लैत छथि जे कालक्रम मे मूलधर्म सँ किछु भिन्न प्रतीत होमय लगैछ । पंथ सम्प्रदाय विशेष सँ उद्भूत होइतो ओहि सँ किछु कम व्यापक होइछ। कोनो सम्प्रदायक कोनो विशिष्ट व्यक्ति कोनो विशिष्ट साधना मार्गक अवलम्बन कय पृथक पन्थक निर्माण कय लैत छथि ।

सन्त कबीर देशविदेशक अनेक साधना पद्धतिक सर्वोत्तम तत्व केँ ग्रहण कय एकटा विलक्षण मौलिक मतक प्रतिपादन कयलनि जाहि मे वेदान्तक ज्ञान, भक्तिक रस, योगमतक साधना तथा सूफीमतक प्रेमतत्वक आत्मसातीकरण भेल अछि । एहि तरहेँ हिनका द्वारा जाहि विशिष्ट साधना पद्धतिक निरूपण भेल, से कालक्रम मे कबीरपंथक नाम जानल जाय लागल।

कबीरपन्थक प्रामणिक ग्रन्थ बीजकहु मे एहन संकेत भेंटैत अछि जकर आधार पर कहल जा सकैछ जे सन्त कबीर पन्थरचनाक विरोधी छल होयताह । हुनक कहब छनि जे सन्त केँ मेला लगौला सँ की प्रयोजन ? महन्थ कहौला सँ की लाभ ? सन्त कबीर शिवक नाम पर प्रचलित शैव सम्प्रदायक दर्शन कयने छलाह । ओ सोचलनि जे लोक महंथ बनैत अछि, हाट बजार मे समाधि लगबैत अछि आ अवसर भेंटैत देरी तोप सेहो उठा लैत अछि । अपन पद मे ओ स्पष्ट कयलनि अछि जे दतात्रेय कहिया मवासीलोकनि पर चढ़ाइ कयने छलाह ? शुकदेव कहिया तोप संग्रह कयने छलाह ? नारद कहिया बन्दूक चलौलनि ? व्यासदेव कहिया बम चलैलनि ? लड़ाइ झगड़ा तँ वस्तुत: सन्त नहि मंदमतिक लोक करैत अछि । ई लोकनि विरक्तक बाना धारण करितो सोनो दिस आकृष्ट रहैत छथि । लोभ सँ ग्रस्त रहैत छथि आ घोड़ा-घोड़ी आदि ऐश्वर्य साधन रखैत छथि, सुन्दरी रखैत छथि आ सन्त चरित्र पर दाग लगबैत छथि । हिनक ई पद एहि प्रकारक अछि–

ऐसो जोग न देखा भाई ।
भुला फिरे लिये गफिलाई ।।
महादेव को पंथ चलावै ।
ऐसो बड़ो महंथ कहावै ।।
हाट् बजारे लावै तारी ।
कच्चा सिद्धा [illegible] [illegible] ।
कब [illegible] [illegible] मारी ।
कब सुखदेव [illegible] मारी ।
नारद कब बंदूक चलाया ।
व्यासदेव कब [illegible] बजाया ।।
करहि लड़ाई मति के मन्दा ।
ई अतीत कि तरकस बन्दा ।
भये विरक्त लोभ मन ठाना ।
सोना पहिरि लजावहि बाना ।
घोरा घोरी कीन बटोरा ।
गांव पाय जस चलत करोरा ।।

संत कबीर वेदान्त दर्शनक कतिपय नीक तत्व केँ परिगृहीत कय लेलनि, मुदा वैष्णवधर्मक मूर्ति पूजा आ अवतारवादक खण्डन कयलनि । एकर अतिरिक्त ई तीर्थाटन आ माला आदि वाह्यडम्बरपरक मान्यताकेँ अपन विचारधारा मे स्थान नहि देलनि यथा

साधो देखो जग बौराना ।
साँची कहौं तो मारन धावै, झूठ जग पतियाना ।।
हिन्दू कहत हैं राम हमारा मुसलमान रहमाना ।
आपस में दोउ लड़ मरतु हैं मरम कोइ नहि जाना ।
बहुत मिले मोहि नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना ।
आतम छोड़ि पखानें पूजें तिनका थोथा ज्ञाना ।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना ।
पीपर-पाथर पूजन लागे तीरथ बरत भुलाना ।।
माला पहिरे टोपी पहिरे छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शबदै गावत भुले आतम खबर न जाना ।।
घर-घर मंत्र जो देत फिरत हैं माया के अभिमाना ।
गुरवा सहित सिष्य सब बूड़े अन्त काल पछिताना ।।
बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ै किताब कुराना ।
कहैं मुरीद कबर बतलावैं उनहू खुदा न जाना ।।
हिन्दु की दया मेहर तुरकन की दोनों घर से भागी ।
वह करै जिवह वाँ झटका मारे आग दोऊ घर लागी ।।
या विधि हँसत चलत हैं हमको आप कहावैं सयाना ।
कहै कबीर सुनों भाई साधो इनमें कौन दीवाना ।।

[illegible] अन्य पद मे सेहो कबीर मूर्ति पूजा, जटाधारण, धुनी रमायब आ [illegible] प्रति सेहो आक्रोश व्यक्त कयलनि अछि । यथा-

मन ना रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा ।
आसन मारि मंदिर मे बैठे ब्रह्म छाड़ि लगे पथरा ।
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले दाढ़ी बढ़ाय जोगी हो गैले बकरा ।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले काम जराय जोगी हो गैले हिजरा ।
मथवा मुड़ाय जोगी कपड़ा रंगौले गीता बांचके होय गेल लबरा ।
कहहि कबीर सुनो भई साधो जम दरवजवा बांधल जैवे पकड़ा ॥

एहि तरहें संत कबीर भागवत धर्म, कर्मकाण्ड ओ वैष्णव मतक कटु विरोध कयलनि अछि । कर्मकाण्डक विरोध करैत हुनक कहब छनि-

जब मैं भूला रे भाई । मेरे सतगुरु जुगत लखाई
छाँड़ा तीरथ न्हाना । करिया करम अचार ।
सगरी दुनियाँ भइ सयानी, मैं ही इक बौराना ॥
ना मैं जानू सेवा बन्दगी, ना मैं घंट बजाइ ।
ना मैं मूरत धरी सिंघासन, ता मैं पुहुप चढ़ाई ॥
ना हरि रीझै जप तप कीन्हें ना काया के जारे ।
ना हरि रीझै धोती छाँडे ना पाँचो के मारे ॥
दया राखि धरम को पाले जग सो रहै उदासी ।
अपना साजिव सबको जाने ताहि मिलै अविनासी ॥
सहैं कुशब्द बाद को त्यागै, छाँड़ै गर्व गुमाना ।
सत नाम ताही को मिलि है कहै कबीर सुजाना ॥

एहि तरहें कबीर जाहि सहज धर्मक व्यवस्था देलनि अछि ओहि मे ने त उपासना-पद्धति अछि ने कर्मकाण्डीय व्यवस्था । ओहि मे तँ केवल सारग्रहणक अवस्था अछि ।

मुदा संत कबीरक पन्थ रचनाक विरोधी भावक अछैतो हुनका नाम पर एकटा दिशा सन्त सम्प्रदायक आविर्भाव भेल जे क्रमशः सम्पूर्ण भारतवर्ष मे एहि सम्प्रदायक विचारधाराक प्रचार प्रसार मे लागल अछि । मिथिला सेहो कबीरपन्थी विचारक प्रचारक प्रमुख केन्द्र रहल अछि ।

कबीर पन्थीक साहित्यक अनुसार सन्त कबीरक चारि गोट प्रमुख शिष्य छलाह । जागूदास, भागूदास, सुरतगोपाल ओ धर्मदास । जागूदासक वर्तमान गुरुगादी वैशाली जिलाक विद्दुपुर नामक स्थान मे स्थित अछि । भागू साहबक अनुयायीक वर्तमान गुरुगादी सारण जिलाक धनौती ग्राम मे अछि । सुरतगोपालक मूल गुरुगादी काशीक कबीरचौरा मे तथा धर्मदासक गुरुगादी छत्तीसगढ़क दामाखेड़ामे स्थित अछि ।[५] एहि तरहें कबीरपन्थक चारि गोट प्रमुख शाखा मे एकटा प्रमुख जागू शाखाक केन्द्र मिथिले मे अछि । ओना एहि पन्थक अन्यान्यो शाखा सँ सम्बद्ध विभिन्न मठ मिथलाक विभिन्न गाम मे स्थापित अछि तथा किछु एहनो मठ अछि

जे अपना कें सर्वथा स्वतंत्र कहैत अछि । कबीरपन्थक एहि विभिन्न शाखा आ उपशाखाक माध्यमे मिथिलाक ग्रामांचलमे कबीरपन्थी विचारधाराक प्रचार प्रसार होइत रहल अछि ।

जागूशाखा

जागूदास कें कबीरपन्थक प्रधान प्रवर्तक सभ मे गनल जाइत छनि । हिनक निवास कटक मे छल । हिनक निर्वाणक लगभग पौनतीन सए वर्षक बाद आठम पीढ़ीम आचार्य हाथीदास कटक छोड़ि कय मिथिला अयलाह आ विद्दुपुर मे कबीरमठक स्थापना कएलनि। एहि सम्बन्ध मे एकटा पद अछि

प्रथम कबीर जगदीश पग धारे प्रभु,
हासो के सुपूत पूत चरण मे धाय हैं ।
गोद मे उठाय प्रमोद से बनाए शिष्य,
नाम जागू दास बास कटक बनाय है ।
आठवीं पीढ़ी मे हरिदास के सुशिष्य हाथी,
दास निज बास पुनि विधुपुर लाय हैं ।
साक्षी बुचानन विदेशी के उत्कीर्ण लेख,
जागू के सुधाम विधुपुर ही प्रधान हैं ॥

कहल जाइत अछि जे जागूदासक जन्म सं० १५३८ मे भेल छल । हिनक पिताक नाम जगरदत्त ओ माताक नाम कमलेश्वरी देवी अथवा हांसो माता (हंसाबाई) छल । हिनक माता पिता हिनका कटक मे संतकबीर कें प्रदान कय देने छलथिन । ई कटके मे अपन कुटी बनाकय रहय लगलाह । पछाति ओ कटक सँ मिथिला चल अयलाह आ अन्धराठाढ़ी गाम मे रहय लगलाह । राजा प्रतापभानुक धर्मपत्नी श्रीमती पद्मावती देवी हिनक खूब सम्मान कएलथिन तथा हिनका हेतु एकटा विशालभवन बना देलथिन । मुदा ओतहु ई अधिक समय धरि नहि रहि सकलाह तथा ओहि स्थान पर अपन एकटा शिष्य कें राखि स्वयं समस्तीपुर सँ सात मील पूर्व शोभनवसन्तपुर नामक ग्राम मे चल अयलाह, जतय हिनका उक्त रानी सँ २८ बीघा खेत भेंटलनि । एहि ठाम सँ ओ विद्दुपुर चल गेलाह, जतय मठक स्थापना कयल आ ओतहि हिनक देहावसान सेहो भए गेलनि ॥

इहो कहल जाइत अछि जे जागूदासक माता-पिता संत कबीरक खोज मे काशी अएलथिन आ काशीक निकट बनकटा मे कोनो जंगल मे हुनका कबीरक दर्शन भेलनि । कबीर जागूदासकें अपन शिष्य बना लेलथिन । उक्त बनकटा वन मे सेहो कबीरक मठ अछि । ई स्थान सम्प्रति शिवपुर नामे प्रसिद्ध अछि ॥

एकटा अन्य कबीरपन्थी परम्पराक अनुसार भारत भ्रमणक क्रम मे जखन संत कबीर जगन्नाथपुरी पहुँचलाह तँ समुद्रक प्रखर चोट सँ जगन्नाथ मंदिरक रक्षा खन्ती गाड़ि कय कयने छलाह । कबीरसाहित्य मे वर्णित 'जाय पुरी पुरुषोत्तम के तब टेकर दण्ड समुद्र हटाए' एहि तथ्यक प्रमाण अछि । एहिसँ बुझना जाइत अछि जे ओहि समयक जागूदासक माता-पिता संत कबीरक प्रखर प्रभाव सँ प्रभावित भए हुनक शिष्यत्व ग्रहण कयने होयथिन ।

किछु वर्षक उपरान्त जागृदासक माता संत कबीर सँ वैराग्य-दीक्षा लेलनि आ अपन बालक जागृदासक केँ हुनका चरण मे अर्पित कय देलथिन । बालक जागृदास अपन विदुषी माता सँ सन्तकबीरक शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करैत रहलाह । १४२९ ई० मे सन्त कबीर हिनका मांगलिक कबीरपन्थी वेष प्रदान कय योगभक्ति, शब्द-सुरति तथा ज्ञान-ध्यानक अध्यात्म करौलथिन । बाद मे हिनका सम्यक् समाधिनिष्ठक उपाधि सदसदविवेकी प्राप्त भेलनि ॥

जागृदासक शिष्य परम्परा एहि प्रकारें अछि–

मथुरादास-गरभूदास-वल्लभदास-शिरोमणिदास-धरणीदास-हरिदास-हाथीरामदास-प्रीतमदास-प्रेमदास-सन्तोषदास-जगदाधरदास-मनसादास-गरीबदास-सुखरामदास-अजगैबीदास (झुमकदास)-अमृतदास-रामलखन दास-रघुनाथदास ।

एहि गुरुपरम्पारक उल्लेख एहि पद मे भेटैछ–

दुखित देखि जग जीव बहुं हरण दुसह भव पीर ।
पुण्यधाम काशीपुरी प्रगटे सत्य कबीर ॥१॥
कंवल ज्ञान लखाय के कियो भेदभ्रम नाश ।
कुमति जनन को सुमति कर सुखी किये सब दास ॥२॥
राह तेजी प्रभृति भये शिष्य बुद्धि आगार ।
अति प्रसिद्धि तिनमें भये मुख्य शिष्य ये चार ॥३॥
जागूदास भागू तथा सुर्ति गोपाल प्रवीण ।
धर्मदास विशुद्ध मति सत्य प्रेम मे लीन ॥४॥
जागूदास पुनीत मति शिष्य भक्ति अनुसार ।
विद्दुपुर शुभग्राम मे किया निवास विचार ॥५॥
जागृत जीवन को किये दे उपदेश ललाम ।
ताते जग मे विदित है जागू साहब नाम ॥६॥
अपने बोध स्वरूप मे जागृत आठो याम ।
ताते जग मे विदित है जागू साहब नाम ॥७॥
पारख पद आरूढ़ मति विगत मोह मद काम ।
ताते जग मे विदित है जागू साहब नाम ॥८॥
ध्यानावस्थित काल मे बीते अगणित याम ।
ताते जग मे विदित है जागू साहब नाम ॥९॥
बहुत शिष्य गुण खान भल तिनते दीक्षा पाय ।
सत्यधर्म उपदेश हित मठिया लीन्ह बनाय ॥१०॥
गुरू स्थान तिनका वही विद्दुपुर नहि और ।
सिद्ध गये ते पूजिये सिद्ध गये की ठौर ॥११॥
गुरू सीढ़ी ते ऊतरे शब्द बिहूना होय ।

ताको काल घसीट है राख सके न कोय ॥१२॥
सज्जन शुभ गुण खान गुरू जागू दास महान ।
चन्द्र किरण सम धवल यश विखरित प्रगट जहान ॥१३॥
उनकी शिष्य परम्परा सुनहु सदा चितलाय ।
मथुरादास विवेक चित कीन सुशोभित आय ॥१४॥
शिष्य सुदीक्षित वे किये विशद बुद्धि विद्वान ।
गरभूदास महा निपुण संवल चतुरता खान ॥१५॥
क्षीर नीर कैलाश सम यश जिनका विख्यात ।
वल्लभदास सुशुभ्र तन जग जिनके गुणगात ॥१६॥
प्रेम प्रगाढ़ प्रवाह के प्रगट प्रथम अवतार ।
नाम शिरोमणि ललित लय लयगत लेखत सार ॥१७॥
तिनके शिष्य समाज मे गुण गण भूषण गेह ।
धरणिदास शुभ पास मैं दीनदहन लगि मेह ॥१८॥
उनसे शिक्षित थे हुए वीतराग गत द्वेष ।
दुष्ट दलन दावा दहन हरीदास शुभ वेष ॥१९॥
काम क्रोध मद लोभ रिपु ये विषयन के डार ।
हाथीदास सुशिष्य भय दीन्हो ताहि उखार ॥२०॥
अमल कमल जल समधवल प्रबल अनल अनुसार ।
उनके शिष्य सुजान थे प्रीतम दास उदार ॥२१॥
प्रेमदास प्रेमी अधिक प्रेम पयोनिधि रूप ।
अखिल निरन्तर ध्यान रत थे साधुन मे भूप ॥२२॥
उनके शिष्य प्रधान थे सन्तोषी सन्तोष ।
दास सहित आसा रहित ब्रह्म ज्ञान के कोष ॥२३॥
धर्म्म धुरन्धर धराधर जगदाधर आधार ।
मनसा दास सुजान गुरु सेवा मे सरदार ॥२४॥
भोजन सुख अरू क्षीर जल चाहत ए सब जीव ।
धरणि धाम धन छोड़िके भयउ गरीब गरीब ॥२५॥
गुण गण खान निधान नित प्रेम प्रगट अभिराम ।
शिष्य दास गुरू सत्य के शुद्धि बुद्धि सुखराम ॥२६॥
हुए दास अजगैव इक अन्तिम शिष्य सुजान ।
सुझयो उनकी तुच्छ जग प्रगट भयो विज्ञान ॥२७॥[12]

एहि तरहें जागूदासक शिष्य परम्परा मे मथुरादास, गरभूदास, वल्लभदास, शिरोमणिदास ओ हरिदास धरिक पीढ़ी कटक मे रहल आ आठम पीढ़ीक हाथीरामदास विद्दुपुर मे गुरुगादीक स्थापना कयलनि । हिनक परवर्ती शिष्य परमपरा मे प्रीतमदास, प्रेमदास, सन्तोषदास,

जगदाधरदास, मनसादास, गरीबदास, सुखरामदास, अजगैबीदास (झुमकदास), अमृतदास, रामलखनदास भेलाह जे विद्दुपुर मठ कँ पूर्ण विकसित करैत गेलाह आ एकर अनेको उपशाखा आ मठक स्थापना कए कबीरपन्थक प्रचार-प्रसार मे अभूतपूर्व योगदान दैत रहलाह ।

हाथीरामदास

विद्दुपुर मठक संस्थापक वस्तुत: हाथीरामदास छलाह । संभवत: कटकक अशान्त राजनीतिक स्थितिक कारणें ई उत्तर बिहारक कोनो नवाब द्वारा दस कट्ठा जमीनक सनद भेटल छलनि, जाहि सँ हिनका मठ निर्माण मे पर्याप्त सम्बल भेटलनि । संभवत: एहि मठक स्थापना १७२९-३० ई० मे भेल छल । मठ हाजीपुर-बरौनी लाइनक विद्दुपुर स्टेशन लग अवस्थित अछि तथा कबीरपन्थक प्रमुख आचार्य गादीक रूप मे प्रख्यात अछि । एकर शाखा-प्रशाखा उत्तर भारतक अनेक राज्य तथा नेपालक अनेक जिला मे अवस्थित अछि ।

प्रीतमदास

ई हाथीरामदासक एकमात्र शिष्य छलाह । हिनका विद्दुपुर दानीदास नामक एकगोट व्यक्तिसँ दानपत्र भेटल छल जे मठ मे सुरक्षित अछि ।

प्रेमदास

ई प्रीतमदासक शिष्य छलाह । हिनका बेड़ी निवासी थाना मोहिउउद्दीनगरक जमींदार होरिलासिंह द्वारा नावानगर मे डेढ़ बीघा तथा हरपुर नन्दलाल ओ रसीदपुर मे तीन बीघा पन्द्रह कट्ठा कुल सवा पाँच बीघा जमीन भेटल छलनि जकर सनद मठ मे सुरक्षित अछि ।

सन्तोषदास

ई प्रेमदासक प्रधान शिष्य छलाह । ई फसली सन् १२२० साल अर्थात् १८१३ ई० मे आचार्य प्राप्त कएलनि । ई अत्यन्त सन्तोषी प्रकृतिक तथा आत्म चिन्तन मे लीन रहयवला छलाह ।

जगदाधरदास

ई संतोषदासक शिष्य छलाह । गुरुक स्वर्गारोहणक पश्चात् ई गुरुगादीक अधिकारी भेलाह। हिनका दुइ गोट शिष्य भेलथिन-मनसादास ओ दयालुदास । मनसादास जगदाधरदासक बाद आचार्य पद पर प्रतिष्ठित भेलाह तथा दयालुदास बिद्दुपुर सँ पूर्व नावानगर मे होरिल सिंहकँ देल सवा पाँच बीघा जमीन सँ जीवनयापन करैत मठक स्थापना कयलनि । एहि मठक शिष्यपरम्परा एहि प्रकारें अछि :-

दयालुदास-सुमिरणदास-मोहनदास-दुलनदास । दुलनादासक बाद एहि मठ कँ पुन: प्रधान मठ द्वारा आत्मसात कए लेल गेल किएक तँ दुलनदासक शिष्य परम्परा मे क्यो नहि छल आ ई एकाकी जीवन व्यतीत करैत छलाह ।

मनसादास

जगदाधरदासक निधनक पश्चात मनसादास आचार्य गद्दीपर आसीन भेलाह । ई गहरवार क्षत्रिय छलाह । हिनक शिष्य बनवारीदास चन्देल क्षत्रिय हिनका खड्ग प्रहार द्वारा निधन कय देलक ।

गरीबदास

मनसादासक निधनक पश्चात तत्कालीन ईस्ट इंडिया कम्पनीक न्यायालय द्वारा बनवारीदास कँ सेहो फाँसीक सजा दय देल गेल । १८७८ ई० मे मनसादासक अन्य शिष्य गरीबदास गद्दीपर बैसलाह । ई अत्यन्त शान्त प्रकृतिक सन्त छलाह । हिनका गद्दी पर बैसलाक बाद पूर्वाचार्य मनसादासक भण्डारा सम्पन्न भेल छल ।

सुखरामदास

गरीबदास अत्यन्त सौम्य प्रकृतिक छलाह तें ई अपन जीवनेकाल मे सुखरामदास कँ गद्दी दय देलथिन । हिनक जन्म वैशाली जिलाक विद्दुपुर थानाक रहिमापुर गाम मे भेल छल । जाति सँ ई कोइरी छलाह तथा हिनक पारिवारिक स्थिति सुदृढ़ छलनि । ई स्वेच्छा सँ कबीर पंथ मे दीक्षित भेल छलाह । अपना गामक डेढ़बीघा जमीन ई दानस्वरूप मठ कँ दन छलथिन। बाद मे मठ सँ दूर रहबाक कारण आचार्य रामलखन दास ओकरा बेचि देलनि।

सुखराम दास पहुँचल सन्त छलाह । हिनक ख्याति दूर-दूर धरि पसरल छल । हिनका समय मे हिन्दू आ मुसलमान दूर-दूर सँ आबि कबीरपन्थ मे दीक्षित भेल । हिनका द्वारा कबीरमतक अत्यधिक प्रसार भेल । हिन्दू मुस्लिम एकताक चक्र कबीरपन्थक माध्यम सँ हिनका समय मे खूब विकसित रूपें चलल । मुरादपुर (महनार) क दातासांइ तथा गनियारीक नुरी मियाँ नामक दूटा मुस्लिम धर्मावलम्बी हिनक विशिष्ट शिष्य भेलथिन । नुरी मियाँ प्रसिद्ध निर्मलदास गंडक तट पर हाजीपुरक कोनहाराघाट पर तपश्चर्या द्वारा पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि। हिनक मठ एखनो विद्यमान अछि । हिनक अलौकिक सिद्धिक सम्बन्ध मे अनेकानेक लोकश्रुति प्रचलित अछि ।

सुखरामदासक दोसर मुसलमान शिष्य दातासांइ प्रसिद्ध दातादास मुंगेर जिलाक जलड ग्राम मे महाराज गिद्धोर सँ सम्मानित भए मठक स्थापना कयने छलाह । सुखराम दासक अन्य शिष्य मे चूड़ामणिदास अपन जन्मभूमि गनियारी मे ओहिठामक जमीन्दारक पटना निवासी जयबाबू सँ सम्मानित भए मठक स्थापना कएने छलाह । दोसर शिष्य डोमनदास ग्राम गनियारीक छलाह आ पटना सँ दक्षिण शुक्लपुर मे मठक निर्माण कयने छलाह । शुक्लपुरमठक क्रमश: अनेक शाखा पटनाक कच्चीघाट, चमडोरिया, शोनामा अहमदाबाद आदि मे स्थापित भेल।

सुखरामदासक आर अनेक शिष्य उत्कृष्ट प्रतिभासम्पन्न भेलाह । एहि मे केवलदास मझौली (वैशाली) तथा हरपुर-शैदाबाद (समस्तीपुर) मे मठक स्थापना कएलनि । अन्य शिष्य उत्तरप्रदेश निवासी सूर्यूदास सिद्ध पुरुष छलाह । एकटा और शिष्य नारायणदास छलथिन जे

अपन जिर्वान्दायताक कारणें ख्यात भेलाह । अन्तिम शिष्य झुमकदास मुखरामदासक स्वर्गारोहणक पश्चात आचार्य गादी कें प्राप्त कयलनि ।

झुमकदास

ई महान सिद्धपुरुष आ तपस्वी छलाह । हिनक शाप भयानक होइत छल । कहल जाइछ जे ई [illegible] मला में भुतिआ कय मठ में रहय लागल छलाह आ मुखरामदासक शिष्य [illegible] । हिनक आचार्यत्व में लखनऊ जिलाक डालीगंज स्टेशनक उत्तर बसहा ग्राम में कबीर कुटीक स्थापना भेल छल, जाहि मे मायादास-परमेश्वरदास-सन्त शरणदास-भगवानदास आ शुकदेवदासक शिष्य परम्परा रहल ।

अमृतदास

१९२५ ई० मे महंथ अजगैबीदास प्रसिद्ध झुमकदासक निधनक पश्चात ई आचार्य गादी पर बैसलाह । ई जाट यादव वंशक छलाह । आचार्यत्वक किछुए दिनक बाद हिनक निधन भए गेल । ई समस्तीपुर जिलाक पटोरी थानाक धमौन गामक निवासी छलाह ।

रामलखणदास

ई वैशाली जिलाक सैदाबाद गामक निवासी छलाह आ अमृतदासक बाद आचार्य भेलाह।

रामदयाल दास

ई विद्दुपुर मठक साम्प्रतिक आचार्य छथि । संस्कृत, व्याकरण एवं दर्शनक ई प्रकाण्ड विद्वान छथि । हिनक शिक्षाप्रेम, जिज्ञासु आ प्रेमी-प्रवृति सर्वविदित अछि । हिनक नाम पर सन्त कबीर रामदयाल महाविद्यालय विद्दुपुर खुजल अछि । हिनका समय मे मठक विकास तीव्रता सँ भए रहल अछि । जागूशाखाक ई गुरुगादी आर्थिक दृष्टि सँ अत्यन्त सम्पन्न अछि । मठ सँ सम्बन्धित लगभग एक सए बीघा जमीन अछि । मठक हेतु कोठरी, भंडारी, पुजारी आदिक व्यवस्था अछि । एहि मठ मे भोर आ संध्याकाल समाधि सभक पूजा होइत अछि ।

पूजाक बाद परस्पर बन्दगी होइत अछि आ आचार्यक आरती उतारल जाइत अछि । भोजनक उपरान्त तथा प्रात:काल आंछाओन छोड़लाक बाद सेहो बन्दगी कयल जाइत अछि।

एहि मठ मे हिन्दू आ मुसलमानक संग कोनो भेदभाव नहि राखल जाइत अछि । मुदा स्त्री कें दीक्षा नहि देल जाइत अछि । जाति-पातिक कोनो भेदभाव दीक्षा मे नहि कयल जाइछ। दीक्षाक बाद शिष्य कें कंठी ग्रहण करबाओल जाइछ जे तुलसी अथवा मलयागिरि बेलक होइत अछि । एहिठामक महन्थ मिरजइ, ब्रहमगाँती ओ अलफी पगड़ी धारण करैत छथि। शिखा-सूत्र आ तिलक धारण करब अनिवार्य बूझल जाइत अछि । तिलक मे द्वादश तिलकक प्रधानता अछि । एहि मे पुरेना सँ लय ललाट धरि तिलक कयल जाइत अछि । मृत्यूपरान्त एहिठाम शव कें समाधि सेहो देल जाइत अछि, मुदा जलप्रवाहक प्रधानता अछि । तीन पाव संत सेवा तथा अतिथि सत्कार एहिठामक प्रधान विशेषता अछि । एहिठाम वर्ष मे एक बेर कबीर जयन्ती धूमधाम सँ मनाओल जाइत अछि । आचार्य पदक हेतु पूर्वाचार्यक शिष्य अथवा कोनो शाखाक विशिष्ट वैरागी अनुयायीक चयन कयल जाइत अछि । एहि मठ द्वारा बीजक, सत्यनाम पाठ, गुरुमहिमा आदि ग्रन्थक प्रकाशन भेल अछि आ एहि तरहें ई मठ निरन्तर कबीरपन्थक प्रचार-प्रसार मे लागल अछि । एकर शाखा सभ नवादा, समस्तीपुर, वैशाली, पटना, गुजरात, उत्तरप्रदेश, नेपाल, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उड़ीसा आदि क्षेत्र मे पसरल अछि ।

मिथिला मे एहि मठक सर्वाधिक प्रशस्त मठ कबीर जागू आश्रम, अन्धराठाढ़ी अछि।

कबीर जागू आश्रम, अन्धराठाढ़ी

कबीर जागू आश्रम, अन्धराठाढ़ी मधुबनी जिलाक अन्धराठाढ़ी प्रखण्ड मुख्यालय सँ एक किलोमीटर पूरब मे स्थित अछि । एहि मठक वंशावली वर्तमान आचार्य सियारामदासक अनुसार निम्न प्रकारें अछि–

कबीर साहेब-जागू साहेब-गंगासाहेब-खजानामतवा-रामदास-रामजीदास-सहजरामदास-तांतारामदास-घमण्डीदास-सुखरामदास-चन्दनदास-हाथीरामदास-प्रीतमदास-पृथ्वीदास-रघुवरदास-जालगीरदास-वंशीदास-दुखियादास-शीतलदास-रामदास-सियारामदास ।

एहि शाखाक प्रवर्तन सेहो जागूदास कयने छलाह । कटक सँ अयलाक बाद जागूदास राजा प्रतापभानुक पत्नी श्रीमती पद्मावती देवीक सहायता सँ अन्धराठाढ़ी मे कबीर आश्रमक स्थापना कयलनि । मुदा किछुए दिनक बाद अपन शिष्य गंगासाहेब कें गादीक भार दय समस्तीपुर जिलाक शोभनवसन्तपुर चलि अयलाह । पछाति ओतए सँ विद्दुपुर चल गेलाह।

गंगा साहेब शिष्य खजानामतबा गुरुगादीक अधिकारी भेलाह । ई मौग प्राकृतिक छलाह तें लोक हिनका माइराम सेहो कहैत छलनि । हिनका सम्बन्ध मे अनेक जनश्रुति प्रचलित अछि । कहल जाइछ जे एकबेर साधुलोकनिक आग्रह पर जे ओलोकनि भूमिदाह नहि करैत छथि, खजनामतबा छप्परे पर चूल्हि राखि भानस कयने छलाह मुदा छप्पर कें कोनो क्षति नहि पहुँचल छलैक ।

मठक बारहम आचार्य हाथीराम साहेब सेहो सिद्ध पुरुष छलाह । कहल जाइछ जे एक बेर दरभंगा राजक कर्मचारिलोकनि हिनका पकड़िकय कहलथिन्ह जे अहाँक नाम तँ हाथीराम अछि तखन अहाँक भोजन सेहो हाथीएक भोजन होइत हैत । ई कहि ओलोकनि हिनका एकटा घर मे बन्द कय लकड़ीक डारिपात भोजन हेतु दय देलथिन । प्रात: जखन ओ घर खोलल गेल तँ सभटा डारापित समाप्त देखल गेल आ हाथीक पैरक चेन्ह तथा लिद्दी ओहि घर मे पाओल गेल ।

आचार्य पृथ्वीदास सेहो साधन सम्पन्न रहथि । ई एक दिन ध्यान मे लीन रहथि मुदा योगसाधना मे वायु अवरूद्ध देखि शिष्यलोकनि हिनका मृत बूझि गाड़ि देलथिन । तेसर दिन समाधिएतर सँ ई बजलाह जे हम जीविते छी तखन अहाँ सभ माटि मे किएक गाड़ि देल। बेस, आब एक गिलास दूध हमर समाधिपर दए देल करू । ई क्रम वर्ष भरि चलल आ तकर

बादा ई समाधि मे रहैत जीविते पाओल गेलाह ।

एहि मठ मे गंगासाहब सँ रामदास साहेब ॥ धरिक समाधि एकटा घर मे अछि । ओहि समाधि सभक नित्य प्रातः ओ साय आरती होइत अछि । आचार्य महंथक मुइलाक बाद हुनक समाधि होइत अछि । जरयबाक प्रथा नहि अछि ।

इहो मठ विद्दुपुर सदृश वैरागी मठ थिक । बियाहल व्यक्ति एतय आचार्य नहि भय सकैत छथि । निवर्तमान आचार्य अपन शिष्यमंडली मे एकटा केँ अपन उत्तराधिकारी नियुक्त करैत छथि ।

मठ मे २१ बीघा जमीन अछि जे एकर आयक प्रमुख साधन थिक । एकर अतिरिक्त चढ़ौआ आदि सँ सेहो मठक खर्चा मे सहयोग भेंटैत अछि । मिथिलाक कबीरपन्थी मठ मे एकर विशिष्ट स्थान अछि । एहि मठक शाखा सभ मधुबनी जिलाक मदनेश्वरस्थान, सिसवारि, एकडारा, जगतपुर, फुलवरिया, बथनाहा, ओ महिनाथपुर: पूर्णियाँ जिलाक फारविसगंज, हरिपुर, रामपुर, डुमरिआ, पहसी, कुआरी, लालपुर, तामगंज, औराही ओ हिंगरा तथा सहरसा जिलाक मिरचैया, जमालपुर, बन्नी आदि ग्राम मे अछि । सीतामढ़ी जिला मे सेहो एहि मठ सँ समबद्ध उपशाखा सभ अछि ।

धनौतीशाखा

कबीर पंथक दोसर शाखाक गुरुगादी छपरा जिलाक धनौती नामक गाम मे अछि । एहि शाखा केँ धनौती शाखा अथवा भगताही शाखा कहल जाइत छैक । भागूसाहब अथवा भगवान गोसाई एहि शाखाक प्रर्वक मानल जाइत छथि । हिनका सम्बन्ध मे विद्वानलोकनिक धारणा छनि जे ई पिशैराबाद (बुन्देलखंड) क निवासी अहीर जातिक छलाह । पहिने ई निम्बार्क मतानुयायी छलाह मुदा पछाति कबीरक व्यक्तित्व सँ प्रभावित भए कबीरपन्थी मे दीक्षा लेलनि । ई संत कबीरक संगहि रहैत छलाह आ हुनक छओ सए शब्द ओ साखीक संग्रह कएने छलाह ।[13] एहि शाखाक शिष्य परम्परा एहि प्रकारें अछि–भगवान गोसाँई-धनश्याम-उद्धोरण-श्रीदमन-गुणाकर-गणेश कोकिलवनवारी-श्रीनयन-भीष्म-भूपाल-परमेश्वर-गुणपाल-शेषमणि-जयमन-हरिनाम-स्वरूप-रामरूप-रघुनदन-रामधारी ।

एहि शाखा मे **बीजक**क अतिरिक्त अन्य कोनो महत्वपूर्ण ग्रन्थक अभाव अछि । एहि शाखामे भक्तिभावक प्रबलता देखि पड़ैछ, मुदा एहि मे कबीरक अवतारवादिता पर विश्वास नहि कयल जाइछ ।[14]

एहि शखाक मठसभ अनेक स्थान मे पसरल अछि । मिथिला मे कबीर आश्रम तुर्की (मुजफ्फरपुर), ओ कबीर आश्रम समस्तीपुर एहि शाखा सँ सम्बद्ध अछि ।

कबीर आश्रम, तुर्की

एहि आश्रमक महन्थ गोस्वामी कहबैत छथि–जे धनौतीक अनुरूप अछि । शाखा सम्प्रति एहि आश्रमक महन्थ गिरिजानन्द गोस्वामी छथि । ई यादव कुलक छथि । एहि आश्रमक स्थापना चतुर्भुज गोस्वामी कएने छलाह । हिनक शिष्य परम्परा मे नरसिंह गोस्वामी ओ महादेव गोस्वामी

भेलाह । एहि आश्रम मे आत्माक पूजा होइछ । बीजकक पाठ धनौती मठक अनुकूल होइछ। एतय आरतीपूजा नहि होइछ । प्रातः सायं बन्दगीक परम्परा अछि । ई आश्रम वैरागी आश्रम अछि, तें महन्थ गृहस्थ नहि होइत छथि । एतय साल मे एक बेर कबीर जयन्तीक उत्सव मनाओल जाइछ । एहि स्थान केँ हथुआमहाराजक देल ५१ बीघा जमीन छैक जाहि सँ आश्रमक खर्चा चलैत छैक । मरणोपरांत समाधि देल जाइछ । महन्थक उत्तराधिकारी चुनाव मे मूल गुरुगादीक महन्थ धनौती मठ सँ आबि चादरि प्रदान करैत छथिन्ह ।

कबीर आश्रम, समस्तीपुर

कबीर आश्रम, समस्तीपुर, समस्तीपुर टीशन सँ सटल पूर्व स्थित अछि । इहो मठ कबीरपन्थक भगताही शाखा धनौतीक साहेब-गंज परसौनी (मुजफ्फरपुर सँ पश्चिम) शाखा सँ संबन्धित अछि । एहि मठक आचार्य परम्परा निम्नरूपक अछि–

१–उम्मर गोसाँइ
२–नेहला गोसाँइ
३.–चेतन गोसाँइ
४.–राम गोसाँइ
५.–भगलू गोसाँइ
६.–माधव गोसाँइ (वर्तमान)
७.–ज्ञानानन्द गोसाँइ (पट्टशिष्य) ।

एहि मठक समस्त रीति भगताही शाखाक अनुकूल अछि । एहूठामक महन्थ गोसाँइ कहल जाइत छथि । एहि मठक प्रथम दू गोंट आचार्य पारिवारिक छलाह, मुदा परवर्त्ती आचार्यलोकनि वैरागी होइत अयलाह अछि । वर्त्तमान आचार्य माधवगोसाँइ सन १९३३ ई० मे आचार्य गादी पकड़लनि आ अपना जीविते ओ अपन शिष्य ज्ञानानन्द गोसाँइ केँ १९६६ ई० मे अपन उत्तराधिकारी बना देलथिन ।

एहि मठ मे २५ एकड़ भूमि अछि जाहि सँ मठक खर्चा चलैत अछि । एहि मठक एक मात्र शाखा समस्तीपुर जिलाक नवादा ग्राम मे अछि । एकर शिष्य सभ मधुबनी, दरभंगा ओ समस्तीपुर मे पाओल जाइत छथि । मठक महन्थ केँ समाधि देल जाइत छनि । एगारहमा दिन क्षौरकर्म ओ तकर बाद भण्डारा होइत अछि ।

कबीर चौरा मठ, काशी

कबीरपंथक तेसर प्रमुख शाखाक गुरुगादी कबीरचौरा काशी अछि । एहि शाखाक प्रवर्त्तक महात्मा सुरतगोपाल कहल जाइत छथि । हिनक पूर्वक नाम सर्वाजीत छल । ई दाक्षिणात्य ब्राह्मण छलाह । हिनका बुद्धि अत्यन्त कुशाग्र छल तें अल्पे वयस मे ई नाना शास्त्रक ज्ञान प्राप्त कए लेने छलाह । कबीर सँ परास्त भए ई हुनका गुरु रूप मे स्वीकार कयलथिन ।[15]

एहि शाखाक शिष्य परम्परा निम्नस्वरूप कहल गेल अछि–

कबीर-सुरतगोपाल-ज्ञानदास-श्यामदास-लालदास-हरिदास-शीतलदास-मुखदास-हुलासदास-माधवदास-कोकिलदास-रामदास-महादास-हरिदास-शरणदास-पूरणदास-निर्मलदास-रंगीदास-गुरुप्रसाददास-प्रेमदास-रामविलासदास ।[१६]

एहि शाखाक प्रमुख मठ सभ कबीरचौरा, लहरतारा, मगहर ओ गया मे अछि ।

कबीर मठ, सतमलपुर

कबीरमठ, सतमलपुर समस्तीपुर जिलाक सतमलपुर गाम मे अछि । एहि मठक संस्थापक कुतकोलाल साहेब छलाह । कुतकोलाल साहेब कबीरचौरा काशीक पाँचम आचार्य भेल रहथि आ अपन उत्तराधिकारी नियुक्त कय सतमलपुर आबि गंडकक कछेर पर कबीर आश्रमक स्थापना कयलनि । एहि मठक स्थापना सं० १६३१ मे भेल छल । एहि मठक आचार्य परम्परा निम्नरूपक अछि–

कुतकोलाल साहेब-खरक साहेब-जयदेवसाहेब-भूपतिसाहेब-प्रभुसाहेब-गरभूसाहेब-यांधनसाहेब-गोविन्दसाहेब-यांधोसाहेब-हरिलालसाहेब-मंगलसाहेब-राजेश्वरसाहेब-दीनमणिसाहेब-प्रेम प्रमोद साहेब-ज्ञानगंभीर साहेब-तिलकशरण साहेब-रामावतारदास-नागेन्द्रदास।

महन्थ रामावतारदास एहि मठक वर्तमान आचार्य छथि-मुदा अपन शिष्य नागेन्द्रदास कें ई विधिवत् १९८५ ई० सँ उत्तराधिकारी बना चुकल छथि । एहि मठ मे बादशाह अकबरक दल फकीरनामा सुरक्षित अछि । **श्रीसद्गुरुकबीर, मुक्तिपथ** आदि कबीरपन्थी ग्रन्थ एहि मठ सँ प्रकाशित भेल अछि ।

एहिमठ सँ सम्बद्ध अनेक शाखा-उपशाखा मिथिलाक ग्रामाञ्चल मे पसरल अछि । समस्तीपुर, खगड़िआ, सहरसा, पूर्णिआ, भागलपुर, मुंगेर, दरभंगा, मधुबनी ओ बेगूसरायक विभिन्न क्षेत्र मे एहि मठक उपशाखा सभ अछि । एकर अतिरिक्त वैशाली, नेपाल, गुजरात आदि क्षेत्रमे सेहो एहि मठक शाखा सभ अछि ।

छत्तीसगढ़ीशाखा

कबीरपन्थक चारिम प्रमुख शाखा थिक छत्तीसगढ़ी शाखा । एहि शाखाक प्रवर्तक धनी धर्मदास छथि । ई बांधवगढ़क कोनो कसौंध बनिया परिवार मे जन्म लेने छलाह । हिनक स्त्रीक नाम आमीन छल । हिनका दुइगोट पुत्र छलनि नारायणदासक ओ चूड़ामणिदास । हिनक पूर्व गुरुक नाम रूपदास छल जनिक आज्ञासँ ई भगवद्भक्ति, पूजा जप आ तीर्थाटन मे समय बितबैत छलाह । कहल जाइछ जे मगहर मे अन्तर्धान भेलाक बाद कबीर हिनका हलका झलक देखौने छलथिन । कहल जाइछ जे कबीर हिनका अपन शिष्य बना लेलथिन । धर्मदास शब्दावली सँ ज्ञात होइछ जे ई उच्च कोटिक महात्मा छल होयताह । हिनक समाधि पुरी मे अछि ।[१७]

हिनका द्वारा प्रवर्तित शाखाक शिष्यपरम्परा निम्नस्वरूप देल गेल अछि–

धर्मदास-चूरामणि-सुदर्शन-कुलपति-प्रमोद-केवल-अमोल-सुरतसनेही-हक्कनाम-पाकनाम-प्रगटनाम-धीरजनाम-उग्रनाम-दयानाम-गृन्धमुनिसाहेब ।[१८]

कबीरपन्थक विकास मे एहि शाखाक स्थान सर्वोपरि अछि । अग्न ५० वर्षक इतिहासक पूर्वार्द्ध मे एहि शाखाक धर्मोपदेशक सम्बन्ध मे अनेक चमत्कारपूर्ण कथा चलैत अछि जे ओहि सँ प्रभावित भए बहुत रास एहि शाखा मे दीक्षित भेल होयताह । परवर्ती काल मे गुरुगद्दीक हेतु संघर्ष आरम्भ भेल जकर परिणाम ई भेल जे अनेक शाखा एहि शाखा सँ अपन सम्बन्ध विच्छेद कए स्वतंत्र भए गेल । तथापि पन्थ प्रसार मे ई शाखा तथा एकर उपशाखा सभ निरन्तर गतिशील रहल तथा सम्पूर्ण भारत आ विदेश धरि कबीरपन्थक प्रसार करबा मे सफल भेल ।

एहि शाखा मे आचार्यगादी पैतृक सम्पत्ति रहैत रहल अछि । आचार्य पारिवारिक जीवन व्यतीत करैत छथि जकरा कबीरपन्थक स्थान मतक प्रभाव कहल जा सकैछ ।

मिथिला मे एहि शाखाक दुइगोट प्रमुख मठ दृष्टिपथ पर अछि । कबीरमठ लक्ष्मीपुर बगीचा रोसड़ा आ सहज योग सत्संग केन्द्र अरेड़ बरारीटोल । नेपाल मे एहि शाखाक एकटा मठ दुहबी मे होयबाक सूचना अछि ।

एहि शाखाक ई विशिष्टता अछि जे कबीरपन्थक प्रसारक हेतु विपुल साहित्यक ई प्रकाशन-प्रसारण करैत रहल अछि । मिथिला मे ई शाखा अत्यन्त प्रबल कहल जा सकैछ। खास कय एहिठामक लोकजीवन आ कबीरपन्थी ग्रन्थ मे विपुल मैथिली पदावली मे धर्मदासक भणितायुक्त पदावलीक बाहुल्य देखि पड़ैछ । वस्तुतः धर्मदासक भणिता सँ युक्त मैथिली पदावली धनी धर्मदासक थिकनि वा परवर्ती कोनो मैथिली कबीरपन्थी धर्मदासक मे अनुसन्धान अछि। इहो भए सकैछ जे मैथिल कबीरपन्थी सन्त परवर्ती कालमे जे रचना करैत छल होयताह ओहि मे आदरक दृष्टियें धर्मदासक भणिता, साहेब, आदि जोड़ि दैत छल होयताह।

कबीरमठ, लक्ष्मीपुर-बगीचा, रोसड़ा

समस्तीपुर ज़िलाक रोसड़ा बाजार मे एहि मठक स्थापना प्रमादगुरु बालापीरक समय मे भेल छल । एहि शाखाक सम्बन्ध पहिने कबीरपन्थीक छत्तीसगढ़ी शाखासँ छल, मुदा कालान्तर मे ई मठ मूल गुरुगादी सँ सम्बन्ध विच्छेद कय स्वतंत्र भए गेल । एहि मठक समस्त धार्मिक नियम छत्तीसगढ़ी शाखाक अनुकूल अछि ।

एहि मठ सँ संबंधित लगभग १५० बीघा जमीन अछि जाहि मे लीची आ आमक बगीचाक बाहुल्यक कारणें एकरा लक्ष्मीपुर बगीचा सेहो कहल जाइछ । आर्थिक दृष्टियें ई मठ स्वभावतः अत्यन्त सम्पन्न अछि । एहि मठक आचार्य परम्परा निम्नरूपक अछि–

खेदीदास-प्रेमदास-खुशियालदास-किसुनदास-इसरीदास-तुलसीदास-गोविन्ददास-काशीदास-अवधदास-गणेशदास-ठाकुरदास (वर्तमान)।

कहल जाइत अछि एहि शाखा मे पहिने उच्च जातिक महंथ होइत छलाह जे निम्नजातिक संत सँ भेदभाव रखैत छलाह जखन कि कबीरपन्थ मे जाति-पातिक भेदभाव सर्वथा असम्भव मानल जाइत रहल अछि । एहि भेदभाव सँ प्रभावित भए किसुनदास जे परवर्ती काल मे कृष्णदास कारख नामें विख्यात भेलाह, एहि मठ सँ संघर्ष कय रोसड़ा मे स्वतंत्र मठक स्थापना कयलनि। ई निम्न जातिक छलाह आ जातिभेदजन्य व्यवहार सँ खिन्न रहैत छलाह । परवर्ती काल मे कृष्णकारखी शाखा कबीरपन्थक एकटा विशिष्ट शाखाक रूप मे प्रवर्तित भेल ।

एहि शाखाक मठ [illegible] गमहा नामे प्रख्यात अछि । एकर प्रधान [illegible] [illegible] पर एखन आ अधिकांश मैथिल कबीरपन्थी एही मतक अनुयायी [illegible] [illegible] बगीचा मठ गमहाक महन्थलोकनिक समाधि मठक प्रांगण मे अछि । [illegible] [illegible] १९७० ई० सँ आचार्य गद्दी पर विराजमान छथि ।

एहि मठ मे मठाधीशक वैरागी होयब आवश्यक बुझल जाइत अछि । ई मठ अनेक [illegible] आ [illegible] ग्रन्थक [illegible] मे सहायक सिद्ध भेल अछि । मठ द्वारा प्रकाशित [illegible] कबीरपन्थी ग्रन्थ थिक श्रीगंगासागर शब्दावली ।

एहि मठक शाखा सभ दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णियाँ, सहरसा, नेपाल आदि मे अवस्थित अछि आ कबीरपन्थक प्रचार मे लागल अछि ।

सहजयोग सत्संग केन्द्र, अं ड़ बरहीटोल

सहजयोग सत्संग केन्द्र, अरेड़ बरहीटोल, मधुबनी जिलाक अंधराठाढ़ी पर स्थित अछि। एहि शाखाक उद्भव कबीरपन्थक छतीसगढ़ी शाखा सँ भेल अछि जे एकर आचार्य परम्परा सँ स्पष्ट अछि । एहि मठक आचार्य परम्परा एहि स्वरूपक भेटैत अछि–

सन्तकबीर-धर्मदास-चूड़ामणि-सुदर्शन-कुलपति-प्रमोदगुरू-बालापीर-केवल-अमोल-कृतारथ-हरिहर-सुकन-मानलाल-मुनीन्द्रसाहब (वर्तमान) ।

एहि आचार्यपरम्परा मे अमोलसाहबधरिक उल्लेख छतीसगढ़ी शाखाक मूल गुरुगादीक परम्परा मे सेहो यथावत् भेटैछ । ई सिद्ध करैछ जे वस्तुतः एहि उपशाखाक उद्भव कृतारथ साहबहि सँ भेल होयत ।

कृतारथ साहेबक जन्म शाहाबद जिलाक पदमिनि गाम मे अहीरकुल मे भेल छल । ई हरवाही करैत छलाह ताही समय कोनो अपराधक कारणें हिनक गिरहस्थ हिनका एक लाठी मारि बैसलथिन एही सँ ई विरक्त भए समाधिस्थ भए गेलाह आ अन्त मे गिरहस्थ कें हिनका सँ माफी माँगय पड़लनि । पछाति ई अमोल साहब सँ दीक्षा लय कबीरपन्थी बनि गेलाह।

कृतारथ साहेबक शिष्य हरिहरसाहब सेहो शाहाबाद जिलाक त्रिभुवानी खबासपुर गाम मे १८४० ई० मे जन्म लेने छलाह । हिनका समयक कोनो विशिष्ट घटनाक उल्लेख नहि भेटैछ ।

सुकन साहब अरेड़, बरहीटोलक मूलनिवासी छलाह । ई कृतारथ साहब सँ दीक्षा लेलनि आ परवर्ती काल मे अलखदास नामे ख्यात भेलाह । ई अत्यन्त वाकपटु आ साधु स्वभावक सन्त छलाह ।

मानलाल साहेब सुकनसाहेबक शिष्य छलाह । हिनका घर अरेड़ बरहीटोल छलनि आ पिताक नाम पुरन महतो छलनि । ई कर्मयोगी छलाह आ घर गृहस्थीक काज देखैत साधना मे लीन रहैत छलाह । यद्यपि हिनका स्कूली शिक्षा पर्याप्त नहि भेटल छलनि, मुदा हिनक आलेख अत्यन्त सुन्दर होइत छल । ई अनेक कबीरपन्थी आ राधास्वामी मतक ग्रन्थ कें लिपिबद्ध कयलनि जे अरेड़क पुस्तकालय मे राखल अछि । ई सफल चित्रकार सेहो छलाह। अपना समय मे ई लगभग एक हजार शिष्य आ शिष्या कें कबीरपन्थ मे दीक्षित कयलनि ।

[illegible] सहजयोग सत्संग केन्द्र [illegible] [illegible] [illegible] मुनीन्द्र साहब आचार्य गद्दीक उत्तराधिकारी [illegible]

मुनीन्द्रसाहेब [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सहजयोग सत्संग केन्द्र [illegible] [illegible] आकर्षक आ प्रभावशाली होइत अछि । [illegible]

सहजयोग सत्संग केन्द्र [illegible] [illegible] तथापि एहि मतक अनुयायीलोकनि कें [illegible] [illegible] अछि । एहिठाम [illegible] कें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुरु द्वारा [illegible] आ अन्य शुभ अवसर पर [illegible] आयोजन होइछ । [illegible] [illegible] आ गुरुवन्दनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रखैत छथि ।

एहि केन्द्र मे विवाह संस्कारक सेहो विशिष्ट व्यवस्था अछि । [illegible] [illegible] सँ विवाह करैत छथि, मुदा सत्संगकेन्द्र मे केवल [illegible] [illegible] आ [illegible] द्वारा विवाह सम्पन्न कराओल जाइत अछि । [illegible] विधि सेहो गुरुक [illegible] मे होइछ। एहि [illegible] हुनक चरणोदक उतारि आरती कयल जाइछ तथा पाँच वा हुनक पैर पर [illegible] देल जाइत अछि ।

एहिठाम विभिन्न प्रकारक आरती-विधान कयल जाइछ, यथा- [illegible] चौका आरती, [illegible] चौका आरती, सहज चौका आरती, भाव आरती तथा [illegible] चौका आरती । एहि केन्द्र मे दृष्टि परसादी, स्पर्श, अंशप्रसाद तथा [illegible] [illegible] शिष्य कें प्राप्त होइत अछि । एहि ठामक शिष्य दण्डाकार तिलक करैत छथि आ तिलकक रंग [illegible] होइत अछि । हिनकालोकनिक पावनितिहार आ कुलदेवताक पूजनादि कुलपरम्पराक अनुसारहि होइत अछि, मुदा सत्संगकेन्द्र मे भण्डार मे गुरुशिष्य सभ भाग लैत छथि । एहि केन्द्रक शिष्यलोकनि कें अग्निसंस्कार होइत छनि आ तदवशेष कें समाधि दय देल जाइत छनि । एकरा क्रमशः अग्निदाग आ पृथ्वीदाग कहल जाइत अछि । वेशभूषाक कोनो प्रतिबन्ध एहि केन्द्र मे नहि अछि । वैरागी आ गृही तथा महिला आ पुरुष दुनू एहि केन्द्र मे दीक्षित होइत छथि आ दुनू मे कोनो भेदभाव नहि देखल जाइछ । जातिपातिक भेद सेहो नहि अछि, मुदा आमिष भोजनक निषेध अछि। एहि केन्द्र मे उत्तराधिकारीक चयन मठाधीशक द्वारा सत्संगीलोकनिक सहायता सँ कयल जाइत अछि । गुरुक सेवाक द्वारा वंशानुगत वा ताहिसँ बाहरोक शिष्य मठक उत्तराधिकारी भए सकैत छथि ।

एहि सत्संग केन्द्र मे सात एकड़ जमीन अछि जे एकर आयक प्रधान स्रोत अछि । एकर अतिरिक्त सत्संगी लोकनि आ शिष्यलोकनि जे चढ़ौआ चढ़बैत छथि ताहि सँ ई केन्द्र चलैत अछि । तथापि एहि केन्द्र द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार भए रहल अछि जे कबीरपन्थक सिद्धान्त कें दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, मुंगेर, पूर्णियाँ, खगड़िआ, सारण, राँची, गुमला, पटना आदि क्षेत्र मे पहुँचा रहल अछि ।

कबीर धर्मस्थान दुहबी, नेपाल

प्राप्त सूचनाक आधार पर एहि स्थानक स्थापना सन् १९२० ई० स मानल जा सकैछ। ई स्थान भारत-नेपाल सीमा पर स्थापित दुनू देश (भारत-नेपाल) मे जयनगर जनकपुर रेल लाइनक महिनाथपुर स्टेशनक समीपस्थ अछि। एहि स्थानक आदि आचार्य खरसिआ (म० प्र०) क आचार्य गृधमणिनाथ साहेब छलाह। कबीर धर्म स्थान दुहबीक आचार्य-परम्पराक निम्नरूप अछि–

गृधमणिनामसाहेब-आदि आचार्य	-	नेपाल
बाबा रामेश्वर दास साहेब	-	भारत
बाबा विवेकदास साहेब-नेपाल	-	भारत
तेजनदास साहेब-नेपाल	-	भारत
महावीरदास साहेब	-	भारत
रामलखन दास	-	नेपाल
रामकृष्ण हाथी (संवादाससाहेब)	-	भारत

बाबा विवेकादास साहेब तत्कालीन राणाशाही शासनक कारणे दुहबी भारत मे (सीमापार) स्थान बनऔलन्हि। तेजनदास साहेब पुन: तत्कालीन राजा सँ दुहबी (नेपाल) क स्थान प्राप्त कयलन्हि। तहिआ सँ दुनू ठाम दुहबी (नेपाल आ भारत) मे आचार्य होमय लागल। वर्त्तमान आचार्य संवादास साहेब (रामाकृष्णा हाथी) सन् १९७७ सँ आचार्य छथि। एहि स्थानक शाखा जनकपुर, नन्नूपट्टी (नेपाल), योगीया, सीतामढ़ी, चपरिया (दरभंगा), चोरौत, बोकहा, बर्फ (नेपाल) मे अछि। ई स्थान धर्मदासी सम्प्रदाय अछि। वैरागी एहि स्थानक आचार्य भऽ सकैत अछि। चौकापान द्वारा शिष्य बनाओल जाइत छथि। चानन नाक सँ कपार धरि एहि स्थान मे प्रचलित अछि। बंदगी-कर जौड़ि कय कयल जाइत अछि। एहि स्थानमे करीबन १५ एकड़ जमीन अछि, जाहि सँ संस्थानक व्यवस्थाक खर्च चलैत अछि। एहि स्थान मे सन्तक सेवा, जीव सेवा आ सतनामक पूजा कयल जाइत अछि।

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे कबीरपन्थक छत्तीसगढ़ी शाखा मे आचार्य गद्दी पैतृक होयबाक कारण एकर उत्तरार्द्धक इतिहास पारिवारिक संघर्षक इतिहास रहल जकर कारणें अनेक उपशाखा अपना कें स्वतंत्र घोषित कय देलक। कबीरपन्थक आनो कतोक शाखा कतिपय कारणवश अपना कें स्वतंत्र घोषित कय दैत छल। एहि प्रकारक स्वतंत्र कबीरपन्थी शाखा मे मिथिलाक वचनवंशीय शाखा सर्वाधिक प्रमुख अछि।

वचन वंशीय आचार्य गद्दी, महादेवमठ, रोसड़ा

कबीर पन्थक ई शाखा सर्वथा स्वतन्त्र मानल जाइत अछि। मिथिलाक सम्पूर्ण क्षेत्र मे एहि शाखाक प्रचार-प्रसार आन शाखा सँ बेशी भेल अछि। मिथिलाक मध्य रोसड़ा नामक स्थान मे अवस्थित एहि शाखाक विशेष महत्व अछि। मिथिलाक अधिकांश मठ आ शिष्य वचन वंशीय आचार्य गद्दी महादेव मठ, रोसड़ा सँ अपना कें सम्बन्धित कएने छथि। एहि

मठक महत्वक कारण छथि एकर संस्थापक कृष्णा कारख साहेब। कृष्णा कारख एहि शाखाक आदि प्रवर्तक मानल जाइत छथि। कहल जाइत अछि जे कबीर साहेब प्रकट भऽ हुनका दीक्षित कएने छथिन्ह आ वचन वंश चलएबाक आदेश देने छलथिन्ह। जनश्रुति इहो अछि जे ओ जीबिते समाधि लेने रहथि। हिनक पिताक नाम बृजमोहन कारख आ माएक नाम लक्ष्मीवत छल। हिनक जन्म सन् १७९२ ई० १२०० फसली विक्रमी संवत १८५० मे भेल छल। १४ वरखक अवस्था मे सन् १८०६ ई० गुरु कबीरक तत्वन्बोध सँ जिनगीक दिशा बदलैत पूर्णत: वैरागी भेलाह। हिनका द्वारा लिखित अनेक ग्रन्थ कहल जाइत अछि, जेना पाँजी पन्थ प्रकाश, विचारगुणावली, क्रियाबोध, आदि उत्पति आदि। एहि मे 'पाँजी पन्थ प्रकाश' विशेष महत्वक अछि। एहि मे अवधी भाषा मे कबीर आ हुनक शिक्षा धर्मदासक प्रश्नोतर रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

पाँजी पन्थ प्रकाश जे एहि मठक आदि ग्रन्थ अछि, मे कृष्णा कारख साहेबक परिचय लिखल अछि–

नाम हमार कृष्णा है भाई,
पद है कारख कहे समुदाई।
बृजमोहन कारख के पिता,
मात नाम लक्ष्मी संयुक्ता।
रोसड़ा ग्राम गण्डकी तीरा,
करू व्यापार हृदय धरि धीरा।
प्रकट भये साहेब यही ठामा,
कीन्ह उपदेश सत्य कोईनामा।

कृष्णा कारख साहेब चारि स्थानक लेल चारि आचार्य के वचन वंश मे दीक्षित कएलन्हि जे निम्नरूपक अछि–

	शिष्य	स्थान	जाति
१.	खुशियाल गोसाई	हरदिया	ऋषिकुल
२.	कादिर बक्स	विष्णुपुर	मुसलमान
३.	देवी दास	गोरा (निशिहारा)	राजपूत
४.	सनफूलदास मड़र	नवला	यादव

उपरोक्त आचार्य अपन-अपन स्थानक प्रथम आचार्य भेलाह। चारू स्थानक वर्तमान आचार्य निम्नरूपक छथि–

१. हरदिया–छठूदास
२. विष्णुपुर–मंगलदास
३. गोरा–राधाप्रसाद दास
४. नवला

सन् १८३८ ई० १२४६ साल कातिक पूर्णिमाक राति मे कृष्णाकारखक देहावसान भऽ

गेल । मूल स्थान 'सत्य कबीर वचन वंश आचार्य गद्दी महादेवमठ, रोसड़ा' क आचार्य क्रम आओर संख्या निम्नरूपक अछि :

१. कबीर
२. आदि आचार्य कृष्णा कारख साहेब– ३२ बरख (सन् १८०६ ई०) सँ सन् १८३८ ई० १२१४ सँ १२४६ साल धरि ।
३. आचार्य डम्भर साहेब–२४ बरख, सन १८३८ ई० सँ १८६२ ई०, १२४६ सँ १२७० साल ।
४. आचार्य झकरी साहेब–३३ बरख, सन् १८६२ सँ १८९५ ई० १२७० ई० १३०३ साल ।
५. आचार्य रामभरोस साहेब–७ बरख, सन् १८९५ ई० सँ १९०२ ई०, १३०३ सँ १३१० साल ।
६. आचार्य रामटहल साहेब–२० बरख, सन् १९०२ ई० सँ सन् १९२२ ई० १३१० सँ १३३० साल ।
७. आचार्य बलदेव साहेब–५० बरख, सन् १९२२ सँ १९७२ ई०, १३३० सँ १३८० साल
८. आचार्य जीवछ साहेब–११ बरख, सन् १९७२ ई० सँ १७-६-८३ ई०, १३८० सँ १३९१ साल ।
९. आचार्य यदु साहेब–२८-६-८३ सँ एखन धरि-बड़ा आचार्य विद्यानन्द साहेब-छोट आचार्य । श्रीरामजीवन साहेब (नवम्बर १९७६ ई० मे वचन वंशक विकास हेतु मूल स्थान सँ हटिकए सय गज उत्तर श्री कबीर मन्दिरक निर्माण करौलनि । दोसर शब्द मे वचन वंशीय आचार्य गद्दी महादेव मठ दू भाग मे विभाजित भेल । उतरबारी मठ आ दखिनबारी मठ । सम्प्रति श्रीरामजीवन साहेबक युवा आ योग्य शिष्य श्री विद्यानन्द उतरबारी मठक आ यदुसाहेब दखिनबारी मठक आचार्य छथि ।

श्री विद्यानन्द साहेबक अथक परिश्रम आ प्रयास सँ दुनू मठक पुनः वैधानिक आ समाजिक एकीकरणक मान्यता भेटि गेल अछि, जकर आचार्य श्री यदु साहेब बड़ा महन्थ छथि, आ श्री विद्यानन्द साहेब छोटे महन्थ छथि । परञ्च व्यवहारमे दुनू मठ अपन-अपन स्वतंत्र अस्तित्व रखनहि अछि ।

आचार्य बलदेव साहेबदास लिखल आचार्य प्रणाली निम्नरूपक अछि–

सुनिये वंशावली बखाना ।
मन का संशय त्याग सुजाना ।
सत्य कबीर जगत मँह आवा ।
कृष्णादास कँह शब्द चेतावा ।
सन् द्वादश सए चौदह साला ।
जेठे मास चौदह उजियाला ।
कृष्णा हंस शुभ आरती कीन्हा ।

राम तृण तोड़ पान तब दीन्हा ।
वचन दीन्ह तब पंथ चलाये ।
विपुल जीव को शरण लगाए ।
द्वादश और छियालीस साला ।
गुप्त भये दीन दयाला ।
साहेब डम्मर दास गुसाईं ।
कृष्णा दास कहँ सेवक आँही ।
बहुत जीव को शरण लगाए ।
कर्म छोड़ाय लोक पहुँचाये ।
सन् द्वादश अरू सवर आवा ।
तवहि डम्मर दास, सिघारा ।
साहेब झकरी दास गुसाई ।
डम्मर दास शिष्यते आहीं ।
सेवा वंश उजास कीन्ह जग माहीं ।
विपुल जीव को शरण लगाहीं ।
सन् तेरह सौ अरू तीनसाल ।
देश गये करि पंथ उजाला ।
राम भरोस बहुत तप कीन्हा ।
गद्दी भार तिनहि कँह दीन्हा ।
ज्ञानी ग्रंथ लिखऊ भरपूरी ।
जीव चेताये विपुल अंकुरी ।
पंथ इजोत बहुत विधि कीन्हा ।
जीवन भार आप सिर लिन्हा ।
सन् तेरह सौ अरू दस साला ।
त्याग शरीर गये तेही काला ।
अपना भार टहल पर डारी ।
टहल दास कीन्हेउ कशधारी ।
देश विदेश जीव अपनाये ।
बहु बंधन से जीव छोड़ाये ।

साखी

सन् तेरह सौ तीस मे, लोकहि कीन्ह पयान ।
बल करि तजेहु शरीर को सत्य शब्द परमान ।।
गद्य भार सब छोड़ेऊ, बलदेव दास के पास ।
आयु गए सत्यलोक को गुरुहि चरण विश्वास ।।

मठक चारिम आचार्य रामभरोसे साहेब विलक्षण प्रतिभाक व्यक्ति छलाह । ओ दया क्षमा, सत्य, अहिंसा, उदारताक सजीव मूर्ति छलाह ।

हुनक हाथसँ लिखल पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि मठ मे उपलब्ध अछि–

१. पांजी पंथ प्रकाश (प्रकाशित)
२. अनुभव सागर
३. अखंड रिसाल
४. अगम सागर
५. ज्ञान सागर
६. पंथ उजागर
७. सर्व सागर

एहि शाखाकेँ कृष्णा कारखी शाखा सेहो कहल जाइत अछि । ऊपर बताओल गेल अछि जे मुख्य शाखा महादेव मठक रोसड़ाक अतिरिक्त चारिटा शाखा, हरदिया, विष्णुपुर, निसिहारा आ नवला मे स्थापित कएल गेल ओ कालान्तर मे ओहि शाखा केँ कतेक प्रशाखा भऽ गेल, ओ मूल आचार्य गद्दी केँ व्यापक बनाओल ।

एहि मठ मे मुसलमान शिष्य भऽ सकैत छथि आ हुनका संग कोनो तरहक भेद-भाव नहि कएल जाइत अछि । कादिरदास मुसलमान छलाह ।

एहि मठक शाखा-प्रशाखा बिहारक अतिरिक्त बंगाल, असम, उत्तरप्रदेश, गुजरात सिक्किम, नेपाल, भुटान, उड़ीसा, आदि प्रान्त आ देश मे पसरल अछि । करीब ४० एकड़ भूमि मठ मे अछि । मठक सहयोग आ संरक्षण मे कतेक शिक्षण संस्था संचालित होइत अछि जेना–'सन्त कबीर रामजीवन महिला महाविद्यालय, रोसड़ा,' सद्गुरु कबीर विद्यापीठ, सुपौल,' 'महन्थ विद्यानन्द शास्त्री आर्युवेदिक फार्मेसी महाविद्यालय, रोसड़ा,' 'सन्त कबीर उच्च विद्यालय, दोडीहा' आदि ।

एहि मठक महन्थक देहावसान पर हुनका समाधि होइत अछि आ महन्थ लेल वैराग्य होएब आवश्यक अछि–

कृष्णकारखी शाखाक मिथिला मे किछु प्रमुख कबीरपंथी मठ अछि–

(क) सद्गुरु कबीर आश्रम, सुरतगंज मधुबनी ।
(ख) कबीर आश्रम, ब्रह्योतरा मधुबनी ।
(ग) कबीर कुटी-सिनुवारा, अरंड़, मधुबनी ।
(घ) कबीर आश्रम, भरवाड़ा ।
(ङ) कबीर आश्रम लदौरा, समस्तीपुर ।
(च) कबीर मठ, कृष्णाटोली, ब्रह्मपुरा, मुजफ्फपुर ।

सदगुरु कबीर आश्रम, सुरतगंज मधुबनी

सद्गुरु कबीर आश्रम, मधुबनी शहर स्थित सुरतगंज मोहल्ला मे अवस्थित अछि । एकर

गुरु प्रणाली निम्न प्रकार अछि–

मिथिला मध्य मधुबनी मे वैरागीदास सुप्रसिद्ध भये है ।
चन्द्र समान शीतलता मे रवि समान प्रकाशलहयो है ।।
तासु शिष्य भय अमृत दास ज्ञानामृत पिलाये गये है ।
साहेब मौजा दास महाप्रभु ज्ञान की ज्योती जलाये दिया है ।
देश विदेश के जीव प्रबोधं मेहीदास के शिष्य बने है ।
अनन्त जीव को शरण लगाये प्रेम श्रद्धा मे आप सने है ।
अविचल भक्ति देखि श्री कान्त को सन्तन मांहि महान गणे है ।
कहि न सके महिमा कवि कोविद दास रामदेव कवित्त भने है ।

एहि मठक संस्थापक आचार्य वैरागीदास रहथि आ वर्तमान आचार्य डा० रामदेव दास, श्रीकान्त दासक निधनक बाद १९५८ ई० सँ आचार्य महन्थ छथि । मेहीदास किछु भजनक रचना कएने रहथि । श्रीकान्त दासक किछु फुटकर रचना सेहो छन्हि । मौजादास एहि मठ के वचन वंशीय आचार्य गद्दी, महादेवमठ रोसड़ा आ हरदीआ सँ सम्बद्ध कएलन्हि । सम्पत्ति नाम पर अढ़ाइ एकर जमीन एहि मठक नाम सँ अछि । भूतपूर्व आचार्यक समाधि मठ मे स्थापित अछि । एहि मठमे बरोबरि संगोष्ठी, सम्मेलन आयोजित कएल जाइत अछि । एहि मठक शाखा नेपाल मे जनकपुर-धाम, श्रीनगर हरमटवा, रामनगर, भुरकोली, नरेश खांहेर, उत्तर प्रदेश बलिया, देवरिआक अतिरिक्त पूर्णियाँ, सहरसा, भागलपुर, मुंगेर, समस्तीपुर, दरभंगा, वैशाली, मधुबनी, मुजफ्फरपुर भोजपुर, सीतामढ़ी जिला मे पाओल जाइत अछि ।

कबीर आश्रम, ब्रह्योत्तरा, मधुबनी

ई कबीर आश्रम ग्रा०-ब्रम्होत्तरा (भदुली) जिला मधुबनी मे अवस्थित अछि । एहि स्थानक गुरु परम्परा निम्नरूपक अछि–

१. कृष्ण कारख साहेब-सूड़ी-महादेव मठ रोसड़ा, समस्तीपुर ।
२. खुशियाल गोसाई-मुसहर-हरदिया, दरभंगा ।
३. केओट-उजान सरिसब, मधुबनी ।
४. साहेब श्याम दास केओट-सिनुवारा, मधुबनी ।
५. साहेब रमन दास-यादव-ब्रह्योत्तरा, मधुबनी ।
६. साहेब निर्मल दास-यादव-ब्रह्योत्तरा, मधुबनी ।
७. साहेब गुदर दास यादव-नूरचक, मधुबनी ।
८-I साहेब श्यामलालदास यादव-ब्रम्होत्तरा मधुबनी ।
II. साहेब फलहारी दास-यादव-ब्रम्होत्तरा ।

कबीर आश्रम, ब्रम्होतरा के सातम गुरु साहेब निर्मल दास सिद्ध पुरूष छलाह । ओ संवत १३१९ मे गद्दी पर बैसलाह आ ११७ बरखक अवस्था मे सवंत १३९२ मे हिनक देहावसान भेल । हुनका जीविते मे हुनक उत्तराधिकारी हुनक पुत्र साहेब श्री श्यामलालदास ४ जनवरी १९८२ केँ रोसड़ा महादेव मठक आचार्यक समक्ष गद्दीनसीन भेलाह । सम्प्रति श्री श्यामलाल

दास संचालित ई आश्रम नीक जकाँ पल्लवित-पुष्पित भए गेल अछि ।

उपर वर्णित गुरु परम्परा देखला सँ स्पष्ट रूप सँ ज्ञात होइत अछि जे एहि आश्रमक उद्‌भव स्थान वचन वंशीय आचार्य गद्दी रोसड़ा अछि जकर प्रवर्तक कृष्णा कारख साहेब छलाह। अखनहु पूर्व जकाँ सम्बन्ध अछिए। वार्षिकोत्सव भण्डारा रोसड़ाक महादेव मठ सँ मिलैत-जुलैत अछि ।

जनउ संस्कार विधि एहि मठ मे नहि अछि । क्यो जनेऊ धारण करैत छथि तँ एहि लेल कोनो बन्धन नहि अछि । विआह जाति मे होइत अछि । जाति पातिक कोनो भेद-भाव मठ मे नहि अछि। गोसाउनिक पूजा एहि सँ सम्बन्धित शिष्य लोकनि करैत छथि। पावनि-तिहार नहि होइछ । पावनि नाम पर वार्षिक भण्डारा होइछ ।

गुरु शिष्य तुलसीक माला धारण करैत छथि । एहि मठ मे तिलक नासाग्र-नाम पर सोझे कपारधरि एकहिटा कयल जाइत अछि ।

बन्दगी तीनबेर चरण मे नाक भीड़ा कऽ दृष्टि मिलाकए होइत अछि जकरा चरण स्पर्श दृष्टि-जोड़-बन्दगी कहल जाइत अछि ।

गुरु केश, मोंछ आ दाढ़ी पूर्णरूपेण कटओने रहैत छथि । शिष्य केँ इच्छा पर निर्भर करैत अछि ।

वेष श्वेताम्बर धारण करैत छथि । निर्मल साहेबक समाधि मठ मे विराजमान अछि। हिनका पूर्व गुरु जराओल जाइत छलाह । वैरागी आ गृही दुनू तरहक गुरु आ शिष्य एहि मठ मे छलाह आ छथि । निर्मल साहेब सँ पूर्व गुरु वैरागी रहथि ।

मठक संचालनक लेल एकटा भण्डारी आ एकटा कोठारी छथि। उत्तराधिकारी वंशानुगत नहि होइत छथि वरन् शिष्यमे सँ चुनाव सम्पन्न कयल जाइत अछि ।

दीक्षाक दिन भजन उत्सव कयल जाइत अछि । साधुक चरणामृत सँ जे दीक्षा लेताह तिनका सिक्त कयल जाइत अछि। तत्पश्चात पाँचटा सन्त, साधु सँ कन्ठी के छुआ कऽ गर्दनि मे देल जाइत अछि। तत्पश्चात बन्दगी कयल जाइत अछि । वैरागी शिष्य केँ अरबन कोपिन देल जाएत अछि ।

आनन्दी चौकाक विधि विधान एहि मठ मे अछि। महिला के दीक्षित सेहो कैल जाइत अछि, जे सती कहैबत छथि । हुनका अपन घर पर रहबाक प्रबन्ध रहैत अछि मठ पर नहि । आरती गुरु केँ कयल जाइत अछि। संध्याकाल 'गौरी गुरु दयासागर' पाठ आ प्रातः गुरु स्तुति धूप आ अगरबत्ती सँ कयल जाइत अछि। कोनो तरहक व्रत आ उपवास एहि मठ मे नहि कयल जाइत अछि । भण्डारा मे निमंत्रण पत्र दूर वला के दैत छथिन्ह । स्थानीय स्तर पर सुपारीक एकटा टूक निमंत्रण सूचनाक बदलामे देल जाइत अछि ।

एहि गादीक शाखा-बसैठ आ चौहरवा नेपाल मे अछि । एकर प्रचार-प्रसार नेपाल, मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, समस्तीपुर, सीतामढ़ी आ उत्तर प्रदेश मे अछि।

एहि मठक आमदनी शिष्य द्वारा चढ़ौआ सँ अबैत अछि। एकर अतिरिक्त मठ मे अढ़ाई एकड़ जमीन अछि ।

ई मठ बीजक-सिद्धानत आ साधनक अवधारणा पर आधारित अछि। मात्र जीव पूजाक प्रधानता दैत अछि । तें एकर अनुयायी जीववादी कहल जाइत अछि । आत्मा आ ब्रह्म मे भेद मानैत छथि ।

कबीर कुटी, सिनुवारा (अड़ेर) मधुबनी

ई कबीर कुटी मधुबनी जिलान्तर्गत ग्राम सिनुवारा (अड़ेर) जिला मधुबनी मे अवस्थित अछि। ई कुटी एहि परोपट्टाक अग्रणी कुटी मे सँ छल । परञ्च कालान्तर मे धनिआँ माइक बाद जे अधोगति प्रारम्भ भेल से पुलकित दासक बाद अस्तित्व मेटा गेल । वर्तमान समय मे मात्र अवशेषक रूप मे विराजमान अछि। एहि शाखाक उद्‌भव वचन वंशीय आचार्य गद्दी महादेव मठ, रोसड़ा सँ छल । एहि कुटीक गुरु परम्परा निम्नरूपक छल-

१. हनुमानी दास
२. अजवी दास
३. सरदारी दास
४. धनिआ माई
५. पुलकित दास ।

सरदारी दास एहि मठक सिद्ध पुरुष छलाह । पुलकितदासक देहावसानक बाद जखन क्यो योग्य उत्तराधिकारी एहि मठक नहि भेलाह तँ जसोत गामक प्रमुख शिष्य श्री बबुएलालदास केँ दीक्षा देबाक लेल चुनल गेल आ हुनका मठ सँ सम्बन्धित दरभंगा, रोसड़ा, आ समस्तीपुर क शिष्य केँ दीक्षा देबाक अधिकारो देल गेल, कारण पुलकित दास केँ पुत्र नहि छलनि।

स्थानीय सात कबीरपन्थी कुटी जेना भदुली (ब्रम्होत्तरा), बलहा, बरहुलिया, विष्णुपुर अड़ेर पुरबारीटोल आ कोनहा सँ एकर आध्यात्मिक आ पन्थीय सम्बन्ध छल ।

सब दिन ई मठ परिवारिक रहल। एहि मठक शिष्य प्रमुख रूप सँ देकुली, बंगा (दरभंगा) वन्ना जसोत, धर्मपुर (समस्तीपुर) आदि स्थान मे छल । भूमिक नाम पर पाँच बीघा जमीन छल ।

मुइलाक बाद मुर्दा केँ एतय जराओल जाइत छल । जाति-पातिक कोनो भेदभाव नहि छल । चानन त्रिशूल जकाँ एहि स्थान मे कयल जाइत छल ।

कबीर आश्रम, भरवाड़ा

कबीर आश्रम भरवाड़ाक उद्‌गम स्थान आचार्य गद्दी महादेव मठ, रोसड़ा अछि, जकर आदि आचार्य कृष्णाकारख साहेब भेल छलाह । कहल जाइछ जे सदगुरु कबीर साहेब स्वयं प्रगट भए कृष्णाकारख साहेब केँ ई गद्दी प्रारंभ करबाक आदेश देने छलथिन। कबीरक विचारक प्रचार-प्रसारक क्रम मे कृष्णाकारख साहेब अपन चारि गोट शिष्य केँ चारि स्थान पर पठौने छलाह जाहि मे हरदिया एकगोट छल । हरदियाक प्रथम आचार्यक खुशियलदास छलाह । एहिठाम सँ महुली, महुली सँ डीह आ डीह सँ भरवाड़ा स्थानक प्रदुर्भाव भेल। भरवाड़ाक प्रथम आचार्य जयलाल दास भेलाह आ हिनके सँ भरवाड़ा स्थानक आरम्भ भेल आ तखन सँ ई स्थान कबीर मतक प्रचार-प्रसार मे अनुखन लागल अछि ।

एहि तरहें एहि मठक उद्‌गम ओ आचार्य परम्परा केँ एहि तरहें देखाओल जा सकैछ-

कृष्णकारख-रोसड़ा समस्तीपुर
खुशियालदास-हरदिया
निहाल दास-मुहली

गोपाल दास डीह
जयलालदास- भरवाड़ा
शिखिदास- भरवाड़ा
केशवदास- भरवाड़ा
गिरिवर दास- भरवाड़ा
बौआ साहब- भरवाड़ा (सम्प्रति)–

जयलाल दास सँ वस्तुतः आरंभ भेल एहि शाखाक साम्प्रतिक आचार्य बौआसाहब छथि। आरंभ सँ एहि आश्रम द्वारा कबीर विचारधारक प्रचार-प्रसार मे उत्तम योगदान भए रहल अछि। ई शाखा कबीरक सिद्धान्त पक्षक प्रचार-प्रसार धरि सीमित नहि अछि, अपितु कबीर पन्थक व्यवहार-पक्ष पर सेहो प्रचुर ध्यान दैत अछि। जातिगत ओ सामाजिक वैषम्य कें दूर कय ईश्वर भक्तिक, प्रचार, विभिन्न धर्मक सारतत्वक खोज कय सर्वधर्म समभावक प्रचार, अहिंसा, मद्यपान-निषेध आदिक भावक उद्दीपन, अनाथ ओ असहायक प्रति सेवाभव, सामूहिक जीवन बिताएबाक शिक्षा आदि एहि आश्रमक विशिष्ट सेवाकार्य सभ रहल अछि।

बौआसाहब, कबीर आश्रम, भारवाड़ाक साम्प्रतिक आचार्य छथि। हिनक जन्म १९२६ ई० मे भेल छल। हिनक पिता स्व० गिरिवदास आरंभे से हिनका ओजस्वी कहने छलथिन। बालावस्थहि मे पिताक मृत्युक कारणें हिनका कबीर आश्रमक आचार्य गद्दी ग्रहण करय पड़लैन्हि। अपन पितयौत भाए स्व० केशवलालदासक अभिभावकत्व मे अध्ययन मे अध्ययन करैत बौआसाहब क्रमशः महान उपदेशकक रूपमे ठाढ़ भेलाह आ निरन्तर साहित्यानुशीलन सँ जुड़ल रहलाह। **'कबीरदासक भजनमाला', ओम'** आदि पोथी प्रणयनक संगहि बौआ साहबक सम्पादकत्व मे **'सत्य की ओर'** त्रैमासिक पत्रिकाक संचालन कयल गेल, जहि सँ कबीर विचारधारक प्रचार मे विशेष सहयोग भेटल अछि। हिनक आश्रम द्वारा असाध्य रोग सँ पीड़ित प्राणीक निःशुल्क सेवा कयल जाइत अछि तथा असहाय नेना कें निःशुल्क रूप सँ भोजन, शिक्षा आदिक व्यवस्था कएल जाइछ। हिनक प्रभाव मे ऊँच-नीच जाति, वर्ग, लिंग भेद सँ रहित व्यक्ति कबीरपन्थ मे दीक्षित भए लाभ उठा रहल छथि।

कबीर आश्रम, भरवाड़ा वस्तुतः अपना क्षेत्रक विशिष्ट मठ थिक। अगहन पूर्णिमाक अवसर पर एतय विशाल भण्डाराक आयोजन होइछ। १९८६ ई० मे एतय कबीर मन्दिरक सेहो स्थापना भेल अछि।

गिरिवरदासक समय मे भरवाड़ा कबीर आश्रमक चारिगोट उपशाखा बनल- उधोपट्टी, जोगियामठ, डीहलाही ओ लगवाड़ा। एहि चारू मठक आचार्य परम्परा क्रमशः निम्नरूपक अछि–

उधोपट्टी–अर्जुनदास–सदानन्ददास
जोगियामठ–नारद गोसाई–लक्ष्मेश्वरदास
डीहलाही–रामधारीदास–वाबूजीदास–सूरजदास
लगवाड़ा–रउदीदास–भाइलालदास–नन्नूदास
उधोपट्टी–दुहगोट प्रशाखा भए गेल अछि–

[illegible]
[illegible]
बौआ साहबक समय मे भरवाड़ाक छओ गोट उपशाखा स्थापित भेल
[illegible]
ब्रह्मपुरा- [illegible]
धर्मौर- श्रीनारायण दास
[illegible]
करजोना (नेपाल) - [illegible]
मैनरा (नेपाल) - [illegible]

एहि आश्रमक शिष्य [illegible] मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, पटना, भागलपुर, दुमका, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, कलकत्ता, आसाम आदि स्थान मे अछि।

एहि मठ मे जातिक कोनो बन्धन नहि अछि। मुसलमान, ब्राह्मण, भूमिहार, कायस्थ जातिक सेहो शिष्य छथि। साधक कें मांस, माछ, अण्डा, [illegible] मनाही अछि। यज्ञोपवीत नहि होइत अछि। भेष भूषा सामान्य अछि। पूर्णतः पारिवारिक (गृहस्थ) मठ अछि। चानन तिलक [illegible] नहि कयल जाइत अछि। [illegible] सेहो होइत अछि। चौका-पान विधि द्वारा शिष्यत्व ग्रहण कयल जाइत अछि। कंठी गुरुजीक होइत अछि। बिआह सामाजिक परिपाटीक अनुसार कयल जाइत अछि।

कबीर आश्रम लदौरा जिला–समस्तीपुर

कबीर आश्रम, लदौराक मूल स्थान सुन्दरपुर (दरभंगा) छल। सुन्दरपुर सँ १९६० ई० मे स्थानान्तरित भऽ ई लदौरा चलि आयल। आचार्य साहेब मौजे दास एहि आश्रमक पहिल आचार्य छलाह। वर्तमान आचार्य रामगुलाम दास १९७२ ई० सँ छथि। ई स्थान [illegible] परम्पराकेँ मानैत अछि। करीब पाँच हजार शिष्य एहि आश्रम सँ सम्बन्धित छथि। माघ पूर्णिमाकेँ कय वार्षिकोत्सव आ कबीर जयन्तीक संग भंडारा मनाओल जाइत अछि। एहि स्थान मे गुरुक पूजा कयल जाइत अछि। योग्य शिष्यक भेष-भूषा उज्जर वस्त्र होइत अछि। समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, मधुबनी, दरभंगा मे एहि आश्रमक शिष्य छथि।

कबीर मठ कृष्णाटोली, ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर

कबीर मठ, ब्रह्मपुराक मूल गद्दी चकना, पो० चकना थाना-सरैया जिला-मुजफ्फरपुर जे एहिठाम सँ लगभग ३२ कि० मी० दक्षिण पश्चिम मे अवस्थित अछि, छल। चकना मठक संस्थापक शिवनाथ दास छलाह। हुनका बाद तुलसीदास एहि मठक आचार्य भेलाह। तत्पश्चात मठ गोपाल दासक समय मे आबि ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर स्थानान्तरित भऽ चलि आयल। एहि स्थानक आचार्यपरम्परा निम्नरूपक अछि–

शिवनाथ दास — चकना

तुलसीदास	–	चकना
गोपाल दास	–	ब्रह्मपुरा (सन् ई० १६५८-१८२८)
रामेश्वर दास	–	ब्रह्मपुरा (सन् ई० १८२८-१८९३)
रामअयोध्या दास	–	ब्रह्मपुरा (सन् ई० १८९३-१९७३)
भगवान दास	–	ब्रह्मपुरा (सन् ई० १९७३-१९८५)
रामचरित्र दास	–	ब्रह्मपुरा (सन् ई० १९८५वर्तमान)

ब्रह्मपुरा मठक आदि संस्थापक गोपाल दास छलाह । ओ सन् १७५८ ई० मे एहि मठक स्थापना कयने छलाह । ओ प्रतापी संत छलाह ओ अपन अलौकिक शक्ति सँ तत्कालीन मुजफ्फरपुर नबाब मेहदीहसनक मरणासन्न बेगम कैँ आशीवार्द दय जीवन प्रदान कयलनिह। अपन बेगम कैँ स्वस्थ होइत देखि प्रसन्न भऽ नबाब हिनका ४' एकड़ (साढ़े चारि एकड़) भूमि दान स्वरूप मठक स्थापनाक लेल देलनिह । हिनक देहावसान सन् १८२८ ई० भेल। तत्पश्चात क्रमश: रामेश्वरदास, अयोध्यादास, भगवानदास, आ रामचरित्र दास आचार्य भेलाह।

एहि मठक चारि शाखा निम्नरूपक अछि–

१. छतापुर (सहरसा)
२. किसनपुर (मुजफ्फरपुर)
३. भटोलीया (मुजफ्फरपुर)
४. देओरिआ बँगरा (मुजफ्फरपुर)

एहि मठक प्रसार कलकत्ता, आसाम, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बम्बई, गोरखपुर मे भेल छल । नेपाल मे सेहो एहि मठक शिष्य लोकनि छथि विशेषक वीरगंज, काठमाण्डु, भिट्ठामोर, मोरंग, नारायणी मे । एकर अतिरिक्त बिहारक मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, पटना, मोतिहारी, धनबाद, गोमो, गया, राजगीर, मुंगेर, औरंगाबाद, हजारीबाग, गिरिडीह, पूर्णिया आदि स्थान मे एहि मठक शिष्य लोकनि छथि । करीब १० हजार शिष्यकेँ एहि मठ सँ सम्बन्धित कहल जाइत अछि ।

वैशिष्ट्य

कबीर मठ, ब्रह्मपुरा वैरागी मठ थीक । एहि मठक आचार्य महंथ वैरागीए भऽ सकैछ। आचार्य बिआह नहि कय सकैत छथि । परिवार राखि सकैत छथि ।

उत्तराधिकारी बनेबाक लेल, जिनका उत्तराधिकारी बनाओल जाइत अछि हुनका महन्थी चद्दरि देल जाइत अछि जाहि मे 'सुरतहाल' लिखल रहैत अछि । महन्थी चद्दरि संग नव वस्त्र आ जनेऊ देल जाइत अछि । शिष्य बनेबाक लेल आचार्य शिष्यकेँ कंठी आ गुप्त मंत्र दैत छथिन्ह । कंठी तुलसीक बनाओल गेल रहैत अछि । चौका-पान विधान एहि ठाम नहि होइत अछि । भेष-भूषा एहि मठ मे सादा रखबाक प्रवाधान अछि । केशक सम्बन्ध मे कहल गेल अछि जे आचार्य ओ शिष्य पंचकेश राखथि वा पूरा साफ़ राखथि । साल मे एक बेर ज्यंष्ट पूर्णिमा मे कबीर जयन्ती ओ भण्डारा आयोजन कयल जाइत अछि । शिष्य आचार्य महन्थ (गुरु) कैँ भूमिपरसँ दुनू हाथ जोड़ि उपर मुँह कय सिर्फ एक बेर साहब बन्दगी

शब्दोच्चारण करैत छथि । तत्क्षण गुरु आशिर्वाद दैत छथिन । सिर्फ एक जीवक प्रतीक रूप एकबेर बन्दगी कयल जाइत अछि । एहि मठक आचार्य ओ शिष्य नाक सँ कपार धरि एकहि तिलक करैत छथि जाहि मे १०८ चिन्ह होइत अछि । ई अलौकिक सत्पुरुष कबीरक नाम कैँ रूप मे स्मृतिस्वरूप कयल जाइत अछि ।

एहि मठ मे जीववादी प्रतिपादन कयल जाइत अछि । 'ओम नाम' क जप कयल जाइत अछि । साधनाक लेल एकान्त स्थानमे उर्द्धमुखी भए ध्यान पर बल देल गेल अछि ।

आचार्यक देहावासानक बाद माटि मे गाड़ि कए समाधि बनाओल जाइत अछि तथा आरती देखाओल जाइत अछि । जाति-पाँतिक भेदभाव एहि मठमे नहि अछि । ब्राह्मण आ मुसलमान एहि मठक आचार्य ओ शिष्य नहि भेल अछि । अचल सम्पत्ति मे १ एकड़ जमीन अछि तथा ६५ एकड़ जमीन उपयुक्त चारू शाखा मे अछि । आश्रमक व्यवस्था लेल धरहारी अधिकारी मैनेजर आ अंगरक्षक नियुक्त छथि ।

एहि विभिन्न मठ सभक अतिरिक्तो मिथिलाक अनेक कबीरपन्थी मठ कबीरपन्थक प्रचार-प्रसार मे निरन्तर लागल अछि । तथापि एहि मठ सभक कबीरपन्थक कोनो प्रधान शाखा सँ सम्बद्धताक उल्लेख नहि भेटैत अछि आ जँ से भेटितो अछि तँ अधिकांश आ न स्वंतत्र रूपें कार्यरत अछि यथा–हाटी कबीरमठ (नवगछिया), परबत्ता मठ (मुंगेर), ईंगराह मठ (पुर्णिया), मलाहोरिया मठ (कटिहार), बीड़मठ (मधेपुर), खैरामठ (मुंगेर) मदारपुरमठ गढ़मोहिनी (खगड़िया) आदि । बन्नीमठ (मुंगेर), विष्णुपुर (सीतामढ़ी) सुन्दरपुर सुपौल (दरभंगा) राघोपुर, भच्छी (मधुबनी), लक्ष्मीपुर (पूर्णिया), सोनाली (कटिहार) अम्बइ बीरनोद (भागलपुर) कोदरकट्टी नेपाल आदि सेहो स्वतंत्र मठ अछि ।

मिथिलामे कबीरपन्थक बैशिष्ट्य

मिथिलाक कबीरपन्थी मठ सभ समान्य रूपें कबीरोपासना पद्धतिक प्रचार-प्रसार मे लागल अछि । मुदा एहिठामक मठ मे प्रचलित सिद्धान्त ओ व्यवहार मे अनेक विशेषता सेहो भेटैछ । जतय कबीरपन्थी कैँ मृत्यूपरान्त समाधि देबाक नियम अछि ओतहि मिथिलाक विद्दुपुर मठ मे आचार्यक मृत्यूपरान्त जलसमधि कैँ प्रशस्त बूझल जाइत रहल अछि । अनेकठाम आरतीक आगि सँ मुखाग्नि दय कबीरपन्थी कैँ समाधि देबाक परिपाटी अछि तँ कतेक ठाम कबीरपन्थीलोकनि कैँ कुलपरम्पराक अनुरूप जरा देल जाइत छन्हि । मिथिलाक कबीरपन्थी दीक्षाक बाद कंठी तँ अवश्ये धारण करैत जाइत छथि मुदा प्याज-लहसुन आदि अखाद्य ग्रहंण करैत सेहो देखल जाइत छथि । कबीरपन्थीक हेतु जतय तिलक अत्यावाश्यक बूझल जाइछ ओतए मिथिलाक कबीरपन्थी तिलकरहित सेहो देखल जाइत छथि जाहि सँ बाह्ययावरण सँ कोनो कबीरपन्थी कैँ चीन्हि लेब एतय दुष्कर अछि । कबीरपन्थ मे दीक्षित गृहीलोकनि मे अनेक यज्ञोपवीत, कुलदेवता,कुलाचार आदिक प्रति प्रतिबद्ध देखल जाइत छथि । तँ कतोक दीक्षित होइत देरी एहि समस्त वाह्याडम्बर सँ उन्मुक्त भए जाइत छथि। स्वभावत: कतोक गृही कबीरपन्थीक मृत्युपरान्त कुलाचारेक अनुकूल श्राद्धादिक भोज होइत अछि । मुदा कतोक कबीरपन्थीक भण्डारा समय नियत कय सुविधानुसार कयल जाइछ ।

विद्दुपुर आ रोसड़ाक आचार्य बिआह नहि कय सकैत छथि । मुदा मिथिलाक कतोक मठक आचार्य विवाहित होइत छथि तथा हुनक शिष्यां परम्परा बहुधा कुलपरम्परं पर आधारित होइछ । ब्रह्मचारी आचार्य अपन मृत्यु सँ पूर्वहि अपन प्रधान शिष्य केँ आचार्य गद्दीक हेतु नियुक्त कय दैत छथि अथवा हुनक मृत्युपरान्त मूल गादी द्वारा हुनका चादरि प्रदान कय आचार्यत्व देल जाइत छनि ।

मिथिला मे कबीर पन्थक अनुयायी मे बेसी गृहस्थ छथि । ई लोकनि वर्ष भरि सामान्य जीवन बितबैत आध्यात्मिक मनोरथे धरि मठ पर सिद्ध करैत देखल जाइत छथि । संन्यासी कबीरपन्थी निरन्तर एक कुटी सँ दोसर कुटी भ्रमण करैत जीवनयापन करैत देखल जाइत छथि। ई लोकनि नम्हर केश, जटा बढ़ौने, हाथ कमण्डल धारण कयने तथा (खजुरी) बजबैत भिक्षाटन करैत देखल जा सकैत छथि ।

मिथिलाक विद्दुपुर शाखा, कृष्णकारखी शाखा तथा आनो अनेक शाखा मे जातिपाति ओ धर्म सम्प्रदायक भेदभाव नहि अछि । मुदा अधिकांश शाखा मे हिन्दू ओ मुसलमानक बीच भेद भाव स्पष्ट लक्षित होइछ ।

मिथिलाक कबीरपन्थीलोकनिक जातीय ओ कौलिक संस्कार सामान्यत: भिन्न देखल जाइछ । शिशुजन्म पर माता-पिता अपन आचार्य सँ शिशुक नामकरण संस्कार करबैत छथि। विवाहो मे केवल माल्यार्पण द्वारा विवाह होइत अछि जकर साक्ष्यक रूपमे आचार्य केँ राखल जाइत छनि ।

एहि तरहें मिथिलाक कबीरपन्थी सामान्य कबीरपन्थीक अपेक्षा किछु विशिष्ट आचरणक प्रति प्रतिबद्ध देखल जाइछ, जाहि मे कबीरक सिद्धान्तक विरुद्धो अनेकठाम बाह्याडम्बर देखि पड़ैछ ।

सन्दर्भ-निर्देश

१. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकर्ता-**कबीर और कबीर पंथ,** हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण सन् १९६५ ई० पृ०-१५९ ।

२ .गंगाशरण शास्त्री-सम्पादन-**बीजक** (कबीरचौरा पाठ) कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र सी० २३/५ कबीरचौरा मठ, वाराणसी, सन १९८२ ई० पृ०-१८-१५ ।

३. डॉ० लक्ष्मीदत्त वी० पंडित-लेखक-**संत कबीर**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण सन् १९७७ ई० पृ० १९२ ।

४. तत्रैव, पृ०-७५ ।

५. तत्रैव,-१९१ ।

६. मुनीश्वर राय ''मनीश'' लेखक-**कबीर पंथ की जागू शाखा**, कबीर मठ (जागू शाखा गुरु-गादी विद्दुपुर १९७७ ई० (वैशाली) प्रथम संस्करण सन् १९७७ ई०, प्राक्कथन, पृ०-(ढ)

७. तत्रैव, पृ०-३० ।

८. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकर्त्ता-**कबीर और कबीर पंथ,** हिन्दी साहित्य, सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्कारण सन् १९६५ ई० पृ०-१६८ ।

९. तत्रैव पृ०-१६८ ।

१०. मुनीश्वर राय 'मनीश' लेखक-**कबीर पंथ की जागू शाखा** कबीर मठ (जागू शाखा गुरु-गादी) विद्दुपुर (वैशाली) प्रथम संस्करण सन् १९७७ ई० पृ०-४३।

११. तत्रैव, पृ०-४३-४४ ।

१२. तत्रैव पृ०-४१-४३ ।

१३. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकर्त्ता-**कबीर और कबीर पंथ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण सन् १९६५ ई० पृ०-१६६ ।

१४. तत्रैव, पृ०-१६७ ।

१५. तत्रैव, पृ०-१६३ ।

१६. तत्रैव, पृ०-१६३ ।

१७. तत्रैव, पृ०-१६९ ।

१८. तत्रैव, पृ०-१७३-१७४ ।

१९. प्रो० शोभाकान्त प्रसाद कर्ण-लेखक-कबीर आश्रम भरवाड़ा पत्रिका **सत्य की ओर** मार्च-अप्रैल अंक १९७७, ई० कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवाड़ा, पृ०-३०।

तृतीय अध्याय

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधन स्रोत

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक पुष्कल निवेश कबीरपन्थी ग्रन्थ सभ मे देखि पड़ैछ । विभिन्न विद्वानलोकनि कबीरदासक पदावली मे मैथिलीक अस्तित्वक स्वीकृति देने छथि। कबीरपन्थक मान्य ग्रन्थ बीजकहु मे अनेक एहन पद अछि जे अपन शब्दावली, क्रियापद ओ रचना-प्रणालीक दृष्टिऍ निःसंकोच रूपें मैथिली पद कहल जा सकैछ । कबीरवाणीक सर्वाधिक प्रामाणिक संग्रह **कबीर ग्रंथावली**, **कबीर शब्दावली**, **कबीर वचनावलीक** कतोक पद मैथिली भाषा मे भेँटैत अछि । एकर अतिरिक्त **धनी धर्मदास की शब्दावली**, **कबीर भजनमाला सागर**, **कबीर भजनमाला सद्गुरु कबीर वचन संग्रह** आदि ग्रन्थ मे सेहो कबीर भणित मैथिली पदावली भेँटैत अछि । मिथिलाक विभिन्न कबीरपन्थी मठ ओ कबीरपन्थी सन्त द्वारा प्रकाशित कबीर साहित्य मे कतोक मैथिली पदावली दृष्टिगोचर होइछ । लोकजीवन मे खासकय कबीरपन्थी विचारधाराक अनेक व्यक्ति श्रुतपरम्परा सँ निर्गुण सम्प्रदायक जे गीत संजोगने आबि रहल छथि ताहि मे अनेक सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली थिक । एहि तरहें सन्त कबीरक भणिता सँ युक्त पदावली विपुल संख्या मे उपलब्ध अछि । खासकय प्रस्तुत शोधकर्त्ता द्वारा प्राप्त हस्तलिखित कबीरपन्थी पोथी **आदि सन्देशा सन्त कबीर** ओ डा० सुभद्र झाक लग सुरक्षित प्राचीन पाण्डुलिपि मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक विपुल अंश संरक्षित अछि। पदावलीक किछु छिटफुट पाण्डुलिपि सेहो उपलब्ध भेल अछि । लोकोक्ति सेहो संत कबीर भणित मैथिली पदावलीक अजस्र स्रोत अछि । कबीरपन्थी सम्प्रदायक लोक द्वारा विभिन्न संस्कारक अवसर पर गाओल जायवला गीत मे सेहो सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक पुष्पलता देखि पड़ैछ ।

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधन स्रोत पर विचार कएला उत्तर एकर तीनगोट स्रोत देखि पड़ैछ–

१– मुद्रित   २–पाण्डुलिपि   ३. मौखिक

मुद्रित साधन स्रोत मध्य सन्त कबीरक भणिता सँ युक्त एहन पद द्रष्टव्य अछि जे प्रकाश मे आबि गेल अछि । एहि साधन स्रोतक विशेष भाग मिथिला सँ बाहरे मुद्रित भेल अछि । मिथिलाक कबीरपन्थी मठ ओ सन्त द्वारा सेहो किछु सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली प्रकाशित भेल अछि ।

मिथिला सँ बाहर मुद्रित सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधन स्रोत मध्य **बीजक**, **कबीर ग्रन्थावली**, **कबीर शब्दावली**, **कबीर वचनावली**, **धनी धर्मदास की शब्दावली**, **कबीर साहेब की शब्दावली**, **कबीर भजनमाला सागर**, **कबीर भजनमाला**, **सद्गुरु कबीर वचन संग्रह** आदि प्रमुख अछि । मिथिला मे मुद्रित सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधनस्रोत **कबीर भजनमाला** ओ **भजनावली** अछि ।

बीजक

ई ग्रन्थ कबीरपन्थ मे सर्वाधिक मान्य अछि । एकर अनेक संस्करण भेटैत अछि जाहि मे कतोक मूल ओ अधिकतर सटीक अछि । एकर सम्पादन विश्वनाथ सिंह जूदेव, पूरनदास, अहमदशाह, काशीदास, विचारदास, [illegible], रामरहस्यदास, [illegible], हनुमानदास, हंसदासशास्त्री, महावीर प्रसाद, गंगाशरण शास्त्री आदिक द्वारा भेल अछि । मुदा लेखकलोकनि कोनो निश्चित तिथिक आधारवला मूल पुस्तकक उल्लेख अपन सम्पादित ग्रन्थ मे नहि कयलनि अछि । कहल जाइछ जे कबीरदासक समय मे बीजकक एकटा प्रति संवत [illegible] मे [illegible] द्वारा तैयार कयल गेल छल आ ओ रीवाँ नरेश लग छल। मुदा सम्प्रति ओ उपलब्ध नहि अछि। ओहि बीजक मे विश्वनाथ सिंह द्वारा सम्पादित ग्रंथ सब सँ पुरान प्रति सँ सम्पादित मानल जाइत अछि ।

कबीरपन्थक ई विशिष्ट ग्रन्थ हिन्दू धर्मग्रन्थ रामायणे जकाँ कबीरपन्थी मे समादृत अछि। किछु विद्वान **बीजक** मे बन्दूक शब्दक प्रयोगक कारणेँ एकरा आधुनिक अर्थात कबीरदासक बादक ग्रन्थ सेहो कहैत छथि, मुदा आचार्य गंगाशरण शास्त्रीक मत मे ई तर्क सर्वथा निराधार अछि । अपन मतक समर्थन मे ओ कहलनि अछि जे–''इतिहासज्ञ विद्वान जनैत छथि जे कबीर साहेब सँ पूर्वहि सँ मुस्लिम शासकक सेना मे बन्दूक विद्यमान छल आ ओहि सँ हिन्दू राजालोकनि केँ पराजित कयल जाइत छल ।'' एहि तरहें बीजक ग्रन्थ केँ कबीरदासक सर्वाधिक प्रमाणिक ग्रन्थ कहल जाइत अछि। यद्यपि एकर कबीरचौरा पाठ, फतुहापाठ, [illegible] नौती पाठ आदि मे अनेक स्थल पर पाठान्तर देखि पड़ैछ तथापि ई ग्रन्थ सम्पूर्णता मे कबीरपन्थी धर्मग्रन्थक रूप मे मान्य अछि । एहि ग्रन्थ मे रमैनी सबद साखी ओ किछु अन्य प्रकारक रचना संगृहीत अछि । एहि रचना सभ मे अनेक मैथिली रचना थिक । उदाहरणार्थ ई कहरा पद द्रष्टव्य–

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु।
गुरु के बचन समाई हो ।
मेली स्रिष्टि चरा चित राखहु ।
रहहु द्रिस्टि लौलाई हो ।।
जस दुख देखि रहहु येहि औसर।
अस सुख होइहैं पाये हो ।।
जो खुटकार बेगि नहिं लागे
हिर्दै निवारहु कोहू हो ।।

एहि तरहें एहि पद मे रहु, राखहु, रहहु, निवारहु आदि क्रियापद स्पष्टतः मैथिली क्रियापद थिक जे पदक मैथिली होयबाक सूचक थिक । एहिना एहि पद मे आगु, साधहु, बाँधहु, कुटुम, जेकरे, टोबहु, पायहु, गोनि, लचपच आदिक प्रयोग स्पष्टतः एकरा मैथिली पद सिद्ध करैछ। अवश्ये एहि मे प्रयुक्त छुटिहैं, लीन्ह, बुलाय, आये आदि शब्द कबीरक सधुक्कड़ी प्रयोगक

कारणें एकर मैथिली सँ पृथकत्व प्रदर्शित करैछ । एहि तरहें बसन्तक ई पद स्पष्टत: मैथिली अछि जे मधुक्कड़ी प्रयोगक कारणें किञ्चित विकृत भए गेल अछि, यथा

बुढ़िया हँसि बोलि मैं नितहिं बारि।
मोसे तरूनि कहु कौनि नारि ।।
दाँत गये मोरे पान खात ।।
केस गये मोरे गंग नहात ।।
नैन गये मोरे कजरा देत ।
बयस गये पर पुरख लेत ।।
जान पुरखवा मोर अहार ।
अनजाने का करौं सिंगार ।
कहहि कबीर बुढ़िया आनंद गाय
पूत भतारहिं बैठि खाय ।[7]

एतावता कबीर **बीजकक** कबीरचौरा पाठ मे अनेक रमैणी, सबद ओ साखीक भाषा मैथिली अछि । एहि तरहें **बीजकक** फतुहा संस्करण मे एकटा कहरा और एकटा सबदक भाषा मैथिली अछि, उदाहरणार्थ–

(सुनु) हंसा प्यारे सरवर तेजे जाय ।
जिहि सरोवर बिच मोतीया चुँगत होते
बहुविधि केलि कराय ।
सुखे ताल पुरइन जल छोड़वो,
कमल गेल कुम्हलाय
कहहिं कबीर जो अबके बिछुरे
बहुरि मिलहु कब आय ।[8]

बीजकक धनौती पाठ मे एक गोट रमयणी, सात गोट शब्द तथा एकटा बिरहुलीक भाषा मैथिली अछि । यथा–

अब कँह चलहु अकेला मीता । उठिबो न करहु धरहु कि चिन्ता।।
खीर खाण्ड घृत पिण्ड समारा । सो तन लै बाहर कै डारा ।।
जिहि शिर रचि रचि बांधहु पागा । सो सिर रतन बिदारै कागा ।।
हाड़ जरै जस लकड़ी झूरी । केश जरै जस तृण की कूरी ।।
आवत संग न जात को साथी । काह भये दल बांधे हाथी ।।
माया के रस लेहु न पाया । अन्तर यम विलार होय छाया ।।
कहहिं कबीर नल अजहु न जागा । यम के मुगदर मांझ सिर लागा ।।[9]

एहि तरहें कबीर बीजक मे कबीर भणित प्रचुर मैथिली पदावली दृष्टिगोचर होइछ ।

कबीर ग्रन्थावली

एहि ग्रन्थक सम्पादन डाक्टर श्यामसुन्दर दास सं० १९८५ मे कएने छलाह । सम्पादन क्रमश: सं० १५६१ ओ सं० १८८१ क दुइ गोट हस्तलिखित प्रतिक आधार पर कएल गेल अछि । संवत १८८१ वला प्रति मे ५ पद तथा १३१ दोहा सं० १५६१ वला प्रति सँ अधिक अछि । **कबीर ग्रन्थावलीक** सम्पूर्ण सामग्री साखी, पद ओ रमयणी मे विभाजित अछि जकर संख्या क्रमश: ८०९,४०३ तथा ७ अछि । परिशिष्ट मे ओहो सामग्री सभ दय गेल अछि जे आदि ग्रंथ मे कबीरक नाम सँ पाओल जाइछ । कबीरवाणीक ई संभवत: सर्वाधिक प्रामाणिक संग्रह बूझल जाइत अछि ।[1]

एहि ग्रन्थक पद सं० ५० **मैथिली** पदावली थिक जाहि सँ एहि एकमात्र पदक बलें ई ग्रन्थ कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधन स्रोत बनल अछि । पद एहि प्रकारें अछि–

मैं सबनि मैं औरनि मैं हूँ सब ।
मेरी बिलगि बिलगि बिलगाई हो,
कोई कहौ कबीर कहौ राँम राई हो ।। टेक
नाँ हम बार बूढ़ नाही हम ना हमरै चिलकाई हो ।।
पठए न जाऊँ अरवा नहीं आऊँ सहजि रहूँ हरिआई हो ।
बोढ़ न हमरे एक पछेवरा, लोकबोलै इकताई हो ।।
जुलहे तनि बुनि पाँनि न पावल फार बुनि दस ठाँई हो ।।
त्रिगुण रहित फलरमि हम राखल तब हमरौ नाऊ रामराई हो।।
जग मैं देखौ जग ना देखै मोहि इहि कबीर कछुपाई हो ।।[2]

एहि ग्रन्थक परिशिष्ट मे आदिग्रन्थ सँ ओ पद सभ दय गेल अछि जे कबीरक नाम पर अछि । **आदिग्रन्थ** वस्तुत: सिक्ख सम्प्रदायक पाँचम गुरु अर्जुन देव द्वारा संवत १६६१ मे संकलित ओहि पद सभक संकलन थिक जे सिक्ख गुरुलोकनि यथा नानक, अंगद, अमरदास, अर्जुन, तेगवहादुर द्वारा प्रणित होइत रहल छल । सिक्ख गुरुलोकनिक अतिरिक्त एहि मे अनेक अन्यान्य संत ओ सूफी सम्प्रदायक संतलोकनिक रचना सेहो संकलित भेल, जाहि मे कबीर सेहो छथि ।[3] एतावता **आदिग्रन्थ** मे संकलित कबीरक पद सभ **कबीर ग्रन्थावलीक** परिशिष्ट मे गृहीत अछि । एहि मे पाँचगोट पद कबीर भणित मैथिली पदावली थिक ।[4]

उदाहरणार्थ–

अगम दुर्गम गढ़ रचियो बास ।
जामहि जोति करै परगास ।।
बिजली चमकै होई अनंद ।
जिह पोड़े प्रभु बाल गुबिंद ।।
इहु जीउ राम नाम लव लागै ।
जरा मरण छुटै भ्रम भागै ।।

टारि न टरै आवै न जाइ ।
मुन्न सहज मे महि रहा समाइ ।।
मन मद्धे जाने जे कोइ ।।
जो बोलै सो आपै होइ ।।
जोति मंत्रि मनि अस्थिर करै ।
कहि कबीर सो प्रानी तरै ।।[११]

कबीर शब्दावली

एहि पोथीक सम्पादक श्री गंगाशरण शास्त्री छथि आ एहि मे संकलित पद सभ विवेकदास द्वारा संकलित अछि । एकर प्रकाशन कबीरवाणी प्रकाशन, कबीरचौरा मठ, काशी सँ १९७६ ई० मे भेल छल । एहि ग्रन्थ मे एकगोट झुम्मरि, तीन गोट शायरी ओ दुइ गोट जतसारी पद मे मैथिलीक प्रयोग स्पष्ट अछि ।।[१२] एहि तरहें कबीरभणित मैथिली पदावलीक इहो साधनस्रोत बनल अछि । द्रष्टव्य अछि ई सायरी–

सोये मोरे जोगिया कौन जगावै ।। टेक ।।
जाय जंगल बिच धुनियाँ जगावे ।।
जब जब जोगिया ध्यान लगावै ।।
तन कर कुण्डी मन कर सोंटा ।।
प्रेम के भंगिया रगरि पियावै ।।
अन नहि खाय योगी, जल नहि पीवै ।।
ज्ञान दुलइचा झारि बिछावै ।।
कहै कबीर सुनो भाई साधू ।।
गुरु की चरण मे प्रेम बढ़ावै ।।[१३]

कबीर वचनावली

एकर सम्पादन पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' संवत १९७३ मे कएने छलाह। एहि संग्रह मे दुइ गोट खण्ड अछि । प्रथम खण्ड मे केवल साखीटा अछि जे विभिन्न शीर्षक मे विभाजित अछि । दोसर खण्ड मे शब्दावली अछि जे विभिन्न उपशीर्ष मे विभाजित अछि। हरिऔद्य जीक ई संग्रह प्रामाणिकताक दृष्टि सँ विशेष महत्वक नहि मानल जाइछ ।[१४]

एहि ग्रन्थक प्रकाशन नागरी प्रणारिणी सभा काशी द्वारा कयल गेल अछि । एहि मे सत्तलोक शीर्षकक अन्तर्गत एकगोट 'मायाप्रपंच शीर्षक अन्तर्गत तीनगोट' विरह निवेदन शीर्षक अन्तर्गत चारि गोट तथा एक गोट झुम्मरि गीत कबीर भणित मैथिली पदावली थिक ।[१५] द्रष्टव्य अछि ई गीत–

रामनाम भजु रामनाम भजु चेति देखु मन माँही हो ।
लच्छ करोर जोरि धन गाड़े चले डोलावत बाँही हो ।।

दाऊ दादा ओ परपाजा उन्ह गाड़े भुँई भाँडे हो ।
अँधरे भए हियो की फूटी तिन काहै सब छाँड़े हो ।।
ई संसार असार को धंधा अंत काल कोइ नाही हो ।
उपजत बिनसत बार न लागे ज्यों बादर की छाँही हो ।।
नाता गोता कुल कुटुम्ब सब तिनको कवनि बड़ाई हो ।
कह कबीर एक राम भजे बिन बूड़ी सब चतुराई हो ।।[१६]

धनीधर्मदास की शब्दावली

एहि पुस्तकक सम्पादकक अनुसार एहि मे ओहि रचनासभक संग्रह भेल अछि जे कबीर पन्थीलोकनिक अनुसार धर्मदासक बुझल जाइत अछि । ई रचना सभ कबीरक रचना मे रचि-पचि गेल छल जकरा सम्पादक पृथक् कय देलथिन अछि । एहि मे भक्तिक अनेक रूपक वर्णन भेल अछि । कविक हृदय ब्रह्मक वियोग मे व्यथित छैक । एहि ग्रन्थ कें भक्त हृदयक वास्तविक प्रतिबिम्ब कहल जा सकैछ ।

एकर लेखक ओ रचनाक समय अज्ञात अछि । एहि पुस्तक मे धर्मदास कबीर सँ मुक्तिक सम्बन्ध मे प्रश्न करैत छथिन आ कबीर अक्षर तत्व कें मुक्तिक मूल कहैत छथिन ।

पुनः धर्मदास हुनकासँ भक्ति आ योगक सम्बन्ध मे प्रश्न करैत छथिन आ कबीर विस्तार सँ ओकरा उत्तर दैत छथिन ।[१७]

एहि शब्दावलीक दोसर भाग मे पाँचगोट पदावली कबीर भणित मैथिली पदावली थिक,[१८] जाहि मे चारिगोट पद आ एकटा सोहर अछि । द्रष्टव्य थिक ई सोहर–

साहेब मोर बसत अगमपुर जहाँ गम न हमार हो । टेक
साहेब, कै ऊँची अंटरिया तरे विषम बजार हो ।
पाप पुन्न दोउ बनियाँ हीरालाल बिकाय हो ।।१।।
आठ कुआँ नव वावड़ी सोरह पनिहार हो ।
भरलि गगरिया ढ़रकि गेल ठाढ़ी धनि पछिताय हो ।।२।।
छोट मोट डोलिया चँन्दन कै छोटे चारि कहार हो ।
लै उतारे वोहि देशवा जहाँ दस न दुआर हो ।।३।।
कहे कबीर सुनु धर्मन मोरा वोही देश हो ।
जो रे गये बहुरे नहि कैसे कहत सनेस हो ।।[१९]

कबीर साहेब की शब्दावली

संत कबीर पदावलीक संग्रह, चारि भाग मे वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद सँ प्रकाशित भेल छल। कहल जाइछ जे एकर सम्पादन अनेक हस्तलिखित प्रति ओ फुटकर पद सभक आधार पर कएल गेल अछि, मुदा एहिसँ पता नहि चलैछ जे ओहि पद सभक रचनाकाल की छैक । शब्दावलीक भाषा प्राचीन नहि अछि । एहि पुस्तकमालाक दोसर भाग मे कहल गेल अछि जे हमरालोकनि देश देशान्तर सँ अत्यधिक व्यय एवं परिश्रमपूर्वक एहन हस्तलिखित

दुर्लभ ग्रन्थ आ फुटकर शब्द मँगाओल अछि। पद संग्रह मे सर्वसाधारणक उपकारक पद कें प्राथमिकता देल गेल अछि। संग्रह कें अनेक लिपि सँ तुलना कय प्रामाणिक पाठ देल गेल अछि। तथापि ई नहि कहल जा सकैछ जे हमरालोकनिक पुस्तक निर्दोष अछि आ एहि मे अशुद्धि ओ क्षेपक नाम मात्रो नहि अछि।[20] एतावता इहो ग्रन्थ कबीरक पदावलीक जनकंठ आ हस्तलिखित प्रति सभ सँ संकलन थिक। एहि ग्रन्थक प्रथम भाग मे सदगुरु आ शब्द महिमा, विरह आ प्रेम, चितावनी आ उपदेश, तथा भेदवाणी शीर्षकक अन्तर्गत क्रमशः ६, २, १६ आ २ कुल २६ गोट मैथिली पद कबीरक भणिता सँ प्राप्त होइत अछि। एहि ग्रन्थक दोसर भाग मे दूटा उपदेश, एकटा सदगुरु महिमा तथा दूटा चितावनी शीर्षक पद कुल पाँच गोट पद मैथिली अछि। ग्रन्थक तेसर भाग मे संकलित पदावली मे चारिगोट पद मैथिलीक अछि तथा चारिम भाग मे जतसार शीर्षक गीति मे दुइ गोट मैथिली पद थिक।[21] एहि तरहें **कबीर साहेब की शब्दावली** मे कबीर भणित मैथिली पदावलीक कुल संख्या ३७ अछि। उदाहरणार्थ ई लगनी द्रष्टव्य अछि। एकरा राग जतसार कहल गेल अछि–

सुरति मकरिया गाड़हु हे सजनी । अहे सजनी
दूनों रे नयनवां जोंतिया लावहु रे की ।।१
मन धरू मन धरू मन धरू हे सजनी । अहे सजनी
अइसन समइया फिरि नहि पावहु रे की ।।२
दिन दस रजनीहे सुख करू सजनी । अहे सजनी
एक दिन चाँद छपायल रे की ।।३
संगहि अछत पिय भरम भुलइली । अहे सजनी
मोर लेखे पिया परदेसहि रे की ।।४
नव दस नदिया अगम बहे सोतिया ।। अहे सजनी
बिचहि पुरइनिहि लागल रे की ।।५
फुल इक फुलले अनुप फुल सजनी ।। अहे सजनी
तेहि फुल भमरा लोभाइल रे, की ।।६
सब सखि हिलिमिलि निज घर जाइब । अहे सजनी
समुँद्र लहरिया समाइब रे की ।।७
दास कबीर यह गावल लगनिया हो । अहे सजनी
अब तो पिया घर जाइब रे की ।।[22]

भेदवाणी शब्द शीर्षकक अंतर्गत ई पद द्रष्टव्य अछि जाहि मे मैथिली भाषाक सधुक्कड़ी प्रयोग अत्यन्त रोचक देखि पड़ैछ–

गगनघटा घहरानी साधो, गगनघटा घहरानी । टेक
पूरब दिसि से उठी बदरिया रिमझिम बरसत पानी ।।
आपन आपन मेंड़ि सम्भारो बह्यो जात है पानी ।।१।।
मन के बैल सुरति हरवाहा, जोत खेत निर्बानी ।

दुविधा दूब छोल करू बाहर, बोवो नाम की धानी ।। ।।
जोग जुक्ति करि करू रखवारी, चर न जाय मृग धानी
बाली झार कुटि घर लावै, सोइ कुसल किसानी ।। ।।
पाँच सखी मिलि कीन्ह रसोइया, एकसे एक सयानी ।
दुनो थार बराबर परसे, जैवे मुनि अरू ज्ञानी ।। ।।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्वानी ।
जो या पद को परचा पावै, ताको नाम विज्ञानी ।। ।।[23]

कबीर भजनमाला सागर

ई पुस्तक भोलानाथ पुस्तकालय, कलकत्ता सँ प्रकाशित अछि। एहि मे कबीरक भजन सभक संग्रह कयल गेल अछि। संग्रहकर्त्ता छथि पं० श्री भागवती प्रसाद मिश्र। एहि पोथी मे दूटा कबीर भणित मैथिली पद भेटैछ जाहि मे एकटा सबद ओ एकटा जतसार अछि। द्रष्टव्य अछि जतसार–

जकर अंगना जम्हिरिया सो भी कइसे सूतल रे की।
महक महक फूलवासे निन्दो न आवए रे की ।।
काटब पेड़ जम्हिरिया कि पलंग बनाएब रे की ।
स्वामी मोर सुतए ओसरवा ननदि कोठे ऊपर रे की।
सास मोर सुतए झरोखबा कि कैसे जगाएब रे की।।
सुखिया जग संसार कि कोई निन्द सुतल रे की ।
दुखिया जग संसार कि कोई निन्द सुतले रे की ।।
दुखिया दास कबीर हरिगुण गाएब रे की ।[24]

शब्दक स्वरूप एहि प्रकारक अछि–

कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो ।
चन्दन काठ का बनल खटोलवा तापर दुलहिन सूतल हो।।
उठो रे सखि मेरो मांग सवारो कोई दुल्हन माँसे रूसल हो।
आयो यमराज पलंग चढ़ि बैठे नयनन आंसू न टूटल हो ।।
चारि जना मिल खाट उठावत चहुदिश धु धू उठल हो ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सबसे नाता छुटल हो ।।[25]

सदगुरु कबीर वचन संग्रह

ई ग्रन्थ कबीर वाणीक संग्रह थिक। एकर संग्रहकत्ता सद्गुरु कबीर ज्ञानाश्रम राजगीरक महन्थ सुक्खूरामदास साहेब छथि। एहि ग्रंथ मे छओ गोट पद कबीर भणित मैथिली पद अछि जाहि मे तीनगोट मंगल, एकगोट दीहल ओ दुइ गोट जतसारी शीर्षकक अन्तर्गत अछि।[26] द्रष्टव्य अछि ई दीहल पद–

फेरू पछतायब हे कामिनि, मानहु वचन हमार । टेक
चन्दन जानि बृक्षा रोपल, सेहो भेल सिमर परास ।
फुलवा देखिय धैरज बाँधल फल देखि भयल निराश ।।
बिना रे सोना के कैसन अभरण बिना मोति कैसन ग्रिमहार ।
बिना रे अम्बा के कैसन नैहर बिनु स्वामी कैसन श्रृंगार ।।
काया रे कंचन गढ़ टुटल छुटल कुल परिवार ।
दशमी दुअरिया यमुआ रोकल कौने विधि होयब पार ।।
साहेब कबीर कहि दीहल शब्द परेखू टकसार ।
बहुरि न यहि जग मे आयब फेरू न मनुष अवतार ।।[२७]

पारखमूल

ई ग्रन्थ श्री बच्चेलालदास द्वारा सम्पादित ओ श्रीलोकनाथ पुस्तकालय, १७३ महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७ द्वारा प्रकाशित अछि । एहि मे एकमात्र सबद कबीर भणित मैथिली पदावली थिक, जकर स्वरूप एहि प्रकार अछि-

सतनाम भज हे मन मूरख । क्या जड़ जनम गमाबहु हो ।।
सत्यनाम सुमिरह निशिवासर । निशदिन सुरति लगाबहु हो ।।
द्वादश ऊपर बसे मोर बालम तहवां ध्यान लगाबहु हो ।।
इङ्गला पिङ्गला सुखमणि साधो । ध्रुव मंडल उठि धावहु हो ।।
लागि रहे सूरति केरि डोरी । शून्य मे शहर बसाबहु हो ।।
त्रिकुटी घाट जहाँ मेघ बरिसे । बिना बुन्द झरि लावहु हो ।।
दामिनि दमकै उर्द्धमणि चमकै । अजब रूप दरसाबहु हो ।।
बंकनाल पदचक्रहि साधो । मूलमन्त्र पढ़ि राखहु हो ।।
मकरतार के उत्तर निरखहु । तापर गुड्डी सड़ाबहु हो
षोडस बतरी मज्जै त्रिवेणी । आनंद होइ के जागहु हो ।।
कहत कबीर मिले गुरु पूरा । तब ई परिचय पाबहु हो ।।[२८]

मिथिला मे मुद्रित सन्तकबीर भणित मैथिली पदावलीक दूगोट स्रोत अछि-**कबीर भजनमाला** ओ **भजनावली** ।

कबीर भजनमाला

कबीर पन्थी श्री जीवछ दास द्वारा कबीर भजनमाला शीर्ष सँ एकटा पोथी प्रकाशित भेल अछि। एहि ग्रन्थ मे कबीरदासक भणिता सँ आठ गोट निर्गुण भजन, चारिटा झुम्मरि, छओ गोट मंगल, सातगोट चौका गीत, तीनगोट वसन्तगीत, तीनगोट समदाउनि तथा अनेक पद देल गेल अछि । जीवछ दास ग्राम भजनाहा, पो० परसाही, थाना-लौकहा जिला मधुबनीक निवासी छथि तथा हिनक पुस्तकक प्रकाशन 'मुक्त विचार संगठन' सीतापट्टी, महिन्दवार (ईकाह), मधुबनी द्वारा भेल अछि। एहि ग्रन्थक प्राक्कथन मे कहल गेल अछि जे 'सामान्य आध्यात्मिक

जनजीवनक अतिशय एवं भावात्मक भजन सब ओहिना जनकंठ मे यत्र-तत्र छिड़िआयल अछि। एकरा संकलित करबाक एकटा अज्ञात जिज्ञासा मोन मे उठल । एहि सँ स्पष्ट अछि जे श्रीजीवछ दास एहिपद सभ कें जनकंठ सँ संकलित कयलनि अछि । ई पद सभ पूर्णतः मैथिली गीत अछि । कबीरक भणिताक अतिरिक्त एहि मे जे कबीरपन्थी पद सभ संकलित अछि ताहि से धर्मदास, इन्दुमति आदिक भणिता अछि । सन्त कबीरक मैथिली पदावलीक ई अधुनातन स्रोत सम्बत २०३८ क अछि । उदाहरण हेतु समदाउनिक ई पद द्रष्टव्य-

देखइत छलौं हम सुपती मउनियाँ
अचकें मे आएल संवाद ।।०।।
सुपती मउनियाँ पछुअरवा मे फेकलौं
पलंगा गिरली मुरझाए ।।०।।
घर से बाहर भेलौं सुनरी भउजिया
सुनू ननदी बचन हमार ।।०।।
किअए गारी देलक सखीया सहेलिया
किअए गिरल पलंग मुरछाय ।।०।।
नहीं गारी देलक सखिया सहेलिया
आएल मे पियाके सम्वाद ।।०।।
नान्हीटा से आहे भौजी तोरे संग रहलौं
किछु न सीखल बेवहार ।।०।।
सुति उठि ननदी बन्दगी बजविहह
चरणामृत करिहह अहार ।।०।।
साहेब कबीर गाओल समदौनियाँ
संत मिली करू ने विचार ।।०।।
अपन अपन साम्बर कसि बान्धहु ।
उतरहु भवजल पार ।।०।।[२९]

भजनावली भाग-१

भजनावलीक प्रथम भाग श्रीबौआसाहब, कबीर आश्रम, भरवारा, दरभंगा द्वारा प्रकाशित अछि। एहि मे सद्गुरु कबीर साहब एवं गुरु धनी धर्मदासक वाणीक संग्रह भेल अछि । एकर प्रथम संस्करण सन् १९८० ई० मे भेल । एहि मे पाँच गोट मंगल ओ तीनटा [३०] समदाउनि गीत कबीर भणित मैथिली पद थिक । उदाहरणार्थ ई मंगल पद द्रष्टव्य-

कुञ्ज भवन मोर नैहर साजन
ससुरा बसै बड़ी दूर हे ।
एहि पंथ अयता सतगुरु साहेब
मनमोरा हर्षल तूर हे ।।१।।
चलइत चलइत मोरा पैया पिड़ायल

विछियन लागल धूर हे ।
मैं तोरा पूछूँ भैया रे बटोहिया ।
सासुर हैं कत दूर हे ।।२।।
भवजल नदिया अगम बहु धरवा
सूझत वार न पार हे ।
कंओट बंदर्दी पारा न उतारे
दरदं न बुझय हमार हे ।।३।।
सखि सब चललन अपन ससुरबा
बाबा घर धूम मचाए. हे ।
अपन अपन गोंठि समार बाँन्हल
उहाँ नहि पैंच भेटाय हे ।।४।।
साहेब कबीर मुख मंगल गाओल
सन्तो जन लेहु न विचार हे ।
एमरीके गौना बहुरि नहि गऔना
फेर नं मनुष अवतार हे ।।५।।[३१]

एहिमे एकगोट समदाउनि एहि तरहें अछि–

करबों मे गुरु से अरजिया ए राम घुमि रे घुमी।
जओ हम जनितौं गुरु मोरा औता
घर ओ आङ्गन नीपि रखितौं ।।१।।
प्रेम भाव लय कयलौं रसोइया
जेमत सतगुरु पहुनमा हो राम ।।२।।
चरण पखारि चरणामृत लेवौं ।
निर्मल भेल मोर देहिया हो राम ।।३।।
धर्मदास इहो अरज करतु हैं
साहेब कबीर समदौनियाँ हो राम ।।४।।[३२]

पाण्डुलिपि

संतकबीर भणित मैथिली पदावलीक अमुद्रित स्रोत मे विभिन्न प्रकारक पाण्डुलिपि कें राखल जा सकैछ। ई पाण्डुलिपि सभ विभिन्न लिपि यथा–देवनागरी, कैथी, मिथिलाक्षर आदि मे दृष्टिगोचर भेल अछि। पाण्डुलिपि में संकलित एहि रचना सभ मे अनेक पद विभिन्न अन्य पाण्डुलिपि मे सेहो प्राप्त भेल अछि। एहि मे कतोक पद अंशतः अन्य पाण्डुलिपिक पद सँ भिन्न भेटल अछि तँ कतोक पद मे लिपिकारक दोषों अनेक पाठान्तर सेहो भए गेल अछि। एहि पाण्डुलिपि मे दुइगोट प्रमुख अछि। प्रथम पाण्डुलिपि प्रस्तुत शोधकर्त्ता द्वारा सहजयोग सत्संग केन्द्र, अरेड़ बरहीटोल मे उपलब्ध भेल अछि जकर शीर्षक थिक **आदि सन्देशा सन्त कबीर**' दोसर पाण्डुलिपि डा० सुभद्र झा लग सुरक्षित अछि जकर उपयोग प्रस्तुत शोधकर्त्ता

कयलनि अछि। ई दुनू पाण्डुलिपि सन्तकबीर भणित मैथिली पदावलीक विशाल अंश कें अन्तर्भुक्त कयने अछि। एहि दुहू पाण्डुलिपिक अतिरिक्त किछु छिटपुट पाण्डुलिपि वही, पुर्जा, पन्ना ओ कबीरपन्थीलोकनि लग सुरक्षित गीत संग्रह सभ मे सेहो भेटल अछि। एहि तरहें सन्तकबीर भणित प्रचुर मैथिली पदावली पाण्डुलिपिक रूप मे छिड़िआयल अछि जकर उपयोग प्रस्तुत शोधकर्त्ता कयलनि अछि।

आदि सन्देशा सन्त कबीर

ई पाण्डुलिपि स्व० सोनेलालदास द्वारा हस्तलिखित अछि। एहि मे प्रचुर संख्या मे सन्त कबीरक रचना संकलित अछि जकर कुल संख्या ९१७ अछि। एहि मे सन्त कबीर भणित विशुद्ध मैथिली पदावलीक संख्या ६४ अछि जे मङ्गल, समदाउनि, दीहल झुम्मरि, विनती, सोहर, लगनी, बरहमासा, चैती, घांटो आदि प्रकरण मे भेटैत अछि। सधुक्कड़ी भाषागत मैथिली प्रयोग कें समेटि लेल जाय तँ एहि मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक संख्या त्रिगुणहु सँ बेसी भए जाएत। मुदा एहि संकलनक विशुद्ध पदावली कें विचारक कोटि मे राखल गेल अछि। ओहू पदावली मे अनेक विभिन्न आकरग्रंथ सभ मे सेहो आबि गेल अछि। एहन पद सभ **कबीर शब्दावली, कबीर वचनावली, कबीर साहेब की शब्दावली** आदि मे सेहो संकलित अछि। लिपिकारक दोष सँ अनेक ठाम पाठभ्रान्ति एहू पाण्डुलिपि मे स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ। एहि पोथीक अन्त मे लिपिकार लिखने छथि–'इती श्रीआदी संदेसा संत कबीर संत साग्रह पुस्तक समपूरन समाप्त जो आद रस मोताबीक देखा सो लीखा मम दोख न दीयते सँजन साधु सो विनती मोरी टुटल अक्षर पढ़ब जोरी हस्ताकक्षर सोनेलालदास मौजे अरेड़ टोले बरही थाना बेनीपट्टी डबीजन मधुबनी जीला द्रभंगा। पुस्तक को मालीक गुरु महात्मा साहेब मौजे खबासपुर का है जिला आरे इयाने शाहाबाद ता. ११ पूस रोज सोम को आठ बजे दीन मे समापत हुआ।'

सन् १३३५ साले
ता० – १९ – १२ – २७

एहि पोथीक विशेषता ओकर हस्तलिपि, कागत, मोसि, सुसज्जित पाँती अछि जे आइसँ लगभग ७० वर्ष पूर्व करचीक कलम आ केराक पानिसँ तैयार कयल गेल मोसि पर दृष्टिपात कएने स्पष्ट होइछ।

आदि सन्देशा सन्त कबीरक ई मंगल द्रष्टव्य–

पाँच सखी मिली अैलहुँ हो, एक भवन लेल वास।
अपन-अपन अपनौलक हो, कोइ नहिं भेल हमार ।।१।।
एहि भवसागर नैहर हो निरगुन सासुर मोर ।
अबइत बटिया भुलाएल हो केकरा कहब दुख रोय ।।२।।
के अब निज घर जाएत हो केही बिनु रहल अचेत ।
केकरा बस जीव पड़ि गेल हो कोन मीरगा खा गेल खेत।।३।।

चेतल निज घर जाएत हो गुरु बिन रहल अचेत ।
विषधर बस जीव पड़ि गेल हो मन मिरगा खा गेल खंत।।[१]।।
चोत दं चेतव कडहारो हो औघट लागल नाव ।
लख चौरासी जीव रिनिञा हो अटकि रहल कडहार ।।[२]।।
साहेब कबीरक मंगल हो शब्द परेखू टकसाल ।
ताही उपर निज अक्षर हो संगहि उतरहु पार ।।[३]।।

डा० सुभद्र झाक पाण्डुलिपि

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावलीक एक गोट विशिष्ट पाण्डुलिपि डा० सुभद्र झा लग सुरक्षित अछि। ई पाण्डुलिपि तिरहुता आ कैथी मे लिखल अछि। एहि मे कुल मिलाकए ७३९ गोट पद अछि। एकर पाठ अत्यन्त सुस्पष्ट ओ सुलिखित अछि। यद्यपि एहि मे संकलित पद मे अधिकांश विभिन्न आकर ग्रंथ सभ मे आबि गेल अछि तथापि अनेकठाम पाठकभ्रान्ति कें समुचित दिशा देबा मे ई सहायक होइत अछि। अनेकठाम एहू पाण्डुलिपि मे लिपिकारक दोषें भ्रान्ति देखि पड़ैछ। विशुद्ध मैथिली पदावलीक दृष्टिञे एहि पाण्डुलिपि मे कुल ९७ गोट पद सन्त कबीर भणित अछि जाहि मे मंगल, सोहर, कोहबर, समदाउन, भजन आदि शीर्षक देल अछि। उदाहरण हेतु ई पद द्रष्टव्य थिक–

आब मोरा भइलं विआह तो बरी है अमर वर हे ।।[१]।।
तीन सौ साठ के मन्दिल हे सखिया अर्घ उर्द्ध दोउ खम्ह।।[२]।।
पाँच पचीस बरिअतिया हे सखिया समधी तीन सेयान ।।[३]।।
चन्द्र लगन चलु भामर हे सखिया गुरु मुख कन्यादान ।।[४]।।
शिवशक्ति गेठी बन्हन हे सखिया सेन्दुर बन्दी नाम ।।[५]।।
भओंर-गोफा बिच कोहबर हे सखिया तहाँ प्रभु रचल मार।।[६]।।
बिनु जोरहि वर सुन्दर हे सखिया बिनु घोरें मे असवार ।।[७]।।
साहेब कबीर कोहबर गाओल हे सखिया लेहु ने विचार ।।[८]।।
गौना के दिन लगिचाएल हे शब्द परेखु टकसार ।।[९]।।

प्रकीर्ण पाण्डुलिपि

प्रस्तुत शोधकर्त्ता द्वारा किछु विशिष्ट कबीरपन्थी लोकनिक प्रकीर्ण पाण्डुलिपिक संकलन सेहो कयल गेल अछि जाहि मे कबीर भणित मैथिली पदावली अछि। एहि प्रकारक कबीरपन्थी लोकनि मे श्री जीवछ दास, श्रीरामदेवदास, श्रीजलेश्वरदास,ओ श्रीसुजनजी प्रमुख छथि। श्रीजीवछदासक पन्ना सँ दुइ गोट पद, श्रीरामदेवदासक पुस्तिका सँ छओ गोट पद, श्रीजलेश्वरदासक बही सँ तीन गोट पद ओ श्री सुजनजीक बही सँ एकगोट पद शोधक्रम मे प्राप्त भेल अछि, जे विशुद्ध कबीर भणित मैथिली पदावली सभ थिक। श्रीजीवछ दासक पद रहस्यवादी परम्पराक, श्रीरामदेवदासक पद मे एकगोट भजन, एकगोट लगनी, दुइ गोट सोहर ओं दुइगोट समदाउनि गीतिपरक, श्रीजलेश्वरदासक पदमे दुइ गोट निर्गुण ओ एक गोट मंगल

पद तथा श्री सुजनजीक एकमात्र पद दृष्टकूट पद थिक। श्री जीवछदासक एकगोट पद एहि प्रकार अछि–

संग मे बिढ़नी बिन्हलक पचहिया क्यां ने बुझलक रे भाई।
तीन बिढ़नी मिल खोता बनौलक, जंगल घर बनाई ।
गन गन गन गन बिढ़नी करैये चौसठ कला लगाई ।।
तीन बिढ़नी आ पाँच पचहिया और पचीस संग लाई ।
वेह तैंतीस मिलि एक मन्त्र कए सातो दीप बुझाई ।
छओ खाढ़ी तन सेवन लागे, बारह खंड केवाड़ी ।
रचि रचि तामे द्वारा कटाओल, नौटा मुँह बनाई ।
कहए कबीर सुनो भाइ साधो दशमी द्वार उधारी ।
अमृतके जब पड़े फुहारा सब बिढ़नी मरि जाई ।।

हिनक दोसर पदक स्वरूप एहि प्रकारक अछि–

भजन करहु भैया अन्हरा काहे मर्म भुलाई ।
सिमर फूले अकास मे फुल देखि भमरा लुभाई ।
मारल लोल रूइआ उड़ि गेल सुगना चलल पछताई ।
एक तऽ अन्हारी कोठरी दूजो दिआ न बाती ।
बहियाँ पकड़ि कें यम ले चललऽ संग न कोई साथी ।
गंगा जमुना बालू रेत मे मलिया फूलवाग बाग लगाओल।
चन्दन उपजे चांदनी योगी धुनी रमाओल ।।
चारू रयनिञा जागि के जोगी भोर मे गेल अलसाई ।
कहहि कबीर धर्मदास सुनु यमुआ बनसी लगाई ।।

श्री जलेश्वरदस सँ प्राप्त मंगलपद द्रष्टव्य–

बाबा हमरो एक बगिआ लगाओल घन महुआ बीट बाँस हे ।
ताही वृक्ष एक कोहेली बोले कोइली बोले सतनाम हे ।
जाहु हे कोइली अमरपुर देशवा जहाँ वसे पिआ हमार हे ।
हमरो समाद पिआजी के कहबनि एमरी लगन बड़ी जोर हे ।
बाबा हमरो एक चुनरी भेजाओल पांचो रंग पेओन लगाइ हे।
चुनरी भरम हम किछु आ जानल पेन्हैते ओढ़ैत भेल मइल हे।
अमरपुर के मनसा धोबी कपड़ा धोबए बड़ी साफ हे ।
एसन कपड़ा धोइहै धोबिनिञा दुविधा के दाग छुटि जाय हे ।
साहेब कबीर मुख मंगल गाओल शब्द परेखु टकसार हे ।
एमरी के गओना बहुरि नहि आओना फेरू न मानुष अवतार हे।

एहि पद मे महुआबोट बाँस, कहबनि, एमरी पंआंन, चुनरी, पेन्हब, ओढ़ब, बहुरि आदि शब्द मे टकसाली मैथिलीक प्रयोग भेल अछि ।

हिनका सँ प्राप्त दुनू निर्गुण पद लगनी भास मे अछि । एकटा निर्गुण पद मे मानव जीवनक परम सत्य मृत्युक परिवेशक चित्रण भेल अछि । एहि मे कहल गेल अछि–

नाम भजु नाम भजु सकले भरम तजु
बारहो जतन से पिंजड़ा बनाओल रे की ।
गढ़िए संदिए सुगना कैलों तैयारी
ताहि भीतर सुगना बांलय रे की ॥
माए बाप घेरने छला सुगना बोलैत छला
सुगना उड़ैत क्यो ने परेखल रे की ॥
जहि मन्दिल मे एतेक सुख कयलहु
ताही मन्दिरबा अगिया लगाओल रे की ॥
एक कोस गेला सुगना दुइ कोस गेला ।
घुमि घुमि मन्दिर निरेखै रे की ॥
अगिआ लगल तन मे भसम उड़ल छन मे
पाँच लकड़िया देल फकि उलटि नहि ताकय रे की ।
साहेब कबीर इहो गाओल निर्गुणञा
जेहने पीसब तेहने उठायब रे की ॥

जलेश्वरदासक दोसर निर्गुण भजन योगसाधना दिस मानवक ध्यान आकृष्ट करबा सँ सम्बद्ध अछि । एहि मे कहल गेल अछि–

एलौं मे बालापन आब भेलों तरुणियों रे की।
सखि हे, खेलैत खेलैत दिनमा बीतल रे की।
जोग जुगुति अरु आसन दृढ़ करू ।
सखि हे निरखि परखि तिलक लगाबहु रे की॥
पवन धौर करू अभियन्तर ध्यान धरू
सखि हे शब्द के बसुरिया धीरे-धीरे बाजय रेकी॥
साहेब कबीर इहो गओलनि निर्गुनिञा
सखि हे सन्त जन लिऔ ने विचारि
बहुरि नहि आबए रे की ॥

श्री सुजनीक पद रामकथापरक दृष्टकूट थिक जाहि मे कहल गेल अछि–

जननी के जायल जननी नाम
जननी के पीठ चढ़ि घुमल गाम ।
कहहि कबीर एक अचरज भेल ।
सासुक पीठ पर जमाय चढ़ि गेल ।

हिनक ई पद विद्यापतिक एहि पद सँ अत्यन्त साम्य रखैछ

रे नरनाह सतत भजु ताही
जाहि नहि जननि जनक नहि जाही।
सासुक कोर मे सुतल जमाए
समधि बिलह सँ बिलहल जाए ॥

श्रीरामदेवदास सँ प्राप्त भजनक स्वरूप एहि तरहें अछि–

अगिआ लगौले तू नैहरबा सुन गे लुचिया।
नहिरा के लोग सभ बढ़ दुख देल ।
चलहि के बेरिया बन्धनमा तोड़ि देल ।
नहिरा के लोक सब बड़ कुटिचाल ।
करैये कुकर्मी बजाबए लागल गाल ॥
नैहरा के लोक सब बड़ बदमास
अगिआ लगाओल अगहन मास ॥
कहहि कबीर बड़ नीक भेल ।
जड़ि गेल नैहरबा झगड़बा छूटि गेल ॥
सुन गे लुचिया ॥

रामदेवदासक पुस्तिकासँ प्राप्त अन्य गीतसभ एतय विस्तारभय सँ देब समुचित नहि बूझि पड़ैछ। हिनक पुस्तिकामे उपरोक्त भजनक अतिरिक्त एकटा लगनी, दूटा समदाउनि आ दूटा सोहर प्राप्त भेल अछि । एकटा सोहर पद मे कहल गेल अछि–

दिअरा बारू सखि दुलहनिञा नगरिया मे पैसल चोर हे ।
सखि हे, मुसि लेत हीरा मोती लाल महलिआ मे जागल रहिह हे॥
पाँच चोर तीन ठग जगत धन मूसल हे
सखि हे, राजा रंक बलबीर केहो नहि छोड़ल हे ॥
सत्य सुकूति करू नाव धैरज करुआरि धरू हे ।
सखि हे, शब्द सुरति करू मौज, द्वार पर ठाढ़ रहु हे ।
युद्ध करहु घर भीतर विरह बारूद भरू हे ॥
सखि हे, नाम अखण्डलिअ हाथ चोरबा के मारहु हे ॥
साहेब कबीर सोहर गाओल गाबिके सुनाओल हे ।
हिलि मिलि कए सतसंग चलहु सुखसागर हे ॥

एहि तरहें प्रकीर्ण पाण्डुलिपि सेहो कबीर भणित मैथिली पदावलीक विशिष्ट साधन स्रोत अछि ।

मौखिक साधन स्रोत

कबीर भणित मैथिली पदावलीक मौखिक साधन स्रोत मिथिलाक लोकगीतक एकगोट विशिष्ट सांस्कृतिक निधि थिक। एहि गीतक प्रयोग कबीरपन्थी परिवारक विभिन्न संस्कारक अवसर पर होइत अछि। कबीर जयन्ती ओ अन्य उत्सवक अवसर पर कबीरपन्थीलोकनि विभिन्न प्रकारक भजन, निर्गुण आदि पद गबैत छथि। एहन पद मे अधिकांश श्रुतपरम्परा सँ प्रवहमान अछि। एहन पद कँ एक मुख सँ सुनला उत्तर जं पद भेंटैत अछि, अन्य मुख सँ सुनला उत्तर ध्वनिगत, भाषागत, भागवत, ओ अन्य कतोक प्रकार अन्तर देखि पड़ैत अछि।

तथापि एहि साधन स्रोत सँ उपलब्ध कबीरपन्थी मैथिली पदावली अत्यन्त बहुमूल्य अछि आ समय अछैत एकर संकलन कए लेब आवश्यक अछि अन्यथा युगीन प्रभाव सँ ई क्रमशः विलोपमान स्थिति मे अछि।

प्रस्तुत शोधकर्त्ता कँ कबीरपन्थी रामरतीदेवी सँ श्रुतपरम्पराक ई दुइ गोट पद भेंटलनि अछि–

दुलहन वन के जैबौ ससुरार गोरिया।
काँचे बँसबा कटायव
ओहि के डांलिया बनाएव
ओहि मे लगिजेतै उजरी ओहार गोरिया ।।
चारि कहरिया मिलि अइहैं।
तोहर डांलिया उठाविहैं
तोरा राखि देतउ नदिया किनार गोरिया ।।
खढ़ के उकबा बनाएब
तोरा मुखमे लगाए
तोहर जरि जेतौ सुन्दर मकान गोरिया
साहेब कबीर निर्गुण गाओल
गावि लोकके समझाओल
तेरा छूटिगेल सोरहो श्रृंगार गोरिया।

दोसर पद लगनी थिक। इहो निर्गुण पद थिक जाहि मे कहल गेल अछि–

एकहि बून्द सँ सिरजल देहिया
भाँति भाँति के बनल पिजरबा
बड़ रे जतन सँ पिंजड़ा उरेहल रे की।
काँचहिबाँस के बनल पिजरबा
सत्तरि कोरो बहतरि बतिया
बन्हन तीन सै साठि प्रेमगृह बान्हल रे की।
ऊँच रे महलिया के नीचे दरबजवा
दशमी के लगल केबरिया।
ताला कुंजी कठोर कोन विधि खोलब रे की ।।
साहेब कबीर इहो गाओल लगनिआ।
समुझि समुझि पग धरू हे सजनिआ।
खुली गेल भ्रम के कंबाडी साहेब मुख देखल रे की।।

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक साधन स्रोत पर विचार कयला सन्ताँ ई स्पष्ट अछि जे सन्त कबीरक रचनाक एकटा विपुल अंश पर मैथिली भाषाक स्पष्ट अधिकार अछि। हिनक पदावलीक संकलन प्रारंभहि सँ होइत रहल अछि आ मिथिला सँ बाहरे सँ ओहि पदावलीक प्रकाशन होइत रहल। स्वभावतः मिथिला सँ बाहर प्रकाशित पदावली पर सम्पादक प्रभाव पड़ल आ सधुक्कड़ी भाषा होयबाक कारणें बहुधा मैथिली प्रयोग दिस विद्वानलोकनि उपेक्षित भाव रखलनि, तथापि सन्त कबीरक प्रामाणिक ग्रन्थहु सभ मे प्रचुर संख्या मे मैथिली पदावली भेंटैत अछि। मिथिला सँ प्रकाशित कबीरपन्थी ग्रन्थ मे मैथिली पदावलीक विपुल निवेश भेल अछि। मिथिला मे कबीर भणित मैथिली पदावलीक दुइ गोट विशिष्ट पाण्डुलिपि भेंटल अछि, जाहि मे एकटा सहजयोग सत्संग केन्द्र, अरेड़बरही टोल, मधुबनी मे तथा दोसर डा० सुभद्र झा लग संरक्षित अछि। एहि दुहू पाण्डुलिपि मे प्रचुर मैथिली पदावली अछि। एकरा दुनूक अतिरिक्त लोकजीवन सँ प्राप्त पाण्डुलिपि ओ श्रुत परम्परा सँ संरक्षित कबीर भणित मैथिली पदावलीक बाहुल्य मिथिला क्षेत्र मे रहल अछि। कहल जा सकैछ जे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक आयाम अत्यन्त व्यापक अछि।

एहि पदावली सभ पर दृष्टिपात कएने इहो स्पष्ट होइछ जे कबीर भणित मैथिली पदावलीक मिथिलाक स्रोत सँ प्राप्त पाठ बहुत विशिष्ट ओ परिष्कृत अछि।

सन्दर्भ निर्देश

१. यज्ञदत्त शर्मा–**कबीर साहित्य और सिद्धान्त,** अक्षरम, सोनीपत (हरियाणा) प्रथम संस्करण–सन् १९८४ ई०, पृ०–३६।
२. विवेक दास–सम्पादक, **कबीर साहब,** कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, कबीरचौरा मठ, वाराणसी प्रथम संस्करण, सन् १९७८ ई० पृ०–९।
३. गंगाशरण शास्त्री–सम्पादक–**बीजक** (कबीरचौरा पाठ) कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र कबीरचौरा मठ, वाराणसी, १९८२ ई०, पृ०–२९७।
४. तत्रैव, पृ०–३२३–३२४।
५. हनुमानदास सम्पादक–**बीजक** (सारबोधिनी टीका) कबीर आश्रम फतुहा पृ०–२६९।

६. **मूल बीजक** (धनौती पाठ) शब्द–१०४, पृ०–२३८ ।

७. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीरपंथ** 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 'प्रथम संस्करण' १९६५ ई० पृ०–२६ ।

८. डॉ० श्यामसुन्दर दास-सम्पादक, **कबीर-ग्रंथावली**, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं०–२०३४ पद सं०–५० पृ०–८१ ।

९. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी: **कबीर और कबीरपंथ** पृ०–२६ ।

१०. **कबीर ग्रन्थावली** : परिशिष्ट, पदावली–१६, ३४, १३४, १३५, १४९ ।

११. तत्रैव, पृ०–२०४ ।

१२. गंगाशरण शास्त्री–सम्पादन-**कबीरशब्दावली**, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, कबीरचौरा मठ, वाराणसी, एकादश संस्करण–१९७६ ई० सायरी २० पृ०–६८, झुम्मरि–४, पृ०–२७, सायरी २९, पृ०–७१, जतसारी– पृ०–९२, जतसारी–६, पृ०–९४ ।

१३. तत्रैव, सायरी–२०, पृ०–६८ ।

१४. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीर पंथ** । हिन्द साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण, १९६५ ई० पृ०–२७ ।

१५. अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध''–सम्पादक, **कबीर वचनावली**, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् १९७३ पद–२०, सत्यलोक, पृ०–१७३, पद,–४६, पृ०–१९१, पद–५०, पृ०–१९२, पद–५१, पृ०–१९३, पद–१००, पृ०–२१०, पद–१०२ पृ०–२११, पद–१६३, पृ०–२३१, पद०–२०७, पृ०–२४६ ।

१६. तत्रैव, पद २०७, पृ०–२४६ ।

१७. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी–प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीर पंथ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण–१९६५ ई०, पृ०–४८ ।

१८. **धनी धर्मदास की शब्दावली** भाग २, वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, सन् १९८० ई०, पृ०–३; ७, १२, ३१ एवम् ५५, क्रमशः चेतावनी के अंग शब्द २, ३, विरह प्रेम अंग शब्द ८ भेदक अंग, शब्द ९, सोहर शब्द–१ ।

१९. तत्रैव, पृ०–५५ ।

२०. डॉ० केदारनाथ द्विवेदी-प्रस्तुतकर्त्ता–**कबीर और कबीर पंथ**, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९६५ ई० पृ०–२७ ।

२१. **कबीर साहेब की शब्दावली** भाग–१ वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, सन् १९२२ ई०, पृ०–२, ३, ६, ७, १४, २३, २५, २९, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४७, ४८, ५२, ७१, ७३, भाग–२, पृ०– ६, १३, २३, २९, ३०, भाग–३ पृ०–७, २५, २६, भाग–४, पृ०–४, पृ०– १७, १८ ।

२२. तत्रैव, भाग–४, पृ०–१७ ।

२३. तत्रैव–भाग–१, शब्द १४, पृ०–७३ ।

२४. पं० भगवती प्रसाद मिश्र, संग्रहकर्त्ता–**कबीर भजनमालासागर**, भोलानाथ पुस्तकालय, महात्मागांधी रोड, कलकत्ता–७, राग–जतसार, पृ०–१० ।

२५. तत्रैव, शब्द, पृ०–६ ।

२६. सुक्खुदास, संग्रहकर्त्ता–**सदगुरु कबीर वचन संग्रह**, सदगुरु कबीर ज्ञानाश्रम, राजगीर, मंगल १, २, ५, पृ०–२२, २३, २५, दीहल–२, पृ०–३९, जतसारी–१, २ पृ०–११३, ११४।

२७. तत्रैव–पृ०–३९ ।

२८. बच्चेलालदास–सम्पादक–**पारखमूल**, श्रीलोकनाथ पुस्तकालय, १७३, महात्मा गांधी, रोड, कलकत्ता–७, शब्द–७, पृ०–१४ ।

२९. जीवछदास ''भजनाहा संग्रहकर्त्ता, **कबीर भजनमाला**, मूल विचार संगठन, सीतपट्टी महिन्दवार जिला–मधुबनी । प्रथम संस्करण संवत्–२०३८ पृ०–६३ ।

३०. बौआ साहब–संकलन–**भजनावली भाग**–१, कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवारा जिला–दरभंगा प्रथम संस्करण–१९८० ई० । मंगल– २, २१, २८, २९, ३०, समदाउनि– २३, २४, २७ ।

३१. तत्रैव, पृ०–२८ ।

३२. तत्रैव, पृ०–२४ ।

३३. सोनेलाल दास–हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार, **आदि सन्देशा संत कबीर**, पुस्तकक मालिक, गुरु महात्मा साहेब, मौजे खबासपुर जिला–आरा ता०–११–१२–१९२७ ई० वचन-मगंल–२१, पृ०–६९ ।



चतुर्थ अध्याय

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक विवेचित पाठ

सन्त कबीर 'मसि कागज छुयो नहो कलम गह्यो नहि हाथ' वला उपदेशक छलाह । निर्गुण सन्तकाव्य परम्पराकें हिनक पुष्कल अवदान बहुधा लोककंठ ओ प्राचीन हस्तलिपि सँ प्राप्त होइत रहल अछि । स्वभावत: श्रोता, पाठक, लिपिकार, गायक आदिक प्रभाव सँ एहि मे निरन्तर पाठान्तर होइत रहल अछि, तें कोन पाठ कें मूलपाठ कहल जाय, से भ्रामक भए गेल अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिलो पदावलीक जे विभिन्न साधन स्रोत सभ अछि, ओहि सभ मे स्थानीय प्रभावक कारणें असमानता स्वाभाविक बुझना जाइछ । एहि पदावलीक संकलन विभिन्न विद्वान द्वारा, विभिन्न स्थानक पाण्डुलिपिक आधार पर होइत रहल अछि । पाण्डुलिपि पर स्थानीय प्रभाव तँ पड़ले अछि, संगहि एकरा सभक कालान्तर मे भेल प्रतिलिपि ओ लिप्यन्तर भेला सँ सेहो पदक स्वरूप मे परिवर्तन होइत रहल । मुद्रित प्रति मे सम्पादकीय दायित्वक निर्वहन क्रम मे सेहो तथा पाण्डुलिपि सँ मुद्रित प्रति मे परिवर्त्तनक क्रम मे सेहो शब्द ओ ध्वनिक स्वरूप मे विकृति अबैत गेल अछि। मौखिक आधार पर संकलित पद सभ मे श्रुति साहित्यक परम्पराक अनुकूल विभिन्न लोकक मुख मे प्राप्त पदक स्वरूप ओ शब्दावलीक रूप मे अन्तर देखि पड़ैत अछि ।

सन्त कबीर भणित विशुद्ध मैथिली पदक पाण्डुलिपिसँ, मुद्रित प्रति सँ ओ लोककंठ सँ प्राप्त स्वरूपक विवेचन कयला उत्तर ई बुझना जाइछ जे एहि पदावलीक स्वरूप अत्यन्त नम्य रहल अछि। पाठान्तर, लिप्यन्तर ओ श्रोता तथा गायकक प्रभाव सँ एकर स्वरूप मे निरन्तर परिवर्तन होइत रहल अछि, जकर कारणे ई पद सभ बहुधा बिहारी (भोजपुरी), पूर्वी हिन्दी आदिक रूप मे विभिन्न विद्वानक द्वारा मान्यता प्राप्त करैत रहल अछि । विवेचित पाठ सन्त कबीर भणित पदावलीक वास्तविक ओ मैथिली स्वरूप कें प्रस्तुत करैछ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक पाठमे ह्रस्व ओ दीर्घपाठ, कतोक पद मे छन्द व्यतिक्रम, अनेक पद मे पाठान्तर आदि देखि पड़ैछ जाहि सँ अर्थबोध ओ भाषिक स्वरूपक निर्धारणहु मे कठिनता देखि पड़ैछ । उदाहरणार्थ ई पद द्रष्टव्य अछि–

चढ़लहु हमे कनक पहाड़ साजन गढ़ देखल हो ।
देखलहुँ मोंजे गुरुकेर धाम सुफल कए लेखल हो ।।
साहु जे चललाह बनिजए बनिज मोलाएल हो ।
बिचहि मिलल ठकिहार ताहि लेपटाएल हो ।।
साहु बसथि पुर पाटन साहु नएनागिरि हो ।
जेहो रे गहलि निजधाम सेहओ धनि आगरि हो ।।
चारू कोन चउमुख दिअरा से मण्डिल सोहाओन हो ।

बिनु अन्न लागल बजार दयागुरु राखल हो ।
साहेब कबीर मंगल गाओल गाबिकए सुनाओल हो ।
सन्तो जन लिअ न बिचारि प्रेमसँ गाओल हो ।।'

एकर दोसर पाठ एहि तरहें अछि–

चढ़लें मैं कनक पहाड़, सजन घर देखल हे ।
सन्तो देखलें मैं सतगुरु धाम, सुफल करि लेखल हे ।।
साहु मोरे चलला बनीज बनीज मे लोभायल हे ।
सन्तो बिचहि मिलल ठगहार, साहु लपटायल हे ।।
साहु बैठल पुरपाटन, साहुनि गुणसागरि हे ।
सन्तो जिनि रे गहलि निजधाम, सोहि धन आगरि हे ।।
चारो कोण चारो माणिक, दियरा बरायल हे ।
सन्तो अनहद उठे झनकार, से मन्दिर सोहावन हे ।।
साहेब कबीर मुख मंगल, संत मिलि गावल हे ।
सन्तो मानुष जन्म अनूप, बहुरि नहि पायब हे ।।'

एहि तरहें एहि दुहू पद मे चढ़लहुँ आ चढ़लें, देखलहुँ आ देखलें, मोंजे आ मैं, ठकिहार आ ठगहार, जेहो आ जिनि आदि शब्दक परिवर्तन लोककंठ मे भाषाक क्रमिक ओ स्वाभाविक विकृतिक संकेत दैछ आ पूर्वपद मे जतए मैथिलिक स्पष्ट छाप देखि पड़ैछ, ततहि उत्तर पद मे बिहारीक प्रभाव कें नकारल नहि जा सकैछ । एहिठाम ई विचारणीय अछि जे पदक स्वरूपक ई अन्तर कबीरपन्थी सम्प्रदाय मे दीक्षित विविध क्षेत्रीय भाषा भाषीक प्रभावें उत्पन्न भेल होयत। पदक पाँचम पंक्ति मे 'साहु नएनागिरि हो' पाठक बदला 'साहुनि गुणसागरि हे' पाठ बेशी समीचीन ओ सार्थक बुझना जाइछ । पदक सातम ओ आठम पंक्ति सेहो एक दोसरा सँ नहि मिलैत अछि आ ने भणिता वला अन्तिम पदे । अर्थक समीचीनताक दृष्टिऍ सद्गुरु कबीर बचन संग्रहक पद अधिक उपयुक्त बुझना जाइछ । कबीर भजनमाला मे ई पद एहि रूपें भेंटैछ–

चढ़लौ मे कनक पहाड़ सज्जन गढ़ देखल हे ।
संतो देखलो में गुरु केर धाम सुफल करि लीजै हे ।।'।।
साहु मोरा चले पुरपाटन साहुनी गुणआगर हे ।।'।।
संतो जेहो रे गहे निज नाम सेहो धनी आगर हे ।।
साहु मोरा चलल बनिजरवा बनिज भुलायल हे ।।'।।
संतो बीचही मिलल ठकिहार ताहि लपटायल हे ।।'।।
चारोकोन चौमुख दियरा, मंदिर सुहावन हे ।
बिनु अन्न लागल बजार सौदा करि लीजै हे ।।'।।
साहेब कबीर मुख मंगल सुनहु संत सुजान हे ।
परखहु शब्द टकसाल बहुरी नहि आबहु हे ।।'।।

एहि पद मे दोसर पाँती मे छन्दक व्यतिक्रम देखि पड़ैछ । संगहि प्रथम पंक्ति में सज्जन शब्दक सार्थकता सन्दर्भक अनुरूप नहि बुझना जाइछ । लपटायल, चले, गहे, लीजै आदि शब्द पर पूर्वी हिन्दीक ओ बिहारीक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ ।

एहि पदक विशुद्ध स्वरूप एकटा मैथिलकबीरपन्थी सँ एहि तरहक भेटल अछि जे क्रमशः विकृत होइत चल गेल अछि–

चढ़लहुँ हमे कनक पहाड़ साजनगढ़ देखल हो ।
देखलहुँ मोञे गुरु केर धाम सुफल कए लेखल हो ।।
साहु जे चललाह बनीजए बनिज मोलाएल हो ।
बीचहि मिलल ठकहार ताहि लेपटाएल हो ।।
साहु बसथि पुरपाटन साहुनि गुणआगरि हो ।
जेहो रे गहलि निज धाम सेहओ धनि आगरि हो ।।
चारूकोण चउमुख दिअरा बरायल हो ।
अनहद उठए झनकार से मन्दिर सोहाओन हो ।।
साहेब कबीर मगंल गाओल गाबि कए सुनाओल हो ।
सन्तो जन लिअउ नै विचारि परमपद पाओल हो ।

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक स्वरूप मे पाठ भेद ओ तज्जन्य छन्ददोष अर्थदोष आदि देखि पड़ैछ । संगहि एकर भाषाक विकृति, पदक असंगति आदिक सेहो संकेत भेटैछ ।

सन्त कबीर भणित एक गोट अन्य पद मे विभिन्न पाठभेद एहि प्रकारक अछि–

सुरति के डोरी गगन सुरति लागल पिआ संगे लागल सिनेह हे।
मन हरि लिहलन पिआ रंगरसिया पुरुब जनम के सिंनेह हे ।।[1]
रहहुँ जोड़ बिजोड़ जनु होअहुँ जुगन जुगन अहाँ नाह हे ।
बरनञो एक दोसर पुनि नाही एक ब्रह्म विचारि हे ।।[2]
भवसागरकेर पार बसु बालुम ऊहमा से आएल संदेस-हे ।
भेल बिआह पिआ संग गओनवाँ अनन्इहत जएबइ ओहि देश हे।।[3]
एमरी के बेरि सबेरे चेतु साजन बास करब पिआ पास हे ।
जीवाजन्तु एक सम लेखब मरदब यम केर मान हे ।।[4]
एमरी के गओना बहुरि नही अओना फेरु न नैहर बास हे ।
सतगुरु दिहलन अमर पद आशिष जुगन जुगन अहिबात हे ।।[5]
साहेब कबीर एहो मंगल गाओल । सन्तोजन लेहु न विचार हे।
अपन अपन गेठि समरि बान्धुहु इहाँ न पैंच उधार हे ।।[3]।।[6]

एकर दोसर पाठ एहि स्वरूप मे भेटैत अछि–

सुरति कै डोरि गगन बीचे लागल, लागल पिया से नेह हे ।।
मनहरि लीहल पिया रंग रातली पुबिल जना के नेह हे ।।
भवसागर बाहर बसे बालमाँ वहाँ से भेजल सन्देश हे ।।
भेल उछाल पिया संग गौना जायब खुशी से वही देश हे ।।
अबरी के बेर सबेरि चित चेतहु बसहु अमरपुर देश हे ।।
जीव जन्तु सब एके करि मानहु भेटहु यम के अन्देश हे ।।
जेहो रे बुझल सेहो सुख भल पावल बसल पुरुष के पास हे।
सतगुरु दिहल अमरपद अशिष युगन युगन अहिवात हे ।।'

एहि तरहें एहि पद मे 'रहहु जोड़........ब्रह्मविचारि हे ।' सर्वथा अनुपस्थित अछि । तदतिरिक्त दुनू पद मे लीहल-लिहलन, बालमां, दिहल-दिलहन आदि पर बिहारीक प्रभाव स्पष्ट अछि ।

डा० सुभद्र झा लग प्राप्त पद मे सुरतिक स्थान पर सुरती, पिआक हेतु पीया सिनेहक, हेतु सीनेह, मनहरिक हेतु मनहरि, रंगरसिआक हेतु रंगरसीया, पुरुब ओ पुबलिक हेतु पुरबिल, जोड़क हेतु जोर, बिजोड़क हेतु बीजोर, 'जनु होअहुके हेतु' जनी होहु बरनञोक हेतु बरनो, एकक हेतु ऐक, दोसरक हेतु दुसर, पुनिक हेतु पूनी, विचारक हेतु बीचार, भवसागरक हेतु भौसागर, गओनबाँक हेतु गोनवा, ओहि के हेतु वोही, एमरिक हेतु एंमरी सबेरेक हेतु सबेरी, जीवाक हेतु जीया, उधारक हेतु ऊधार आदि पाठान्तर भेटैत अछि ।

सन्त कबीरक एकगोट अत्यन्त प्रचलित पद मिथिलाक जनकंठ मे व्याप्त अछि–

कोने ठगवा नगरिया लूटल हो ।
चनन काठ के बनल खटोलवा तापर दुलहिन सूतल हो।
उठहु सखी मोर माँग सँवारहु दुलहा मोसे रूसल हो ।
आए यमराज पलंग चढ़ि बैसे नयन्न आँसू छूटल हो ।
चार जना मिलि खाट उठाओल चहुदिस धू-धू उठल हो।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो जगसे नाता टूटल हो ।

एहि पद मे कबीरदासक सधुक्कड़ी भाषाक स्पष्ट प्रभाव तापर, मोर, मोसे, आए, बैसे, आँसू, कहे, सुनो आदि शब्द देखि पड़ैछ तथापि एकरा मैथिली स्वरूप मे चिन्हबामे कोनो भाङ्ठ नहि रहि जाइछ ।

कबीर भजनमालासागर मे प्राप्त एहि पद मे जे पाठान्तर भेटैत अछि से थिक–कोने-कवनो, चनन-चन्दन, के-का, उठहु-उठो, उठाओल-उठावत, कहे-कहत । ई पाठान्तर सभ खड़ीबोलीक अतिरिक्त प्रभाव कहल जा सकैछ ।[1]

कबीर बचनावली मे निम्नलिखित पाठान्तर अछि- कांने कौन, खटोलबा-खटोलना, दुलहिन-दुलहा । ई पाठान्तर श्रुतिजन्य अन्तर कँ स्पष्ट करैछ ।[१]

कबीर साहेब की शब्दावली मे कोनो विशेष अन्तर नहि बुझना जाइछ । एहि मे पाठभेदक रूपमे कोने क स्थान पर कौनो, चारक स्थान पर चारि तथा उठाओलक स्थान पर उठाइन शब्दक प्रयोग एहि पद पर भोजपुरी धाताक प्रभाव स्पष्ट करैछ ।[२]

आदि संदेशा संत कबीर मे ई पद एहि रूपें भेंटैछ-

कौने ठगवा नगरीया लुटल हो ।
चँन्दन काठ के बनल खटोलना ताप्र दुलहिन सुतल हो।
उठहु रे सखि मोरी मांग संवारो
दुलहा मोशे रूसल हो ।
आऐ जमराज पलंग चढ़ी बैठे नैन आँशुन टुटल हो ।
चार जने मील खाट उठाईन
चहुदिशि धुधुक उठल हो ।
कहए कबीर सुनो भाई साधु जगसे नाता छुटल हो ।।

एहि तरहें एहि पद मे लिपिदोषजन्य तापरक स्थान पर ताप्र, मोंसेक स्थान पर मोशे, यमराजक स्थान पर जमराज, चढ़िक स्थान पर चढ़ी, आँसुक स्थान पर आँशु मिल क स्थान पर मील,धू धू क स्थान पर धुधुक आदि पाठान्तर देखि पड़ैछ ।

एतावता एहि पदक विभिन्न पाठान्तर मे अनेक लिपिजन्य ओ अनेक भाषिक संक्रमणजन्य देखि पड़ैछ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे किछु पद मे पाठभेद अत्यधिक भेटैत अछि । एहन पदक स्वरूप भिन्न संग्रह मे भिन्न भिन्न भेटैत अछि । एकटा संग्रह मे जे पाठ अछि ताहि सँ अधिक पाँती दोसर संग्रहक पाठ मे देखि पड़ैत अछि । उदाहरणार्थ ई लगनी देखल जा सकैछ-

जकर अंगना जम्हिरिया सो भी कइसे सूतल रे की ।
महक महक फूलबा से निन्दो न आबए रे की ।।
काटब पेंड़ जम्हिरिया कि पलंग बनाएब रे की ।
स्वामी मोर सुतए ओसरबा ननदि कोठे ऊपर रे की ।
सास मोर सुतए ओसरबा ननदि कोठे ऊपर रे की ।
स्वामी मोर सुतए झरोखबा कि कईसे जगाएब रे की ।।
सुखिया जग संसार कि कोई निन्द सूतल रे की ।
दुखिआ जग संसार कि कोई निन्द सूतल रे की ।।
दुखिआ दास कबीर कि हरिगुण गाएब रे की।।[३]

एहि पद कँ देखला उत्तर ई स्पष्ट अछि जे 'स्वामी मोर सुतए ओसरबा ननदि कोठे ऊपर

रे की' तथा 'सुखिआ जग संसार कि कोई निन्द सूतल रे की' पद गायकक द्वारा पद कँ दाहरयबाक क्रम मे दू बेर स्थान पाबि गेल अछि तथा किछु सामान्य अन्तरक संग लिपिबद्ध भए गेल अछि ।

आदि संदेशा संत कबीर मे एहि पदक स्वरूप निम्नरूपक अछि-

जीनके अंगना जमीरिया से कैसे सोवै हो ।
महर महर आबै बास नीन्द कैसे आवै हो ।।
काटो पेड़ जमीरिया के पलंग बनावल हो ।
ताप्र बैठो सइआँ मोर तो बेनियाँ डुरावहु हो ।।[१]
सासु मोर सोवत अटरीआ ननद चौबारे हो ।
सईआ मोरे सोवत पलँगवे मै कैसेक जगावहु हो ।।[२]
साई मोर गोसाई तुम सब लाऐक हो ।
पाँच चोर घर मुसत दीअना उजालै हो ।।[३]
उठी न तोर मरोर और ललकारत हो ।
ज्ञान खड्ग लीए हाथ तो चोरबन मारत हो ।।[४]
सैआ मोरे आहो पीया जोरे मीलैआ हो ।
अँमा तो मोरे अँमाफल ऊपर झालर हो ।।५।।
जंत्र बाजत मँदीला बहुत सोहाओन हो ।
तुम जीन जानो सुहेलरो ऐह प्रमार्थ हो ।।७।।
गाबे साहेब कबीर सदा सुख पावल हो ।
सो सतलोक सिधाऐ बहुर नही आवत हो ।।८।।[९]

एहि तरहें आदि सँ छओ पाँतिक बाद ई पद सर्वथा भिन्न भाव सँ युक्त भेटैत अछि तथा एकर भणिताक स्वरूप सेहो सर्वथा पूर्वपद सँ भिन्न अछि । एहि पदक तुलना पूर्वपद सँ कएला उत्तर एहिमे जकर स्थान पर जीनके,'जम्हीरियाक स्थान पर जमीरिया भेटैत अछि । पूर्वपदक'महक महक फूलबा से निन्दो न आबए रे की' क स्थान पर' महर महर आबै नीन्द कैसे आबें हो' अर्थ संगतिक दृष्टिऐ विशेष समीचीन अछि । लिपिकारक दोषें तापरक स्थान पर ताप्र तथा परमारथक स्थान पर प्रमार्थक प्रयोग देखि पड़ैत अछि ।

संतकबीर भणित एकटा निर्गुण लगनीक स्वरूप विभिन्न संग्रहमे भिन्न-भिन्न देखि पड़ैत अछि। **कबीर शब्दावली, कबीर भजनमाला** ओ **आदि संदेशा सन्त कबीर** एहि तीनू ग्रंथ मे प्राप्त एहि पदक स्वरूप मे नहि केवल शब्दगत ओ लिपिगत अपितु पदगत अन्तर सेहो देखि पड़ैछ । **कबीर शब्दावली** मे एही पदक स्वरूप अछि-

फूल लोढ़ए गेलहुँ बाड़ी
साड़ी मोरि अटकल डारी ।
बिनु गुरु केअओ ने छोड़ाओल रे की ।।

फुलबा लांढ़इते हो राम हो
बरिखय अति बुन्दबा रे की
भिजि गेल पांचां रंग साड़ी रे की ।।
तितलि भिजलि हो रामा चढ़लि अटरिआ। हो राम
उहाँ उहाँ जोगिआ धुनी रमाआंल रे की ।।
मुखहु ने बोलं जोगी नयन नहि खोलए हो रामा
योगी रूप वरनि न जाए रे की ।।
योगिआ मन्दिलवा रामा अनहद बाजा बाजए
उहाँ उहाँ नाचय सुरति सोहागिनि रे की ।।
दास कबीर गाओलि निरगुनियाँ
सन्तो जन लेहु न विचारल रे की ।।[१०]

कबीर भजनमाला मे एहि पदक स्वरूप एहि रूपें भेटैत अछि–

फूल लोढ़ गेलौं बाड़ी मेघीया बरसि गेलै,
सखिआ हे भींग गेल पाँच रंग साड़ी सं
घर कोना जाएब रे की ।।१।।
भीजल तीतल धनी हे चढ़लौं अटरिया
सखिआ हे जहमाँ योगिआ धुनियाँ
रामओल रे की ।।२।।
मुखहु न बोलए योगी पलको न खोलए योगी
सखिआ हे योगिआ सुरतिया
हिआ बिच सालल रे की ।।३।।
जाहि बाटें जोगी गेल दुभिया जनमि गेल
सखिया हे दुभिया जनमि
बिजु बन लागल रे की ।।
साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआरामा
सखिआ हे सन्तो जन करु न विचारि
वहुरि नहि आवहु रे की ।।[११]०।।

एहि तरहें एहि पद मे लोढ़एक स्थान पर लोढ़, गेलहुँक स्थान पर गेलौं, भीजिक स्थान पर भींग, चढ़लिक स्थान पर चढ़लौं आदि पाठान्तरक संगहि पर्याप्त पदान्तर देखि पड़ैछ। खासकय प्रथम पदक दू पाँती एहि पदक प्रारंभिक पांतीसँ सर्वथा भिन्न अछि। 'जोगिआ सुरतिया हिआ बिच सालय रे की' सँ आगाँक भणिता धरिक पद सर्वथा बदलल अछि।

आदि संदेशा सन्त कबीर मे ई पद एकटा लगनी मे अन्तर्भुक्त देखि पड़ैछ जकर प्रथम दू पाँती एहि प्रकारें अछि–

पाँच सखी मिलि गहुमा पिसए गेलि। कि आ हो रामा हो।
कबधरि पिसब कब घर जाएब रे की।
तन सेज पिसब हम सुरति सेज उठाएब। कि आ हो रामा हो।
गुरु के शबदे बे चालनि झारब रे की।।[१२]

एकर पश्चात जे पद आयल अछि से **कबीर भजनमाला** ओ **शब्दावलीक** पद सँ भणिताक अतिरिक्त सर्वथा मेल खाइत अछि। एकर स्वरूप एहि तरहें अछि–

दश पाँच सखि मिलि फुलबा लोढ़ए गेलि। कि आ हो रामा हो।
जोहि वन केओला फुलाएल रे की ।।
फुलवा लोढ़इते रहलि कि मेघवा बरिस गेल कि। आ हो रामा हो।
भिजि गेल पाँचो रंगबा साड़ी रे की ।।
तितले भिजले धनि चढ़लि अटरिआ। कि आ हो रामा हो।
जाहि बन जोगिआ धुनियाँ लगाओल रे की ।।
मुखहु न बोलए योगी पलकिओ न ताकए। कि आ हो रामा हो।
योगिआ सुरतिया हिआ मोर सालइ रे की ।।

एहि पदक भणिता एहि तरहें अछि–

साहेब कबीर एहो गाओल जतसरिआ। कि आ हो रामा हो।
अपन अपन गेंठी सम्हारि बान्हहु रे की ।।[१३]।।

एहि तरहें विभिन्न संग्रह सँ प्राप्त एहि पद मे पदान्तर ओ पाठान्तर पर्याप्त देखि पड़ैछ जे श्रुतिसाहित्यक सर्वथा अनुरूप बुझना जाइछ।

पदान्तरक दृष्टिये सन्त कबीर भणित ई पदावली सेहो द्रष्टव्य अछि–

रहली सुबुद्धि कुबुद्धि संग रसली।
साँझिआ के सुतली सबेरो न उठली। कि आहो सन्तो हो
बालमु सतगुरु प्रियतम हृदय मोर सालए रे की ।।१।।
चारि पहर राति बिताए जतसरिआ।
दशमो द्वार घर लागल केवरिआ। कि आहो सन्तो हो।
बिनु कुंजी पट नहि खुलए चित मोरा डोलय रे की ।।२।।
गहुमा सुखिअ गेल जतबा भोथर भेल।
हथरा धएलए मोर बहिआँ मुरूकि गेल। कि आहो सन्तो हो।
झिर झिर बहए बयार पिसइत मनुआ लागल रे की ।।३।।
सुरित सोहागिनि अति अनुरागिनि आपनो।
अपनो पिआ लागि भइली वैरागी। कि आहो सन्तो हो।
सबही सुतल विरहिनि जागलि पिआ बाट जोहलि रे की ।।४।।

औघट घाट लागल मोर नइआँ ।
ताहि चढ़ि अइली वैरिनि पाँचो भइआ । कि आहो सन्तो हो।
केवट भइल मतवाल पार कइसे जाएब रे की ।।
साहेब कबीर गुरु गाओल लगनियाँ ।
उठिगेल हाट चलल पाँचो बनिआँ । कि आहो सन्तो हो
सओदा करहु न पउली से दिनमा नगीचा गेलइ रे की ।।

कबीर भजनमाला मे एहि पद मे दूटा अनुच्छेद सर्वथा विलोपित अछि । ओ दुनू पद थिक–क्रमश:

गंहुमा सुखिय गेल जतबा भोथर भेल ।

हथरा धएलए मोर बहिआँ मुरूकि गेल । कि आहो सन्तो हो
झिर झिर बहय बयार पिसइत मनुआ लागल रे की ।।'

तथा

'औघट घाट लागल मोर नइआँ ।'
ताहि चढ़ि अइली वैरिनि पाँचो भइआ । कि आहो सन्तो हो
केवट भइल मतबाल, पार कइसे जाएब रे की ।।'

संगहि एकर किछु पद मे किञ्चित अन्तर सेहो देखि पड़ैछ,जेना–'अपनो पिआ लागि भइलि वैरागी', 'सबहो सुतल विरहिनि जागलि पिआ बाट जोहलि रे की' क स्थान पर 'अपने पिआ लागि गइलौं वैरागिन सखिया हे सोवल सोवल मृगा जागल जागि बाट हेरल की ।' एहि तरहें जोहलि आ हेरल क्रियापदक विशिष्ट अन्तर सेहो देखि पड़ैछ ।

कबीर भजनमालाक भणिता सेहो भिन्न अछि । एहि मे कहल गेल अछि–

साहब कबीर गावल निर्गुनियाँ
संत जन करू ने गुरु के भजनियाँ
सखीआ हे हाथ के रत्न भुलाय
कोन घर जायब रे की ।।

आदि संदेशा सन्त कबीर मे 'झिर झिर बहए बसात पिसइत मनुआं लागल रे की' क बादक पद सर्वथा भिन्न कोटिक अछि । एहि मे कहल गेल अछि–

होएबो बीरहिनिआँ गुरु चीत लैबो ।
सुरती सोहागीन पीआ घर जैबो । की आहो राम हो ।
हाथहुके रतन गमाएब फेरू पछताएब रे की ।
सुरती सुहागीन मन अनुरागीन
अपन पीआ के होएब सोहागीन । कि आहो राम हो ।
सभेरे भरम नीन्द सुतल वीरले जागल रे की ।।

साहेब कबीर ऐसो गावैल लगनीआँ
समुझी बूझी पग धरु हे सजनियाँ । की आहो रामा हो ।
जो नर रहत अचेत पाछे पछतावत रे की ।।

पदान्तरक अतिरिक्त एहि मे होऐबो, लैबो, जैबो, ऐसो आदि शब्द एहि पर भाषान्तरक प्रभाव स्पष्ट करैछ ।

कबीर भजनमाला सागर मे सेहो ई पद किञ्चित परिवर्तित रूप मे देखि पड़ैछ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक मिथिला पाठ मे उत्तमपुरुष एकवचनक प्रयोग मे हमे, मञे तथा मोञे शब्द भेटैत अछि जे प्राचीन मैथिली प्रयोग थिक मुदा मिथिलेतर प्रान्त मे एहि हेतु मैं शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ जे हिन्दीक प्रभाव सँ उत्पन्न भेल अछि । उदाहरणार्थ–

चढ़लहुँ हमे कनक पहाड़
साजन गढ़ देखल हो ।
देखलहुँ मोञे गुरु केर धाम
सुफल कए लेखल हो ।।

सदगुरु कबीर वचन संग्रह मे 'हमे' क स्थान पर 'मै' तथा 'मोञे' क स्थान पर 'मैं' क प्रयोग भेल अछि ।।

एहना **धनी धर्मदासकी शब्दावली** मे एकटा पद मे मञेक स्थान पर मैं शब्दक प्रयोग द्रष्टव्य अछि–

सुतलि रहलहुँ मैं सखिआ
तो विष केर आगर हो ।
सतगुरु दीहल जगाए
पाओल सुखसागर हो ।।[20]

ई पद **आदिसंदेशा सन्त कबीर** मे एहि रूपक अछि–

सुतलि रहलहुँ मञे सखिया
तो विष केर आगर हो ।
सतगुरु देल जगाए
पाओल सुख सागर हो ।।[21]

एकर अन्यान्य उदाहरण सभ अछि–

मैं तोरा पूछूँ भैया रे बटोहिया
सासुर है कत दूर हे ।।[22]
मञे तोरा पूछूँ भैया रे बटोहिआ
सासुर हैए कत दुर हे ।।[23]

सम्बन्धकारक चिन्हक हेतु मैथिली मे 'केर' क प्रयोग अत्यन्त प्राचीन अछि । एहि चिन्हक प्रयोग सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे बहुलतया देखि पड़ैछ । मुदा ई प्रयोग एकर

मिथिलेपात धरि सीमित अछि। अन्य स्रोत सँ प्राप्त पद मे 'केर' क स्थान पर के चिन्हक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा–

जब रहलि जननी केर ओदर पर न सम्हारल हो।
जब लगि तन मे परान न तोहि बिसराएब हो ।।
एक बुन्द साहेब मन्दिल बनाओल हो ।
बिना नेब केर मन्दिल बहुत काल लागल हो ।।"

धनी धर्मदासक की शब्दावली मे ई पद एहि रूपक अछि–

जब रहली जननी के वोदर पर सम्हारल हो ।
जबलों तनमो परान न तोहि बिसरायब हो ।
एक बुन्द साहेब । मन्दील बनावल हो ।
बीना नेब के मन्दील । बहुत काल लागल हो ।।"

एहि प्रकारक अन्य उदाहरण सभ अछि–

दूर देश केरा जिअरा हो काआधर रहल भुलाए ।
छाड़हु हंसा तुअ यमपुर हो । लेहु मुक्ति केर पान।।"

एहि पदक पाठान्तर मे प्रथम 'केर' क पाठान्तर 'केरा' तथा दोसराक 'के' भेटैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीमे जे विभिन्न पाठभेद सभ भेटैत अछि तकरा दू भाग मे वर्गीकृत कयल जा सकैछ– भाषादोषजन्य ओ लिपिदोषजन्य । भाषादोष जन्यपाठान्तर मध्य एहन पाठभेद सभ कें राखल जा सकैछ जे लिपिकार गायक वा संग्रहकर्त्ता सम्पादक भाषाक प्रभाव सँ एहि पदावलीक संक्रमित स्वरूप कें प्रदर्शित करैछ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक मिथिलेतर स्रोत मे एहि प्रकारक संक्रमित पाठक बाहुल्य देखि पड़ैछ। एहि प्रकारक संक्रमित पाठ मे शब्दक स्वरूप पर भोजपुरी ओ हिन्दीक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ । उदाहरणार्थ किछु विशुद्ध मैथिली पाठ ओ इतर स्रोत सँ प्राप्त संक्रमित पाठ कें देखल जा सकैछ, यथा–

मिथिला पाठ	पाठान्तर	मिथिलापाठ	पाठान्तर
तुअ	तुम	डोलए	डोले
ताकर	ताके	देलन्हि	दीहलन
चलु	चल	लेलन्हि	लिहलन
गाबय	गाबे	जकरा	जीनके
जे	जो	काटए	काटो
मे	मो	केअओ	कोई
पुछए	पुछे	कहए	कहे
आगल	आगलन	बेटा	बीटे
कराय	करोला	देल	दीनी
उतारल	उतारीन	केर	की
जइतहु	जातीउ	देल	दीन्ह दीहल
पवितहु	पीतीउ	जबलगि	जबलों
लागल	लागीन	पकलाइल	पकलाइल
आएल	आयो	कइसे	कसा
चढ़लहु	चढ़लुं	गोहराएब	गोहराइल
देखलहुँ	देखलुँ	डोलाएब	डोलाइब
चलए	चले	नुकओले	नुकइले
पिअओले	पिअउले	तोजे	तुम
		मजे	मैं

लिपिदोषजन्य पाठान्तरक आयाम सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे अत्यन्त व्यापक अछि। एहि मे किछु तँ लिपिकारक अल्पज्ञता कें प्रदर्शित करैछ, जाहि सँ शब्दक स्वरूप कतोक पाठ मे विकृत देखि पड़ैछ । शुद्ध मैथिली पाठ तथा ओकर विकृत पाठान्तरक किछु उदाहरण नीचाँ प्रस्तुत कयल जाइछ–

शुद्धपाठ	पाठाशुद्धि	शुद्धपाठ	पाठाशुद्धि
कुम्हलाए	कोहमीलाए	जरत	ज्रत
मनोरथ	मानोर्थ	उपर	उप्र
मृदु	मीर्दु	द्वादश	द्वीदस
तप	तप	लाबए	ल्यावे
दरसन	द्रशन	ढढाय	चढ़ाय
दृष्टि	द्रिष्टी	तत्व	तत
मयाओन	म्याबोन	दलइचा	गलइचा
परतेजल	प्रतेजल	व्यवहार	व्योहार
भरम	भर्म	परगास	प्रगास
अच्छर	अक्षर	प्रीत	पीत
भमर	भ्रमर	धुनि	धुन्नी
वृक्ष	बीर्छ	नहाब	न्हाव
परमारथ	प्रमार्थ	सत्यलोक	सेतलोक
परदेशिनी	प्रदेसीनी	वृन्दावन	बीन्दाराबन
ब्रह्म	बर्ह्म	घरबा	घ्रबा
समर	सम्र	परमपद	प्रेमपद
तिरपित	त्रीपित	करिलितहुँ	करितेलहुँ

	धीर्त	बहनार	[illegible]
घृन	सेज्जा	फरकिया	फरकिया
शयया	बाक्षिआ	करू आरि	कीरवार
वाक्षिया		तापर	ताप्र

एहि प्रकारक पाठदोष वस्तुतः लिपिकारक भाषिक अक्षमताक कारणें उत्पन्न भेल होएत से अनुमेय अछि।

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे लिपिदोषजन्य पाठान्तर मे सर्वाधिक प्रशस्त थिक ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगक भिन्नता। एकटा संग्रह मे जे पद ह्रस्व भेटैछ, सैह दोसर मे दीर्घ देखि पड़ैछ। मिथिला पाठ मे जतय ह्रस्व प्रयोगक बाहुल्य अछि ततहि मिथिलेतर पाठ मे दीर्घ प्रयोगक वर्चस्विता देखि पड़ैछ। कतोकठाम दीर्घ प्रयोगक कारणें छन्दत्रुटि सेहो उत्पन्न भए गेल अछि। उदाहरणार्थ ई पद द्रष्टव्य अछि–

आजु सुदिन शुभ शुभ घड़ी जे पिआ दरशन देल।
मेटल सकल करम भरम आतम परिचय भेल।

एहि पदक पाठान्तर मे सुदिनक स्थान पर सुदीन पाठ सेहो भेटैत अछि, मुदा एहि पाठ कें समीचीन नहि कहल जा सकैछ किएक तँ एहि सँ छन्द टुटैत अछि।

ह्रस्व प्रयोग रहला पर पदक प्रथम चरण मे ११ मात्रा अछि दोसर चरण मे १२ मात्रा अछि। तेसर चरण मे ११ मात्रा तथा चारिम चरण मे १२ मात्रा अछि। मुदा सुदिन मे दीर्घ प्रयोग भेला सँ प्रथम चरण मे १२ मात्रा भए जाइछ जाहि सँ एहि गेयपदक लयबद्धता समाप्त होइछ। तें ह्रस्व प्रयोग कें समीचीन कहल जा सकैछ।

एहि तरहें **कबीर भजनावलीक भाग १** मे पद द्रष्टव्य अछि–

मिलि चलु सखिया दिवस भेल रतिया चित भेल जगसे उदास। टेक
अगम नगरिया बहु ओहिपार गुरु के दुआर।

आदि **सन्देशा सन्त कबीर** मे एहि पदक स्वरूप एहि तरहें अछि–

मिली चलु सखीआ दिवस भेल रतीया।
चीत भेल जगसे ऊदास।
पाँच भैआ के एक बहिनो दुलहिनि नीसदीन फिरऐ उदास।।[७]

एहि पद मे प्रथम चरण मे २१ मात्रा, दोसर चरण मे १५ मात्रा, तेसर चरण मे १९ मात्रा ओ चारिम चरण मे १४ मात्रा अछि। एहि तरहें एहि मे छन्ददोष उपस्थित अछि। जर्नल आफ दि युनिर्भसिटी ऑफ बिहार नवम्बर १९५६, (डॉ० सु० झा,) पृ०–५ मे एहि पदक स्वरूप एहि तरहें अछि–

मिलि चलु सखिआ दिवस भेल रतिआ चित भेल जगसञे उदास।
पाँच भइआ के एक बहिनि दुलहिन निसदीन फिरए ऊदास।।

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगक पाठान्तर बहुधा देखि पड़ैछ आ तकरक अनुरोधें अनेकठाम शब्दक किछु लिपिकार ह्रस्व प्रयोग कएलनि अछि तँ किछु दीर्घ। मुदा समीचीन प्रयोग मात्राक आधारे पर सकल जा सकैछ। ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगक किछु पाठान्तर उदाहरणार्थ प्रस्तुत अछि–

ह्रस्व प्रयोग	दीर्घ प्रयोग	ह्रस्व प्रयोग	दीर्घ प्रयोग
वटिआ	वटीआ	पछिनी	पीछनी
छाड़हु	छाड़हू	काशि	काशी
जिअरा	जीअरा	सिधाय	सीधाय
जितहुँ	जीतहू	परिजना	परीजना
देसिआ	देसीआ	चित	चीत
		जगाय	जगाई
त्यागहु	त्यागहू	पिआ	पीआ
विचार	वीचार	करिलेहु	करीलेहु
ताहि	ताही	रिमिझिमि	रीमीझीमी
बिचहि	बीचही	धानिक	धानीक
बसथि	बसथी	बिवाह	बीवाह
धनि	धनी	पुरूष	पूरूष
निज	नीज	अकुलाए	अकुलाई
बिचारि	बिचारी	दुआरिया	दुअरीआ
जोड़ि	जोड़ी	सुरति	सुरती
जाए	जाई	बटोहिआ	बटोहीआ
बटिया	बट्टीया	सखिया	सखीया
मिरगा	मीरगा	गैंठि	गेठी
अटकि	अटकी	हरि	हरी
उतरहु	ऊतरहु	एमरी	एमरी
बेनिआँ	बेनीआँ	बेरि	बेरी
इजोर	ईजोर	पखारि	पखारी
नहि	नहीं	जोरि	जोरी

ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगक ई अन्तर यद्यपि सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे अर्थान्तर उत्पन्न नहि करैछ, तथापि एकर गेय स्वरूपक हेतु महत्वपूर्ण कहल जा सकैछ आ ओएह पाठ ग्रहणीय अछि जे छन्दबद्धताक हेतु मान्य हो। एहि पदावलीक मिथिला पाठ मे

बहुधा ह्रस्व प्रयोगक बाहुल्य अछि, जे छन्दोक समीचीनताक निकट देखि पड़ैछ, मुदा कतहु कतहु दीर्घ प्रयोग सेहो छन्दक अनुरोधे आवश्यक प्रतीत होइछ ।

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे किछु पाठान्तर लिपिकार ओ गायकक अनुरोध मेँ भेल अछि जकरा भाषिक अशुद्धि तँ नहि कहल जा सकैछ, मुदा ई शब्दलेखनक दृष्टिये विविधता उत्पन्न करैछ, यथा–

अव-अओ-औक पाठान्तर

सोहावन	सोहाओन	भयावन	भयाओन
मवजल	मौजल	गावल	गाओल
भवसागर	भैसागर	देखावल	देखाओल
आवन	आओन	कटावल	कटाओल
गओना	गौना	लीपावल	लीपाओल
अओना	औना	अओन	औन
पावल	पाओल	पओन	पौन
छोरावल	छोराओल	फनावल	फनाओल
अपनओलक	अपनौलक	बौरावल	बौराओल
विछावल	विछाओल	सुनावल	सुनाओल
कवन	कओन	पठावल	पठाओल
		उड़ावत	उड़ाओत

ए-अ-य-इ क पाठान्तर / **ए-अ-य-ई पाठान्तर**

जिअरा	जियरा	कएलहु	कयलहुं
काआघर	कायाघर	बोलए	बोलय
बतिआ	बतिया	चुमाएब	चुमायब
देसिआ	देसिया	जाय	जाए, जाइ
पीआ	पीया	खएल	खयल
आएल	आयल	अएलौं	अयलौं
मए	मय	भैआ	भैया
नगरिआ	नगरिया	पुराएल	पुरायल
अलसाए	अलसाय	मगाएल	मगायल
निन्दिआ	निन्दिया	अँधिआरी	अँधियारी
बेनिया	बेनिआँ	अकुलाए	अकुलाय
निआर	नियार	आए	आय
जाए	जाय	पहिराए	पहिराय
डोलाए	डोलाय	पिआरी	पियारी
		उजिआर	उजियार

रिनिआँ	रिनियाँ	गछिआ	गछिया
बरिअतिआ	बरिअतिया	कठोतिआ	कठोतिया
विआह	वियाह	मचिआ	मचिया
छिरिआय	छिरिआए	कराए	कराय
धराए	धराय	अघाए	अघाय
उतरए	उतरय	बेनिआँ	बेनियाँ
मलिआ	मलिया	दुलहिनिआँ	दुलहिनियाँ
ओहरिआ	ओहरिया	गमाएब	गमायब
अटरिआ	अटरिया	छतिआ	छतिया
अगिआ	अगिआ	लोभए	लोभाए
पेटरिआ	पेटरिया	बरिअतिया	बरियतिया
हटिआ	हटिया	लहरिआ	लहरिया
केवरिआ	केवरिया		

ए-अय-ऐ आए-आयक पाठान्तर

भुलाए	भुलाय	विराजए	विराजय
भरमाए	भरमाय	कएल	कयल, कैल
सिधाए	सिधाय	बएस	बयस
विलासए	विलसै	छपाए	छपाय
कहए	कहय	सोहाए	सोहाय
आएब	आयब	बहाए	बहाय

य-ज क पाठान्तर

यमपुर	जमपुर

ष- ख क पाठान्तर

आशिष	आशीख
विषय	विखय

र-ड़ क पाठान्तर

झोरत	झोड़त
पहार	पहाड़
जुरबा	जुड़बा
जोरिया	जोड़िआ
केवार	केवाड़
छोड़ल	छोरल

अ- ऐ क पाठान्तर

मएदान	मैदान

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक पाठालोचन सँ स्पष्ट अछि जे मिथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त पदावली सभक विभिन्न संग्रह मे संहो पाठभेद अछि तथा मिथिलाक विभिन्न स्रोत सँ प्राप्त पदावली मे संहो पाठान्तर अछि। पाठलोचनक दृष्टिजे मिथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त पदावली ओ ओकर मिथिला पाठ तथा मिथिला स्रोत सँ प्राप्त पदावलीक विभिन्न पाठक तुलानात्मक अध्ययन सँ ई स्पष्ट होइछ जे मिथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त पदावली ओ ओकर मिथिला पाठ मे भाषिक संक्रमणक बाहुल्य देखि पड़ैछ, जखन कि मिथिलाक विभिन्न स्रोत सँ प्राप्त पदावलीक पाटान्तरक आयाम लिपिदोषे धरि सीमित अछि।

मिथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त पदावली ओ ओकर मिथिला पाठ–

मिथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त पदावली ओ ओकर मिथिला पाठ मे भाषिक संक्रमणक स्थिति देखबाक हेतु ई पद द्रष्टव्य अछि–

चलु सखि चलु सखि प्रेम विलास ।
झुम्मरि खेलहु सतगुरु केर पास ।।[२८]

एकर ई मिथिला पाठ थिक जे मिथिलेतर ग्रन्थ मे एहि रूपक भेटैछ–

चलु चलु सखि प्रेम विलास
झुमर खेलो सतगुरु के पास ।[२९]

एहि तरहें 'खेलहु' क स्थान पर 'खेलो' आ 'केर' क स्थान पर 'के' क प्रयोग एहि पर खड़ीबोलीक प्रभाव कें स्पष्ट करैछ।

कबीर शब्दावली मे एकटा झुम्मरि एहि रूपक अछि–

सुमित सखी तुम करहु सिंगार । हम आये तोरे लेने हार ।।
तीनो वस्तर श्वेत सोहाय । चित चुरिया हाथ पहिराय ।।[३०]

मिथिला स्रोत मे ई पद एहि रूपक अछि–

सुमति सखी तोजे करहु सिंगार । हमे अइलिहुँतोहि लेबए हार ।
तीनहु वस्तर श्वेत सोहए । चित चुरिआ हाथ पहिराय ।।

एहि तरहें एहि पदक मिथिलेतर पाठ मे तोजेक स्थान पर 'तुम', 'लेबए' क्रियापदक स्थान पर 'लेने' 'हमे' कर्त्तारूपक स्थान पर 'हम' 'तीनहु' विशेषणक स्थान पर 'तीनो' क प्रयोग एकर भाषिक संक्रमणक द्योतक थिक।

कबीर साहेब की शब्दावली भाग १ ई पद द्रष्टव्य–

मानुष जनम सुधारो साधो, धोखे काहे बिगाड़ो हो ।
ऐसा समय बहुर नहि पैहा, जनम जुआमति हारो हो ।।

गुड़ागुड़ी खियाल जिन भूलो, मूल तन लौ लाओ हो ।
जब लग घट से परिचे नाही, तब लग कछु नहि पाओ हो।

एहि पदक मिथिला पाठ एहि रूपक अछि–

मानुप जनम सुधारहु साधो, धोखे काहे बिगाड़हु हो ।
अइसन समय बहुरि नहि पइहह जनम जुआमति हारहु हो ।
गुड़ागुड़ी खेआल जहि भूलए मूल तत्व लओ लाबहु हो ।
जब लागि घट सओ परिचय नाही तब लगि कछु नहि पाबहु हो।।

एहि तरहें एहि पद मे 'सुधारहुक' स्थान पर 'सुधारो' 'बिगाड़हुक' स्थान पर 'बिगाड़ो' अइसनक स्थान पर 'ऐसा' पइहहक स्थान पर 'पैहो' 'हारहुक' स्थान पर 'हारो' 'परिचय' क स्थान पर 'परिचे' आदि भाषिक संक्रमणकें सूचित करैछ।

कबीर साहेब की शब्दावली भाग १ मे एकटा शब्द एहि रूपक अछि–

मोर जियरा बड़ा अंदेसवा, मुसाफिर जैहो कौनी ओर।
मोह का सहर कहर नर नारी, दुइ फाटक घनघोर ।।
कुमती नायक फाटक रोके, परिहै कठिन झिंझोर ।
संसय नदी अगाड़ी बहती, विषम धार जल जोर ।।
क्या मनुवाँ तुम गाफिल सोवौ, पचीसो चोर ।
निसिदिन प्रीति करो साहेब से, नाहिन कठिन कठोर।।
काम दिवान क्रोध है राजा, बसै पचीसो चोर ।
सत पुरुष इक बसै पछिम दिसि, तासों करो निहोर ।
आबै दरद राह तोहि लाबै, तब पैहौ निज ओर ।
उलटि पछिलो पैड़ा पकड़ो, पसरा मना बटोर ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, तब पैहो निज ठौर ।।[३२]

आदि संदेशा सन्त कबीर मे एकर मिथिला पाठ मे 'मोर' क स्थान पर 'मोरे' 'जैहो' क स्थान पर 'जएबह', कौनीक स्थान पर 'कओने', 'का' क स्थान पर 'केर' 'तुम' क स्थान पर तौजे 'बहती' क स्थान पर 'बहै' 'क्या' क स्थान पर 'का' सोवौ' क स्थान पर 'सोबहुं' से क स्थान पर 'सओ', है क स्थान 'हए' बसै' क स्थान पर 'बसए' 'पैहो' क स्थान पर 'पएबह' पैड़ा' क स्थान पर 'पएर' कहै' क स्थान पर 'कहए' 'सुनो' क स्थान पर 'सुनहु', पाठान्तर भेटैछ ।[३३]

एहि तरहें एहि पदक मिथिलेतर पाठ हिन्दी भाषाक प्रभाव सँ संक्रमित देखि पड़ैछ।

सन्त कबीरक एकगोट शब्दक स्वरूप अछि–

सतगुरु चरण भजस मन मूरख, की जड़ जन्म गमावस रे । टेक।
कर परतीत जपस उर अन्तर, निसि दिन ध्यान लगावस रे ।
द्वादस कोस बसत तेरा साहेब, तहाँ सुरत ठहरावस रे ।
त्रिकुटी नदिया अगम पंथ जँह,बिना मेह झर लगावस रे ।
दामिनि दमकत अमृत बरसत अजब रंग दरसावस रे ।
इंगला पिंगला सुखमन से धस, नभ मँदिर उठि धावस रे ।३४

मिथिलाक कबीरपन्थीक बीच एकर स्वरूप यथावत् भेटैछ केवल क्रियापदक रूप मे गमावस, जपस, लगावस, ठहरावस, दरसावस, धावसक, स्थान पर गमाबह, जपह, लगावह, ठहरावह, दरसावह, धावह भेटैत अछि, जे स्पष्ट करैछ, जे ई शब्द भोजपुरी धातक प्रभावात् क्रियापद मे अन्तर उपस्थित करैछ ।

कबीर शब्दावली मे एकटा जतसार शीर्षक पदक स्वरूप अछि–

राम नाम के इहे जतसरिया कीया हे सजनी
पिसिलेहु बाट के सामर रे की ।।१।।
तन करु जतबा मन करु हाथर कीया हे सजनी ।।२।।
चित करु गेहुमाँ प्रेम की दउरिया कीया हे सजनी
समुझि समुझि झिकबा नाबहु रे की ।।३।।
अररि दररि जो पीसले गे सजनी ।। की हे सजनी ।
हँबहु पिया की सोहागीन रे की ।।४ ।।
मन भर पीसलेहु सहज उठाय, लेहु । कीया हे सजनी।
गुरु के शब्द करु चालन रे की ।।५।।
दास कबीर यह गावल लगनियाँ । कीया हे सजनी ।
गुरु के चरण चित लाबहु रे की ।।३५

आदि संदेशा संत कबीर मे एहि पद मे 'इहेक' हेतु 'ऐहे', 'कीया हे सजनी'क स्थान पर 'की आ हे सजनी', 'सामरक' स्थान पर 'साम्हर', 'पीसिक' स्थान पर 'पीसी', 'अररि-दररी' दउरियाके स्थान पर 'दऊरिया', 'समुझिक' स्थान पर 'समुझी', 'झिकबाक स्थान पर 'झीकबा', 'यह' के स्थान पर 'एहो' आदि पाठभेद भेटैत अछि ।३६ एहि तरहें एहि पाठान्तर मे लिपिकारक दीर्घत्त्व दिस बेस झुकाव बुझना जाइछ तथापि अर्थ ओ भाव तथा भाषाक विकृति अलपे बुझना जाइछ । एहि पदक तेसर पाँती मे हाथर के स्थान पर किलबा अछि आ तकर बादक पद थिक-गुरु के शबदवा हाथर रेकी' जकर कबीर शब्दावली मे अभाव अछि ।

एहि तरहें मिथिलेतर स्रोत सँ प्राप्त सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ ओकर मिथिला पाठक विवेचन कएला सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलेतर स्रोत मे बहुधा क्रियापद संक्रमित देखि पड़ैछ, जाहि सँ पदक भाषिक स्वरूप मे अन्तर देखि पड़ैछ । ई अन्तर खासकए एहि पदावली पर भोजपुरी ओ हिन्दी क्षेत्रक धातक कारणें उपस्थित भेल अछि, तथापि किञ्चित परिवर्त्तनक बादो मूलपदक स्वरूप सँ ई पदावलीसभ ततेक विस्थापित नहि भय सकल अछि जे एकर भाषे कैं भिन्न कहल जा सकय ।

विभिन्न स्रोत सँ प्राप्त मिथिलापाठ मे पाठभेद

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक मिथिला पाठक विभिन्न स्रोत मे किञ्चित मुद्रित प्रति सभ थिक अन्यथा अधिकांश हस्तलिखिते प्रति थिक, जाहि मे **आदि संदेशा सन्त कबीर**, डा० सुभद्र झाक लग प्राप्त हस्तलिपि ओ विभिन्न कबीरपन्थीक डायरी, पन्ना आदि सँ उतारल विकीर्ण पदावली सभ थिक । कबीरपन्थी समुदायक विभिन्न नारी ओ पुरुष धाताक लग श्रुतपरम्परा सँ प्राप्त पदावली सेहो एहि पदावलीक विशिष्ट स्रोत थिक । एकेटा पद विभिन्न मुद्रित ओ हस्तलिखित प्रति मे सेहो भेटैछ आ विभिन्न धातालग सेहो संरक्षित अछि । मुद्रा स्रोतभिन्नताक कारणें पदावलीक स्वरूप मे सेहो किञ्चित अन्तर बूझि पड़ैछ । ई पाठान्तर बेसीकाल लिपिकारक दोष सँ उत्पन्न बुझना जाइछ आ पदावलीक मौलिक स्वरूप विभिन्न स्रोत मे समाने बुझना जाइछ । उदाहरणक हेतु पदावली ओ ओकर पाठान्तर द्रष्टव्य अछि–

समदाउनि ३७

सुन्दर तन देखि मत भुलू सखिआ ।।
एहो तन संगहु न जाए ।।
एहो तन होए माटीके बरतनमा ।।
टोनमा लगइते फूटिजाए ।।
एहो तन होए कागज के पुड़िया ।।
बुन्द पड़ैत गलि जाए ।।
एहो तन होए रामा सुखली लकड़िया।।
अगिआ लगइते जरि जाए ।
एहो तन होए रामा धूओं के घरबा
पवन लगइते उड़ि जाए ।।
साहेब कबीर एहो गाओल समदौनिआ।।
सन्त जन लिऔ न विचारि ।
एमकीगवन बहुरिओ न अओना
फेरु न मनुष्य अवतार ।



समदाउनि [३८]

घूमत फिरत अइली एंसी नगरिआ
चित जनु करहु उदास ।
जब छल धनबित नित आबए पहुनमा
दांस मित्र छेकल दुआर ।
सठि गेल धन बित रूसि गेल पहुनमा
दांस मित्र छोड़ल दुआर ।
बारह बरिस सूगा सेमर सेओल
फूल देखि रहल लोभाए
मारत चोंच रूई फहराएल
सुगना चलल पछताए ।
साहेब कबीर सुगना पछताएल
सिमर सेओल एको फल न भेल

समदाउनि [३९]

नान्हिटा सत्रे सुगना सिमल एक सेओल
आजु सेमल भएल जवान ।
फूल देखि सुगना हर्षित भेल ।
फल देखि जिआ भेल हुलास ।
मारल लोल रूइआ गेल उड़ि
सुगना चलल पछताए ।
साहेब कबीर एहो गाओल समदौनिआँ
सन्तो मिलि लिऔ ने विचारि ।
बहुत जतन सत्रे सिमर के सेओल।
सिमल सेबिके किछुओ ने फल ॥

वसन्त [४०]

तंजु तंजु भँवरा कमल केर आस ।
तोर विनु भँवरी परल उदास ॥°॥
बारी बयस भँवर गेल विदेश ॥°॥
हम भँवरी दिल भेल अन्देश ॥°॥
चारि दिनन लए सब रंग फूल ।
ताहि देखि भँवरा रहि गेल गूल ॥°॥
जब वन सप्तो उगल भान ।
ताहि मे भँवरा मिलल विश्राम ॥°॥

चारूभर भैआ लागल आगि ।
कहहि कबीर भँवर कहाँ जेब भागि ॥°॥

निगुर्ण [४१]

चढ़ु मन गगन अटरिया हो सुखसागर घरिआ
साधु सन्त मिलि धएल डगरिया ।
आठ पहर उठए प्रेम के लहरिआ ।
रएनि दिवस नहि राति अन्हरिआ ।
निसिदिन उगए प्रेम के इजोरिआ ।
माया मोह करत नोकरिया ।
बिना हुकुम नहि करए चोरिआ ।
जिन कायागढ़ मे रचलन्हि घमउरिया ।
तिनको भरल छैन्ह प्रेम के चंगेरिआ ।
धर्मदास एहो करय अरजिआ ।
साहेब कबीर तोड़लन्हि भरम केबड़िआ ॥

समदाउनि [४२]

एहि परदेसिआ जनु जोड़ू पिरितिया
बिछुड़त बिलम्ब नहि होए ।
बिछुड़ल से बिछुड़ल हे सखिआ ।
बिछुड़ैत केकरो न कोए ॥
एक तत्रो बिछुड़ल डारि सँ पतबा
फेरो न डारि मे समाए
दोसरे बिछुड़ल देहिआ सत्रे हंसा
फेरू न देहि मे समाए ।
तिसरे बिछुड़ले सर्प सत्रे मणि
मणि बिनु जान गमाए ।
चारिम बिछुड़ल हंस सत्रे चकेबा
सारि राति जीवन गमाए ॥
पाचमे बिछुड़ल गुरु सत्रे चेलबा
बान्धले नरकबा जाए ।
साहेब कबीर गाओल समदाओनि
सन्त जन लेहु न विचारि ॥

समदाउनि [३८]

घूमत फिरत अइली एंसी नगरिआ
चित जनु करहु उदास ।
जब छल धनबित नित आबए पहुनमा
दांस मित्र छेकल दुआर ।
सठि गेल धन बित रूसि गेल पहुनमा
टांम मित्र छांड़ल दुआर ।
बारह बरिस सूगा सेमर सेओल
फूल देखि रहल लोभाए
मारत चोंच रूई फहराएल
सुगना चलल पछताए ।
साहेब कबीर सुगना पछताएल
सिमर संओल एको फल न भेल

समदाउनि [३९]

नान्हिटा सञे सुगना सिमल एक सेओल
आजु सेमल भएल जवान ।
फूल देखि सुगना हर्षित भेल ।
फल देखि जिआ भेल हुलास ।
मारल लोल रूइआ गेल उड़ि
सुगना चलल पछताए ।
साहेब कबीर एहो गाओल समदौनिआँ
सन्तो मिलि लिऔ ने विचारि ।
बहुत जतन सञे सिमर के सेओल।
सिमल सेबिके किछुओ ने फल ।।

वसन्त [४०]

तंजु तंजु भँवरा कमल केर आस ।
तोर विनु भँवरी परल उदास ।।०।।
बारी बयस भँवर गेल विदेश ।।०।।
हम भँवरी दिल भेल अन्देश ।।०।।
चारि दिनन लए सब रंग फूल ।
ताहि देखि भँवरा रहि गेल गूल ।।०।।
जब वन सप्तो उगल भान ।
ताहि मे भँवरा मिलल विश्राम ।।०।।

चारूभर भैआ लागल आगि ।
कहहि कबीर भँवर कहाँ जेब भागि ।।०।।

निगुर्ण [४१]

चढ़ मन गगन अटरिया हो सुखसागर घरिआ
साधु सन्त मिलि धएल डगरिया ।
आठ पहर उठए प्रेम के लहरिआ ।
रएनि दिवस नहि राति अन्हरिआ ।
निसिदिन उगए प्रेम के इजोरिआ ।
माया मोह करत नोकरिया ।
बिना हुकुम नहि करए चोरिआ ।
जिन कायागढ़ मे रचलन्हि घमउरिया ।
तिनको भरल छैन्ह प्रेम के चंगेरिआ ।
धर्मदास एहो करय अरजिआ ।
साहेब कबीर तांड़लन्हि भरम केबड़िआ ।।

समदाउनि [४२]

एहि परदेसिआ जनु जोड़ू पिरितिया
बिछुड़त बिलम्ब नहि होए ।
बिछुड़ल से बिछुड़ल हे सखिआ ।
बिछुड़ैत केकरो न कोए ।।
एक तञो बिछुड़ल डारि सँ पतबा
फेरो न डारि मे समाए
दोसरे बिछुड़ल देहिआ सञे हंसा
फेरू न देहि मे समाए ।
तिसरे बिछुड़ले सर्प सञे मणि
मणि बिनु जान गमाऐ ।
चारिम बिछुड़ल हंस सञे चकेबा
सारि राति जीवन गमाए ।।
पाचमे बिछुड़ल गुरु सञे चेलबा
बान्धले नरकबा जाए ।
साहेब कबीर गाओल समदाओनि
सन्त जन लेहु न विचारि ।।

सोहर

फूलन सेजिआ विछाओल
पिआ संग सुतलहु हे ।
आबि गेल बैरिनि निन्द
पिआ उठि कहाँ गेलन हे ॥
बहिँआ पसारि पिआ के खोजलहुँ ।
पिया नहि मिलल हे । ललना ।
रएन सोचाइत भेल भोर
धीरजकोना बान्धव हे ॥
रोइ रोइ नएना भेल झांझर
यमुनमा मे बढ़िआ आएल हे ॥
केकरी ओहरिया हम लागब
दिवस गमाएब हे ॥
अलप वयस दुख भारी
विरह उर सालए हे । ललना ।
दिन दुरदिन भेल मोरा
पिअबा बिछुड़ि गेल हे ॥
जब जब सुधि पिआ केर आबए
छतिआ कड़कि उठाए हे ललना ।
धर्मदास के विश्वास
कबीर गुरु पावल हे ॥

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक पाठालोचन सँ ई स्पष्ट होइछ जे एहि पदावलीक पाठ मे बहुधा ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगजन्य पाठान्तर अछि, जकर कारण लिपिकार ओ श्रोताक भिन्नता ओ स्तरीयता मे रहल अछि । लोककंठ सँ प्राप्त पद मे बहुधा कोनो पद मे कम ओ कोनो मे बेसी पद रहबाक कारणें सेहो पाठान्तर देखि पड़ैछ । लिपिकार आ धाताक भाषाक प्रभावक कारणें सेहो अनेक शब्दावलीक स्वरूप विकृत होइत चल गेल अछि। जएँ लऽ कऽ सन्त कबीरक भाषिक क्षेत्र भारतवर्षक विराट परिसर द्वारा परिगृहीत छल, तँ एकर पाठ पर विभिन्न भाषाक प्रभाव स्वाभाविक अछि । एकर संकलन ओ मुद्रणक क्षेत्र मिथिला सँ बाहर रहबाक कारणें विशुद्धो मैथिली पदावली प्रभावित ओ संक्रमित भेल अछि । मिथिला सँ बाहर ओ मिथिलाक आभ्यन्तरिक स्रोत सँ प्राप्त पदावलीक पाठ मे मिथिलाक पाठ बेसीकाल समुचित ओ समीचीन देखि पड़ैछ ।

सन्दर्भ-निर्देश

१. सोनेलाल दास-हस्तलिखित पाण्डुलिपि **आदि सन्देशा सन्त कबीर**, गुरु महात्मा साहेब मौजे खबासपुर जिला-आरा, सन् १९२७ ई०, मंगल ३७, पृ०–७८ ।

२. सुक्खु दास, संग्रहकर्त्ता-**सदगुरु कबीर वचन संग्रह**, सतगुरु कबीर ज्ञानाश्रम, राजगीर मंगल १३, पृ०–१८ ।

३. सोनेलाल दास-हस्तलिखित पाण्डुलिपि-**आदि सन्देशा सन्त कबीर**, गुरु महात्मा साहेब मौजे खबासपुर, जिला-आरा, सन् १९२७ ई० मंगल–३४, पृ०–७६ ।

४. सुक्खु दास, संग्रहकर्त्ता, **सदगुरु कबीर वचन संग्रह**, सदगुरु कबीर ज्ञानाश्रम, राजगीर मंगल–५ पृ०–२५ ।

५. पं० भगवती प्रसाद मिश्र, संग्रहकर्त्ता, **कबीर भजनमाला सागर** भोलानाथ पुस्तकालय, १३५, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता–७ पृ०–६ ।

६. अयोध्या सिंह उपाध्याय'' हरिओध-सम्पादक **कबीर वचनावली**, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत २००८ पद–२१७, पृ०–२४९ ।

७. **कबीर साहेब की शब्दावली** भाग १ बेलवेडियर प्रिंटिंग १ वर्क्स, इलाहाबाद, १९२२ ई० शब्द, ५, पृ–२३ ।

८. पं० भगवती प्रसाद मिश्र, संग्रहकर्त्ता, **कबीर भजनमाला सागर**, भोलानाथ पुस्तकालय, १३५, महात्मा गाँधी रोड कलकत्ता–७ राग जतसार, पृ०–१० ।

९. सोनेलाल दास–हस्तलिखित पाण्डुलिपि–**आदि सन्देशा सन्त कबीर**, गुरु महात्मा साहेब मोजे–खवासपुर, जिला–आरा, सन् १९२७ ई० वचन–६, सोहर–१११, पृ०–१२१।

१०. गंगाशरण शास्त्री-सम्पादक, **कबीर शब्दावली**, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी, सन् १९७६ ई० जतसारी–६, पृ०–९४ ।

११. जीवछ दास भजनाहा–संग्रहकर्त्ता-**कबीर भजनमाला**, मुक्त विचार संगठन सीतापट्टी महिन्दवार जिला-मधुबनी भजन जतसार–२, पृ०–१३ । संवत–२०३८ ।

१२. सोनेलाल दास-हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार, **आदि सन्देशा सन्त कबीर**, गुरु महात्मा साहेब, मौजे-खवासपुर जिला–आरा, १९२७ ई० १७, लगनी १३४ पृ० ३६१ ।

१३. तत्रैव

१४. सुक्खु दास-संग्रहकर्त्ता-**सद्गुरु कबीर वचन संग्रह** सदगुरु कबीर, ज्ञानाश्रम, राजगीर जतसारी–१ पृ०–११३ ।

१५. जीवछदास भजनाहा संग्रहकर्त्ता-**कबीर भजनमाला**, मुक्त विचार संगठन सीतापट्टी, महिन्वार, जिला-मधुबनी संवत्-२०३८, जतसार, पृ०-१७ ।

१६. सोनेलाल दास, हस्तलिखित पाण्लिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर** गुरु महात्मा साहेब, मौजे खबासपुर, जिला-आरा, १९२७ ई०, वचन-१७, लगनी-१३०, पृ० ३६८।

१७. प० भगवती प्रसाद मिश्र-संग्रहकर्त्ता-**कबीर भजनमाला सागर** भोलानाथ पुस्तकालय, १३५, महात्मागाँधी गेड, कलकना-७ गग जतसार, पृ०-९ ।

१८. सोनेलाल लालदास-हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर** गुरु महात्मा साहेब, मौजे खबासपुर जिला-आरा, १९२७ ई०, मंगल-३७, पृ०-७८ ।

१९. सुक्खु दास-संग्रहकर्त्ता-**सद्गुरु कबीर वचन संग्रह,** सद्गुरु कबीर ज्ञानाश्रम, राजगीर मंगल-१३, पृ०-१८ ।

२०. **धनी धर्मदास की शब्दावली**-भाग-२ वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स इलाहाबाद सन् १९८० शब्द १२, पृ०-४२ ।

२१. सोनेलाल दास-हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर,** गुरु महात्मा साहेब, मौजे-खबासपुर, जिला-आरा, १९२७ ई०, वचन-१७, सोहर-६३, पृ०-३४०।

२२. बौआ साहब-संकलक-**भजनावली** भाग-१, कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवारा जिला-दरभंगा, १९८० ई०, मंगल-२, पृ०-२९ । १९८० ई० ।

२३. डा० सुभद्र झाक हस्तलेख

२४. सोनेलाल दास, हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर,** गुरु महात्मा साहेब, मौज-खवासपुर, जिला-आरा, १९२७ ई०, वचन-१७, सोहर-६३, पृ०-३४०।

२५. **धनी धर्मदास की शब्दावली** भाग-२, १९८० ई०,वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, शब्द-१२, पृ०-४२ ।

२६. सोनेलालदास, हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर,** गुरु महात्मा साहेब, मोंजे-खवासपुर, जिला आरा, १९२७ ई०, वचन-मंगल-५६, पृ०-९२ ।

२७. बौआ साहब सं० भजनावाली भाग-१ कबीर विचारधारा संघ कबीर आश्रम भरवारा जिला-दरभंगा, १९८० ई० समदाउन पृ०-२८ ।

२८. सोनेलालदास, हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर,** गुरु महात्मा साहेब, मौजे-खबासपुर, जिला-आरा सन् १९२७ ई० झुम्मरि-१२३, पृ०-१२६ ।

२९. गंगाशरण शास्त्री-सम्पादक-**कबीर शब्दावली कबीरवाणी** प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी, सन् १९७६ ई० झुम्मरि-२, पृ०-२७ ।

३०. तत्रैव-झुम्मरि-४, पृ०-२७ ।

३१. **कबीर साहेब की शब्दावली,** भाग १ वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स इलाहाबाद, शब्द ३० पृ०-४० ।

३२. तत्रैव, शब्द-६३, पृ०-५२ ।

३३. सोनेलाल दास, हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर,** गुरु महात्मा साहेब, मौजे खबासपुर जिला-आरा, सन् १९२७ ई० वचन-१७, शब्द-११, पृ०-३११।

३४. **कबीर साहेब की शब्दावली** भाग-१ वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, सतगुरु और शब्द महिमा, शब्द-२, पृ०-२ ।

३५. गंगाशरण शास्त्री, सम्पादक-**कबीर शब्दावली,** कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी, १९७६ ई० जतसार-३, पृ०-९४ ।

३६. सोनेलाल दास, हातलिखित पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर,** गुरु महात्मा साहेब, मोजे खबासपुर जिला-आरा, सन् १९२७ ई०, वचन-१७ लगनी-१२८, पृ०-३६७ ।

३७. जीवछदास भजनाहा-संग्रहकर्त्ता-**कबीर भजनमाला,** मुक्त विचार संगठन, सीतापट्टी महिन्दवार, जिला-मधुबनी समदाउनि प्रकरण-१, पृ०६१ ।

३८. रामरती देवी सँ प्राप्त समदाउनि ।

३९. जीवछ दास भजनाहा-संग्रहकर्त्ता-**कबीर भजनमाला,** मुक्त विचार संगठन, सीतापटी महिन्दवार, जिला-मधुबनी, समदाउनि-६ पृ०-६५ ।

४०. तत्रैव वसन्त-३, पृ०-५२ ।

४१. बौआ साहब-संकलक-**भजनावली** भाग-१, कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम, भरवारा, जिला-दरभंगा, १९८० ई०, निर्गुण अर्जी-२४ ।

४२. रामदेव दास सँ प्राप्त समदाउनि ।

४३. जीवछदास भजनाहा, संग्रहकर्त्ता-**कबीर भजनमाला,** मुक्त विचार संगठन, सीतापटी महिन्दवार जिला-मधुबनी, सोहर-६, पृ०-६० ।

पंचम अध्याय

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषातात्त्विक विवेचन

सन्त कबीरक काव्यभाषा मे एकरूपता नहि देखल जाइछ । हिनक काव्य मे एकेटा भावक अभिव्यक्तिक हंतु प्रयुक्त विभिन्न शब्दस्वरूपक कारणें हिनक काव्यभाषाक सम्बन्ध मे विभिन्न विद्वान मे मतैक्य नहि रहल अछि । डॉ० भगवत प्रसाद दूबे हिनक काव्यभाषाक सम्बन्ध मे विभिन्न विद्वानक मतकेँ सूत्ररूप मे संकलित करैत कहलनि अछि जे हुनक काव्यभाषा केँ सधुक्कड़ी अर्थात् राजस्थानी, पंजाबी मिश्रित खड़ीबोली, ब्रज आ पूर्वी बोली, पंचमेल, खिचड़ी, बिहारी सँ प्रभावित, भोजपुरी आ ब्रज एवं एकर अतिरिक्त विभिन्न विषयक विभिन्न शैली मे अथवा बोली मे लिखल गेल भाषा प्रमाणित करबाक विद्वानलोकनि प्रयत्न कएलनि अछि। किछु गोटे अपरिष्कृत सेहो कहलनि अछि । मौखिक रूप सँ कबीरक काव्यभाषाक सम्बन्ध मे उटपटाँग, दुरूह, बेमेल, बे-सिर-पैर आदि शब्द सुनि पड़ैत अछि ।[1]

डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी श्री क्षितिमोहनसेन द्वारा संकलित सन्त कबीरक किछु पदावलीक उदाहरण प्रस्तुत करैत एकरा भोजपुरी बोली मे लिखल गेल कहलनि अछि । हिनक मत मे 'सन्त कबीर भोजपुरी क्षेत्रक निवासी छलाह, मुदा तत्कालीन हिन्दुस्तानी कविलोकनिक रीतिक अनुसरण करैत सामान्यतः ओ ब्रजभाषा तथा कतहु अवधीक प्रयोग कएलनि । बहुधा हिनक ब्रजभाषा यत्र कुत्र पूर्वी (भोजपुरी) प्रकृतिक प्रतिकूल अछि, मुदा जखन ई अपन भोजपुरी बोलीक प्रयोग कयलनि अछि, ब्रजभाषा ओ अन्य पश्चिमी रूप अधिककाल अपनाकेँ प्रकट करैत देखि पड़ैछ ।[2]

डॉ श्याम सुन्दर दास अपन पोथी **कबीर ग्रन्थावली** मे लिखलनि अछि जे 'हुनक रचना मे बिहारीक सेहो पर्याप्त मेल अछि । एतय धरि जे मृत्युक समय मे मगहर मे ओ जे पद कहलनि अछि ताहि मे मैथिलीक सेहो किछु संसर्ग देखि पड़ैत अछि' ।[3]

डॉ० भगवत प्रसाद दूबे कबीरक काव्यभाषासम्बन्धी विभिन्न विद्वानलोकनिक विचारक निष्कर्ष केँ चारि कोटि मे रखलनि अछि–

(क) सन्त कबीर कोनो एकटा भाषाक प्रयोग नहि कयलनि, अपितु जतय-जतय गेलाह, ओहिठामक अथवा ओहिठामक श्रोताक भाषा मे रचना कयलनि ।

(ख) सन्तकबीर आधुनिक भारतीय आर्य (आ०भा०आ०) भाषाक कोनो एकटा प्राचीन रूपमे अपन काव्य लिखलनि ।

(ग) सन्त कबीर जानिबूझि कय विषय ओ विचारक अनुसार विभिन्न भाषा मे (बहुभाषाविद् होयबाक कारणें) काव्यरचना कयलनि ।

(घ) पढ़लिखल नहि रहबाक कारण, अटनशील होयबाक कारण आ भाषाक स्वरूप नीक जकाँ नहि बूझि सकबाक कारण सन्त कबीर उटपटांग भाषा मे अपन उपदेश सुनौलनि।[4]

डॉ० भगवत प्रसाद दूबेक उपर्युक्त निष्कर्ष ओ ततःपर मिथिला मे प्रचलित विपुल सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ई मानबाक विशिष्ट आधार अछि जे सन्त कबीर जँ मिथिलाक निवासी नहिओ छलाह तँ एहिठाम अपन पन्थमतक प्रचारार्थ अवश्य आएल छलाह आ एहिठामक लोकप्रचलित मैथिली भाषा मे रचना कएलनि । जँ हुनक जन्मभूमिक सम्बन्ध मे डॉ० सुभद्र झाक अवधारणाक अनुरूप हिनका मिथिलेक निवासी मानि लेल जाय तँ ई तथ्य सहजहिँ स्वीकार करय पड़त जे सन्त कबीर अपन विचार केँ मूलरूप मे मैथिलीए भाषाक माध्यमे प्रस्तुत कयलनि जे बंगाल सँ पंजाब धरि सम्पूर्ण उत्तरांचल मे गृहीत भेल तथा ओहि सभ जनपदक भाषा मे संरक्षित कयल गेल ।

सन्तकबीरक जन्मस्थान ओ अभिव्यक्तिक माध्यमक सम्बन्ध मे अनेक विद्वान अपन मत प्रस्तुत करैत रहलाह अछि जाहि मे किछु हिनका प्रत्यक्ष ओ परोक्षरूपें मैथिल तथा मिथिलाभाषी कहलनि अछि । डॉ० गुलाब राय कहलनि अछि जे सन्त कबीरक भाषा मे ब्रजभाषा, खड़ीबोली, राजस्थानी, पूर्वी सभक पुट भेंटैत अछि । तँ शुक्लजी हिनक भाषा केँ खिचड़ी भाषा उपयुक्त कहने छथि ।[5]

विलियम डायर एस० जे० कहलनि अछि जे ई निश्चयपूर्वक कहल जा सकैछ जे जाहि भूभाग केँ हमरालोकनि बिहार नामे जनैत छी, ओहि भूभागक अंग छल जतय कबीर रहला तथा घुमला-फिरलाह ।[6]

श्री रामनन्दनदासक मत अछि जे सद्गुरु कबीर साहेब उभयपक्ष (हिन्दू-मुस्लिम) केँ मान्य हिन्दी भाषाकेँ अंगीकार कयलनि, जाहि मे संस्कृत, फारसी, बंगला, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मागधी, मैथिली, गुजराती इत्यादिक समावेश छल, किएक तँ सन्त कबीर कविक रूप मे आयल तँ छलाह नहि, अपितु ई तँ जनसाधारण केँ मुक्ति दिखएबाक हेतु एहि संसार मे पदार्पण कएने छलाह ।[7]

डॉ० शुकदेव सिंह कबीर बीजकक भाषा पर विचार अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि जे 'बीजकक भाषागत विशेषता एकटा एहन व्यक्ति दिशि ध्यान आकृष्ट करैछ जे अपन अशिक्षा किन्तु विलक्षण क्षमता सँ बनारस सँ लय कय दरभंगा धरिक प्रचलित भाषाक प्राणशक्ति केँ आत्मसात कयने अछि ।[8] 'वस्तुतः एहि ग्रंथक भाषातंत्र पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीक बीच पूर्वी क्षेत्र मे विकसित ओ भाषिक गठन थिक जे अपन व्याकरणिक विशेषताक कारणें प्राचीन भाषा सँ पृथक् होइत पश्चिमी उच्चारण रीति सँ सेहो स्वतंत्र भय रहल छल।[9]

उपर्युक्त उद्धरण सभ सँ स्पष्ट अछि जे सन्त कबीरक भाषा मे अनेक आधुनिक भारतीय भाषाक तत्त्व भेंटैत अछि जाहि मे मैथिली सेहो अछि । सन्त कबीर भणित विपुल मैथिली पदावली सन्त कबीरक भाषा मे मैथिली तत्त्वक प्रमुख निर्देशन अछि जे डॉ० सुभद्रझाक एहि मान्यता केँ स्थापित करैछ जे कबीरक भाषा विद्यापतिक भाषा सँ सर्वथा मेल खाइत अछि।[10] जहिना संस्कृत, अवहट्ट ओ मैथिली पदावलीक रचनाकार विद्यापतिक पदावलीक भाषा विशुद्ध मैथिली थिक, जखन कि बंगाल मे प्राप्त विद्यापतिक पद पर बंगलाक प्रभाव पड़ल, हिन्दीक विद्वान एकरा खड़ी बोलीक मध्य परिगणित कयलनि, ठीक तहिना सन्त कबीरक मैथिली पदक प्रसार-क्षेत्र वृहत्तर भारत होयबाक कारण एहि मे लिपिदोषजन्य ओ भाषिक संक्रमण होइत

जयबाक कारणें कतोक विशुद्ध मैथिली पद ततेक विकृत भए गेल अछि जे ओकरा कखनो भोजपुरी तँ कखनो अवधी, राजस्थानी ओ खड़ीबोली मानि लेल गेल अछि।

सन्त कबीरक काव्यक व्यापक परिमाणक परिपेक्ष्य मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक आधार पर ई भने संदेहास्पद कहल जा सकैछ जे कबीर एकमात्र मैथिलीए भाषा मे रचना करैत छलाह, मुदा एहि मे कनेको सन्देह नहि जे हिनक अभिव्यंजनाक एकटा विशिष्ट माध्यम मैथिली सेहो छल आ बहुज्ञताक कारणें ई ब्रज, अवधी आदि मे सेहो पदरचना कयलनि जे तत्कालीन भारतवर्षक पदरचनाक भाषा भेल। हिनक पदावली मे पंजाबी आदि तत्त्व हिनक बहुज्ञता तथा विभिन्न भाषा पर अधिकारक संगहि हिनक पदावलीक प्रचार क्षेत्रक विशालता ओ भाषिक संक्रमण केँ द्योतित करैछ।

भाषाक दृष्टिकोण सँ विचार कयला उत्तर सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे चारिगोट प्रकारभेद भेटैत अछि। पहिल प्रकारक पदावलीक भाषा विशुद्ध मैथिली थिक। यथा–

सुतलि रहलिहुँ भरम निन्द, विखसजे मातलि हो ।
सतगुरु देलन्हि जगाए, चलहु सुखसागर हो ।।
एक नाम चित दए, अम्रित रस पीबहु हो ।
कहइत सुनइत तरि जाए, छुटत जमझागर हो ।।
एक नाम सुखसागर, प्रेम उजागर हो ।
दयाभाव लवलीन, असत जनिबोलहु हो ।।
एह संसार सेमर को फूल, रुइया उड़ि जाएत हो ।
जे नर भगति विहून से पछताओत हो ।।
साहेब कबीर सोहर गाओल, गावि सुनाओल हो ।
हिलिमिलि करु सतसंग, उतरु भवसागर हो ।।[11]

यदि केवल एहि प्रकारक पदावलीक आधार पर सन्त कबीरक भाषाक विवेचन कएल जाय तँ स्पष्ट रूपें कहल जा सकैछ जे सन्त कबीर केँ मैथिली भाषाक प्रकृतिक अत्यन्त निकट सँ परिचय छलनि आ ओ विशुद्ध भाषा मे सामान्य मैथिली कविक समान रचना करैत छलाह।

सन्त कबीर भणित दोसर तरहक पदावलीक भाषा मे मैथिली तत्त्वक प्राचुर्य अछि, मुदा कतहु-कतहु एहन पदावलीमे ब्रज, अवधी ओ खड़ी बोलीक पुट सेहो देखि पड़ैछ। यथा–

सन्तो शब्द साधना कीजै । टेक
जाहि शब्द सत्रो राम परगट भये सोइ शब्द लिखि लीजै ।१।
शब्दहि वेदपुराण बखानय शब्दहि शब्द ठहरावै
शब्दहि सुर नर मुनि जन गाबय शब्द का भेद न पावै ।२।
शब्द गुरु शब्द सुनि सिख भए शब्दे विरला बूझै ।
जोई गुरु सोई सिख आतम अन्तरगत जब सूझै ।३।।
शब्दे शब्द शब्द बहु अन्तर सार शब्द मथि लीजै ।
कहै कबीर जेहि सार शब्द नहि धिग जग जीवन जीवै ।

- मन लागल राम फकीरी मे । टेक ।।
जो सुख वन्दे राम भजन मे सो सुख नहीं अमीरी में ।
जो सुख है गाजर नेनुआँ मे सो नहीं है जमीरी में ।
हाथ मे कुण्डी बगल मे सोंटा सारा मुलुक जगीरी में ।
चेत करो साहेब को सुमिरो नहीं मन रहा दिलगीरी मे ।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो साहब मिले हजूरी में ।

- टारत नाहि टरे हो करम गति टारत नाहि टरे ।
मुनि वशिष्ट सन पंडित ज्ञानी सोधि के लगन धरे ।
सीताहरण मरण दशरथ के वनमे विपति परे ।
रानी कएलनि लोभ देखि कए सोने मिरग चरे ।
सीता के हरलक राजा रावण सुबरन लंक जरे ।
नीच हाथ हरचिंद विकएला बलि पाताल धरे ।
कोटि गाय नित दान करे नृप गिरगिट जोनि परे ।
पाण्डव जनिकर कृष्ण सारथी व्याकुल विपति परे ।
दुरयोधन के मान घटाये यदुकुल नाश करे ।
राहु केतु जो भानु चन्द्रमा विधि संयोग परे ।
तीनोलोक काल के बस मे कोना जीव उबरे ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो होनी न कबहु टरे ।[13]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक ई स्वरूप सेहो वस्तुतः मैथिली भाषाक सधुक्कड़ी प्रयोग सँ सम्वद्ध पदावली थिक। मध्यकालीन मैथिली साहित्य मे एहि प्रकारक सधुक्कड़ी भाषाक प्रयोग अनेक कविक रचना मे भेटैत अछि, यथा, लक्ष्मीनाथ गोसाँई, साहेबरामदास आदि। उदाहरणार्थ लक्ष्मीनाथ गोसाँइक ई पदावली द्रष्टव्य अछि–

देखहु रे कोइ जोगिया हमार ।
अद्‌भुत रूप बना बनिहार ।
कबहु ब्रह्मलोक मे ब्रह्मा चारि खानि उपजावन हार ।
दंड कमंडल हंस सवारी चतुरानन चारू वेद उचार ।
कबहुँ विष्णु वैकुंठ विराजे तीन भुवन के पापन-हार ।
धरनी भार उतारन कारण गरुड़ासन कर दस अवतार ।
कैलासी संन्यासी कबहु नगन-मगन तन बैल सवार ।
डमरु त्रिशूल करे बार शंकर पंचवदन किए जग संहार ।
कबहुँ फकीर फीर तोहैं बनबन निशिवासरकर भंग अहार ।
लक्ष्मीपति जोगिया बिनु दोसर को करिहैं भवसागर पार ।[14]

एहिना भूपालक ई पद सेहो निदर्शनार्थ प्रस्तुत कएल जाइत अछि–

आज सखी एक बूढ़ तपोवन देखा हो ।
गले मुण्ड के माल-भाल शशिरेखा हो ।
भसम शरीर सपेत कण्ठ अति काला हो ।
नीर चलतु गंगाधार छार सौं माखे हो ।
आक धथुर बिख भाङ मुदित मन भाखें हो ।
गाल बड़द ढक ढोल डोर से नाथं हो ।
त्रिशुल खटङग पिनाक डमरू एक हाथे हो ।
गाबथि सप्रेम भुपाल सुनिय जगमाता हो ।
चारि पदारथ नाथ हुनहि बुढ़ दाता हो ।

एहि प्रकारक मिश्रित बोलीकेँ डॉ० रामदेव झा 'वैरागी भाखा' कहि अभिहित कयलनि अछि । हुनक अभिमत छनि जे एहि काल (मध्यकाल) मे मिथिला मे वैष्णवभक्त, वैरागी, सन्तमहात्मा लोकनिक प्रचुर संख्या मे आविर्भाव भेल । एहि प्रकारक वैष्णव वैरागी सन्तलोकनि मध्यदेशीय भाषा ब्रज ओ अवधीक वैष्णव काव्य सँ प्रेरित-प्रभावित भऽ काव्यरचना करैत छलाह अवश्य, किन्तु भाषाक सम्बन्ध मे कोनो प्रतिबद्धता नहि राखि स्वच्छन्द प्रकृति रखैत छलाह। मातृभाषा मैथिलीक दीर्घकालिक विशाल परम्परा सँ एकाएक सर्वथा विछिन्न भऽ दूरदेशक अल्पपरिचित भाषा मे काव्यरचना करब संभवो नहि छलनि । अत: ओ लोकनि एक प्रकारक मिश्र भाषाक प्रयोग करय लगलाह । एहि मिश्र भाषा मे साधारणत: मैथिली अवधी ओ ब्रजभाषाक तत्त्व सभक स्वाभाविक मिश्रण रहैत छल । एहि प्रकारक उद्भूत अभिनव भाषा केँ जनसमाज मे 'बबजिया बोली' कहल जाय लगाल । ई बोली मुख्यत: मिथिलाक सन्त, महात्मा, वैरागी सभक विचार वाहिनी छल एवं हुनकहि सभ द्वारा प्रयुक्त ओ प्रचारित भेल तें एकरा वैरागी भाषा नाम सँ अभिहित करब अयुक्तिकर नहि होयत ।

एहि प्ररिपेक्ष्य मे सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे ब्रज ओ अवधी तत्त्वक किंचित-क्वचित निदर्शन केँ वैरागी सन्त कबीरक पदावली मे सर्वाधिक स्वाभाविक कहल जा सकैछ आ एहि संक्रमणक कारणें एकरा सर्वथा मैथिली सँ दूर बूझब अदूरदर्शितापूर्ण कहल जायत।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक तेसर कोटि मे ओहन पदावली अछि जकर मूलाधार भाषा ब्रज ओ अवधी अछि, मुदा ठाम-ठाम कतहु कोनो चरण, पद, शब्दरूप आदि मे ठेठ मैथिलीक पुट देखि पड़ैछ, यथा–

ताकर जो कछु होय अकाज । ताहि दोस नहि साहब लाग ।।
हमरे कहल के नहिं पतियार ।।
X X X

जागत चोर घर मूँसहि । जो जागल जो भागल ।।
X X X
अंत बिलैया खाय ।
X X X
झूठ परपंच सांच करि जान । छांड़हु पाखंड मानहु बात ।
X. X X
ई सब ठकल जम के दुआरि ।
X X X
जोलहा तानबान नहिं जानै फाटि बिनै दस ठाँइ हो ।
X. X X
पीतर पाथर पूजन लागे । तीरथ गर्भ भुलाना ।
माला पहिरे टोपी पहिरे । छाप तिलक अनुमाना ।
X X X
नैहर मैं दाग लगाय आय चुनरी ।
ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै, नहि मिलै धोबिया कौन करे उजरी।
तन के कूँडी ज्ञान् के सौदन, साबुन महँग विचाय या नगरी ।
पहिरि-ओढ़िके चली ससुररिया, गौंवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो । बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे चारिम कोटिक पद एहनो भेटैछ जकरा समान रूपें अवधी, भोजपुरी, खड़ीबोलीक संगहि मैथिलीओक पद स्पष्ट रूपें कहल जा सकैछ, किएक तँ एहन पद पर तत्तद् भाषाक संक्रमणक कारणें किंचित-क्वचित पाठान्तर मात्र पदक भाषाक निर्देशक भए जाइछ यथा–

अवधू, अन्धाधुन्ध अँधियारा । केओ जानए जाननि हारा ।।
एहि घट भीतर वन अरु बस्ती एही मे झाँझ पहाड़ा ।
एहि घट भीतर बाग बगीचा एही मे सीरजनहारा ।
एहि घट भीतर सोना चानी एही मे लागल बजारा ।
एहि घट भीतर हीरा मोती एही मे परखनहारा ।
एहि घट भीतर सातसमुन्दर एही मे नदिया नारा ।
एहि घट भीतर सूरज चन्दा एही मे नौलख तारा ।
एहि घट भीतर बिजली चमकए सही मे होत उजियारा ।
एहि घट भीतर काशी मथुरा एही मे गढ़ गिरिनारा ।
एहि घट भीतर ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादि अपारा ।

एहि घट भीतर अपने आबए राम कृष्ण अवतारा ।
एहि घट भीतर कामधेनु आ कल्पवृक्ष हए न्यारा ।
एहि घट भीतर ऋद्धि सिद्धि के भरल अटल भंडारा ।
एहि घट भीतर तीन लोक आ एही मे हए करतारा ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो एही मे गुरु हमारा ॥[26]

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक चारू प्रकार–भेद कें देखला सँ स्पष्ट अछि जे सन्त कबीरक भाषा मे बहुरूपता अछि । वस्तुत: सन्त कबीर अपने अपढ़ ओ लेखनक्षमता रहित छलाह ।[27] तें अपन सिद्धान्तक प्रचारस्वरूप जे कोनो पदक रचना कयलनि तकरा लिपिकार ओ प्रतिलिपिकार क्रमश: संक्रमित करैत रहलाह जाहि सँ कालचक्र मे अनवरत प्रवहमान हिनक पदावली श्रुतिसाहित्य ओ लिखित साहित्यक आधुनिक रूप मे प्राप्त अछि। तें एहि पदावली कें तात्त्विक दृष्टिञे जँ मैथिली पदावली कहब संदिग्ध अछि तँ ओतबे संदिग्धता अवधी, ब्रज वा खड़ी बोलीक पदावली कहबा मे उत्पन्न भय गेल अछि ।

कबीर ग्रंथावली के आधार बनाय डॉ० भगवत प्रसाद दूबे एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह अछि जे '**क०ग्र०**' खड़ी, ब्रज, राजस्थानी, अवधी ओ भोजपुरीक व्याकरणिक रूपक प्रयोगवृत्तिक सापेक्षिक अधिक्यक आधार पर स्पष्टस्वरूपसँ कहल जा सकैछ जे एहि मे ब्रजभाषाक अमिश्रित रूपक सर्वाधिक प्रयोग भेल अछि ।'

'**क० ग्र०**' मे अमिश्रित आ मिश्रित दुनू रूप मे ब्रजक रूपक स्पष्ट रूप सँ सर्वाधिक प्रयोग देखिकय ई निश्चयपूर्वक कहल जा सकैछ जे एकर मूलाधार बोली ब्रज थिक।

आगू ओ कहलनि अछि जे 'ब्रजभाषाक एकगोट सुनिश्चित ओ विकसित परम्परा छल जे गुजरात सँ बंगाल धरिक कविलोकनिक द्वारा समान रूपें गृहीत भेल छल ।

'तथापि एकटा पर्यटक आ उपदेशक कबीर जे कोनो एकटा धार्मिक ओ दार्शनिक मतवादक भीतर सीमित नहि रहि सकलाह, कोनो एकटा भाषाक घेरा मे एहो अपनाकें रोकि नहि सकलाह । यद्यपि मूलाधार बोलीक रूप मे ओ ब्रजकें स्वीकार कयलनि तथापि मध्यदेश मे विकसित हो विकासमान अन्यान्य बोली ओ भाषा कें सेहो सहायक रूप मे अपन काव्य मे स्थान देलनि जाहि सँ ओहि बोलीसँ सम्बद्धलोक सेहो बिना कटुताकें हुनक उपदेश सुनि सकथि ।[28]

डॉ० दूबेक उपर्युक्त मतक आलोक मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक आधार पर सन्त कबीरक भाषा पर विचार कयला उत्तर हिनक मूल भाषाकें मैथिली स्वीकार करबामे कोनो तारतम्यक संभवना नहि देखि पड़ैछ । जँ हिनक विराट सन्त साहित्यक आधार पर हिनक मूलाधार भाषाकें ब्रजभाषा मानियो लेल जाय तँ मैथिली हिनक पूर्वांचलीय प्रचार-भाषाक रूप मे गृहीत छले होएत, तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ ।

डॉ० शुकदेव सिंह **बीजकक** आधार पर सन्त कबीरक भाषाक निर्धारण करैत कहलनि अछि जे **बीजकक** भाषा मध्यकालीन हिन्दी भाषाक प्रवाह मे एकटा एहन द्वीपक सदृश अछि

जकर चारूकात ब्रज ओ अवधीक धारा बहि रहल छैक, मुदा जकर कण कण प्राचीन भोजपुरीक जल सँ आर्द्र अछि ।[29]

अपन विवेचनक विश्लेषण करैत ओ कहलनि अछि जे 'पूर्वी प्रवृत्तिक कारण संयुक्त व्यंजनक खास कय क्ष, क, ख, आ ष मे परिवर्तन देखि पड़ैछ । संयुक्त र प्राय: लुप्त अछि। तें प्रियक पिय, सर्वक सब, भर्त्तारक भतार सदृश रूप भेटैत अछि । स्वरभक्ति समस्त मध्यकालीन भाषा अत: **बीजकक** भाषाक मौलिक प्रवृत्ति अछि । यत्नक जतन, दुर्जनक दुरजन, तीर्थक तीरथ, प्रजाक परजा स्वरभक्तिएक परिणाम थिक । क्षतिपूरक अनुस्वार- अनुनासिकक संग अकारण अनुनासिकक प्रवृत्ति सेहो **बीजकक** भाषा मे अछि । कबीर फारसी शब्दक सेहो प्रयोग कएलनि अछि आ फारसी शब्दक ध्वनिपरिवर्त्तन मे **बीजक** मे प्राय: वैह नियम लागू कयल गेल अछि जे तत्सम ध्वनिक क्रम मे कयल गेल अछि ।[30]

आगू ओ प्रत्ययपद विधानक विवेचन करैत कहलनि अछि जे तव्य सँ विकसित 'बे' प्रत्यय **बीजक** कें प्राचीन भोजपुरी रचनाक रूपमे प्रतिष्ठित करैछ । कहबे, तरबे, जइबे, रहबे सदृश प्रयोग तेहने अछि । एहि तरहें 'अल' सदृश देशी प्रत्यय तँ साम्प्रतिक भोजपुरी भाषी के सेहो **बीजक** सँ जोड़ी लेलक अछि । रहल, कहल, छेकल, फूटल, मुअल, सदृश अनेक प्रयोग **बीजक** कें बनारसी बोलीक कृति बना दैछ ।[31]

उपर्युक्त विवेचनक आधार पर जाहि विविध तत्त्वक आधार पर पूर्वी वा प्राचीन भोजपुरीक अवस्थिति **बीजक** मे कहल गेल अछि से मैथिली प्रकृतिक अनुरूप होयबाक कारण वस्तुत: मैथिलीए थिक । एहिठाम ई ध्यान रखबाक योग्य अछि जे तत्कालीन समय धरि ब्रज, अवधी आदि भाषा साहित्यक स्वरूप कें ग्रहण नहि कय सकल छल आ भोजपुरी तँ सहजहिं। भोजपुरी, मैथिली ओ मगहीक प्रकृतिसाम्य हिन्दीक विद्वान कें मैथिली तत्त्वकें अपबारित कय ओकरा तथाकथित बिहारी (भोजपुरी) मे तकबाक चिन्तन-प्रवृत्तिक कारण रहल अछि ।

डॉ० शुकदेव सिंह स्वयं स्वीकार कयलनि अछि जे सूर, तुलसी, ब्रजभाषा के साहित्यिक गौरव प्रदान कयलनि । सूर सँ पूर्व ब्रजभाषाक बहुत स्पष्ट इतिहासो नहि अछि ।[32] दोसर दिस **एहि समय धरि मैथिली** अत्यन्त विकसित छल । एकटा विशिष्ट साहित्यिक भाषाक रूप मे ई वर्णरत्नाकार सन गद्यग्रन्थ ओ विविध नाट्य गीत प्रस्तुत कय चुकल छल । सर्वोपरि तथ्य ई जे मैथिली भाषा अखण्ड भारत मे वैष्णव भक्ति आन्दोलन कें विद्यापतिक पदावलीक माध्यमे प्रसारक विशिष्ट भाषिक स्वरूप मे स्थापित भय गेल छल ।

अपन विवेचन मे डॉ० सिंह कहलनि अछि जे' कबीर बनारसक छलाह । हुनक भाषा पूर्वी छल । ओ एकटा एहन भाषा मे जनोपदेश कय रहल छलाह जे स्वीकृत रूप सँ साहित्यिक भाषा छल । जाहि तरहें साहित्यिक भाषाक रूप मे प्रचलित ओ परम्परित अवहट्टक रचना **कीर्तिलता** ओ **कीर्तिपताकाक** रचयिता विद्यापति पदक सृजन अपन जनपदीय मैथिली मे कयलनि ताहि तरहें सन्त कबीर ओहि समयक अवहट्टोत्तर भाषा सभ कें अपन उपदेशक माध्यम नहि बनाय बनारसक जनपदीय बोली कें अपन रचनाक भाषा बनौलनि । जाहि तरहें **कीर्तिलताक** कवि कें ऊपरे-ऊपर **विद्यापति पदावली** मे ताकब कठिन अछि, तहिना कबीर

बीजक मे कबीरक भाषाक बाह्यतन्त्र कँ देखब ओ बूझब कठिन अछि । मुदा अहि सभ **विद्यापति पदावली** के विद्यापति सँ पृथक नहि कयल जा सकैछ, हुनक अधिकतम कवित्व पदावलीएमे देखल जा सकैछ, तहिना कबीरक अधिकतम कवित्व **बीजके** मे पाओल जाइत अछि । **बीजकक** भाषा अवधी आ ब्रजक साहित्यक रूप मे प्रतिष्ठित होयबासँ पूर्वक भाषा थिक ।"

उपर्युक्त विवेचन सभक आधार पर सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली कँ आधार कयनिहारक मूलाधार भाषा कँ निश्चित रूप सँ मैथिली कहल जा सकैछ । भने इहो तथ्य समीचीन आ ग्राह्य अछि जे अपन विचार-प्रचार कँ सम्पूर्ण भारतवर्ष मे विकेन्द्रित करबाक हेतु सन्त कबीर अन्यान्यो जनपदक भाषा कँ अपन काव्यभाषाक रूप मे समेटैत गेलाह ।

एहिठाम मिथिला स्रोत सँ प्राप्त अप्रकाशित एवं मिथला तथा अन्य स्रोत मे पूर्व प्रकाशित सन्तकबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषातात्विक अध्ययन अपेक्षित अछि ।

शब्दावली प्रयोग

सन्त कबीर भणित मैथिली मे सामान्यतः हठयोगसाधनाक विविध पक्षक निरूपण भेल अछि तथा संसारक नश्वरता, निर्गुण, ब्रजक, सायुज्यक हेतु माधुर्य रति आदिक वर्णन भेल छल । एहि निरूपणक हेतु भवसागर, मझधार, इंगला, पिंङला, सतनाम, मेरुदण्ड, रतन, श्वेत, काम, क्रोध, मोह, मद, जग, प्रभु सुवास, जननी, कलत्र, सुरति, सखि, पाप, पुण्य, क्रीड़ा, चिकुर त्रिकुटी, कलश, मनोहर, मानिक, हीरा, कनेआंदान, चउमुख आदि परम्परागत तत्सम, अर्द्धतत्सम ओ तद्भव शब्दक बहुल प्रयोग भेल अछि । संस्कृत सँ उपगत होयबाक कारणें तद्रूपें प्रयुक्त अथवा किंचित ध्वनिपरिवर्तनक संग प्रचलित तत्सम ओ अर्द्धतत्सम वा तद्भव शब्दावली पर समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक सदृशे मैथिलीओक समान रूपें अधिकार छैक । पलंग, पिआ, माए, मझधार, पुरहर, सिन्दुर, सेज, केबाड़, पाहोन, साड़ी, पिरितिया, सजनी आदि एहि प्रकृतिक शब्दावलीक प्रयोग प्राचीनेकाल सँ मैथिली भाषा ओ साहित्य मे होइत रहल अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे ठेठ मैथिली शब्दावलीक सेहो प्रचुर प्रयोग एकरा मैथिली भाषाक अत्यन्त निकट साबित करैछ । एहि पदावली मे विपुल संख्या मे ठेठ शब्दक प्रयोग देखि पड़ैछ जे विशुद्ध मिथिलादेशीय शब्द सभ थिक यथा–बहुड़ब, विछिया, धनि, दाग, ढेबुआ, अहिबात, मूसब, समधिन, करार, पेटकुनिञा, हबकुनिञा समदाउनि, बिढ़नी, पचहिया, खोंता, चोकर, कोड़ो, कोहबर इत्यादि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त-गृहीत शब्दावली मे सेहो ध्वनिपरिवर्तन ओ रूप परिवर्तनक स्थिति ओहिना देखि पड़ैछ जेना तत्सम वा तद्भवक ध्वनि आ रूप परिवर्तनक स्थिति अछि । उदाहरणार्थ एहि मे प्रयुक्त साहेब, चपरासी, विराना, बजरिया, झरोखबा, पेओन, बालम, दृढ़इत, कोतबलबा, खसम, आशिक बारूद, आदि शब्द द्रष्टव्य अछि ।

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीमे प्रयुक्त शब्दावली परिनिष्ठित ओ तद्भव प्रयोग भारतीय दर्शन, काव्य, पुराण ओ इतिहासक सामान्य प्रचलित शब्द सभ सेहो थिक जे मैथिली मे आधुनिक आर्यभाषाक सभक प्रयुक्त होइत रहल अछि । ठेठ शब्द एकरा मैथिलीक अत्यन्त निकट साबित करैछ तथा विशेषतः शब्दावलीक ध्वनि ओ रूप परिवर्तनक स्थिति सेहो एकरा मैथिली प्रकृतिक उद्भावना करैछ ।

संज्ञाक रूप

मैथिली शब्दावली मे संज्ञाक तीनगोट रूप दृष्टिगोचर होइछ– लघु, गुरु ओ गुरुतम । एहि मे किछु शब्दक तीनू रूप, किछु शब्दक लघु ओ गुरुतम रूप तथा किछु शब्दक लघु ओ गुरुतम रूप तथा किछु शब्दक गुरु ओ गुरुतम रूप मात्र भाषा मे प्रयुक्त होइछ । साहित्यो मे एहि प्रकारक शब्द प्रयोगक निरन्तरता रहल अछि, उदाहरणार्थ ई लोकगीत गृहीत पद द्रष्टव्य अछि, जाहिमे सासुरक गुरु रूप ससुरा, सोनारक गुरुतम रूप सोनरबा, डोमिनक गुरुतम डोमिनिञा तथा पटबीनीक गुरुतम रूप पटबिनिऔक प्रयोग भेल अछि–

आ गे डिहुली, आ गे डिहुली ।
साम्मा जाइ छै ससुरा किछु गहनो चाही गे डिहुली।
आ गे डिहुली, आ गे डिहुली ।
धऽ ला सोनरबा के गढ़ाइये देबौ गे डिहुली ।
साम्मा जाइ छै ससुरा किछु पौती चाही गे डिहुली
आ गे डिहुली, आ गे डिहुली ।
धऽ ला डोमिनिञा के बुनबाइये देबौ गे डिहुली
साम्मा जाइ छै ससुरा किछु सेनुर चाही गे डिहुली
आ गे डिहुली, आ गे डिहुली ।
धऽ ला पटबिनिञा कँ किनिय देबौ गे डिहुली ।"
आ गे डिहुली, आ गे डिहुली ।

एहि तरहें उपरोक्त पद मे सासुर मे 'आ' प्रत्ययक योग सँ ससुरा, गुरु संज्ञा रूपक निर्माण भेल अछि तथा सोनार मे 'बा' प्रत्यक योग सँ एकर गुरुतम रूप सोनरबा बनल अछि। इआ/इञा प्रत्ययक योग सँ डोमिन सँ डोमिनिञा तथा पटबीनी सँ पटबिनिञा क्रमशः डोमिन ओ पटबीनी लघु संज्ञा रूप सँ गुरुतम संज्ञारूपक निर्माण संभव भेल अछि । एहि तरहें संज्ञाक गुरुतम स्वरूपक निर्माण मे एहि पदमे 'बा' तथा इआ / इञा' प्रत्ययक योगदान तथा गुरु स्वरूपक निर्माण मे 'आ' प्रत्ययक योगदान स्पष्ट अछि ।

विद्यापति परम्पराक आनो कविक काव्य मे संज्ञाक ई तीनू रूप देखि पड़ैछ । गुरुतम प्रयोगक दृष्टिएँ लोचनक ई पाँती द्रष्टव्य अछि–

... एकगोट प्रसिद्ध पद अछि-

मोहि सखि लेहे कङ्गनमा ओ लेधु हरवा ।
दुहुँ मिलि देह मनाएक अपन ओसरवा ।।

एहि पद मे कङ्गनमा, हरवा, ओसरवा, क्रमशः कंगन, हार ओ ओसारक गुरुतम रूप थिक । एहि रूपक निर्माण मे 'बा' ओ 'मा' प्रत्ययक द्वारा शब्दसाधन भेल अछि।

एही तरहें संज्ञाक गुरुतम स्वरूपक निर्माण मे बा, मा उआ ओ इआ/इआ प्रत्ययक द्वारा शब्दसाधन होइत देखल जाइछ । संज्ञाक गुरु स्वरूपक निर्माण मे 'आ' प्रत्यय बहुत प्रयुक्त जाइछ । इकारान्त शब्दमे गुरु स्वरूपक निर्माण मे ई प्रत्यय देखल जाइछ । सन्त कबीरक मैथिली पदावली मे संज्ञाक रूप परिवर्तन मे बा, मा ओ इआ/इआ प्रत्यय द्वारा गुरुतम स्वरूप निर्माण सँ सम्बन्धी शब्दावलीक बहुल प्रयोग भेटैत अछि, यथा-

इआ / इआ प्रत्यय सँ निर्मित गुरुतम स्वरूप

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
बचन	बचनिआ	बाँहि	बँहिआ
बाट	बटिया	हाट	हटिआ
बरिआत	बरिआतिया	देह	देहिआ
बेनी	बेनिआँ	आगि	अगिआ
सखि	सखिआ	लहरि	लहरिआ
सेज	सेजिआ	कटोरी	कटोरिआ
बाढ़ि	बढ़िआ		
ओहार	ओहरिआ		
नगर	नगरिया	मइली	मइलिआ
राति	रतिआ	झुमड़ि	झुमड़िआ
कुमति	कुमतिआ	लगन	लगनिआँ
फुलवाड़ी	फुलवड़िआ	ठकनी	ठकनिआ
दउड़ी	दउड़िआ	फरकी	फरकिआ
त्रिवेणी	त्रिवेणिआँ	बेर	बेरिआ
सबेर	सबेरिआ	डोली	डोलिआ
दुआरि	दुअरिआ	खाट	खटिआ
निरगुन	निरगुनिआ	निर्मोही	निर्मोहिआ
पाती	पतिआ	कहार	कहरिआ

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]
मकड़ी	मकड़िआ	[illegible]	[illegible]
बजार	बजरिआ	[illegible]	[illegible]
पुरइन	पुरइनिआँ	[illegible]	[illegible]
कलजोरी	कलजोरिआ	[illegible]	[illegible]
सुरति	सुरतिआ	[illegible]	[illegible]
साँझ	साँझिआ	[illegible]	[illegible]
बादर	बदरिआ	[illegible]	[illegible]
महरानी	महरानिआ	[illegible]	[illegible]
मौनि	मौनिआ		
समदाउन	समदउनिआ	[illegible]	[illegible]
पुतरी	पुतरिआ	[illegible]	[illegible]

'बा' प्रत्ययक योग सँ निर्मित गुरुतम रूप

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
देश	देशवा	नैहर	नैहरवा
डोला	डोलवा	पिआ	पिअवा
चोर	चोरवा	घाट	घटवा
नीर	निरवा	बाजूबन	बाजूबनवा
बेनट	बेनटवा	निहोर	निहोरवा
कोढ़ा	कोढ़वा	भमर	भमरवा
हर	हरवा	घर	घरवा
अधर	अधरवा	केओट	केओटवा

चाँद धवल ऋतुराज-रजनिञा ।
हरि निधुवन मनं चलति सजनिञा ।

एहिना चतुरभुजक एकगोट प्रसिद्ध पद अछि–

तोंहें सखि लेहे कङ्गनमा ओ लेथु हरबा रे ।
दुहुँ मिलि देह मनाएक अपन ओसरबा रे ॥

एहि पद में कङ्गनमा, हरबा, ओसरबा, क्रमशः कंगन, हार ओ ओसारक गुरुतम रूप थिक । एहि रूपक निर्माण में 'बा' ओ 'मां' प्रत्ययक द्वारा शब्दसाधन भेल अछि ।

एही तरहें संज्ञाक गुरुतम स्वरूपक निर्माण मे बा, मा उआ ओ इआ/इञा प्रत्ययक द्वारा शब्दसाधन होइत देखल जाइछ । संज्ञाक गुरु स्वरूपक निर्माण मे 'आ' प्रत्यय बहुधा देखल जाइछ । इकारान्त शब्दमे गुरु स्वरूपक निर्माण में ई प्रत्यय देखल जाइछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे संज्ञाक रूप परिवर्तन मे बा, मा ओ इआ/इञा प्रत्यय द्वारा गुरुतम स्वरूप निर्माण सँ सम्बन्धी शब्दावलीक बहुल प्रयोग भेटैत अछि, यथा–

इञा / इआ प्रत्यय सँ निर्मित गुरुतम स्वरूप

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
वचन	बचनिञा	बाँहि	बाँहिञा
बाट	बटिया	हाट	हटिया
बरिआत	बरिआतिया	देह	देहिआ
बेंनी	बेनिआँ	आगि	अगिआ
सखि	सखिआ	लहरि	लहरिआ
सेज	सेजिआ	कटोरी	कटोरिआ
बाढ़ि	बढ़िआ		
ओहार	ओहरिआ		
नगर	नगरिया	मइली	मइलिआ
राति	रतिआ	झुमड़ि	झुमड़िआ
कुमति	कुमतिआ	लगन	लगनिआँ
फुलवाड़ी	फुलवड़िआ	ठकनी	ठकनिञा
दउड़ी	दउड़िआ	फरकी	फरकिआ
त्रिवेणी	त्रिवेणिआँ	बेर	बेरिआ
सबेर	सबेरिआ	डोली	डोलिआ
दुआरि	दुअरिआ	खाट	खटिआ
निरगुन	निरगुनिञा	निर्मोही	निर्मोहिआ
पाती	पतिआ	कहार	कहरिआ

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
आँखि	अँखिआ	बाती	बतिआ
जाति	जतिआ	बसुली	बसुलिआ
अटारी	अटरिआ	डगर	डगरिआ
लहर	लहरिआ	चोरी	चोरिआ
चंगेरी	चंगेरिआ	अरज	अरजिआ
कंबार	कंबरिआ	गगरी	गगरिआ
गोरी	गोरिआ	लकड़ी	लकड़िआ
बाग	बगिआ	नदी	नदिआ
ननदी	ननदिआ	सजनी	सजनिञा
		जतसारी	जतसरिआ
मकड़ी	मकड़िआ	केस	केसिआ
बजार	बजरिआ	समय	समइआ
पुरइन	पुरइनिआँ	पुछारी	पुछरिआ
बलजोरी	बलजोरिआ	पलक	पलकिआ
सुरति	सुरतिआ	पतवार	पतवरिआ
साँझ	साँझिआ	गेठरी	गेठरिआ
बादर	बदरिआ	तुमरी	तुमरिआ
महरानी	महरानिञा	मोती	मोतिआ
मौनि	मौनिञा		
समदाउन	समदउनिञा	मांग	माँगिआ
पुतरी	पुतरिआ	नींद	निन्दिआ

'बा' प्रत्ययक योग सँ निर्मित गुरुतम रूप

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
देश	देशबा	नैहर	नैहरबा
डोला	डोलबा	पिआ	पिअबा
चोर	चोरबा	घाट	घटवा
नीर	निरबा	बाजूबन	बाजूबनबा
बेनट	बेनटबा	निहोर	निहोरबा
कोड़ो	कोड़बा	भमर	भमरबा
हर	हरबा	घर	घरबा
अधर	अधरबा	केओट	केओटबा

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
फूल	फुलबा	लोग	लोगबा
हिडोला	हिडोलबा	मंडिल	मंडिलबा
घोड़ा	घोड़बा	झीक	झिकबा
लोर	लोरबा	मेघ	मेघबा
रंग	रंगबा	शबद	शबदबा
किल	किलबा	लूगा	लुगबा
झोरा	झोरबा	गोड़	गोड़बा
पुरुष	पुरुषबा	पिंजड़ा	पिजड़बा
केबाड़	केबड़बा	पाप	पपबा

'मा' प्रत्यय सँ निर्मित गुरुतम स्वरूप

लघु	गुरुतम	लघु	गुरुतम
जमुना	जमुनमा	साओन	साओनमा
आओन	आओनमा	भवन	भवनमा
मुखपान	मुखपनमा	दिन	दिनमा
आंगन	अंगनमा	गहना	गहनमा
पाहुन	पहुनमा	गओना	गओनमा

इआ/इञा, बा तथा मा प्रत्ययक अतिरिक्त सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे संज्ञाक गुरुतम स्वरूपक निर्माण मे उआ/उञा प्रत्ययक योगदान सेहो दृष्टिगोचर होइछ, यथा–

मन-मनुआँ

संज्ञा लघु स्वरूप सँ गुरु स्वरूपक निर्माणक दृष्टिजे किछु उदाहरण सभ अछि :

लघु	गुरु	लघु	गुरु
दारु	दरुआ	हंस	हंसा
शरीर	शरीरा	अन्हार	अन्हारी
कबीर	कबीरा	नगर	नगरी

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली में संज्ञाक विभिन्न रूप मैथिलीक भाषिक वैशिष्ट्य ओ साहित्यिक प्रयोगक सर्वथा अनुकूल अछि । एहि सम्बन्ध डॉ० शुकदेवसिंहक ई उक्ति द्रष्टव्य अछि जे ओ बीजकक संज्ञारूपक विवेचनक क्रम मे कहलनि अछि–'बीजकक भाषा मे संज्ञा शब्दक एकाधिक रूपान्तर भेटैत अछि, जाहि मे अर्थभेद कतहु अत्यन्त सूक्ष्म आ कतहु ततबो नहि होइछ । विद्वानलोकनि अवधी, मैथिली ओ भोजपुरी सदृश पूर्वी बोली

मे एहि प्रकारक विशेषताक दिस ध्यान आकृष्ट कयलनि अछि । एहि रूपक विकास भाषाक स्वार्थ प्रकृतिक कारणें होइछ । बीजक मे घरबा, बलकवा, विधिंना, सदृश अनेक शब्द मे ई प्रवृत्ति पाओल जाइत अछि ।'[३७]

कारक विभक्ति ओ परसर्ग

कारक विभक्ति ओ परसर्गक प्रयोगक दृष्टिजे सेहो सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मैथिली भाषाक अनुकूल अछि । प्राचीन मैथिली प्रयोग मे विभिन्न कारक रचना मे निर्विभक्तिक, सविभक्तिक ओ परसर्गीय प्रयोग देखि पड़ैछ । निर्विभक्तिक प्राचीन प्रयोगक दृष्टिजे निम्न पद सभ देखल जा सकैछ–

चान्द चकोरी हरइ पिआसा ।[३८]
x x x
मन मोर हरलक मदन जगाए ।[३९]
x x x
सुंन - सुन सुन्दरि रस घर गोए ।[४०]
x x x
सकल गात दुकूल दृढ़ अति कतहु नहि अवकाश।[४१]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो कारक रचना मे निर्विभक्तिक प्रयोग पुष्कल रूपें दृष्टिगोचर होइछ, यथा–

तेहि अवसर महादेव जाइत रहए कैलाश ।[४२]
x x x
जीव राखल भरमाए ।[४३]
x x x
गुरुमुख कन्यादान ।[४४]
x x x
उतरहु भवजल पार ।[४५]
x x x
कोहबर बैठहु कामिनि ।[४६]
x x x
छाड़हु हंसा तुअ यमपुर हो ।[४७]

एहि तरहें निर्विभक्तिक प्रयोगक दृष्टिजे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मैथिली भाषाक अनुरूप अछि ।

प्राचीन मैथिली मे विभक्तिक घसायल रूप यथा ए, एँ, ने, हि, एरि, काँ, चाहि, चन्द्र,

बिन्दु आदिक प्रयोग कारक रचनाक सविभक्तिक प्रयोग मे देखि पड़ैछ, मुदा एहि प्रकारक विभक्तिक सन्तकबीर भणित पदावली मे अभाव देखि पड़ैछ ।

मुदा परसर्गीय प्रयोगक दृष्टिऍ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मैथिलीक प्रकृतिक सर्वथा अनुसरण करैत देखि पड़ैछ । कर्मकारक मे के, करण मे से, सऍ, सम्प्रदान मे लागि, अपादान मे सऒ, सँ, सऍ, सम्बन्धकारक मे क, के, केर, केरा, अधिकरण कारक मे, पर आदि परसर्ग । एहि मे प्राचीन ओ अर्वाचीन मैथिली भाषाक सर्वथा अनुकूल देखि पड़ैछ यथा–

कं - जीव कं देइत सन्ताप ।
अजर कं बटिआ सोहओन हो ।
से - जमुआँ से पड़ल अरारि ।
सऍ - जा सऍ निन्दिआ न आबए
दोसरे बिछुड़ल देहिआ सऍ हंसा
लागि- पिआ लागि पलंगा ओछाओल
सऒ - दूर गमन सऒ साहेब आएल
जेहे भरम सऒ उबारल
सँ - जिन गर्भ सँ उबारल
क - भैइआ मिलल भतारक जनमल
केर - लेह मुक्ति केर पान
केरा - दूर देश केरा जिअरा हो ।
मे - भवन मे भेल इजोर
पर - चरनकमल पर संग

एकर अतिरिक्तो किछु शब्द परसर्गवत् व्यवहृत भेल अछि यथा–

तर - खेलइत रहलहुँ कदमतर हे ।
तल - अक्षयवृक्ष तल कोहबर
माह - पाँच रतन दल माह हे
मह - मन मह बाढ़ए दुन्द
माझ - पाँच रतन दल माझ हे
बिनु - गुरु बिनु रहल अचेत
बिच - भऔंर गोफा बिच कोहबर हे
उपर - द्वादस उपर बसए मोर बालम
संग - एकटक पिआ संग निरखहु
भीतर - गगनगढ़ भीतर रे की
पह - रमानन्द पह गेल ।

उपर्युक्त विभिन्न परसर्ग ओ परसर्गवत शब्दावलीक प्रयोग प्राचीने कालसँ मैथिलीक भाषिक वैशिष्ट्य रहल अछि । 'कर' ओ 'केरा' अवहट्ट काल सँ मिथिला मे प्रचलित परसर्ग थिक ।" सम्प्रदान कारकक परसर्ग 'लागि' मैथिलीक विशिष्ट प्रकृति थिक । विद्यापति एकर अत्यधिक प्रयोग कयलनि अछि यथा–दर्शनलागि पुजए नित काम, विद्यापति भन अपनेहि आओत सिरि शिवसिंह रस लागि, कौं लागि आनल चान्दक कला आदि । डॉ॰ [illegible] एकरा पूर्वी बोलीक निजी विशेषता कहलनि अछि ।" वस्तुतः ई मैथिली भाषाक सामान्य प्रयोग रहल अछि ।

सम्बोधन मे हे, गे, रे सविभक्तिक प्रयोग मैथिलीक हेतु सामान्य रहल अछि । सन्त कबीर भणित पदावली मे हे, रे क प्रयोग सामान्य रहल अछि यथा–

जाहु हे कोइली अगरपुर देशवा
बाट रे बटोहिआ कि तोंहीं मोर भैआ

एकर अतिरिक्त एहि पदावली मे हो, ओ लग्न सम्बोधनक स्वरूप सेहो देखि पड़ैछ यथा–

कहए कबीर सुनो भाइ साधो ।
जेहि गरभ सऒ उबारल हो साधु ।

एहि प्रकारक सम्बोधनक प्रयोग प्राचीन मैथिली मे होइत रहल अछि यथा–

भूत प्रेत पिसाच हलसित डिमिक डमरु बाज ओ ।"

एतावता कारक विभक्ति ओ परसर्गक स्वरूप सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे मैथिली भाषाक प्रकृतिक सर्वथा निदर्शन ओ प्रतिनिधित्व करैत देखल जाइछ ।

सर्वनाम

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त सर्वनाम शब्द मैथिली भाषाक प्राचीन प्रयोगक सर्वथा अनुकूल अछि । प्रयुक्त रूपावली मे मैथिली भाषाक प्रकृतिक अनुरूपता देखि पड़ैछ ।

पुरुषवाचक

पुरुषवाचक सर्वनामक उत्तम ओ मध्यमपुरुषक पृथक स्वरूप अछि मुदा अन्य पुरुषक रूपावली ओ निश्चयवाचक सर्वनामक रूपावली मे सादृश्य देखल जाइछ । तें निश्चयवाचक सर्वनामक रूपावलीक संगहि एहि पर विचार करब समीचीन ।

उत्तम पुरुष

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे हम ओ हमे तथा मऍ ओ मोऍक प्रयोग मूलरूप मे भेल अछि । यथा–

मञे तोरा पूछ भैया रे बटोहिआ ।
चढ़लहुँ हमेकनक पहाड़ ।
निरगुन हम नहि देखल हो ।
देखलहुँ मोञे गुरु केर धाम ।

मञे, हमे ओ मोञे मैथिलीक प्राचीन प्रयोग थिक । हम आधुनिको भाषा मे एकवचन प्रयोग मे भेटैत अछि आ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो तद्रूपे एकर प्रयोग देखि पड़ैछ। डॉ० शुकदेवसिंहक अनुसार 'बीजक मे प्रयुक्त हम बला सभटा रूप रूपतत्त्वक दृष्टि सँ यद्यपि बहुवचनक अछि मुदा अर्थक दृष्टिञे एकर प्रयोग प्राय: आदरार्थ ओ एकवचनमे भेल अछि। पूर्वी भाषासभक ई अपन विशिष्टता अछि जे पृथ्वीराजरासोक भाषा मे सेहो लक्ष्य कएल गेल अछि आ आधुनिक पूर्वी बोली मे सेहो जीवैत अछि।'[१] एहिठाम पूर्वी सँ हिनक तात्पर्य एक गोट भाषा मैथिली सेहो थिक तथा 'हम' क प्रयोग मैथिलीक वैशिष्ट्यक अनुरूपे सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे दृष्टिगोचर होइछ।

'हम' ओ 'मञे' केर सम्बन्धकारकीय रूप विशेषणवत् प्रयुक्त होइछ। एकर मोर, मोरा मोरि, मोरे, हमार, हमरा, ओ हमारो रूप भेटैछ जाहि मे हमारो विकृत रूप बुझना जाइछ । यथा–

मोर - कुञ्जभवन मोर नैहर साजन
मोरा - मन मोरा हर्षल तूर हे
मोरि - सेहो मोरि पूरलि आश
मोरे - सैआँ मोरे आहो
हमार - ददो ने बूझए हमार हे
हमरा - हमरा के नाम अधार हे
हमरो - हमरो पिअबा नएनमा के आगर
हमारो - पूरण भाग हमारो साहेब

उत्तमपुरुषक कर्म ओ सम्प्रदान कारकीय रूपावली मे मोहि रूप देखि पड़ैछ यथा–

मोहि - तब तब पिआ मोहि देल जमाय
जो सतगुरु मोहि सोहं लखाओल।

मध्यमपुरुष

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे मध्यमपुरुषक प्राचीन प्रयोग मे तोञे, तुअ आ तें रूप भेटैछ। ई एहि पदावलीक प्राचीनताक द्योतक थिक, यथा–

सुमति सखी तोञे करहु सिंगार ।
x x x
छाड़हु हंसा तुअ यमपुर हो ।

तें नीमा बड़ भागिनी ।

एहि मे 'तों' क प्रयोग सेहो भेल अछि जे अर्वाचीन प्रयोग अछि यथा–

तों मुरुख कछु मरम न जानए ।

मध्यमपुरुषक सम्बन्धकारकीय रूप मे तोर, तोरा, तोहरा, तोहरे रूपावली भेटैछ–

तोरा - मञे पूछु तोरा भैआ रे बटोहिआ।
तोर - कञोन रूप तोर पिय क साजन।
तोहरा - तोहरा पटुकबा प्रभुजी ।
तोहरे - सोहं तोहरे पास हे ।

एकर कर्म ओ सम्प्रदान कारकीय स्वरूप मे तोहि ओ तोही रूप भेटैछ यथा–

कहत सुनत तोहि विलम्ब न लागय ।

निश्चयवाचक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे निकटतासूचक निश्चयवाकक ई, एहि, एहो, रूप भेटैत अछि । कतोक सर्वनाम शब्द विशेषणो रूप मे प्रयुक्त भेटैछ । यथा–

ई - ई संसार असार केर धंधा (विशेषणरूप)
ई सभ जीवके कारण हो (सर्वनामरूप)
एहि- एहि पन्थ अओता सतगुरु साहेब (विशेषणरूप)
एहो- साहेब कबीर एहो मंगल गाओल (विशेषणरूप)
एहो मोर पूरल आश हे (सर्वनामरूप)

दूरवर्त्ती उल्लेखसूचक

दूरवर्त्ती उल्लेखसूचक निश्चयवाचक सर्वनाम ओ अन्यपुरुषक निम्नलिखित रूप देखि पड़ैछ जाहि मे कतोक ठाम विशेषण रूप सेहो देखि पड़ैछ, यथा–

से - से कइसे सोबइ हो ।
से प्रभु भोग लगाए ।
सो - सो मोहि कहहु बुझाए हे ।
से हे - से हे सन्त सुजान हे ।
से ओ - से ओ रहल घट घेड़ि ।
सेहो - सेहो मोरि पूरलि आश ।
ओ - की ओ करए अहार हे ।
ओहि लए उतारल ओहि देशवा ।
ओहि रे कोठरिया रामा प्रेम के पेटरिया ।

ओइ - ओइ मे लागि जाएत उजरी ओहार गोरिया ।
ओकर - ओकर डारि पात नहि शाखा ।
ता - ता पर बैठल सइआँ मोर ।
ताहि - ताहि भीतर एक सुगना बोलए रे की ।
ताही - ताही बिसराओल हो ।
तेहि - भमरा गुजर तेहि बीच हे ।
ताकर - तत्खन ताकर धन चलु ।
तिन - तिनको भरल छैन्ह प्रेम के चँगेरिआ ।
तनिकर - हांएब मञे तनिकर चेरि हो ।

दूरवर्ती उल्लेखसूचक निश्चयवाचक सर्वनाम मे हुनि शब्दक प्रयोग मैथिलीक प्राचीन प्रयोग थिक यथा–

हमे कुलकामिनि कहइते अनुचित तोहें हुनि देह उपदेशं ।

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो एकर प्रयोग एहि पदावलीक प्राचीनताक द्योतक थिक यथा–

हुनि मलिया नहि बूझए रे ।

अनिश्चयवाचक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे अनिश्चयवाचक सार्वनामिक स्वरूपक प्राणीवाचक ओ अप्राणीवाचक काहु, केओ, किछु स्वरूप दृष्टिगोचर होइछ, यथा–

काहु - काहु के न छोरत हो ।
केओ - केओ नहि आपन हो ।
किछु - संग किछु नहि जाएत हो ।

निजवाचक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे निजवाचक सर्वनामक अपन, आपन ओ निज स्वरूप देखि पड़ैछ, यथा–

अपन - अपन अपन अपनओलक हो
आपन - प्रियतम आपन रे की
निज - राखु पिआ निज शरण

सम्बन्धवाचक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सम्बन्धवाचक सर्वनामक निम्नरूप सभ देखि पड़ैछ, यथा–

जे - जे नर भगति बिहून (विशेषणरूप)
जो - जो गाबए सतभाव
जेकरहु - जेकरहु अङना झिलमिलिआ
जनिकं - जनिके अङना जम्हीरिया
जेहि - जेहि दिन अओता चपरासी
जा - जा मञो निन्दिआ न आबए
जिन - जिन कायागढ़ मे रचलन्हि धमठरिया
जाहि - जाहि मन्दिल मे एतेक सुख कयलहु
जेहे - जेहे गरभ मञो उबारल

ई समस्त प्रयोग मैथिलीक प्राचीन प्रयोग थिक ।

प्रश्नवाचक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रश्नवाचक ई रूप सभ भेटैछ यथा–

कओन - कओन मिरगा खा गेल खेत
केकरा - केकरा बस जीव पड़ि गेल
केकर - केकर करब भरोसा
का - का संग रसलहुँ का संग बसलहुँ
की - की ओ करए अहार हे
केकरी - केकरी ओहरिआ हम लागब
केहि - केहि विधि ससुरे जाएब
कथी - कथी लए अइसन चालओ
काहु - काहु न राखय नेराहो
काहू - काहू के न छोरत हो
कोना - कोना घर जाएब रे की
किए - कहाँ गेल किआए गेल
कोन - कोन पुरुष केर नारि हे।
कओन - कओन विधि उतरब पार हे ।

मैथिलीक प्राचीन प्रयोग तथा लोकभाषा मे ई समस्त प्रयोग सामान्य अछि ।

विशेषण

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त विशेषण शब्द सभ मैथिलीक प्राचीन प्रयोगक अनुकूल अछि तथा एकरो प्रयोग एहि पदावलीक मैथिली तत्त्व कें सम्पुष्ट करैछ। गुणवाचक विशेषणक स्वरूप लिंगक अनुरूप बदलैत देखि पड़ैछ यथा सुन्दर-सुन्दरि ।

सार्वनामिक विशेषणक रूप पर सेहो लिंगक प्रभाव देखि पड़ैछ यथा–मोर–मोरि आदि । तथापि मैथिली तत्त्वक दृष्टिऍ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक संख्यावाची विशेषण विशेष महत्त्वक अछि । संख्यावाची विशेषणक विविध रूपावली मैथिलीक प्रकृतिक सर्वथा अनुरूप देखि पड़ैछ, यथा–

एक - एकहि पलंग रहु सोइ हे ।
दुइ - देवहु हे दुलहिन दुइ फल हे।
दाउ - अर्द्ध उर्द्ध दाउ लाकानिआँ
दुनू - पाप पुण्य दुनू बनिआ बैठल
तीनि - समधी तीनि सेआन
चारि - चारि भानु कामिनी केर शोभा
चारू - चारू कोन चउमुख दिअरा
पाँच - पकड़ि मगाएब पाँचो चोर
चौदह - चौदहो नागिन के बीच
सोरह - सोरह पनिहार हो
साठि - बन्धन तीन सए साठि
सत्तरि- सत्तरि कोरो बहत्तरि बतिया
बहत्तरि-तथैव
चौरासी - लक्ष चौरासी जीव रिनियाँ
सए - बन्धन तीन सए साठि
लक्ष - लक्ष चौरासी जीव रिनियाँ

एहि मे दुइ, दोउ, दुनू तीनि, चारि, चारु, पाँचो, चौदह, सोरह, साठि सतरि, बहत्तरि, सए इत्यादि विशुद्ध मैथिली रूप थिक आ अपन एही रूप मे आधुनिक भाषा मे प्रयुक्त अछि तथा प्राचीनो मैथिली मे भेंटैत अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे बारह, चौदह, सोरह आदि हकारान्त संख्यावाची विशेषणक प्रयोगक सम्बन्ध मे डॉ० शुकदेव सिंह कबीर बीजकक भाषाशास्त्रीय अध्ययन मे कहलनि अछि–'हकारान्त चाहे जतय कतहु सँ आएल हो मुदा पूर्वी उच्चारण प्रकृतिक अनुकूल अछि, एहि हेतुएँ जे प्राचीन मैथिली साहित्य मे एहन रूप भेंटि जाइत अछि ।'[13] अवश्ये हकारान्त प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे मैथिली तत्त्व केँ सम्पुष्ट करैछ ।

क्रमवाचक संख्यावाची विशेषण मे पहिल, दोसर, चारिम, पाँचम आदि प्रयोग मैथिली प्रकृतिक सर्वथा अनुसरण करैछ ।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणक रूप मे 'सब'केर प्रयोग भेल अछि ।

सब - सुनहु सभ सन्त सुजान ।

इहो प्रयोग मैथिलीक प्रकृतिक अनुकूल अछि ।

एकर अतिरिक्त सकल, नाना आदि अनिश्चित संख्यावाची विशेषणक प्रयोग सेहो देखि पड़ैछ ।

सकल - सकल मनोरथ पूरल
नाना - नाना बरन मोहाओन

रीतिवाचक सार्वनामिक विशेषणहु मे किछु प्रयोग एहन देखि पड़ैछ जे मैथिलीक अत्यन्त प्राचीन प्रयोग थिक यथा–

तइसन तइसन शब्द सुनाए हे
जइसन - जइसन पुरइन बसु पार हे
अइसन - कथीलए अइसन चालकों अनधन हे
अइसनि - अइसनि जुगुति लखाय

मैथिलीक आदि गद्यग्रन्थ ज्योतिरीश्वरठाकुरक **वर्णरत्नाकर** मे अइसन, कइसन सार्वनाभिक विशेषणक बहुल प्रयोग भेल अछि । मैथिलीक सार्वनामिक विशेषणक ई विशिष्ट स्वरूप थिक । आधुनिको बोली मे एहि सार्वनामिक विशेषण सभक प्रयोग सामान्य रूपें होइछ।

क्रिया

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे क्रियापदक रूपावली मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप कर्त्ताक पुरुष, स्तरीयता, लिंग तथा क्रियाक विषय मे कर्त्ताक वृत्ति अर्थात् ज्ञापन, आज्ञा, कामना, संभावना, कर्मक पुरुष, स्तरीयता तथा कालक द्योतन करैत अछि । एहि तरहें नाना अनुषंगी भावक द्योतन करबाक कारणें क्रियापदक स्वरूप अत्यन्त जटिल देखि पड़ैछ, जे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली विषयक अध्ययनक पृथके क्षेत्र थिक । तथापि एहिठाम क्रियापदक विशिष्ट मैथिली तत्त्वक निरूपण विचारणीय अछि ।

भूतकालक रूपक निर्माण मे 'ल' प्रत्ययान्त रूपक बहुलता अछि यथा कायाघर रहल भुलाए, सेओ रहल घट घेड़ि, शशि रहल कुम्हलाए, सकल मनोरथ पूरल, जीव के भेल उबार, सुधि गेल मोर, प्रियतम कतहु नहि देखल आदि । बीजकक भाषाशास्त्रीय अध्ययनक क्रम मे डॉ० शुक्रदेव सिंह कहलनि अछि जे 'ल' वला रूप बीजकक अपन विशेषता अछि । ई रूप पर्याप्त प्राचीन थिक । प्राचीन राजस्थानी, कीर्तिलताक अवहट्ट मे ई रूप लक्षित अछि। मैथिली ओ भोजपुरीक भूत क्रियाक निर्माण मे एकर प्रयोगाधिक्य अछि ।[14] एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भूतकालक 'ल' प्रत्ययान्त क्रियापद एकर प्राचीनता ओ मैथिली तत्त्वक विशिष्ट निदर्शन थिक ।

भूतकालक विस्तारित रूप मे उत्तम पुरुष कर्त्ता रहला उत्तर रहलहुँ, बसलहुँ, हँसलहुँ, घुमलहुँ, गेलहुँ आदि प्रयोग देखि पड़ैत अछि जे मैथिली क्रियापदक अनुरूपें अछि ।

वर्त्तमानकालिक रूप मे करए,देखए, आबए, मेटाबए, अरुझाबय, छाबए, सिखाबए, निरेखय, ताकए आदि देखि पड़ैछ ।

भविष्यतकालद्योतक अन्यपुरुषक क्रियापद मे 'अत तथा 'इत' प्रत्ययान्त रूपक बहुल प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भेल अछि । एहन प्रयोग मैथिलीक विशुद्ध प्रयोग थिक यथा–

जगत्र लोग हँसत रे की ।

एहिना होयत, आनत आदि रूप सेहो भेटैछ ।

सन्नन्त

मैथिली भाषाक ई अन्यतम विशेषता अछि जे एहि मे वर्त्तमान कृदन्त धातु मे 'इत' प्रत्ययक योग सँ बनैत अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एहि सन्नन्त प्रयोग एकर मैथिली भाषिक आधारक विशिष्ट तत्वक निरूपण करैछ यथा–

फुलबा लोढ़इते हो रामा हो बरिखय अति बुन्दबा रे की ।
अगिआ लगइत जड़ि जाए
पिसइत मनुआ लागल रे की
सभ के अछइते यम लए जाएत रे की
तोहरे अछइते कामिनि रोबए रे की ।

सहायिका क्रिया

सहायिका क्रियाक रूप मे मैथिलीक अछ, छ, रह तथा हो धातुक रूपावलीक प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भेल अछि यथा–

जब हम अछलहुँ मन वैरागी ।
अपने जाइछी साहेब देश-विदेशवा
सुगना बोलइते छल
प्रथमहि छलहुँ हम आदि पुरुष संग
कओन वरण तोर पिआ छौ सखिआ
चान्द सुरुज उहाँ अछि नाही
तोहरे अछइते कामिनि रोबए रे की ।

अकर्मक ओ सकर्मक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे क्रियापदक अकर्मक ओ सकर्मक दुहू रूपक प्रयोग भेल अछि यथा–

सकर्मक – फूलक शयुया बिछाएब ।
हसि पिआ देल सोहाग ।
अकर्मक – कामिनि रोबए रे की ।
जगत्र लोग हँसत रे की ।

नामधातु

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे अनेक नामधातुक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा– बनिजब, सिनुरायब, अधिकाइ आदि ।

प्रेरणार्थक क्रिया

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली म प्रेरणार्थक क्रियापदक सेहो अनेक उदाहरण भेटैछ, यथा–

लजाएब-लजबाएब – कुटुम लजबाबहु हो ।
बैसब – बैठाएब – पुरहर बैठाओल
नीपब-निपाएब – घर निपाओल
काटब-कटाएब – खरही कटाओल

लिंग

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे स्त्रीलिंग ओ पुलिंगक अवस्थिति देखि पड़ैछ। कर्त्ताक लिंगक प्रभाव विशेषण ओ क्रियापद दुहू पर पड़ैत देखि पड़ैछ यथा–

घर से बाहर भेलीं सुनरी भउजिया ।
सुतलि रहलि मञे पिआ संग सेजिआ ।
ओइ मे लागि जाएत उजरी ओहार गोरिया ।

लिंग परिवर्त्तनक हेतु बहुधा स्त्री प्रत्ययक प्रयोग देखि पड़ैछ ।

वचन

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे क्रियापद पर वचनक प्रभाव मैथिली भाषाक अनुरूपे सर्वथा नहि देखि पड़ैछ जे एकर मैथिली तत्त्वक द्योतन करैछ । बहुवचनक रूप देखयबाक हेतु बहुधा परसर्ग अथवा प्रत्ययक प्रयोग भेल अछि । यथा–

सब सखिआ मिलि एक घर जाएब ।
सन्तोजन करु न विचार ।

क्रियाविशेषण ओ अव्यय

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त क्रिया विशेषण ओ अव्ययक प्रकृति सेहो किछु मैथिलीक परिनिष्ठित भाषा प्रयोग तथा किछु प्रचलित लोकप्रयोगक अनुरूपे देखि पड़ैछ यथा–

जब-जब – जब जब मन मोरा आलस आबए
तब गुरु देल जगाए हे ।

प्राचीन मैथिली प्रयोग मे बहुधा जब-तबक हेतु जबे-तबे प्रयोग देखि पड़ैछ यथा विद्यापतिक एकगोट पद अछि–

चान्दबदनि धनि, चान्द उगत जबे ।
दुहुक उजोर दुरहु सञो लखत सबे ।[१५]

एहिना किछु अन्य प्रयोग द्रष्टव्य अछि–

आजु	-	आजु सुदिन शुभ-शुभ घड़ी
एकसर	-	एकसर हम नहि जाएब हे
एतबे	-	एतबे वचनिञा सुनलनि साहेब
तत्खन	-	तत्खन ताकर थन चलु
दिनदिन	-	दिनदिन परम औनन्द
एमरीक	-	एमरीक गओना बहुरि नहिआओना

स्थिति सूचक अव्यय जहाँ, तहाँ, इहाँ, ओहाँ, कहाँ आदिक बहुल प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे देखि पड़ैछ, यथा–

जहाँ	-	जहाँ बसु बालमु रे की ।
तहाँ	-	तहाँ प्रभु रचल धमार ।
कहाँ	-	कहाँ गेल किए गेल ।
इहाँ	-	इहाँ न पैंच उधार हे ।
ओहाँ	-	ओहाँ से करार करि आएल ।

एहि अव्ययसभक भरखरि लौकिक प्रयोग देखि पड़ैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त किछु प्रयोग लोकगीत मे अत्यन्त प्रशस्त रहल अछि यथा–

उहमा	-	उहमा से आएल संदेश हे ।
तहमा	-	तहमा पाओल बिसराम हे ।
जहमा	-	जहमा रोग न शोक ।

एहि स्थितिसूचक अव्ययक जहमा, तहमा, कहमा आदि रूपक भरखरि प्रयोग मैथिली लोकगीत मे होइत रहल अछि यथा–

दुइ मिलि गेलौं ब्राह्मण एकसर अएलहुँ
'कहमा छोड़ल छोट भाए ।[१६]

एही तरहें दिशासूचक अव्यय 'दूर', रीतिवाचक अव्यय 'जञो', निषेधवाचक 'न'नहि' 'नाही' 'मत' कारणवाचक 'किअए', 'कोनो, परिणामवाचक 'किछु' 'बहुत', संयोजक 'अओर' तथा विस्मयादिबोधक हे, रे, हो' आदिक स्थिति सेहो देखि पड़ैछ यथा–

दूर	-	ससुरा बसए बड़ी दूर हे ।
जञो	-	जञो हम जनितहुँ गुरु मोग अआंता
नाही	-	अन्तकाल कोइ नाही हो
नहि	-	उहाँ नहि वरन विचार हे ।
न	-	फेरु न भुलब करार हे ।
हे	-	सखिआ हे, भिजि गेल पाँचो रंग साड़ी।

उपसर्ग

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे संस्कृते सँ आएल पारम्परिक उपसर्गक स्थिति देखि पड़ैछ यथा–

अ	-	अखण्ड	अगोचर	अमोल	अगम	अविनाशी	अहार
अन	-	अनहद	अनत				
अभि	-	अभिअंतर	अभिमान				
अव	-	अवगुन	अवघट				
कु	-	कुबुधि	कुमतिया	कुसंग			
दुर	-	दुरमतिया					
वि	-	वियोग					
स	-	सनाथ	सघन				
सं	-	संताप	संजोग				
सु	-	सुवास	सुजान ।				



प्रत्ययविधान

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त सुप् (कारकविभक्ति) तथा तिङ (विविध कालद्योतक क्रियार्थक) प्रत्यय मैथिली भाषाक सामान्य प्रकृतिक अनुसरण करैछ जकर विवेचन पूर्वहि कयल जा चुकल अछि । शब्दसाधनक दृष्टिञे कृत ओ तद्धित प्रत्यय सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे विशिष्ट स्वरूपक अछि । प्रत्ययविधान पर विशद् विवेचनक हेतु डॉ० सुभद्र झा[१७] ओ डॉ० सुनीति कुमार चटर्जीक[१८] मौलिक ओ सूक्ष्म अवधारणा द्रष्टव्य अछि। एतय सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त विशिष्ट कृत ओ तद्धित प्रत्ययकेँ सोदाहरण प्रस्तुत कयल जाइछ । एहि सन्दर्भ मे ई तथ्य अत्यन्त विचारणीय अछि जे किछु प्रत्यय केवल तद्धितान्ते शब्दक निर्माण करैछ तऽ किछु केवल कृदन्ते । मुदा किछु प्रत्यय एके संग कृदन्त ओ तद्वितान्त दूहू प्रकारक शब्दसाधन मे संलग्न देखि पड़ैछ । एकर अतिरिक्त इहो तथ्य सर्वथा स्पष्ट होइछ जे एके शब्द मे क्रमशः विभिन्न प्रत्ययक संयोग होइत जयबाक कारणें विभिन्न शब्दक निर्माण होइत जाइछ आ अर्थ तथा रूपक परिवर्त्तन होइत चलैछ । यथा–

'इआ' प्रत्ययक योग सँ कहार (जात्यर्थक) शब्द सँ कहरिआ (कहारक काज कयनिहार)

शब्दक निर्माण भेल अछि तथा एहि संज्ञाक रूप परिवर्त्तन मे 'ई' प्रत्यय तद्धित अछि। पुरा जखन यैह प्रत्यय धुनिआँ शब्द व्युत्पन्न करैछ तँ 'कृत' प्रत्ययक स्वरूप मे उपस्थित होइछ।

एहिना 'ठक' धातु मे 'अ' कृत प्रत्ययक योग सँ 'ठक' संज्ञाक निर्माण होइछ जाहि सँ स्त्रीप्रत्यय 'नी' लगला सँ ठकनी ओ पुनश्च इआ प्रत्ययक योग सँ ठकनिआँ शब्द बनैछ। एतावता एके गोट धातु मे क्रमशः विभिन्न प्रत्ययक योग सँ शब्द-साधना चलैत देखल जा सकैछ। एहिना किछु अन्य प्रत्ययक स्थिति ओ निर्मित शब्दक उदाहरण अछि–

आर	-	घरुआर					
इआ	-	सखिआ	रतिआ	डोलिआ	ओहरिआ	खेबैआ	धोबिआ
इआ	-	समदौनिआँ	रिनिआँ	निनिआँ	ठकनिआँ		
इन	-	बैरिन	साँपिन	हँसिन			
इनि	-	दुलहिनि					
उआ	-	नटुआ					
उनि	-	भयाउनि					
ट	-	खेबट					
पन	-	बालापन					
बा	-	डोलबा	घरबा				
रा	-	जिअरा	हथरा				
री	-	पियारी					
लाली	-	पहिला	पछिली				
हार	-	ठकहार	चलनिहार	सिरजनिहार			

उपरोक्त उदाहरण सभसँ इहो स्पष्ट होइछ जे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे स्वार्थक प्रत्ययक सेहो बाहुल्य अछि। एहि मे प्रयुक्त स्वार्थक प्रत्यय खास कय संज्ञाक लघु, गुरु ओ गुरुतम रूप परिवर्त्तन तथा छन्दबद्धताक हेतु शब्द स्वरूपक निर्माणक हेतु प्रयुक्त भेल अछि।

ध्वनि परिवर्त्तन

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे ध्वनि-परिवर्त्तनक विभिन्न दिशाक आलेख देखि पड़ैछ, यथा–

स्वरागम

सुषुम्ना	-	सुखमन	प्रीति	-	पिरीतिया
धैर्य	-	धैरज	कर्म	-	करम
भ्रम	-	भरम	वर्ण	-	बरन

प्राण	-	परान	प्रतीति	-	परतीति
दुर्जन	-	दुरजन	यत्न	-	यतन
स्पर्श	-	परस	सृजन	-	सिरजन
आत्म	-	आतम			

लोप

दीप	-	दीअ	-	दीआ	-	भर्त्तार	-	भतार
कटोरिका	-	कटोरी	-	पत्रिका	-	पत्तिआ	-	पाती
सर्व	-	सब						

विकार

समीकरण

गर्गरी	-	गगरी	-	गगरिआ
शूर्प	-	सुप्प	-	सूप

क्षतिपूरक दीर्घीकरण

अष्ट	-	आठ	अद्य	-	आज
कर्म	-	काज	यस्य	-	जासु
लज्जा	-	लाज	निद्रा	-	नींद
अग्नि	-	आगि	यंत्र	-	जाँत
वर्त्तिका	-	बाती			

सरलीकरण

वाद्य	-	बाजन	चित्त	-	चित
अलक्ष्य	-	अलख	वत्स-बच्छ	-	बाछा

महाप्राणीकरण

गृह	-	घर

मूर्धन्यीकरण

ग्रन्थि	-	गँठि	-	गेठ	-	गेँठि
मन्दिर	-	मण्डिल				
स्थान	-	ठाम	-	ठाँइ	-	ठइयाँ

पोषीकरण

शारिका	-	साहिआ	-	साड़ी
शुक	-	सुग	-	सुग्गा
पुरोधर	-	पुरहड़	-	पुरहर
कोट्टपाल	-	कोतबाल		
कपाट	-	कबाड़		
प्रकट	-	परगट		
प्रकाश	-	परगास		

अकारण नासिक्यीकरण

पथ	-	पन्थ	पक्षी	-	पंछी

क्षतिपूरक नासिक्यीकरण

निद्रा	-	नींद	वक्रनाल	-	बंकनाल

अन्य विकार

ऋ	-	इ	-	भातृ	-	भाइ		
क्ष	-	ख	-	क्षेत्र	-	खेत		
म	-	व	-	गमन	-	गवन	-	गओन
इ	-	उ	-	बिन्दु	-	बूंद,		
उ	-	ओ	-	सुवर्ण	-	सोना		
ऊ	-	ओ	-	मूल्य	-	मोल		
ध्य	-	झ	-	मध्यधार	-	मज्झधार	-	मझधार
श	-	स - ह	-	द्वादश	-	बारह, चतुर्दश-		चौदह

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषातात्त्विक विवेचन सँ स्पष्ट अछि जे सन्त कबीरक अभिव्यक्तिक एकटा विशिष्ट माध्यमक रूप मे मैथिली भाषा सेहो गृहीत छल आ एहि भाषाक माध्यमे हिनक पन्थ प्रचार ओ आध्यात्मिक ज्ञानक विपुल अंश सुदूर प्राचीनकाल सँ संरक्षित आबि रहल अछि । सन्त कबीरक काव्यक अध्ययनक क्रम मे विद्वानलोकनि जखन कखनो हिनक मैथिली तत्त्व कें देखलनि-परखलनि तँ विशेषकाल एकरा अवधी, भोजपुरी अथवा सोझे पूर्वी कहि अवडेरैत रहलाह जकर परिणाम ई भेल जे हिनक भाषाक मैथिली तत्त्व सर्वथा अपवारित रहल । समय-समय पर किछु अध्येता ओ विद्वान अवश्य एहि दिस इंगित कयलनि मुदा सन्त कबीरक विशाल साहित्यिक परिसर मे यत्र तत्र छिड़िआएल, अदृष्ट ओ अनधीत मैथिली पदावलीक सम्पूर्णतामे अध्ययनक अभावक कारणें हुनकालोकनिक

अवधारणा मान्यताक स्थिति मे नहि आबि सकल । मुदा सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक आधार पर आब स्पष्ट रूपें कहल जा सकैछ जे हिनक एहि पदावलीक मुख्यतया भाषा मैथिली थिक । एकर संज्ञारूप, कारक विभक्ति ओ परसर्ग, सर्वनाम रूपावली, क्रियापद विशेषण क्रिया विशेषण ओ अव्यय, लिंग ओ वचनक प्रभाव परिवर्तन शब्दसाधक उपसर्ग ओ प्रत्यय विधान तथा ध्वनि परिवर्तनक विभिन्न दिशा स्पष्टतः एकर मैथिली तत्त्व ओ मैथिली स्वरूप कें प्रमाणित करैछ । एहि पदावली मे मैथिलीक प्राचीन ओ अर्वाचीन दुहू स्वरूपक स्पष्ट विस्तीर्ण दीखैत। अवश्ये एहि पदावली मे यत्रतत्र अन्यान्य भाषाक प्रभाव देखि पड़ैछ मुदा से एहि सन्तक वृहत्तर काव्य परिसर ओ मैथिली पदावली पर नेपाली भाषाक प्रभाव कहल जा सकैछ ।

एहि अध्याय मे भाषातात्त्विक विवेचनक आधार सम्पूर्ण कबीर साहित्य नहि, अपितु प्रबन्ध मे प्रयुक्त सन्त कबीर भणित पदावलीए कें मूलरूपें राखल गेल अछि ।

सन्दर्भ–संकेत

१. डॉ० भगवत प्रसाद दुबे, **कबीर काव्य का भाषाशास्त्रीय अध्ययन**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली-६, १९६९ ई० पृ०-२३४ ।

२. डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी–**ओ० डे० बे० लै०** मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली - ७ १९२६ ई० भाल्यूम-२, पृ०-९२ ।

Kabir was an inhabitant of the Bhojpuria tract but following the practice of the Hindustani poets of the times, he generally used Braj-bhakha and occasionally Awadhi. His Braj-bhakha at times betrays an eastern (Bhojpuria) form here and there and when he employs his own Bhojpuria dialect. Braj-bhakha and other western forms frequently show themselves."

३. डॉ० श्याम सुन्दर दास, सं० कबीर **ग्रन्थावली** नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, चौदहम संस्करण सं०-२०३४ विक्रमी, भूमिका पृ०-६१ ।

४. देखू क्र०सं० -१, पृ०-२३४-२३५ ।

५. डॉ० गुलाब राय **कबीर एक विश्लेषण** मे छपल निबन्ध "कबीर का काव्यकौशल" सँ उद्धृत, पब्लिकेशन डिविजन, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, ओल्ड सेक्रेटेरियट दिल्ली-८, १९५८ ई० ।

६. विलियम डायर एस० जे०, **कबीर सिंगर ऑफ द डिभाइन**, नवज्योति प्रकाशन पटना-१, पृ०-१ ।

७. रामनन्दन दास, **श्री सदगुरु कबीर साहब**, महन्थ रामावतार साहब, सतमलपुर समस्तीपुर १९७४ ई० पृ०-१५५ ।

८. डॉ० शुकदेव सिंह, **कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन**, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी १९७८ ई० पृ०-११० ।

९. तत्रैव-पृ०-३२ ।

१०. डॉ० सुभद्र झा, **जर्नल आफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार**, वाल्यूम-[illegible] १९५५ [illegible] पृ०-३।

११. तत्रैव, पृ०-४ ।

१२. मोतीलाल दास-हस्तलिखित पाण्डुलिपिकार, **आदि सन्देशा सन्त कबीर**, गुरु महात्मा साहब, मौजे-खवासपुर, जिला-आरा, १९२७ ई०, वचन-९, शब्द-४, पृ०-[illegible]

१३. भगवती प्रसाद मिश्र सं० **कबीर भजनमाला सागर** भोलानाथ पुस्तकालय, १३, महात्मागांधी रोड कलकत्ता-७, शब्द पृ०-७ ।

१४. कबीरपन्थी मैथिल सन्त सँ प्राप्त रूप ।

१५. डॉ० रामदेव झा, **मैथिली शैव साहित्यक**, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णापुरी, पटना पृ०-१८०।

१६. तत्रैव, पृ०-१४९ ।

१७. तत्रैव, पृ०-१२१ ।

१८. गंगाशरण शास्त्री-सं-**बीजक (कबीरचौरा पाठ) कबीरवाणी** प्रकाशन केन्द्र, कबीर चौरा मठ, वाराणसी १९८२ ई० । वसंत-११-१२ । पृ०-३३३ ।

१९. तत्रैव, बेहलि-१, पृ०-३४४ ।

२०. तत्रैव, चाचर-२, पृ०-३४२ ।

२१. तत्रैव, बसंत-१२, पृ०-३३४ ।

२२. तत्रैव, बसंत-९, पृ०-३३० ।

२३. तत्रैव कहरा-१०, पृ०-३१६ ।

२४. तत्रैव, शब्द-४, पृ०-१२५ ।

२५. हजारी प्रसाद द्विवेदी-**कबीर,** राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, १९८५ ई०, परिशिष्ट-२ पद-२०७ पृ०-२८३ ।

२६. कबीरपन्थी साधु सँ प्राप्त पाठ (क) तुलनीय क्र०सं०-२५, पद-८, पृ०-२०१ । (ख) **कबीर भजन माला सागर,** पृ०-७६-७७ ।

२७. कबीरक पद ''मसि कागद छूयौ नहि कलम गह्यो नहि हाथ ।''

२८. देखू-क्र० सं०-१, पृ०-२५७ ।

२९. देखू-क्र०सं-८, प्रस्तावना, पृ०-१२ ।

३०. तत्रैव, प्रस्तावना, पृ०-१३ ।

३१. तत्रैव

३२. तत्रैव, प्रस्तावना, पृ०-१२ ।

३३. तत्रैव

३४. विद्यापति [illegible] सं० **[illegible]**, [illegible] प्रकाशन [illegible] प्रेस [illegible] ई० गीत सं० ३१ ।

३५. डॉ० [illegible] झा-सं०-**[illegible]**, मैथिली अकादमी, पटना [illegible] ई० पृ० [illegible] ।

३६. डॉ० [illegible] झा सं० **[illegible] एवं गीत [illegible]** मिथिला प्रकाशन [illegible] ई० पृ० [illegible]

३७. देखू क्र०सं० ८ पृ० ३३-३४ ।

३८. [illegible] झा सं० **मैथिली प्राचीन गीत** [illegible] प्रकाशन [illegible] ई० पद सं०-१०५ ।

३९. तत्रैव पद सं०-११८ ।

४०. तत्रैव पद सं०-१०४ ।

४१. तत्रैव पद सं०-१२२ ।

४२. देखू क्र० सं०-१२ वचन-[illegible] मंगल-[illegible] पृ० [illegible]

४३. तत्रैव, वचन-६, मंगल-५६, पृ०-९२ ।

४४. तत्रैव, वचन-६, मंगल-३९, पृ०-७९ ।

४५. तत्रैव, वचन-६, मंगल-५६, पृ०-९२ ।

४६. तत्रैव वचन-६, मंगल-३९, पृ०-७९ ।

४७. तत्रैव, वचन-६ मंगल-५६, पृ०-९२ ।

४८. बाबूराम सक्सेना-सं० **कीर्तिलता** नागरी प्रचारिणी सभा संवत-२०३२ द्वितीय पल्लव-लोअन कोरा वाल्हा लच्छी के विवसाय ।

४९. देखू क्र०सं०८, पृ०-४५, पाद टिप्पणी ।

५०. देखू क्र० सं०-१५, पृ०११४ ।

५१. देखू, क्र०सं०८, पृ०-५६-५७ ।

५२. श्री गोविन्द झा-सं० **विद्यापति-गीतावली,** मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ई० पद सं०-५२८ ।

५३. देखू, क्र० सं०-८, पृ०-५९ ।

५४. तत्रैव, पृ०-८० ।

५५. देखू, क्र० सं०-५२, पद सं०-२१३ ।

५६. बालगोविन्द झा ''व्यथित'', **मैथिली ग्रामगीत**, मिथिलांचल प्रकाशन, दरभंगा, १९६९ ई०, पद सं०-४९ ।

५७. डॉ० सुभद्र झा, **द फारमेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज**, मुंशीराम मनोहर लाल पब्लिशर्स प्राइवेट लि०, नई दिल्ली, १९८५ ई० पृ०-१९५-२०४ ।

५८. देखू क्र० सं०-२, पृ०-६४९-७०१ ।

षष्ठ अध्याय

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति गीतक भाषाक तुलना

डॉ० रामकुमार वर्मा सन्त कबीरक प्रादुर्भाव काल १३९७ ई० आ देहावसान काल १५१८ ई० मानलनि अछि। विभिन्न विद्वान महाकवि विद्यापतिक समय (१३५०-१४४० ई०) मानैत छथि। एतावता महाकवि विद्यापति सन्त कबीरक वरीय समसामयिक कहल जा सकैत छथि।

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न महाकवि विद्यापति केँ मैथिली साहित्यक मध्यकालक विशिष्ट युगस्रष्टा मानल जाइत छनि। संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट ओ मैथिली पर समान अधिकार रखनिहार महाकवि विद्यापतिक अक्षय कीर्तिक आधार अछि हिनक मैथिली पदावली, जाहि मे मुख्यतः राधा आ कृष्णक प्रणयलीलाक शास्त्रीय चित्रण भेल अछि। हिनक कोमलकान्त पदावली वैयक्तिकता, भावात्मकता, संक्षिप्तता, संगीतात्मकता तथा सरलताक अद्‌भुत निदर्शन प्रस्तुत करैछ। वर्ण्य विषयक दृष्टिऍ हिनक पदावली एक दिस जँ हिनका रससिद्ध शिष्ट एवं मर्यादापूर्ण शृंगारी कविक रूप मे प्रतिष्ठापित कयलक तँ दोसर दिस भक्त कविक रूप मे सेहो ई अपन पदावली साहित्यक माध्यमे ख्यात भेलाह। लोकाचार सँ सम्बद्ध हिनक व्यावहारिक पद हिनका मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक विशिष्ट अध्येता प्रमाणित कयलक। हिनक पदावलीक भाषा-सौष्ठव, सुललित पदविन्यास, हृदयग्राही रसात्मकता, प्रभावशाली अलंकार-योजना, सुकुमार भावाभिव्यंजना तथा सुमधुर संगीतमयता एकरा मध्यकालीन मैथिली साहित्यक उत्कृष्टतम कृति साबित करैछ। स्वभावतः महाकवि विद्यापति मिथिला-मैथिलक जातीय एवं सांस्कृतिक गरिमाक मानबिन्दु एवं साहित्यिक जागरणक प्रतीक चिन्ह बनि गेल छथि आ क्रमशः एहि मैथिल कवि कोकिलक काकली मिथिलांचले नहि अपितु सम्पूर्ण पूर्वांचल ओ भारतवर्ष मे अनुगुञ्जित भेल, आ वृहत भारतीय साहित्य केँ अपन प्रभाव-परिसर मे परिगृहीत कय लेलक।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषा, शैली ओ छन्द पर विद्यापतिक भाषा, शैली ओ छन्दक स्पष्ट छाप देखि पड़ैछ। सन्त कबीर निर्गुण ब्रह्मक उपासक होयबाक कारणें जाहि पदावलीक रचना कयलनि ताहि मे हुनक उद्देश्य ब्रह्मानन्दक प्राप्ति छल, मुदा महाकवि विद्यापतिक उद्देश्य एहि सँ सर्वथा भिन्न देखि पड़ैछ। सगुणोपासक होयबाक कारणें हिनक पदावलीक उद्देश्य ब्रह्मानन्दक प्राप्ति नहि, अपितु लोकानुरंजनक हेतु ब्रह्मानन्द सहोदर रसक प्राप्ति मात्र रहल। तें हिनक पदावली साहित्य मे शास्त्रीय दृष्टि सँ रसक साङ्गोपाङ्ग अभिव्यंजना भेल अछि। सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे जतय आध्यात्मिक ओ साधनापक्षीय सन्दर्भक बाहुल्य भेटैछ, ओतहि महाकवि विद्यापतिक पदावली मे पौराणिक सन्दर्भक विशिष्टता अछि। तथापि लोकजगत सँ सम्पृक्त सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापतिक पदावली मे अनेकठाम लोकपक्षीय प्रतीकक समानता देखि पड़ैछ। सन्त कबीर रहस्यवादी काव्य परम्पराक आचार्यक रूप मे प्रतिष्ठित छथि आ महाकवि विद्यापतिक पर

ते सेहो रहस्यवादी [illegible] पदावली मे [illegible] अछि।

सन्त कबीर ओ महाकवि विद्यापति दुनू गोटे लोकजीवन सँ [illegible] सन्त कबीर [illegible] [illegible] विद्यापति [illegible] [illegible] केँ [illegible] खड़ीबोली आदि भाषा हिनक पदावली केँ [illegible] [illegible] महाकवि विद्यापतिक भाषाक [illegible] [illegible] रहल।

दुनू महाकविक भाषाक तुलनात्मक अध्ययन सँ हिनका दुनूक भाषा-प्रयोगक [illegible] विशिष्टता समक्ष आबि सकैछ। तुलनात्मक अध्ययनक दृष्टिकोण सँ हिनका दुनू गोटेक भाषाक दु गोट पक्ष विचारणीय भए जाइछ–

(क) अभिव्यक्ति पक्ष ओ

(ख) व्याकरणिक पक्ष।

अभिव्यक्ति पक्ष

अभिव्यक्ति पक्ष सँ तात्पर्य सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावलीक साहित्यिक भाषा सँ अछि। भाषा अभिव्यक्तिक विशिष्ट माध्यम थिक। अभिव्यक्तिक ई माध्यम साहित्यशास्त्रीय उपादान सँ सम्बलित भए काव्यक स्वरूप ग्रहण करैछ तँ एहि भाषा केँ कविक काव्यभाषा सेहो कहल जा सकैछ। एहि भाषा प्रयोगक दृष्टिऍ दुनू रचनाकारक [illegible] अलंकारयोजना, छन्दविधान, सन्दर्भनियोजन, प्रतीकात्मकता, शैली आदिक तुलना सँ दुनू पदावलीक भाषाक शास्त्रीय स्वरूपक उद्‌घाटन संभव अछि। सन्त कबीर केँ रहस्यवादी रचनाधाराक जनक मानल जाइत अछि आ महाकवि विद्यापतियो केँ [illegible] विद्वान रहस्यवादी कवि मानलथिन अछि। दुनूक रहस्यवादक प्रभाव हिनकालोकनिक भाषा-प्रयोग पर [illegible] अछि तें रहस्यवादक आलोक मे दुनू महाकविक भाषा पर सेहो विचार कर्तव्य थिक। महाकवि विद्यापतिक दृश्यकूट आ सन्त कबीरक उलटबाँसी हिनकालोकनिक उक्ति-वैचित्र्यक हेतु अत्यन्त प्रसिद्ध रहल अछि। एहि उक्ति-वैचित्र्यक प्रभाव हिनका दुनूक काव्यभाषा पर [illegible] अछि, सेहो अभिव्यक्तिये पक्षक अन्तर्गत विचारणीय भए जाइछ। दुनू महाकविक पदावली-साहित्यक रचनाशैली मे भणिता-प्रयोगक विशिष्टता सेहो अभिव्यक्तिपक्षक अन्तर्गत तुलनात्मक विवेचनाक आधार पर परखल जा सकैछ। सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ महाकवि विद्यापतिक पदावलीक भाषिक प्रयोगक तुलनाक दोसर विशिष्ट पक्ष थिक व्याकरणिक पक्ष। एहि पक्षक अन्तर्गत दुनूक पदावली मे ध्वनि ओ शब्दक स्वरूप, शब्दसाधन प्रक्रिया, विभक्ति आदिक तुलना कयल जा सकैछ। संगहि एहि पक्षक अन्तर्गत दुनू महाकविक शब्द, भाव ओ अर्थ-साम्यक विवेचन कयल जा सकैछ।

रस प्रवाह

रस काव्यक आत्मा थिक । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली में उपदेशात्मक भाग कें तं रसपूर्ण रचना नहि कहल जा सकैछ, मुदा हिनक अनेक गीतिसाहित्य ओ उलटबाँसी तथा निर्गुण पद मे रसानुभूति सहजहिँ उपलभ्य अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली कँ रसक दृष्टिजे तीन भाग मे बाँटल जा सकैछ--

(१) शृंगाररसपूर्ण उक्ति
(२) अद्‌भुत रस युक्त उलटबाँसी तथा
(३) शान्त रस युक्त निर्गुण

महाकवि विद्यापति तँ रसराज शृंगारक गायकक रूप से **प्रसिद्ध** छथि । शृंगाररसक साङ्गोपाङ्ग वर्णन हिनक पदावली साहित्य मे भेटैत अछि । हिनक कतोक पद अद्‌भुत रस सँ ओतप्रोत तथा किछु पद भक्तिभाव संयुक्त शान्त रसक परिपाक दरसाबैत अछि । एहि तरहेँ साहित्यिक दृष्टिजे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावली मे रस प्रवाहक दृष्टिकोण सँ भिन्नता नहि अछि, परन्तु दुहूक तीव्रता मे अन्तर देखि पड़ैछ । जतय महाकविक शृंगार अत्यन्त सूक्ष्म रसाभिव्यंजक अछि, ओतहि सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे शृंगार कें अध्यात्म ओ साधानापक्ष सँ जोड़ि संतुलित राखल गेल अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे खासकय उलटबाँसी सभमे अलौकिकताक प्रचुर निवेश भेटैत अछि, ततहि महाकवि विद्यापतिक पदावली मे अद्‌भुत रसक परिवेश पौराणिक सन्दर्भहि सँ गृहीत भेटैछ । दुनू महाकविक शान्त रसक अभिव्यंजना भक्ति भावक अतिरेक सँ युक्त पद मे देखि पड़ैछ, मुदा जतय कबीर भणित मैथिली पदावली मे निर्गुण ब्रह्मक प्रति भक्तिभावक चित्रण अछि, ततहि महाकविक शान्त रस सगुण भक्ति सँ उद्‌भूत भेल अछि ।

शृंगार रस

महाकवि विद्यापति रसराज शृंगारक समस्त आलम्बन , उद्दीपन, विभाव ओ संचारी भावक सविशेष निवेशपूर्वक पदावली साहित्यक रचना कएलैन्हि अछि । हिनक शृंगार मे लौकिक शृंगार भावक पृष्ठभूमि देखि पडैछ, मुदा राधा ओ कृष्ण कें प्रतीक रूपें ग्रहण कएला पर जीवात्मा ओ परमात्माक माधुर्यक अलौकिक चित्र सेहो अभिव्यंजित होइछ । रसराज शृंगारक विरह ओ संयोग दुहू पक्षक अत्यन्त सूक्ष्म चित्र हिनक पदावली साहित्य मे भेटैत अछि। नायिकाक सौन्दर्यवर्णन, प्रथम मिलन, अभिसार, विपरीत रति, मान ओ विरह-विखिन्नताक अत्यन्त सूक्ष्म चित्र सभ हिनक पदावली मे भेटैछ । नायिका-भेद, नायक-विरह, दूती-प्रसंग, प्रवासविरह आदिक विविध चित्र सभ हिनक शृंगार भावना कें सम्पूर्णता मे अभिव्यक्त करैछ आ एहि मे महाकवि साहित्यशास्त्रीय समस्त उपादान कें ग्रहण कयलनि अछि । उदाहरणार्थ नायिका-विरहक ई पाँती देखल जा सकैछ-

के पतिआ लए जाएत रे मोर पिअतम पास ।
हिअ नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास ।

एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहल न जाए ।
सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पति आए ।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे अपने मने गेल ।
गोकुल तजि मधुपुर बस रे कत अपजस लेल ।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि धरु मन आस ।
आओत तोर मनभाओन रे एहि साओन मास ।।[३]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे शृंगारिक पद मे ब्रह्मक रहस्यवादी चित्रण भेल अछि । एहि प्रकारक पद कें सामान्यतः देखला उत्तर ई सभ दाम्पत्य प्रेम सँ ओतप्रोत देखि पडैछ, मुदा सूक्ष्म दृष्टि सँ विचार कयला उत्तर एहि मे जीव ओ परमात्माक पारस्पारिक प्रेमक सुन्दर चित्र भेटैत अछि । एहि प्रकारक प्रेमपूर्ण पद सभ मे संयोग पक्ष ओ वियोग पक्ष दुहूक समान रूप सँ चित्र भेटैत अछि , मुदा एहि सभ मे लौकिकताक सर्वथा अभावे बुझना जाइछ। वस्तुतः शृंगार रस हिनक पदावली मे प्रतीकेक रूप मे गृहीत अछि । उदाहरणार्थ ई पद द्रष्टव्य अछि-

मोरा पिआ बसै कोन देस हो ।
अपने पिआ कें ढुढंय हम निकसलि केओ नहि कहए सनेस हो।
पिआ कारण हम भए बाबरी, धएल जोगिनिआ के भेस हो ।
ब्रह्मा विष्णु महेश न जानए , की जानए सारद सेस हो ।
धनि जे अगम अगोचर पाओल , हम सब सहत कलेस हो ।
उहाँ केर हाल कबीर गुरु जानए , अबइत जाइत हमेस हो ।[४]

अद्‌भुत रस

महाकवि विद्यापतिक पदावली मे खासकय हिनक शैवपदावली मे अनेकठाम अद्‌भुत रसक अभिव्यंजना भेल अछि । हिनक एक गोट पद मे शिवक परिवेश मे उपस्थित विविध विरोधाभासक चित्र अद्‌भुत रसक अभिव्यंजना करैत अछि । पद एहि प्रकारें अछि-

आजु नाथ एक व्रत महासुख लागत हे ।
तोंहें सिव धरु नटवेस कि डमरु बजाबिअ हे ।।
नाचि देखाबिअ हे ।
तोहें जे कहै छह गौरा नाचय हम कोना नाचब हे ।
एक सोच मोरा होअ चारि कोना बाँचब हे ।।
अमिअ चुबिअ भूमि खसत बघम्बर जागत हे ।
होएत बघम्बर बाघ बसहा धए खाएत हे ।।
सिरसँ ससरत साप दहो दिस जाएत हे ।
कातिक पोसल मयूर सेहो धए खाएत हे ।।
जटासँ छिलकत गंग रंगभूमि पाटत हे ।

[illegible]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक उलटबाँसी पद सभ मे बहुधा अलौकिक ओ अद्भुत वस्तुक वर्णन कए चमत्कार उत्पन्न कएल गेल अछि। सन्त कबीरक एहन पद मे विचारक अलौकिक शक्ति ओ रहस्यात्मक चित्रात्मक ढंग वर्णित भेल अछि। अनेक एहन पद मे प्रतीक विधान द्वारा निर्गुण ब्रह्मक प्राप्तिक हेतु साधनात्मक निरूपण भेल अछि। उदाहरणार्थ एक पद द्रष्टव्य अछि-

माली सभनिआ बड़ बजनिआ चुटकी बाजन बरिआत है।
मूसा कहए हम काली कटाएब, हमहूँ जायब बरिआत है।
सब बरिअतिया बघुरबा बैसल गा के फूटल दुनू आँखि है।
फा छिपाए हम दुलहा चुमाएब, दुलहिन के जाइब आँग है।
आए धीआ दर्शक बैसलि हौदी, जाइत खायल भतार है।
बाबा क. मूड़ मे ओल चढ़ाओल आएलहुँ सजे पैया के सराध है।
धर्मदास एहा मंगल गाओल, बूझू सन्त सुजान है।
साहेब कबीर भाव दरसाओल, भेटल आतमज्ञान है॥

शान्त रस

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे निर्गुण गीत ओ समदाउनि मे विशेषत: संसारक नश्वरताक संकेत भेटैत अछि। एहन पदावली शान्त रसक पदावली थिक। भक्तिभाव समन्वित हिनक पदावली सभ कें सेहो शान्त रसक पदावली मे अन्तर्भुक्त कएल जा सकैछ। एहि प्रकारक पदावलीक अवगाहन सँ सांसारिक मायामोह सँ विराग भए चित्त सम स्थिति कें प्राप्त करैछ। उदाहरणार्थ-

एकसरा बिछुरल डारि सँ पतवा फेरा न डारि मे समाए।
दासा बिछुरल देहिआ सजे हंसा फेर न देह मे समाए॥

तथापि-

चार दिन अपनी नओबति चलु बजाए॥
उठाने खटिआ गहलए मटिआ, संग न कछु लए जाए।
देहरी बैठी महरी रोवए, द्वारे रहलि संग माइ॥
मरघट लौ सब लोग कुटुंबमिलि हंस अकेला जाइ।
ओहि सुत ओहि वित ओहि पुरपाटन, बहुरि न देखय आइ॥
कहए कबीर भजन बिन बन्दे, जनम अकारथ जाइ॥

महाकवि विद्यापतिक [illegible] यथा-

[illegible]

हिनक एक गीत पद जाहि मे वयस कें सम्बोधित कए आत्मक [illegible] भेल अछि, निर्गुण पदक सदृश शान्त रसाभिव्यंजक अछि। एहि मे कहल गेल अछि-

वयस, कतए, तेजिआ गेला।
ताहि सेवइते जनम बहल, तैअओ न आपन भेला।
सैसव दसा (तोहें) गहिअओलाहं मधुर बाइक छीर।
दुइ सिरिकाल छहि [illegible], कोमल कचि सरीर॥
तीन छुटि पीठ थोथाइ भार गेल, उड़ि गेल सबे राग।
पाहि बैसल भुवन [illegible], जनि कमलाल ताग॥
आँखि मलामलि दृग न सूझए, कन छुटि गेल कासी।
दुअओ अधर धरि [illegible] तर [illegible]॥

एतावता सन्त कबीर भणित ओ महाकवि विद्यापतिक मैथिली पदावली मे शान्त रसक अभिव्यंजना अनेक स्थल मे स्फुट भेल अछि। सन्त कबीर भणित मैथिलीपदावली मे जतय मृत्यूपरान्त अवस्थाक चिन्तन सँ खिन्न जीवक अवस्थाक चित्रण कए शान्त रसक उपस्थापन भेल अछि, ओतहि महाकवि विद्यापतिक पदावली मे भक्त हृदयक सांसारिक [illegible] अछि

ओ मायाधार जन्य विपदाक आकलनपूर्वक सगुनब्रह्मक स्तवन निवेदन, भक्ति ओ अनुरक्ति तथा आत्मनिवेदन मे शान्तरसक अभिव्यंजना भेल अछि ।

हिनक किछु पद मे जीवन, यौवन, सम्पत्ति, संसार आदिक असारतापरक शब्द पावन चित्रण सेहो शान्त रसक स्थायी अभिव्यंजक अछि, तथापि एहन पद मे शान्त रसक सँ भक्ति धाराक संचारीक रूपमे शमभावक अवतारणा देखि पड़ैछ यथा–

वाड़ समय कागा केओ न अपन हित, देखल आँखि पसारि रे ।

x x x

जीवन रतन अछल दिन चारि । से देखि आदर कएल मुरारि ।
आब भेल झाल कुसुम रस छल । वारि विहुन सर केओ नहि पूछ ।।

x x x

न थिर जीवन, न थिर यौवन, न थिर एहे संसार ।।

x x x

धन जीवन रस रङ्ग । दिन दस देखिअ तड़ित तरङ्ग ।।

x x x

एहि मही अछ अथिर जीवन, जौवन अलप काल ।।

इत्यादि

अलंकार योजना

अलंकार योजनाक दृष्टिअे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ महाकवि विद्यापतिक पदावली मे अत्यन्त असाम्य देखि पड़ैछ । जतय महाकवि विद्यापति अपन पदावली साहित्य कँ साहित्यशास्त्रोक्त समस्त अलंकरण सँ ओतप्रोत करबाक हेतु दत्तचित्त देखि पड़ैत छथि ओतहि कबीर भणित मैथिली पदावली मे अलंकारयोजना अनायासहि रचनाक प्रवाह मे आबि उक्ति सौन्दर्य उत्पन्न करैत देखि पड़ैछ । एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे अलंकारयोजना जतय साधन स्वरूप गृहीत अछि ततहि महाकवि विद्यापति कतोक ठाम एकर साध्यक रूप मे गृहीत करैत देखि पड़ैत छथि । उपमा ओ रूपक कबीरक काव्य मे प्रधान रूपे प्रयुक्त अछि मुदा उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति विभावना, लोकोक्ति, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, काव्यलिंग आदिक प्रयोग सेहो हिनक पदावली मे भेटैत अछि । महाकवि विद्यापतिक पदावली तँ विविध अर्थालंकार सँ सर्वत्र मण्डित अछिये, शब्दालंकार मे अनुप्रास, यमक आदिक एहि मे बाहुल्य देखि पड़ैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे शब्दालंकार दिस प्रवृत्ति नहि देखि पड़ैछ, तथापि किछु शब्दालंकारो एहि मे स्वतः स्फूर्त आबि गेल बुझना जाइछ। उदाहरणार्थ–

अनुप्रास

विद्यापति पदावली मे एहि शब्दालंकारक विपुल प्रयोग भेल अछि, जे हिनक गीति साहित्य मे झंकृति उत्पन्न करैत अछि यथा–

[illegible] न हैरब इन्दु बिलास [illegible] विलासित [illegible] अछि ।
[illegible] कवि [illegible] अछि ।।

कतहु कतहु तँ महाकवि झंकृति उत्पन्न करबाक हेतु वर्णविन्यास [illegible] अछि यथा

[illegible] गति [illegible] [illegible] ।।
[illegible] पति [illegible] [illegible] ।।
[illegible] [illegible] ।।
रहि-रहि [illegible] [illegible] ।।
[illegible] [illegible] ।।
[illegible] विद्यापति कवि [illegible] [illegible] ।।

हिनक ई अनुप्रास छटा अलंकार योजनाक कुशिलताक [illegible] अछि । एकर तुलना हिनक परम्पराक महाकवि गोविन्ददासक एहि वर्णविन्यास [illegible] जा सकैछ

रीझलि राजनगर [illegible] । [illegible] ।।
रसमय राग रसिक व्रज नारी । [illegible] विहारी ।।
राधारमण रतन तुहुँ दूर । [illegible] ।।
राका रजनि रजनिकर जाल । [illegible] ।।
ऋतुपति राति [illegible] दिन हीन । [illegible] ।।
रतिपति दोष रहित रस वेष । [illegible] ।।
रसना रोचन श्रवण विलास । [illegible] गोविन्ददास ।।

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे ई अलंकार स्वाभाविक रूपे प्रयुक्त तँ [illegible] वर्णचित्र ओ सायास अनुप्रासनियोजन एहि मे नहि देखि पड़ैछ

यथा–

सुखसागर सुख विलसहु दुख परित्यागहु हो
सुमिरहु सिरजनहार जागन्त होए जागहु हो ।।

उपमा

उपमालंकारक प्रयोगक दृष्टिअे विद्यापति ओ कबीर भणित मैथिली पदावली मे [illegible] देखि पड़ैछ । विद्यापतिक औपम्यविधान लोकजीवन ओ प्रकृति सँ [illegible] अछि आ एहि मे भावाभिव्यंजनाक सूक्ष्मताक दर्शन होइछ । कथ्य कँ सम्पूर्णता मे सम्प्रेषणक हेतु हिनक औपम्य-विधान सर्वथा सिद्ध कहल जा सकैछ यथा

सीन्दुर तिलक तरणि सम भास ।

एहिठाम तिलकक तुलना तरणिसँ कय महाकवि एकहि संग आकार लालिमा [illegible] प्रखरता ओ सौन्दर्यक अभिव्यक्ति कय देलनि अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक औपम्यविधान मे बहुधा ओ सूक्ष्मता नहि देखि पड़ैछ । हिनक औपम्यविधान प्रतीकात्पकता तथा कोनो एक दुइ विशिष्ट प्रकृति मात्रक सादृश्य उपस्थित करैछ यथा–

एह संसार सीमर फूल रुइआ । उड़ि जाएत हो ।।[२१]

एहिठाम संसारक तुलना सिम्मरक फूल सँ कय ओकर निस्सारता मात्र कें अभिव्यक्त कयल गेल अछि ।

उत्प्रेक्षा

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' महाकवि विद्यापतिक भाषा शैली पर विचार करैत सत्ये कहने छथि जे 'कालिदासक उपमा मे जाहि प्रकारक स्वाभाविक चमत्कार अछि तेहने चमत्कार अछि हिनक (विद्यापतिक) उत्प्रेक्षा मे ।[२२] वस्तुत: एहि अलंकारक योजनाकाल महाकवि विद्यापतिक औपम्यविधान अत्यन्त सूक्ष्म देखि पड़ैछ । हिनक अभेदत्वक परिकल्पना ओ संभावना उपमेयक अत्यन्त निकट धरि पाठकक मानस कें लय जाय हार्दिक आनन्द कें प्राप्त करयबा मे समर्थ होइत अछि । उदाहरणार्थ ई किछु पद देखल जा सकैछ–

नीरें निरञ्जन लोचन राता ।
सिन्दुर मण्डित जनि पंङ्कज पाता ।।[२३]
x x x
कुचयुग उपर चिकुर फुजि पसरल ता अरुझाएल हारा ।
जनि रे सुमेरु उपर मिलि ऊगल चान्द् - विहिन सबे तारा ।।[२४]
x x x
गारइत कंस बहए जलधारा । चामर झरए जनि मोतिम हारा ।।[२५]
x x x
सुन्दर वदन सिन्दूर विन्दु सामर चिकुर भार ।
जनि रवि ससि सङ्गहि उगल पाछ कए अन्धकार ।।[२६]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एहि अलंकारक ने ओतेक प्रयोग बाहुल्य अछि आ ने तीव्रतम अभिव्यंजना तथापि अनेकस्थल मे एकर प्रयोग भावाभिव्यंजनाक साधनक रूप मे भेल अछि यथा–

ई संसार असार को धंधा, अंतकाल कोइ नाही हो ।
उपजत बिनखत बार न लागै, ज्यौ बादर की छाँही हो ।।[२७]।।

अन्य अर्थालंकारक उदाहरण निम्नस्वरूपें देखल जा सकैछ–

पर्यायोक्ति–

विद्यापति– जाव से धन रह अपना हाथ । ताबे से आदर कर सङ्ग साथ।।
धनिकक आदर सबतह होइ । निरधन बापुर पुछ नहि कोइ।।[२८]

कबीर–
एहो तन होए कागदके पुड़िया
बुन्द पड़ैत गलि जाए ।
एहो तन होए गया मुखली लकड़िया
अगिआ लगइत जरि जाए ।

विभावना

विद्यापति– मेरु उपर (एक) कमल फुलाएल नाल बिना रुचि पाई ।।[२९]

कबीर– बिन नदिया के नाव चलओले सुर नर मुनि के खेलओले गे।
बिना दूध के दही जनमओले माखन काढ़ि के रखले गे ।।[३०]

विशेषोक्ति

विद्यापति– चिर समयागत हरि भेल पाहोन, आधेओ केलि न भेला।
पञुक पात आतप नहि तओले, झामर नहि भेल देहा ।
कृपन सञ्चित धन रहल अखण्डित, काजर सिन्दुर-रेहा।।[३२]

कबीर–
एक अंचभा सुनहु तुम भाई ।
देखत सिंह चराबत गाई ।।
जल की मछुली तरुवर व्याई ।
देखत कुतरा लै गई बिलाई ।।[३३]

एकावली

विद्यापति– सरसिज बिनु सर सर बिनु सरसिज, की सरसिज बिनु सूरे।
जौवन बिनु तन तन बिनु जौवन, की जौवन पिअ दूरे ।।[३४]

कबीर–
बिना रे सोना के कैसन अभरण,
बिना मोती कैसन ग्रिमहार ।
बिना रे अम्बा कैसन नैहर
बिना स्वामी कैसन शृंगार ।।[३५]

प्रस्तुत-प्रशंसा

विद्यापति– कण्टक माझ कुसुम परगास । भमर विकल नहि पाबए पास।।
रसमति मालति पुनु पुनु देखि । पिबए चाह मधु जीव उपेखि।।[३६]

कबीर–
माएबाप घेरने छला सुगना बोलैत छला ।
आब सुगना उड़इते केओ ने परेखल रे को ।।
जाहि मन्दिल मे एतेक सुख कयलहुँ ।

ताहि मन्दिलबा मे अगिया लगाबए रे की ।।[10]

रूपक–

विद्यापति– जौवन – नगर बेसाहब रूप ।[11]

कबीर– काआपुर सहर में लागल बजरिया ।[12]

महाकवि विद्यापतिक पदावली साहित्य ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त अलंकार योजना पर विचार कएला सँ ई स्पष्ट होइछ जे दुनू महाकवि मे अलंकारक प्रयोग भेटैछ, मुदा महाकवि विद्यापति मे एकर प्रयोगक बाहुल्य अछि। सादृश्यविधानक हेतु महाकवि विद्यापति प्राकृतिक ओ कवि प्रसिद्ध रूढ़ि सभक प्रयोग तें करबे कयलनि अछि, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो एकर प्रयोग भेल अछि। नारीक अंग–प्रत्यंग, भूषण, वसन, मानसिक उल्लास अथवा कातरता केँ अत्यन्त सूक्ष्म निरूपणक हेतु महाकवि विद्यापति कमल, जातकि, केतकि, भ्रमर, मृग, केहरि, कीर, आदिक प्रयोग कयलनि अछि। अनेकठाम हिनक सादृश्यविधान अत्यन्त मौलिक उद्भावना सँ उद्भुत भेटैत अछि। महाकवि विद्यापतिक अलंकारिता अत्यन्त हृदयग्राही भेल अछि जे हिनक रसशास्त्रीय काव्यक अनुकूल अछि। सन्तकबीर आध्यात्मिक तत्वक निरूपण हेतु काव्यरचना कएलनि। हिनको रचना मे लोकजगतक सादृश्यमूलक उपमान लेल गेल अछि। मुदा सर्वत्र भ्रमर, हंस, कमल, पोखरि, नदी, समुद्र आदि प्रतीकार्थकें लेल गेल अछि। नारीक अंग प्रत्यंगक उपमानक उपयोग हिनक बीजक ग्रंथ मे छिटपुट भेटैछ यथा मुखक औपम्यविधानक हेतु चन्द्रमा, नेत्रक सादृश्यविधानक हेतु मृग [13], कटि प्रदेशक क्षीणताक हेतु केहरि ओ गतिक मंथरताक हेतु हाथीक प्रयोग भेल अछि।[14]

साङ्गरूपकालंकारक प्रयोग मे दुनू महाकवि केँ सिद्धि छलनि। सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे कखनो सूतकातब ओ कपड़ा बनयबाक प्रक्रियाक साङ्गरूपकत्व द्वारा,[12] कखनो जाँतमे गहूम पिसबाक विभिन्न प्रक्रियाक साङ्गरूपकत्वद्वारा [13] तँ कखनो वैवाहिक प्रक्रियाक साङ्गरूपकत्व द्वारा जीवन ओ जगत तथा योग ओ युक्तिक सादृश्य उपस्थापित कयल गेल। महाकवि विद्यापति सेहो साङ्गरूपकक अनेक बेर प्रयोग कयलनि अछि कखनो नायिकाक शरीरक साङ्गरूपकत्व हथिसारक द्वारा [14], कखनो विरह–जर्जरनायिकाक अवस्था केँ तपस्याक साङ्गरूपकत्व द्वारा,[15] कखनो विपरीत रतिक साङ्गरूपकत्व महाप्रलय[16] द्वारा कय ई अपन काव्य मे सौन्दर्यक उद्भावना कयलनि अछि।

महाकवि विद्यापतिक साङ्गरूपकालंकार प्रयोगक चारुता एहि पद द्वारा निदर्शनार्थ प्रस्तुत कयल जाइछ–

सखि हे, कि कहब किछु नहि फूर।
सपन कि परतेक कहहि न पारिअ, किअ रे निकट किअ दूर ।।
तड़ित-लता पर तिमिर सम्हारल आँतरे सुरधुनि–धारा।
तरल तिमिर ससि सूर गरासल चौदिस खसि पडु तारा ।।
अम्बर खसल धराधर उलटल घरनी डगमग डोले।

खरतर बेग समीरन सञ्चर चञ्चरि गन कर गोल।
प्रलय पयोधि जलहि तन भासल ई नहि जुग अवसान ।।
के विपरीत कथा पतिआएत कवि विद्यापति भाने ।।[17]

एहि पद मे प्रयुक्त प्रतीकार्थक तड़ितलता (नायिका), तिमिर (नायक श्याम), सुरधुनिधारा (मोतिक हार), तिमिर (केशराशि), ससि (नायकक चानन), सूर (नायिकाक सेनूर) तारा (खोपाक फूल), अम्बर (वस्त्र), धराधर (स्तन), घरनी (जघना) समीरन (श्वास-प्रश्वास), चञ्चरि (किंकिनि), प्रलय पयोधि (घाम), आदि सँ अप्रस्तुत प्रशंसाक संसृष्टि सेहो भेटैत अछि। साङ्गरूपक ओ अप्रस्तुत प्रशंसाक संसृष्टिक अद्भुत सर्जना सन्त कबीर भणित पदावली मे सेहो देखि पड़ैछ यथा–

राम नामके ऐहे जतसरिया ।। कि आहे सजनी।।
पीसी लेहु बाट के साम्हर रे की ।।
तन करु जतबा मन करु कीलबा
गुरु के शब्दबा करु हाथर रे की ।।
चीत करु गेहुम प्रेम करु दऊरिया
समुझी समुझी झीकबा लाबहु रे की ।।
अररी दररी जो पीस लेगे सजनी
होएबहु पीया के सोहागीन रे की।
मन भर पीसलहु सहज उठाऐलेहु
गुरु के शब्दबा करु चालन रे की।
साहेब कबीर गाबल लगनियाँ
गुरु के चरन चीत लाबहु रे की ।।[18]

एहि पद मे सांसारिक क्रियाकलाप केँ गहूम पिसबाक प्रक्रियाक साङ्गरूपकत्वक संग प्रस्तुत कएल गेल अछि। जाँत, कील, झीक, हाथर, गहूम, दउरी, चालनि आदि प्रतीकक माध्यमे योगसाधनाक विविध प्रक्रियाक बोध कराओल गेल अछि।

एतावता दुहू महाकवि मे अलंकार प्रयोग मे साङ्गरूपकत्व ओ अप्रस्तुतप्रशंसाक विशिष्ट चमत्कारक संगहि अन्यान्यो अलंकारक प्रयोगेँ देखि पड़ैछ।

छन्दविधान

छन्दविधानक दृष्टिजे विचार कएला सन्ता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावली मे प्रयुक्त अनेक छन्द मे साम्य भेटैछ यथा–

कबीर– पड़िबा प्रीतम करहु बिचार घट महि खेलए अघट अपार ।।
काल कल्पना करए न खाए। आदि पुरुष महि रहए समाए ।।

विद्यापति– गाए चराबए गोकुल वास। गोपक सङ्गे करए परिहास।।
अपनहुँ गोप गरुअ की काज। गुपतहु बोलइते मोहि बड़ लाज।।

कबीर- प्रेमक तेल धनी है चुआबहु । सुरतिक बाती चढ़ाए ॥
नाम चिनगिया दिआरा बारहु, जोति जरए सारी राति ॥

विद्यापति- कमल मिलल दल मधुप चलल घर विहगे गहल निज ठामे।
अरं रे पथिकजन थिर रे करिअ मन बड़ पांतर दुर गामे ॥

छन्दक दृष्टिञे सन्तकबीर भणित मैथिली पदावलीए जकाँ विद्यापतियोक पदावली मे विविधता देखि पड़ैछ। छन्दक क्रम मे शब्दमे लघु के गुरु आ गुरु के लघु करबाक प्रवृत्ति अवश्य सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे विद्यापति पदावलीक अपेक्षा अधिक देखि पड़ैछ।

सन्दर्भ-नियोजन

सन्दर्भक दृष्टिञे विचार कएला सन्तों सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावलीक स्वरूप पर विचार कएला उत्तर ई स्पष्ट होइछ जे विद्यापति पूर्णत: पौराणिक सन्दर्भ पर अवलम्बित छलाह। राधाकृष्णक लीला विहार विषयक पदावली मे हिनक कृष्ण रासेश्वर, सारङ्गपानि, वंशीवादक, नन्दक नन्दन, हरि, गोपाल, यसोमति-सुत आदि तथा राधा वृषभानुनन्दनि थिकथिन, जे पौराणिक कथाक अनुकूले अछि। हिनका दुनूक लीलाविकासक वर्णन सेहो पौराणिके सन्दर्भ मे भेल अछि। मुदा सन्त कबीर भणित पदावली मे निर्गुण ब्रह्मोपासक कबीर सदिखन आध्यात्मिक ओ साधनापक्षेक सन्दर्भ केँ ग्रहण करैत रहलाह। हिनक साहित्य मे उदाहरण-प्रत्युदाहरणक रूप मे अनेकठाम विशिष्ट पौराणिक सन्दर्भ सभक सेहो अनुगुम्फन भेल अछि, खासकय मूलबीजक मे हरिश्चन्द्र, भरथरी, गोरखनाथ, नारद, रावण-मेघनाद, वामन-बलि, प्रहलाद, अम्बरीष, याज्ञवल्क्य, जनक, शबरी आदिक सन्दर्भ भेटैछ, तथापि ई पुराकथात्मक सन्दर्भ हिनक रचनाक आधार नहि अपितु आधेये अछि। हिनक राम सेहो अनेक नामावली सँ कबीर द्वारा परिगृहीत भेलाह अछि, मुदा हुनक स्वरूप केँ सर्वत्र कबीर अलखनिरंजनेक रूपमे चित्रित कएलनि, सगुण ब्रह्मक रूप मे नहि।

एतावता दुनू पदावली मे सन्दर्भक दिशा भिन्न देखि पड़ैछ।

काव्य-गुण-सौन्दर्य

काव्यगुणक दृष्टिञे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली एवं विद्यापति पदावली मे प्रसादगुण एवं भाधुर्य गुणक समानता दृष्टिगोचर होइछ। महाकवि विद्यापतिक शैव पदावली ओ लोकाचार विषयक पदावली मे प्रसादगुण सम्पन्नता ततेक अछि जे जनसामान्यो एकर अर्थ ओ भाव केँ बुझबा मे कनेको कठिनताक अनुभव नहि करैछ आ एहने पद विद्यापतिक मिथिला मे जनप्रियताक मूल मे अछि। उदाहरणार्थ-

कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ।
दुखहि जनम भेल, दुखहि जिवन गेल, सपनहु नहिसुख मोर।
एहि भवसागर थाह कतहु नहि, भैरव धरु करुआर।
भनहि विद्यापति मोर भोलानाथ गति करब अन्त मोहि पार।[४९]

x x x

के पतिआ लए जाएत रे मोर प्रिअतम पास।
हिअ नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास।
एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहल न जाए।
सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पति आए।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे अपने मने गेल।
गोकुल तजि मधुपुर बस रे कत अपजस लेल।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि धरु मन आस।
आओत तोर मनभावन रे एहि साओन मास।

मुदा हिनक रसपक्षीय गीत ओ कूटपद शास्त्रीयता, प्रतीक-विधान, अलंकारिता वक्रोक्ति-विन्यास, उक्तिविच्छिति आदिक कारणें सरस होइतो प्रसादगुण सम्पन्न नहि अछि। एहि प्रकारक पद मे बहुधा राधाकृष्णक विहारलीलाक सरस शब्दावली द्वारा चित्रण कयल गेल अछि आ एहन पद माधुर्य-गुण-सम्पन्न अछि। रसपक्षीय गीत सर्वथा कोमल शब्दविन्यास पर आधारित अछि, तें हिनक पदावली केँ कोमलकान्त पदावली सेहो कहल जाइछ। मुदा एहन पदावलीक अर्थ बहुधा संस्कृतनिष्ठ पदावलीक बाहुल्य, तत्समविन्यास आदिक कारणें जनसामान्यक हेतु दुरुह आ प्रसाद गुण सँ दूरे अछि। स्वभावत: एहि प्रकारक पदावलीक प्रचार जतेक विद्वत्समाज मध्य मिथिला ओ मिथिला सँ बाहरो भए सकल, जन सामाज मे तकर अभावे रहल। एही तथ्य केँ डॉ० रामदेव झा हिनक शैवसाहित्यक विवेचन करैत शब्दान्तरें कहलनि अछि ''जे शृंगार रसक वातावरण काव्यशास्त्रीय अछि। काव्यशास्त्रीय आधार पर वर्णित विषय वस्तु ओ तदर्थ प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ शब्दावली अन्य प्रान्तीय जनसमुदायक हेतु अधिक बोधगम्य रहल। किन्तु शिवगीतक वातावरण मिथिलाक लोकाचार ओ लोकव्यवहारक रहल अछि। ठेठ मैथिल जीवन रहल अछि। तदर्थ प्रयुक्त भाषा, शब्दावली, उपलक्षण, लोकोक्ति मिथिलाक जनजीवन सँ लेल गेल अछि। अन्य प्रान्तीय जनसमुदाय मिथिलाक लोकाचार, विधि-व्यवहार, सामान्य जीवन ओ ठेठ भाषा सँ परिचित नहि रहबाक कारणें ओकर अर्थ ओ रसग्रहण करबा मे असमर्थ रहैत छल। फलस्वरूप विद्यापतिक शिवगीत अन्य प्रान्त मे शृंगार रसक गीत जकाँ प्रशस्ति नहि पाबि सकल। किन्तु मिथिलावासी केँ ओहि गीत मे आत्मीयताक दर्शन होइत रहलैक। सामान्य अपढ़ो जनकेँ गीतक अर्थवोध मे सरलता होइत छलैक। तें ओकरा ग्रहण कयल गेल, प्रयोग कएल गेल तथा कतोक शताब्दी सँ ओकर रक्षा जनकंठ मे होइत रहल।''[५१]

हिनक माधुर्यगुण परिपूरित एकटा रसपक्षीय पद द्रष्टव्य अछि-

सौरभ-लोभे भ्रमर भमि आएल पुरुब प्रेम बिसबासे।
बहुत कुसुम मधुपान पिआसल जाएत से तुअ पासे।
मालिति, करिअ हृदय परगासे।
कत दिन भमरे पराभव पाओब, भल नहि अधिक उदासे।
कओनक अभिमत के नहि राखए जीवओ दए जग हेरि।
(कि करब से धनि अपन जीव लए) जे नहि बिलसए बेरि।

सबहि कुसुम मधुपान भमर कर सुकवि विद्यापति भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनाराएन लखिमा देवि रमाने ।।[५२]

सन्त कबीरक समस्त रचना कें दृष्टिपथ पर रखैत श्रीयज्ञदत्त शर्मा हिनक काव्यगुण सौन्दर्यक विवेचन करैत कहलनि अछि जे 'कबीरक रचनाक अध्ययन कएला पर हुनका मे प्रसाद ओ माधुर्य गुणक प्रधानता भेटैत अछि—ओजगुणक हिनक रचना मे अभाव अछि।'

'हिनक ओ रचना सभ जाहि मे उपदेशात्मकता कें प्रधानता देल गेल अछि अथवा जाहि मे सुधारात्मक प्रवृत्ति पाओल जाइत अछि, प्रसाद गुण सँ सम्पन्न अछि । एहि प्रकारक रचना मे कविक भाषा बहुत सरल, स्पष्ट ओ साफ अछि । व्यर्थ अलंकारक बलपूर्वक समावेश नहि अछि आ जे उदाहरण उपमा, दृष्टान्त आदिक आबियो गेल अछि ओहिसँ भाषाक प्रसादात्मकता कें प्रश्रय भेटलैक अछि ।'

हिनका अनुसार 'कबीरक रहस्यवादी रचना मे माधुर्य विशेष रूपें पाओल जाइत अछि । प्रेमक संयोग आ वियोग पक्षक आत्मा ओ परमात्माक मिलनक चित्रणक अभिव्यक्ति मे माधुर्य कसि कय भरल देखि पड़ैछ । आचार्य मम्मट माधुर्य गुणक जे जे लक्षण देलनि अछि, तकरा पढ़बाक लेल कबीर कहियो शास्त्र लऽ कऽ नहि बैसलाह, मुदा हुनक कवितामे मधुरता स्वाभाविक प्रवाह आ आत्माभिव्यक्तिक फलस्वरूपे प्रस्फुटित भेल अछि । हिनक कविता मे कर्णकटु शब्द तँ हुनक कटुओ उक्ति मे शायदे देखबाक हेतु भेटैछ ।''

'एहि तरहें हम कबीर साहित्य मे माधुर्य गुणक प्रधानता देखैत छी आ माधुर्य सँ आवृत कय कबीर ब्रह्मक रहस्य कें ततेक प्रिय बना देलनि अछि जे पाठक कें एक बेर ओहि सँ अपन अभिरुचि कें सम्बद्ध कएलाक बाद ओ ओकरे भए कय रहि जाइछ ।[५३]

श्री यज्ञदत्त शर्माक उपरोक्त कथन सन्त कबीर भणित मैथिलीओ पदावली मे यथावत सत्य देखि पड़ैछ । अन्तर एतबे जे एहि पदावली मे एके संग प्रसाद ओ माधुर्यक समरसता देखि पड़ैछ । उपदेशात्मक वाक्य ओ भणिता मे जतय प्रसाद गुण सम्पन्नता देखि पड़ैछ, ओतहि योगसाधना परक प्रतीक विधान मे प्रसादगुणक अभाव आ माधुर्यक वर्चस्व देखि पड़ैछ । हिनक प्रसादगुण सम्पन्न किछु पद एतय उदाहृत अछि—

कहए कबीर धर्मदास सो अक्षर सुमिरहु सार ।
निर अक्षर सो प्रीति करि उतरहु भवजल पार ।।[५४]

सतनाम भज हे मन मूरख । क्या जड़ जनम गमाबहु हो।
सत्यनाम सुमिरह निशिवासर । निशिदिन सुरति लगाबहु हो ।[५५]

प्रतीकविधानक प्रधानताक कारणें हिनक पदावली मे बहुधा प्रसाद गुण सम्पन्नता क्षरित एवं माधुर्यक वर्चस्व दृष्टिगोचर होइछ यथा—

द्वादश ऊपर बसे मोर बालम तहवां ध्यान लगाबहु हो ।।
इङ्गला पिङ्गला सुखमणि साधो, ध्रुवमंडल उठि धावहु हो।।[५६]

एतावता दुहू कविक पदावली प्रसाद ओ माधुर्यपूर्ण अछि ।

प्रतीक-विधान

प्रतीक विधान अभिव्यंजनाक विशिष्ट शैली थिक । जखन मानव साधारण शब्दक माध्यम सँ कोनो अमूर्त अनुभूतिक अभिव्यंजना मे असमर्थ होइत अछि, तखन प्रतीकक माध्यम सँ अनुभूतिक विशद् अभिव्यक्ति करैछ । अपन कथ्य कें सर्वसाधारण मे अवगतिक हेतु तथा आनन्द-सहोदर रसाभिव्यंजना कें सर्वसाधारणक हृदय मे प्रक्षिप्त करयबाक हेतु कवि-मनीषी ओ साधक बहुधा प्रतीकक आश्रय लैत देखि पड़ैत छथि ।

कोनो भाषाक कवि अपन काव्य कें अधिक उत्कृष्ट, चमत्कारपूर्ण ओ सुन्दर बनएबाक निरन्तर चेष्टा करैछ तथा कम सँ कम शब्द मे अधिक सँ अधिक भावक अनुगुम्फन करय चाहैछ । कविक ई उद्देश्य प्रतीकक माध्यमे पूर्ण भय जाइत छैक ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावली दुहू मे प्रतीक विधानक माध्यमे कथ्यक उपर्युपरि अभिव्यंजनाक चेष्टा देखि पड़ैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रतीक विधानक वैविध्य ओ विपुलताक जे स्थिति देखि पड़ैछ, महाकवि विद्यापतिक पदावली मे प्रतीक विधानक से वैविध्य ओ विपुलता नहि देखि पड़ैछ । तथापि महाकवि विद्यापति पदावली मे लोक जगतक प्रतीकक प्रयोग खुब भेल अछि । ई प्रतीक सभ संख्यामूलक ओ पारिवारिक स्वरूपक अछि । सन्त कबीर संख्यामूलक ओ पारिवारिक प्रतीकक अतिरिक्त जाहि प्रतीक विधानक हेतु प्रख्यात छथि, से थिक हुनक विशिष्ट पारिभाषिक प्रतीकविधान जे योगसाधनाक विभिन्न स्तरक निरूपणक हेतु हिनक पदावली मे प्रयुक्त भेल अछि ।

योगसाधनात्मक पारिभाषिक प्रतीक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे योगसाधनाक विविध उपादानक हेतु प्रतीकक प्रयोग भेल अछि । खास कय ब्रह्मरन्ध्र, इड़ा, पिङ्गला, सुषुम्ना, कुंडलिनी, षटचक्र आदिक योगपरक शब्दावलीक हेतु प्रतीकक प्रयोग भेल अछि यथा—

शब्द	प्रतीकार्थ	शब्द	प्रतीकार्थ
गंगा	इड़ा	सामर (सम्बल)	धर्म
यमुना	पिङ्गला	त्रिवेणी	त्रिकुटी
बेङ	मन	साप	संशय
भ्रमरगुफा	ब्रह्मरन्ध्रि	पुरहर	सहस्रकमल
अक्षयवृक्ष	ब्रह्मरन्ध्रि	गगरी	शरीर
सरयुग	सुषुम्ना	माछी	वासना
ठकंनिञा	माया	मकड़जाल	माया
अष्टकमल	नाभिकमल	गाय	सात्विकीबुद्धि
दीप	ज्ञान	बड़द	सदोषमन
नदी	वासना	बछरा	इन्द्रिय
गगनमंडल	ब्रह्मरन्ध्रि	हीरालाल	ज्ञान
		सूत	ध्यान

एकर अतिरिक्त सिंह, गाय, कुकुर, बिलाड़, घोड़ा,महीस, आदि विभिन्न प्रतीक सेहो प्रयुक्त भेल अछि जे योगसाधनाक विविध स्तर सँ सम्बद्ध अछि । स्वभावतः सन्तकबीर एहन पारिभाषिक प्रतीकक जानकारी ओही व्यक्ति कें सहज होइत छनि जे योगसाधनाक विभिन्न तत्त्व सँ परिचित होथि । एहि प्रतीक विधानक माध्यमे सन्तकबीर विभिन्न प्रकारक योगपद्धति क्रमशः सुरतियोग, हठयोग, राजयोग, ज्ञानयोग, आदिक दिस मानवक औत्सुक्य कें बढ़यबाक प्रयत्न कयलनि अछि । संगहि योगसाधनाक गूढ़ता कें निरूपित कयलनि अछि।

महाकवि विद्यापतिक पदावली साहित्य मे एहि प्रकारक पारिभाषिक प्रतीक योजनाक सर्वथा अभाव देखि पड़ैछ ।

संख्यामूलक प्रतीक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे संख्यामूलक प्रतीक द्वारा सेहो बहुधा साधनापक्षक वस्तुक उल्लेख भेल अछि यथा–

पकड़ि मँगाएब पाँचो चोर ।[१०]

एतय पाँचो चोर द्वारा पाँचो ज्ञानेन्द्रिय कें संकेतित कयल गेल अछि । पाँचो इन्द्रियक हेतु कखनो पाँच सखी कहल गेल अछि, तँ कखनो पाँच सोहागिन आदि । लख चौरासी द्वारा योनिभ्रमण संकेत देल गेल अछि । पचीस द्वारा पचीस तत्त्वक निरूपण कयल गेल अछि। एही तरहें आठ कुँआ, नवबावड़ी, सोरह पनिहार, सत्तरि कोठ़ो, बहत्तरि बतिया, तीनसए साठि बन्हन, दशमी द्वार, दशअवतार, बाबनकोठरी आदि साधना पक्षक विविध अंगक प्रतीकक रूप मे प्रस्तुत भेल अछि ।

महाकवि विद्यापतिक पदावली मे खासकय दृश्यकूट मे प्रथम, एकादश, पचीस, अठाइस, अठारह, बीस, उनैस, सताइस, आदि संख्यामूलक प्रतीकक प्रयोग कय व्यञ्जनवर्गक ओहि संख्यक वर्णक माध्यमे चमत्कार उत्पन्न कयल गेल अछि ।

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे संख्यामूलकप्रतीक जतय साधनामार्ग ओ शरीरक विभिन्न अंगोपांगक संकेतक अछि आ योगसाधनाक तथ्य कें निरूपित करैछ, ओतहि महाकवि विद्यापतिक पदावली मे संख्यावाची प्रतीक केवल रसानुभूतिक उत्कृष्टता ओ रसिकताक हेतु प्रयुक्त देखि पड़ैछ ।

विद्यापतिक संख्यावाची प्रतीक मे किछु प्रौढ़ोक्तिमूलक अछि यथा नबओ निधि ।[११] नबओ निधि वस्तुतः प्रेमक मिलन पक्षक प्रतीक अछि ।

पारिवारिक प्रतीक

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे दाम्पत्यमूलक प्रतीक कें एही प्रतीकक अन्तर्गत राखल जा सकैछ । तदतिरिक्तो लौकिक जगत, प्रकृति जगत आदिक प्रतीक कें सेहो एही वर्ग मे राखल जा सकैछ । एहि प्रकारक प्रतीकक सेहो बहुलतया प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भेल अछि यथा–

'साहु जे चललाह बनीजए बनिज मोलाएल हो ।।'[१२]

एहि मे साहु शरीरक तथा बनीजब आत्मतत्वक साक्षात्कार करबाक प्रतीक थिक ।

'दुलहिन मन गावे आनन्द वरहु निर्गुण पावे बीतल बिआह' मे दुलहिन आत्माक ओ बिआह साक्षात्कार वा सायुज्यक प्रतीक थिक । एहिना अन्यान्यो प्रतीकक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा–

शब्द	प्रतीकार्थ	शब्द	प्रतीकार्थ
वर	परमात्मा	नैहर	संसार
कोहबर	परमात्माक सायुज्यक	[illegible]	ब्रह्मरन्ध्र
मिरगा	मन	बिलइया	षड्विकार
सासुर	परमात्माक प्रदेश	बैंगिनी	सुरतियोग
कन्यादान	परमात्माक मिलनक [illegible]	सखिया	षड्विकार
मेहमान	परमात्मा	पँजीन	इन्द्रिय
सुहबे	जीव	चुनरी	शरीर
धोबी	गुरु	गओना	महाप्रयाण
दाग	विकार	अओना	पुनर्जन्म
सम्मरि	पुण्य-संचय	हंस पंछि	जीव
पिआ	परमात्मा	अहिबात	सायुज्य
मन्दिल	शरीर	नारी	माया
हटिया	संसार	जोलहा केवट	गुरु
डोलिआ	चचरी	ननदी	माया
कहरिया	कठियारी	जोगिआ	परमात्मा
मकान	शरीर	साड़ी	शरीर
सुगना	जीव	धुनिआ	गुरु
भ्रमर	जीव	समधिन	माया
पिजड़ा	शरीर	गहना	माया

एकरासभक अतिरिक्तो ताना-बाना, चरखा, टाकु, चमरख, माल्ह, पिलल्तर, ढील सासु, ननदि, आदि प्रतीकक प्रयोग सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे भेल अछि । एहि प्रतीक सभक माध्यमे सन्तकबीर सामान्यतः मायामय संसारक निस्सारता, मनक चांचल्य, षड्विकारक प्रति मानवक ग्रस्तता आदिक निरूपण कयलनि अछि तथा मानव कें सायुज्य मुक्तिक हेतु योगसाधनाक प्रति उन्मुख करबाक संदेश देलनि अछि ।

महाकवि विद्यापतिक पदावली मे सेहो विभिन्न प्राकृतिक उपादान ओ पारिवारिक सामाजिक जगत सँ प्रतीक विधान लेल गेल अछि । हिनक रसपक्षीय चित्रण मे भ्रमर नायकक, मालति, नायिकाक, जातकि, केतकि, कवि, पदुमिनि आदि विभिन्न परकीयाक प्रतीकक रूप मे वर्णित अछि । नायिकाक सौन्दर्यक अतिरेकक वर्णन मे नाक सुग्गा ओ तिलफुल, आँखि-हरिण ओ खंजन, केश-अन्हार, भृकुटी-नागिन, सिन्दुरबिन्दु-सूर्य, शरीर-तड़ितलता, मोतीमाला-सुरधुनि, आदि प्रतीकक माध्यमे अभिव्यंजित भेल अछि । हिनक एकटा पद मे सांसारिक माया कें खेतीक ओ वाणिज्यक प्रतीकक रूप मे चित्रित कयल गेल अछि आ एहिमे जहिना कबीर पंच ज्ञानेन्द्रिय कें परमात्मा सँ मिलनक बाधाक रूप मे चित्रित करैत देखल

जाइत छथि, तहिना महाकवि विद्यापति मनमथ कें सांसारिक विफलताक कारण कहलनि अछि। पद एहि प्रकारें अछि–

खेत कएल, रखबारें लूटल ठाकुर - सेवा - भोर ।
बनिजा कएल लाभ नहि पओले अलप (मूर) भेल थोर ।
रामधन बनिजहु, बेज अछ लाभ अनेक ।
मोति मजीठ कनक हमे बनिजल, पोसल मनमथ चोर ।
जांखि परेखि मनहि हमें निरसल,धन्ध लागल मन मोर ।
ई संसार हाट कए मानह, सबओ लोक बनिजार ।
जे जस बनिज लाभ तस पाबए, मूरुख मरहि गमार ।।[६१]

हिनक किछु विशिष्ट प्रतीक द्रष्टव्य अछि–

शब्द	प्रतीकार्थ	शब्द	प्रतीकार्थ
कण्टक	सामाजिक व्यवधान	घेङ्गूर, श्येन,	धीरोद्धत नायक
कमलिनि	नायिक (परकीया)	चन्दा	नायक
बिरला, बटइ, मूस	धीरोद्धत नायक	चकोरी, कुमुदिनि	नायिका

एहि तरहें विद्यापतिक प्रतीकविधान सौन्दर्यसाधना ओ रसाभिव्यंजनाक विशद् अभिव्यक्तिक हेतु प्रयुक्त भेल अछि ।

एतावता प्रतीक विधानक दृष्टिजें महाकवि विद्यापतिक पदावली मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली जकाँ वैविध्य ओ विपुलताक अभाव अछि । जतए सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक प्रतीक सभ योगसाधना ओ परमतत्वक प्राप्तिक हेतु अनुगम्फित अछि ततहि महाकवि विद्यापतिक प्रतीक विधान ब्रह्मानन्द सहोदर रसेक सुष्ठुतम अभिव्यंजनाक परित: आघूर्णित देखि पड़ैछ ।

भाषा-शैली

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावलीक भाषाक तुलना कएला उत्तर ई स्पष्ट होइछ जे महाकवि विद्यापतिक भाषा मे शास्त्रीय ओ लोकायनक अद्‌भुत सामञ्जस्य अछि । हिनक रस पक्षीय गीतिकाव्य मे शास्त्रीय आधारपरक रचनाक बाहुल्य अछि आ एहन गीतिकाव्य मे ई परिनिष्ठित भाषाक प्रयोगक प्रति सचेष्ट छथि । दोसर दिस हिनक शैव पदावली ओ लोकजीवनक चित्रण सँ सम्बद्ध चित्र ओ लोकगीतक भाषा मे जनभाषाक उच्छलता, सहजता ओ प्रवाहक दर्शन होइछ । स्वभावत: हिनक व्यवहारपरक ओ भक्तिभावात्मक नचारी, महेशवाणी मे लोकशैलीक प्राचुर्य ओ लोकजीवन आ लोकभाषाक प्रति हिनक व्यापक संवेदनाक अभिव्यक्ति स्पष्ट प्रतीत होइछ ।

डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' विद्यापतिक काव्यसाहित्यक वैशिष्ट्य पर विचार करैत कहलनि अछि जे 'विद्यापतिक गीत साहित्य-गीत होइतहुँ लोकगीत ओ लोकगीत होइतहुँ साहित्य गीत थिक । हुनक युगातीत ओ स्थानातीत लोकप्रियताक मूलाधार एहि तथ्य पर आधारित अछि।

विभिन्न अवसर पर प्रयुक्त व्यवहार गीत निश्चित रूप सँ लोकगीत थिक, मुदा ओकर शब्दविन्यास अभिव्यक्ति रीति ओ भावसौष्ठव निश्चित रूप सँ साहित्यिक । तिरहुति शृंगार रसक गीत थिक, जाहि मध्य संयोग-वियोगक बहुविध भाव ओ रूपक चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि । 'ना हो रे' अथवा 'सजनी' प्रभृति दए तिरहुति सुरक समन्वय कएल जाइत अछि, किन्तु ओकर अभावहु मे शुद्ध कविताक दृष्टिएं सेहो ओ कम सुपाठ्य नहि होइछ । एहि प्रकार भावक प्रकर्ष एवं संगीतक उत्कर्षक समन्वय भेलाक कारणे हिनक रचना पश्चिम प्रान्तहु मे प्रचलित भेल ।'[६२]

एतावता डॉ० 'श्रीश' महाकवि विद्यापतिक काव्य मे साहित्यिकता ओ लोक तत्वक सामान्जस्य कें तँ स्वीकृत कएलनि अछि मुदा हिनक व्यवहारगीतहु मे शब्दविन्यास, अभिव्यक्ति-रीति ओ भावसौष्ठव कें रसपक्षीय साहित्यिक गीत सदृश सुपाठ्यताकें ग्रहण कयलनि अछि । मुदा वस्तुत: विद्यापतिक लोकव्यवहारपरक गीतक भाषा मे ओ परिनिष्ठता नहि अछि जे हिनक रसपक्षीय साहित्यिक गीत मे अछि । लोक व्यवहारपरक गीत ओ नचारी-महेशवाणी मे हिनक भाषा लोकभाषाक संजीवनी ग्रहण कय उत्तरोत्तर सहजता कें ग्रहण कयने देखि पड़ैछ, जकर परिणामस्वरूप ई गीत सभ एकहि दिस जँ मिथिलाक लोक जीवनक चित्रक संवहन कयने अछि तँ दोसर दिस गाम-गामक महिसवारोक अधर पर स्फुरित-नर्त्तित देखल जाइत रहल अछि । विद्यापतिक शैव पदावली पर विचार करैत डॉ० रामदेव झा एही भावक अभिव्यक्ति कयलनि अछि । हिनकहि शब्दमे–'विद्यापतिक समस्त शिवगीतकें देखला उत्तर एतबा तँ निश्चित भए जाइछ जे ओ यथार्थ मे लोककवि छलाह आ हुनक लोककवित्वक प्रतिनिधित्व करैत अछि शिवगीत । ओ जेहन जीवन देखलनि, जेहन जीवन जिउलाह, जेहन आदर्श जीवनक अपेक्षा छलनि, जाहि जीवनदर्शनक अनुभव कएने छलाह, तकर सभक अभिव्यक्ति शिवपार्वतीक माध्यम सँ अपन शिवगीत मे कएलनि अछि । भक्तिभावनाक पोषणार्थ शिवक अलौकिक स्वरूपक चित्रण भेल अछि ओ सामाजिक भावनाक कारणें लौकिकताक समावेश कयल गेल अछि । लोकद्वय साधनी विशेषताक कारणें विद्यापतिक ई शिवगीत सभ भक्तिसाधना ओ लोकव्यवहार दुहू पक्ष मे प्रयुक्त होबय लागल आ मिथिलाक जनजीवन मे मीलि कय एकाकार भए गेल ।'[६३]

महाकवि विद्यापतिक एहि पद मे शिवपार्वतीक आश्रय लय तद्‌युगीन मिथिला समाजक निर्धनता ओ दरिद्रताक नग्न चित्र उपस्थित कएल गेल अछि–

बुढ़ारी वयस हर काँ बेटा एक भेल ।
नै घर उबटन नै घर तेल ।।
मङनिक सरिसब लेलनि पिसाइ ।
चान सुरुज देल देहरि बैसाइ ।।
माङि चाङि लयला तामा एक मिसिया ।
हरक चरित देखि हसय परोसिया ।।[६४]

एहि पद मे हिनक भाषा पर लौकिताक स्पष्ट छाप देखि पड़ैछ । एहि मे लोकजीवनक

शब्द, भाव ओ अभिव्यक्तिक सहजता एकरा लोकगीतक कोटि मे रखैत कविक काव्यभाषा कैं लोकभाषाक कोटि मे स्थापित करैछ ।

लोकभाषाक प्रति महाकवि विद्यापतिक ई आसक्ति बालविवाह सँ सम्बद्ध एहि गीतक सहजता मे सेहो देखल जा सकैछ–

पिया मोर बालक हम तरुनी । कोन तप चुकलौँहु भेलौँह जननी ।।
पहिर लेल सखि एक दछिनक चीर । पिया के देखैत मोर दगध सरीर ।।
पिया लेली गोद कै चललि बजार । हटिया के लोग पूछे के लागु तोहार ।।
नहि मोर देवर कि नहि छोट भाइ । पूरुब लिखल छल बालमु हमार ।।
बाटरे बटोहिया कि तुहु मोरा भाई । हमरो समाद नैहर लेने जाउ ।।
कहिहनु बबा के किनए धेनु गाइ । दुधवा पिआइकें पोसता जमाइ ।।
नहि मोर टका अछि नहि धेनु गाइ । कौन विधि पोसब बालक जमाइ ।।
भनइ विद्यापति सुनु ब्रजनारि । धैरज धरह त मिलत मुरारि ।।[६५]

एहि तरहें ई स्पष्ट होइछ जे महाकवि विद्यापति जे महेशवाणी ओ नचारी तथा लोकव्यवहारपरक अथवा सामान्य जनजीवनक चित्रण सँ सम्बद्ध पदक रचना कएलनि, ताहिमे लोकभाषाक प्रति अत्यन्त आसक्त रहलाह आ हिनक एहन गीत लोकगीत मध्य परिगणित कयल जाय लागल तथा लोक जगतक भाषा भाव ओ परिवेश रहबाक कारणें अधिक लोकप्रिय ओ लोकप्रचलित भेल । हिनक लोकगीतात्मक भाषाक तुलना नीचाँ उद्धृत लोकगीतक भाषा सँ कयला उत्तर ई तथ्य आर अधिक स्पष्ट रूपें समक्ष आबि जा सकैछ–

टुटल मड़ैया सिट सिट वदना, कोनविधि बचतनि लाज यो ।
गौरीकें नहि नूआ चेथरा, नहि छनि फाटल पुरान यो ।।
एकहि कम्मल तीनि पुत्र मिलि घीचि तीरि घमसान यो ।
पूस गोइठा जाड़ि खेपलनि, बसहो गेलनि पराइ यो ।
अगबे साग खेसारी पर ई माघो खेपती दाइ यो ।।[६६]

तथापि

किछु नहि थीक भोला गरीबक दीन ।।
एकटा जे लोटा अछि बेटा अछि तीन ।
पानि पिबै काल होअय छीनम छीन ।।
भाइ सहोदर सेहो मतिहीन ।
लगले बढ़ताह होयताह भीन ।।
खेती ने पथारी अछि भेटय ने रीन ।
भूखल धिया पुता करय खिना खिन ।।[६७]

स्पष्टतः विद्यापतिक भाषाक दुइगोट स्वरूप देखि पड़ैछ । रसपक्षीय गीतक अधिकांश पदावलीक भाषा साहित्यशास्त्रानुकूल समंजित तथा लोकपक्षीय गीत ओ नचारी-महेशवाणीक

भाषा लोकजीवन सँ सम्पृक्त देखि पड़ैछ । लोककवि विद्यापतिक व्यवहारपरक पदावली मे सोहर, समदाउनि, ऋतुगीत मे वसन्त, फागु, तिरहुति, चैतावर, बारहमासा, झुम्मरि आदि श्रमसम्बन्धी गीतमे लगनी तथा देवी-देवता सम्बन्धी गीत मे महेशवाणी ओ नचारी प्रभेदक गीत हिनक लोकभाषा प्रयोग तथा लोकरचना-प्रणालीक विशिष्टताक उद्घाटन करैछ ।

दोसर दिस सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भाषा मे शास्त्रीयता भाषिक पक्ष मे नहि अपितु प्रतीक पक्षहिटामे देखि पड़ैछ । एहि पदावली मे सोहर, समदाउनि, चैत, वसन्त, झूमर, कोबर, लगनी, निर्गुण आदि प्रभेदक लोकगीतक अनुरूप समावेश देखि पड़ैछ ।

कहल जा सकैछ जे महाकवि विद्यापतिक ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली लोकशैलीक प्रयोगक कारणें अत्यन्त निकट अछि । दूहू पदावली मे प्रयुक्त लोकशैलीक गीतक तुलना सँ दूहू पदावलीक साम्यक निरूपण संभव अछि ।

सोहर

सोहर मैथिली लोकगीत शैलीक अमूल्य धरोहर थिक । मिथिलाक लोकजीवन कैं आनन्दमय बनएबा मे अन्य अनेक शैलीक अतिरिक्त सोहरक सेहो प्रमुख भूमिका अछि । पुत्रजन्मक उछाह, उपनयन ओ विवाहक अवसर पर ई गीत गाओल जाइत अछि । एहि गीत शैली मे उमंग-तरंग ओ उल्लासक अभिव्यंजना देखि पड़ैछ । ई सुखान्त गीत थिक आ एकरा टेक 'ललना रे' होइत अछि ।

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे सोहरक बाहुल्य अछि । हिनक सोहर मे कतहु तें 'ललना रे' टेक कैं अविकल राखल गेल अछि मुदा कतहु कतहु ई 'साधो हो' क रूप मे सेहो देखि पड़ैछ । एहि प्रकारक पदावली मे जीवात्मक परमात्मा सँ मिलनक उछाहक वर्णन भेल अछि आ परमपद प्राप्त भक्तक हार्दिक संवेदनाक अभिव्यक्ति भेल अछि यथा–

सुखसागर सुख विलसहु दुख परित्यागहु हो । ललना रे ।।
सुमिरहु सिरजनहार जागन्त होए जागहु हो ।।[१]।।
जेकरहु अंगना झिलमिलिआ की सेहो कइसे सोबैक । ललना रे ।।
महले महले फूल फूलल निन्द नहि आबइ हो ।।[२]।।
काढ़ब प्रेमके झिलमिलिआ के पलंगा ओछाएब हो । ललना रे ।।
ताहि पर सैआ मोर साहेब कि बेनिआ डोलाएब हो ।।[३]।।
सासु मोरा बैठलि ओसरबा ननदि गढ़ उपर हो । ललना रे ।।
स्वामी बैठल मन्दिर घर कइसे दरसन पाएब हो ।।[४]।।
सुनु सुनु ननदि सोहागिन पिआ के देखाबहु हो । ललना रे ।।
पाँच चोर बड जोर मुसल दिन राती हो ।।[५]।।
साहेब कबीर सोहर गाओल गावि सुनाओल हो । ललना रे ।
सन्तो जन लेहु न विचारि, परमपद पाओल हो ।।[६८]

महाकवि विद्यापति सोहर गीतिरूपकक रचना तँ नहि कयने छथि मुदा हिनक वसन्त जन्म सँ सम्बद्ध एक गोट पद मे वसन्तक मानवीकरणपूर्वक सोहरक भाव ओ उछाहक वर्णन

भेटैत अछि। यद्यपि एहि वसन्त-गीत मे छन्द-प्रवाह सोहरक ग्राम्यशैलीक अनुसरण नहि करैछ आ ने एहि मे टकक रूप मे 'ललनारे' क प्रयोगे अछि, जे सोहर शैलीक अन्यतम विशिष्टता अछि, तथापि शिशु जन्मक उछाहक वर्णनक कारणें एकरा सोहरेक अन्तर्गत परिगणित कयल जाइत रहल अछि। पद एहि रूपक अछि–

माघ मास सिरिपञ्चमि गँभाइलि, नवम मास हलु आई हे ।
अति घन पीड़ा, दुःख बड़ पाओल, बनसुपती भेलि धाई हे ॥
सुभ खन बेरा सुकुल पक्ख हे दिनकर उदय समाइ हे ।
(सब गुन) सम्पुन, बतिस लछन(जुत), जनम लेल रितुराई हे ॥
नाचए जौवति-गन हरखित (मन) जनमल बाल मधाई हे ।
मधुकर-मण्डल मङ्गल गाबए; मानिनि-मान उड़ाई हे ।
त्रत्य मलयानिल मांसविठफुल तोजभुकतमन्तुलमउतें उदितमारबन्हनेबारा हे ॥

पोअरि-पाण्डरि महुअरि गाबए, काहरकार धुतूरा हे ।
नागेसर कलि पुरए मङ्खधुनि, तगर ताल समतूरा हे ।
मधु लए मधुकरे बालक दए हलु कमल-पंखुरिआ लाई हे ।
पोअनाल तोरि कटिसुत बान्धल केसु कइलि बघनाई हे ॥
नव-नव पल्लव सेज ओछाओल, सिर दहु कदम्बेरि माला हे ।
बैसलि भमरी हरउद गाबए, चक्का चान्द निहारा हे ॥
कनए-कंआसुति पात लिखिए हलु रासि नछत कए (मेला) हे ।
कोकिल गनित-गुनित भल जानए, रितु वसन्त नाम (देला) हे ॥
बाल वसन्त तरुन भए धाओल बढ़ल सकल संसारा हे ।
दखिन पवन घन आँग उगारए कुवलय कुसुम परागे हे ॥
(ललित तमाल) मन्जरि घन काजर आँखिते आञ्जन लागे हे ॥
नव वसन्त रितु अनुसर जौवति विद्यापति कवि गावे हे ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन सकल कला मन भावे हे ।[६९]

तथापि विद्यापतिक पद मे सोहर शैलीक छन्दक प्रयोग देखि पड़ैत अछि यद्यपि एहि मे ने सोहरक उछाह ने 'ललनारे' टेक सएह देखि पड़ैछ। पद एहि प्रकारें अछि–

लोचन धाए फेघाएल हरि, नहि आएल रे ।
सिवसिव, जिव नहि जाए, आसे अरुझाएल रे ।
मन कर तहाँ उड़ि जाइअ जहाँ हरि पाइअ रे ।
पेम - परसमनि पानि आनि उर लाइअ रे ।
सपनेहु संङ्गम पाओल, रंङ्ग बढ़ाओल रे ।
सेहो मोर बिहि विघटाओल, निन्दओ हेराओल रे ।
हिमकर-कर छल सीतल सेहो भेल तिखतर रे ।

पिआ बिनु सबे विपरीत निते-निते जिव हर रे ।
हरि हरि हरि परिहरि गेल बिहि दुख मोह देल रे ।
सरसिजदल जलसेक अनल सम सेओ भेल रे ।
सुकवि विद्यापति गाओल धनि धैरज धरु रे ।
अचिरे मिलत तोहि बालंभु पुरत मनोरथ रे ।[७०]

एहन कतोक सोहर गीत विद्यापति परम्पराक कविलोकनि द्वारा रचित भेटैछ आ कतेक श्रुतिगोत साहित्यक रूप मे प्राप्त अछि यथा–

सुन्दरि निन्दक मातल सुतलि अपन गृह रे ।
ललनारे, ताहि अवसर पिआ आएल बैसल पलंग चढ़ि रे ।
उपमत भेलाह कंत वचन नहि टारल रे ।
ललनारे, दारुण दुख मोर देल वसन सम्हारल रे ॥
बिति गेल दोसर मास तेसर चढ़ि आएल रे ।
ललनारे, कंचन अधर मलिन भेल चित फरिआएल रे ॥
चारिम मास जब आएल कहैत डर लागु रे ।
ललनारे, ताहि सँ व्याकुल देह तलफि कय बीतय रे ॥
दुख सँ पाँचम मास छठम चढ़ि आएल रे ।
ललनारे, झामर धनिक शरीर भूषन अंग काढ़ल रे ।
अधगति सातम मास आठम चढ़ि आएल रे ।
ललनारे, दिवस लागय अन्हार मोन बड़ व्याकुल रे ॥
बितल आठम मास नवम चढ़ि आएल रे ।
ललनारे, रहि रहि बेदन बेआकुल शर सन लागए रे ॥
फेर ने करब एहन काज जँ धनि बाँचलि रे ।
ललनारे, जनमल त्रिभुवननाथ सम मन आनन्दित रे ॥[७१]

वसन्त

ई ऋतुपरक गीत थिक। वसन्त ऋतुक मादकताक कारणें नायिकाक विरहकातरताक वर्णन एहि प्रकारक गीत शैली मे पाओल जाइत अछि। सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्राप्त एहि शैलीक गीत मे छन्दविधानक संगहि विषय संहो विद्यापति पदावलीक समाने देखि पड़ैछ। विद्यापति पदावली मे जतय विरहकातरि नायिकाक मनोभावक अभिव्यक्ति भेल अछि, ओतए सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे जीवात्माक विरहकातरताक प्रतीक रूपें अभिव्यक्ति देखि पड़ैछ यथा–

कबीर– तेजु तेजु भँवरा कमल केर आस ।
तोर बिनु भँवरी परल उदास ॥
बारी वयस भँवर गेल विदेश ।
तब भँवरी मन भेल अन्देश ॥

चारि दिनन लए मच रंग फूल ।
ताहि देखि भँवरा रहि गेल गूल ॥
जब वन सप्तो उगल भान ।
ताहि मे भँवरा मिलल विश्राम ॥
चारु भर भैआ लागल आगि ।
कहहिँ कबीर भँवर कहाँ जेब भागि ॥[७२]

विद्यापति– आओत वसन्त पहु गेल विदेश ।
नयना के काजर फूजल केश ॥
भारि दिन पिया के करब उदेस ।
भरि राति पिया के होयत क्लेस ॥
भनहि विद्यापति गाओल वसन्त ।
तखनहि बुझब गीतक अन्त ॥[७३]

वसन्त गीति रूपक मे बहुधा वसन्त ऋतुक चित्रण उद्दीपन विभावक रूप मे भेल अछि मुदा महाकवि विद्यापतिक किछु पद वसन्तक मानवीकरण कय आंकर आलम्बन विभाव बनाए राजा वसन्त, वसन्तक चुमाओन ओ विवाहक चित्रक माध्यमे साङगरूपकताक रोचक परिसरक उपस्थापन भेल अछि ॥[७४]

सन्तकबीरक वसन्त काव्यरूप पर विचार करैत डॉ० नजीर मुहम्मद कहलनि अछि जे 'सन्तकबीरक एकटा अन्य काव्यरूप वसंत थिक । बीजक, आदिग्रन्थ ओ कबीर–ग्रन्थावली तीनू मे ई भेटैत अछि । वसन्त ऋतु मे अभितोल्लासक संग गाओल जयवला पद्यहि कें फागु, धमार, होली, अथवा वसन्त कहल जाइत छैक । लोकप्रचलित काव्यरूप कें ग्रहण कय कबीर अपन रूचिक अनुकूल शैली मे परिवर्तित कय अपन उद्देश्यक हेतु एकर प्रयोग कएलनि अछि । एहि वसंतकालीन वातावरण कें देखबैत उपदेशात्मक प्रवृति अपनाओल गेल अछि। मायाक नृत्य ओ शृंगार वर्णन कए विषयासक्त अविवेकी लोकनि कें विचलित होइत देखाओल गेल अछि ।[७५]

उपर्युक्त उद्धरण सँ स्पष्ट अछि जे सन्त कबीर मे प्राप्त वसन्त शीर्षकक काव्यरूप मे फागु–होरी सेहो अन्तर्मुक्त अछि । मिथिला मे वसन्त गीतरूपक सँ विरही जीवनक कातरताक अभिव्यक्ति करैछ तँ फागु ओ होरी मे बहुधा मिलनक उत्साह तथा वसन्तोत्सवक उल्लासक वर्णन भेटैछ यथा–

परदेशिया लै अड.ना निपाबै गोरिया, परदेशिया लै ।
जब परदेशिया नगर बिच आयल
लाल पुआ पकाबे गोरिया, परदेशिया लै ।
जब परदेशिया दुअरे बिच आयल
लाल रंग चादर ओछाबे गोरिया, परदेशिया लै ।
जब परदेशिया पलंगा पर बैसल
रंग अबीर उड़ाबे गोरिया, परदेशिया लै ॥[७६]

विद्यापतिक वसन्त शीर्षक पदावली मे बहुधा विरहकातर नायिकाक वेदनाक अभिव्यक्ति भेल अछि मुदा वसन्तोत्सव सँ सम्बद्ध काव्यरूपक मे उल्लासमक अतिरेककें चित्रित कयल गेल अछि । एहि पद मे शिवपरिवार कें एकहि संग फागु–क्रीडा मे संलग्न देखाओल गेल अछि। नारायण सेहो सपत्नीक सम्मिलित छथि । पद एहि प्रकारें अछि–

कत न झोरी सिन्दूरे भरलि भसमे भरु बोकान ।
बसह केसरि मयूर मूसा चारुह पर पलान ।
डिमिक डिमिक डमरु बाजए उमा खेलाए फागु ।
भसमे सिन्दूरे दुअओ खेड़ा एकहि दिवस लागु ।
सझाँत्रे सिन्दूरे भरु सरुसति लाछमिहि भरलि गोरी ।
दूसरे भसमे भव नाराएन पीत वसन बोरी ।
एक तञो नागट अओके उपत दूसर धुथुर खाए ।
अओके उमति खेड़ि खेलाबए किछु न बोलए जाए ।
गरुड़वाहन देव नाराएन वसह चढु महेस ।
भने विद्यापति कौतुके गाओल सङगहि फागथि दस ।

विद्यापतिक एकटा अन्य पद मे फागुक हासोल्लासक वर्णन अत्यन्त सहज रूपें अभिव्यक्त भेल अछि–

नाचहु हे तरुणिगन तेजहु लाज ।
आओल वसन्त ऋतु वणिकराज ॥
हस्तिनि पदुमिनि चित्रिणी नारि ।
गोरि सामरि एक बूढ़ बारि ॥
विविध भाँति कएलिह शृंगार ।
परिधन पटोरगिम झुलहार ॥
केओ अगुरु चन्दन घसि भरि कटोर ।
ककरहु खौइछा कपूर तमोर ।
कओ कुकुममरदाब आङग ।
ककरहु मोतिआ भल साज आङग ॥[७७]

एतावता सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे वसन्तक अध्यात्मपरक गीतरूपक रूप मे तथा विद्यापति पदावली मे एकर विरहनिवेदन ओ फागुक हासोल्लासक गीति रूपक रूप मे प्रयोग देखि पड़ैछ ।

चैतावर

होलिकोत्सवक पश्चात मिथिलाक ई विशिष्ट गीत शैली थिक । एहि गेय मे शृंगाररस ओ विरहपक्षक प्रधानता रहैछ । एकर टेक मे हो रामा रहैत अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावली दुहू मे ई गीत शैली प्रयुक्त भेटैत अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एकर शीर्षक चैत भेटैछ ।

उदाहरणक हेतु ई पदावली द्रष्टव्य अछि

कबीर– सखिक हमरो गुलाइल हो रामा । एहि रेहेडुओ ।
मोर लागु सैआँ पहु सैआ बरवाग ।
सखिक टूटि गेहु हो रामा ॥
ननद ननदिया बसए एक गोरवा ।
छन छन देआ कुमतिया हो रामा ॥
मोर लेखे अगले दिन चान्द छकित भेल ॥
सो लेखे दिन रतिया हो रामा ॥
साहेब कबीर कहे धनि मति रोक ॥
सहीह से पिअवा मानाए लेब हो रामा ॥[०]

× × ×

विद्यापति– चैत मास पिया भेल योगिया हो रामा ।
जौं हम जनितहुँ पिआ होएता जोगिया
बान्हितौं से रेशमक डोरिआ हो रामा ॥
रेशमक डोरिया टूटि फूटि जयतइ
बान्हितौं से अचरा लगाय हो रामा ॥
जाहि बाटे जाइ एक रघुवंशी
तीर धनुष नैने हाथ हो रामा ॥
भनहि विद्यापती सुनु हे सहेलरि
फेर घुरि राम चलि आओता हो रामा ॥[०]

घाँटो

मिथिलाक ई लोकशैली अत्यन्त प्राचीन अछि । एहि गीतशैलीक प्रयोग घटसर आ घटपूजनक काल होइत रहल अछि । महाकवि विद्यापतिक ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे ई लोकगीत शैली उपलब्ध अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे घाँटो एकटा विशिष्ट गीतशैलीक रूप मे प्रतिष्ठापित अछि,मुदा एकर राग अनेकठाम चैतावरक भेटैत अछि यथा–

अजब नगर के कोठरिया हो रामा गति कोइ न लखाबे । टेक
ओहि रे कोठरिया मे प्रेमपेटरिया तहाँ होएत सैआँ के सेजरिया हो रामा ॥१॥
मन गलि सोए सैआँ मोर जागे आबि गेल सुखमन लहरिया हो रामा ॥१॥
ओहि रे लहरिया सैआँ बिन निन्नो न लागए हीरा कनक कटोरिया हो रामा ॥३॥
कहए कबीर सुनो भाइ साधो खुलि गेल भरम केबरिया हो रामा ॥४॥[०]

मिथिला संस्कृत शोधसंस्थान, दरभंगाक हस्तलिखित ग्रन्थ सं० ६९७८ (विद्यापति गीत, संग्रह ल०सं० ८७१ (१५८६ई०) लिखित तालपत्र ग्रंथ) मे एकटा पद घटपूजन सँ सम्बद्ध भेटैछ।

यद्यपि विद्यापतिक ई पद कबीरक घाँटोक शैलीक अनुरूप नहि बुझना जाइछ तथापि ई पद सिद्ध करैछ जे घाँटो शैली मिथिलाक प्राचीन गीतशैली थिक आ सन्त कबीर एहि शैली सँ अनुप्राणित भए रचना करैत होयताह । विद्यापतिक ओ पद एहि प्रकारेँ अछि

कतुपति कृत मधुमासक अल्प दिवस अवशेषि ।
सोदर मङ्गलकारक मङ्गल नामा लेखि ॥
पुरनारी सब हरित वसन विभूषन साज ।
सकल मनोरथ दायक घाय घटेसर आज ॥
जूथैं जूथैं समुदित भए चललि कुलालक गेह ।
पुलकित मङ्गल गबइतैं पुलक विराजित देह ॥
अभिमत वेनन लए लए विरिचि तत्काल ।
सब कैं देथि घटेसर, सानन्द भइये कुलाल ॥
जतने पहिङ्छि पुनि आनल लोहित पट दए झाँपि ।
निज निज मन्दिर देहलि निकट धएल तन्हि थापि ॥
विविध वसन्त कुसुम तोड़ि माधवि कुन्द नेवारि ।
चान्दन धूप दीप दए पुजल भगति अवधारि ॥[०]

एहि पद कैं देखला सँ ई स्पष्ट होइछ जे घाँटो पद घटपूजनक समय सम्प्राप्त भेला पर गयबाक प्रचलन मिथिलाक लोकजगत मे रहल अछि । ई घटपूजन संभवत: चैत वैशाखक वसन्त वा ग्रीष्म ऋतुक कोनो मंगल दिन मे नारीलोकनि सहोदर भाइक मङ्गलकामनाक हेतु करैत छलीह । भए सकैछ जे सतुआनि दिन घटदान करबाक परिपाटी मिथिला मे अछि, ताहि अवधि मे ई गीत-प्रकार गाओल जाइत हो ।

झुम्मरि

झुम्मरि गीतशैली मिथिलाक लोकनृत्यक गीतशैली थिक । एहि मे लौकिक मैथिलीक प्रयोग होइछ तथा लय ओ गतिक अद्‌भुत सम्मिश्रण एहि शैलीक गीत मे देखि पड़ैछ । ई गीत संदेशात्मक आ भावात्मक दुहू कोटिक होइछ । एहि प्रकारक गीत मे प्रेमक करुण चीत्कार, अमिट अतृप्त पिआस ओ दीर्घ वेदनाक कलात्मक अभिव्यक्ति भेटैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एहि गीत शैलीक प्रयोग भेल अछि–

यथा–

चलु चलु जिअरा भला ओहि देश मे नहायलेब ना ।
त्रिवेणिआ के घटवा नहाय लेब ना ॥
सरजुग निरवा बहल चहु ओरवा छोड़ाय लिअ ना ।
अपना मन के मइलिआ छोड़ाय लिअ ना ॥
मइल जे छुटल दु:ख दारुण हटल से लागि गेल ना ।
हमरा गुरु से सनेहिया से लागि गेल ना ॥
साहेब कबीर एहो गावल झुमरिया बड़ भाग हए ना ।
जिनका लागल लगनिआ बड़ भाग हए ना ॥[०]

महाकवि विद्यापति सेहो एहि लोकशैलीक प्रयोग अपन पदावली साहित्य मे कयने छथि। यथा–

मोराहि रे आङ्गना चान्दन केरि गछिआ, ताहि चढ़ि कुररए काग रे ।
सोने चोंच बन्धाए देबओ मञे बायस, जओ पिआ आओत आज रे ।।
गाबह गाबह सहि लोरि-झुमरि मयन अराघने जाजु रे ।
चउदिसि चम्पा मउलि फूललि, चान्द उजोरिअ राति रे ।।
कइसं कए मञे मयन अराधबा, हांइति बड़ि रति-साति रे ।।
बाड़्कूं समय कागा केओ न अपन हित, देखल आँखि पसारि रे ।।
विद्यापति कविवर एहो गाविआ, ताँके अछ गुनक निधान रे ।
राउ भांगीसर सब गुने आगर पदमा देवि रमान रे ।।[८४]

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक झुम्मरि जतय आध्यात्मिक रूपक पर आधारित अछि ओंतए महाकवि विद्यापतिक झुम्मरि मे लौकिक प्रेमक उद्‌भावना अछि। हिनक किछु झुम्मरि गीतक पदान्त मे कबीरंक सदृश गीत प्रकारक उल्लेख कयल गेल अछि। यथा–

नगरक बानिनि ओ रे हरि पुछ हरि पुछा किए किए हाट बिकाए ।
हिरा मनि मानिक ओ रे अनुपम अनुपमा नाना रतन पसार ।
एक नाल दुइ ओरे सिरिफल सिरिफला (सोनक कलश समान) ।
अधरा सिरिफल ओ रे आञ्चर आञ्चरा अधरा अधिक विकाए ।
विद्यापति कवि ओ रे गाबिह गाबिहा झुमरि बुझ रसमन्त ।
सिरि महेसर-सुत ओ रे गुनिसर गुनिसर जुड़म देवि सुकन्त ।[८५]

x x x

आबह सङ्ग सहलोलिनि रे चन्दन बन जाउ।
चन्दनवन जुड़ि छाहरि रे मेरि झूमरि गाउ ।
झूमरि गबइते चञ्चलि रे (भेलि) नागरि वाला ।
उतर दखिन धुनि सुनिअ रे रुनझुन बाज ताला ।
उत्तर लाट के सीन्दुरा रे दक्खिन के सारी ।
सेहे पहिरि अराधिअ रे (सखि) गौरि भरारी ।
गौरि पूजि वर माङ्गिअरे किअ किअ फल पाबै ।
नव नेहा नव रितुपति रे नव बालंमु आबे ।
विद्यापति कवि गाओल रे झुमरि सरमन्ता ।
गरुड़नराएन रमनी रे हासिनि देवि कन्ता ।[८६]

लगनी

ई श्रमपरिहारपरक गीत शैली थिक जकर गायन मिथिलाक नारी लोकनि जाँत पीसैत काल करैत छथि। एकर टेक मे 'रे की' रहैत छैक तथा एहि प्रकारक गीत मे लोकजगतक

विविध चित्र उरेहल भेटैछ। मिथिलाक लोकशैलीक ई अत्यन्त प्रचलित गीतशैली सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे जतसारि शीर्षक सँ गृहीत भेल अछि। एहि प्रकारक गीतमे बहुधा जाँत, दउरी, झीक, कील, चालनि, मएदा आदि कें प्रतीक रूप से ग्रहणकय सन्तकबीर द्वारा आध्यात्मिक ओ साधनापक्षक तथ्य कें उद्‌घाटित कएल गेल अछि। उदाहरणक हेतु देखल जा सकैछः–

पाँच तत्व के लागल हटिआ,
सओदा करन हम जाएब पंटिआ,
गुरु गोविन्द गुण गाएब गेंहुआ बेसाहब रे की ।
अर्द्ध उर्द्ध केरं दोनो पल जतबा,
चाँद सुरुज के लागल हथरबा,
किलबा के बलिहारी सोहं शुभ डोलए रे की ।
शिल के समाए गेलै सतकी चंगेरिया,
पीसन चलिल नाम जतसरिया
पाँचो सखिआ पिसनिहारि पिसए निसिवासर रे की ।
तन के कड़ाही मे ज्ञान घृत करहु
मन मएदा करि सान रे सजनिआ
ब्रहम अगनि उठए धाह से पुड़िया बनाएब रे की ।
से पुड़िया हम सन्तो के पबाएब
दुलसि हुलसि के नाम गुण गाएब
छुटल नैहरबाके आस ससुर बेमनमा लागल रे की ।
साहेब कबीर गुरु गाओल लगनिआ
समुझि समुझि पग घरु रे सजनिआ
हाथ के रत्न हेराएल कइसे घरबा जायब रे की ।।[८७]

महाकवि विद्यापतिक एहि शैलीक गीत कें एहि पद मे देखल जा सकैछ–

रोपल मञे दमना पिआ करु गमना
सौरभ नगरि बेआपलि ना रे की ।
जओ पिआ अओता, नयन जुड़ओता
मन-मन्दिर देब बासे ना रे की ।
अधर मधुरि रस ओ पुनु अमिअ बस
दए पिआ हरबि पिआसे ना रे की ।
कुच सिरिफल लए भेट करब गए ।
प्रेम-पानि पएर धोआओब ना रे की ।
कवि विद्यापति भन सरुप मोरहु मन
सिरि सिवसिंह देब आओब ना रे की ।[८८]

विद्यापतिक काव्य परम्परा मे जाँत पिसबाकाल नायिकाक रूपस्थितिक वर्णनपरक लगनीक बाहुल्य भेटैत अछि यथा–

आध वदन तनु आधेओ आध पयोधर रे ।
आँचर वसने झँपाइए गाब मधुर सरे रे ।
पिसए बैसलि धनि कौतुकें समुचित सखि सङ्ग रे ।
दगघ मनोज जिआबए अनुपन तनुभङ्ग रे ।
पीन पयोधर घर भरें दुहु दुहु पेलय रे ।
मनमथनृपति निदेसे जौवन गज खेलए रे ।
सेदसलिलें तनु लागल अपरुब अँसुक रे ।
धनि बेकताएल अभिनव नख खत किंसुक रे ।
चतुर चतुरभुजें गाओल रस बुझ नागर रे ।
कृष्णचरण गुणसागर त्रिभुवन आगर रे ॥ [८९]

मैथिली लोकशैलीक एहि विशिष्ट गीतरूपकक बानगी एहि पद मे देखल जा सकैछ–

एक तऽ हम बारि कुमारी, दोसर हरि के प्यारी ।
कि आहो रामा, भंगिया घोटैते मोर मन ऊबल रे की ॥
एक तऽ राजा के बेटी, संग मलिनियां चेरी ।
कि आहो रामा, दिन भरि बेलपात कोना तोड़ब रे की ॥
फूल लोढ़ऽ गेलौं बाड़ी, आँचरा अटकलै ठाढ़ि ।
कि आहो रामा, शिव बिनु अँचरा के उतारत रे की ॥
चहुँ दिस ताकथि गौरी, कतहु ने देखथि जोगी ।
कि आहो रामा, कतहु ने सुनिऐ डमरु बाजन रे की ॥
बसहा चढ़ल आबथि, नाथ दिगम्बर मोर ।
कि आहो रामा, शिव के देखैते अँचरा छूटल रे की ॥[९०]

एहि तरहें मिथिलाक एहि लोकशैलीक गीतक प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावली दुहू मे भेटब लोकशैलीक प्रति दुहू महाकविक झुकावकें द्योतित करैछ।

चाँचरि

चाँचरि (सं० चर्चरी)–प्रा० चच्चरी–चाचरी– चाँचरि काव्य रूप अत्यन्त प्राचीन अछि। कालिदासक **विक्रमोर्वशीय** नाटकक चारिम अंक मे अप्रभ्रंश किछु चर्चरी नामक पद्य भेटैत अछि । एहि सब प्रमाणक आधार पर कहल जा सकैछ जे इहो वसन्तेक सदृश ऋतुगीतपरक काव्यरूप छल जे परवर्ती काल मे धर्मोपदेशक हेतु चुनि लेल गेल । [९१]

एहि काव्यरूपक प्रयोग सन्त कबीरक **बीजक** ग्रन्थ मे भेल अछि, जकर स्वरूप मैथिलीपरक अछि । बीजक मे दुइ गोट चाँचर संगृहीत अछि । एहिमे पहिल मे मायाक कृत्यक वर्णन दोहा-शैलीक छन्द मे कयल गेल अछि । दोसर मे 'टेक' क रूप मे 'मन बोरा हो'

क प्रयोग करैत संसारक गतिविधि सँ पागलमन कें सचेत करबाक उपदेशपरक वाणी संकलित अछि । एहि तरहें चाँचर बीजक मे काव्यरूपेक सदृश व्यवहृत अछि । उदाहरणार्थ कबीर **बीजकक** किछु पाँती द्रष्टव्य अछि–

पढ़े गुने का कीजिये, मन बौरा हो ।
अंत बिलैया खाय समुझु, मन बौरा हो ।
सूने घरका पाहुना, मन बौरा हो ।
ज्यों आबे त्यों जाय समुझु, मन बौरा हो ।
नहाने को तीरथ घना, मन बौरा हो ।
पुजबे को बहुदेव समुझु, मन बौरा हो ।
बिनु पानी नर बूड़हि, मन बोरा हो ।
तुम टेकेउ राम जिहाज समुझु, मन बोरा हो ।
कहै कबीर जग भरमिया, मन बौरा हो ।
तुम छाड़ेहु हरि की सेवा समुझु, मनबौरा हो । [९२]

मिथिला मे चाँचर शब्दक अर्थ अछि 'परती छोड़ल जमीन' । पावस ऋतु मे काज कयनिहार अथवा श्रमिक दुइ दल मे विभाजित भए चाँचरि गबैत छथि । एक दल सम्मिलित अथवा अर्धमिश्रित स्वर मे प्रश्न करैछ आ दोसर दल समीचीन उत्तर दैत छैक । उपर सँ वर्षा होइत रहैत छैक आ नीचा मे ओलोकनि ठेहुन भरि पानि मे डाँड़ झुकौने परती छोड़ल जमीन कें धान सँ आबाद करैत जाइत छथि ।[९३]

ई गीत प्रकार श्रमिक, पददलित, दीन, शोषित सर्वहारा प्राणीक प्रिय लोकगीत थिक। धनरोपनी, धनकटनी ओ सामूहिक कार्यक समय मे श्रमिकलोकनि ई गीत गबैत छथि । उत्तर-प्रत्युत्तर शैलीक ई गीत मिथिलाक लोकनृत्यशैलीपरक सेहो कहल जा सकैछ । उदाहरण हेतु ई पद द्रष्टव्य अछि–

कतय जे कृष्णजी जनम लेल
कतय भेलनि छठि हार ।
कतय हुनि बसिया बजओलन्हि
ककरा सँ लेलन्हि महादान ।
मथुरा मे जे कृष्णजी जनम लेल ।
गोखुला भेलइन छठिहार
वृन्दावन मे बसिया बजौलनि
राधासँ लेलनि महादान । [९४]

श्री राजेश्वर झा, 'चाचँर' गीतशैली पर विचार करैत कहलनि अछि, जे 'चाचँर थारु जातिक प्रिय गीत थिक जे बौद्ध सिद्ध लोकनिक चर्चरीक अवशिष्ट रूप थिक । श्रीहर्षक **रत्नावली** तथा वाणभट्टक कृति मे चर्चरी गीतक संकेत उपलब्ध अछि । बारहम शताब्दीक सोमप्रभ वसन्तकालमे चर्चरी गीतक चर्चा कयलनि अछि । कबीरदासक **बीजक** मे चाँचर

नामक एक गाट अध्याय अछि, जकरा मे पुरान चर्चरीक अवशेष पाओल जाइछ । अपभ्रंश मे जिनदत्त सूरिक लिखल चर्चरी प्राप्त अछि । हिनक टीकाकार जिनपाल उपाध्यायक अनुसार एहि भाषाक विविध गीतकेँ नाचि-नाचि कऽ गाओल जाइत छल । प्रायः सिद्धक चर्या शब्द सँ चर्चरीक उद्भव भेल । वज्रयानक गुप्तपूजाकेँ चर्या, अनुष्ठान वा आचरण कहल जाइत छल, जकर भ्रष्ट नेवारी रूप चर्चा थिक । एहि चर्चा शब्द सँ थारु जातिक चाँचर शब्दक निर्माण भेल। चाँचरक गीत भाषाक निबद्ध गीत थिक, जकरा नृत्य एवं छन्द अलंकृत कयलक अछि । चाँचरक कतिपय भेद अछि । कतहु तँ वर्षाक समय मे आओर कतहु नृत्-नृत्य मे ई गीत गाओल जाइत अछि । थारु चाँचर गीत मे विशेषतः शृंगारिक अभिव्यक्ति पाओल जाइछ–

बैगल रोपल आँती रे पाँती
करैल रोपल बीटा चारि ।
वोही त करैल सामरि गेल तोड़ए
कारी नगिया सामरि डाँसल
ससुरा कहैया दवा रे बूटी
भैसुरा कहैया ओझा रे गूनी ।
सामी कहैया आनब सफेरिय
सामरि के विख झाड़त ।
ससुरा कोवलैया छागर, पाठी
भैँसुरा कोवलैया जोड़ी रे भैंसा
सामी कोवलैया सोना चिरैया
गौसें के चड़ायेब ये ।
ससुरा कनैया रुइयाँ झुइयाँ
भैसुरा कनैया हाक फोड़ी ।
हुनी प्रेभु कनैया पछली
पिरतिआ मोरा टूटल ये ।

उपर्युक्त थारु लोकगीत मे, जे चाँचरक गीत थिक, लोकजीवनक सजीव झलकी उपलब्ध होइछ, जकर सम्बन्ध मिथिलाक पारिवारिक जीवनक व्यापकता सँ अछि ।[७]

मुदा सन्त कबीर-**बीजक** मे प्राप्त ई काव्यरूप विद्यापति पदावली मे नहि दृष्टिगोचर होइछ ।

कोहबर

ई लोकव्यवहार परक गीत थिक । गीतक एहि शैली मे नवविवाहित वर ओ कनिञाक हास-विलासक चित्रण रहैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे मङ्गल पद ओ कोहबर गीत शीर्षक सँ अनेक गीत एहि शैली मे भेटैत अछि । उदाहरणक हेतु ई पद द्रष्टव्य अछि–

फुल एक फुलल बालमु केर देशवा
सदगुरु दिहल लखाय हे ।
से फुल निरखत नयन सिनेहिया
मन मोरा रहत लोभाए हे ॥
नील कमल दल तीनि सोहाओन
भमरा गुजर तेहि बीच हे ।
ओकरा डारि पात नहि शाखा
नहि कादो नहि कीच हे ।
सुखमन हटिआ के साकर बटिआ
हम धनि अलप वयेस हे ।
हमरो पिअबा नएनमा के आगर
जहाँ गहल मोरा बाँहि हे ।
एक दिन मन मोरा उलटि समाना
देखलहुँ मञे पिआ के अवास हे ।
जगमग जोति झलामल लोकए
आबए बेलि सुवास हे ।
घटिआ उपर एक बङगला छेबाओल
स्वरन सेज लगाइ हे ।
साहेब कबीर इहो कोहबर गाओल
छूटि गेल भरम जंजाल हे ।[८]

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक कोहबर गीत प्रतीकार्थक ओ जीवात्मा तथा परमात्माक मिलन एवं भव-मुक्तिक संदेशवाहक अछि जखन कि मिथिलाक लोकशैली मे प्राप्त कोहबर गीतक मूल मे लोकाचारेक प्रधानता अछि, यथा–

उँच रे महल चढ़ि ठाढ़ भेला सुन्दर दुलहा,
ताकथि धनी के सूरति हे ।
तोरो के मुँह धनी लागै वर सुन्दर,
जइसे कोइलिया के बोल हे ।
एहन सुरतिया धनी छोड़लो ने जाइए,
हम कोना जाएब गाम हे ।
अहूँ केर बोल प्रभु बड़ नीक लागल,
जइसे कोइलिया के बोल हे ।
अपने त जाइछी प्रभु बहिन देखि रहब,
हम कोना खेपब सारी राति हे ।
भरि दिन आहे सुहबे मोती सूत काटब,

साँझखन पलँगा बिछाएव हे ।
पलँगा बिछबित प्रभु तांहें मन पड़ि जैब
नयना सँ झहरत नोर हे ।।

विद्यापति पदावली मे शैवगीत, वसन्तगीत आदि मे अनेकठाम कोहबर शब्दक प्रयोग होइतो हिनक एहि गीतशैलीक पद नहि भेंटैछ ।

बटगवनी

बटगवनी मैथिली लोकगीत शैलीक एकटा विशेष प्रभेद रहल अछि जकर प्रथम ओ तेसर चरण १३-१३ आ दोसर ओ चारिम चरण ११-११ मात्राक होइछ । एहि शैलीक गीत मे प्रथम ओ दोसर तथा तेसर ओ चारिम पदक बीच 'सजनी', 'सजनी गे', 'माधव', 'सखिआ' आदि रहैत अछि-जे बहुधा दोसर ओ चारिम पदक बादो गेय होइत अछि । बाट चलैत एहि गीत प्रकार केँ मिथिला मे नायिकालोकनि द्वारा गबैत सूनल जा सकैछ । एहि गीत-प्रकार मे सुखान्त संयोगपक्ष ओ दुखान्त वियोग पक्ष दुहुक चित्रण देखि पड़ैछ । महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे एहि गीत प्रभेदक अनेक गीत भेटैछ यथा–

'आसक लता लगाओल सजनी नयनक नीर पटाय ।
से फल अब तरुनत भेल सजनी आँचर तर न समाय ।
काँच साँच पहु देखि गेल सजनी तसु मन भेल कुह भान ।
दिन-दिन फल तरुनत भेल सजनी अहु खन न करु गेआन।
सब कर पहु परदेस बसि सजनी आयल सुमिरि सिनेह।
हमर एहन पति निरदय सजनी नहि मन बाढ़य नेह ।
भनइ विद्यापति गाओल सजनी उचित आओत गुनसाह ।
उठि बधाब करु मन भरि सजनी अब आओत घर नाह ।

एहि गीतप्रकारक माध्यमे महाकवि विद्यापति रसपक्षक विविध स्थितिक चित्रण कयलनि अछि यथा रूपवर्णनक ई चित्र देखल जा सकैछ–

जाइते देखल पथ नागरि सजनि गे आगरि सुबुधि सयानि ।
कनकललता-सनि सुन्दरि सजनिगे बिहि निरमाउलि आनि ।
हस्तिका गमन जकाँ चलइत सजनि गे देखइत राजकुमारि ।
जनिकरि एहनि सोहागिनि सजनि गे पाओल पदारथ चारि ।
नील वसन तन घेरल सजनी गे सिर लेल चिकुर समारि ।
तापर भमरा पिबए रस सजनि गे बैसल पाँखि पसारि ।
केहरि-सम कटि गुन अछि सजनि गे लोचन अम्बुज धारि ।
विद्यापति एहो गाओल सजनि गे गुन पाओल अवधारि ।।

विद्यापति पदावली ओ मैथिली लोकशैलीक एहि गीतक प्रभाव सन्तकबीर भणित

मैथिली पदावलीक अनेक मङ्गल पद पर पड़ल देखि पड़ैछ । यद्यपि एहि पद सभ मे 'सजनी गे' क बारम्बारता नहि देखि पड़ैछ तथापि रचना शैली मे एहि गीतिरूपकक व्यवहार स्पष्ट बुझना जाइछ यथा–

पाँच सखी मिली अैलहु हो, एक भवन लेल वास ।
अपन अपन अपनओलक हो, कोइ नहि भेल हमार ।
एहि भवसागर नैहर हो, निरगुन सासुर मोर ।
अबइत बटिया भुलाएल हो, केकरा कहब दुख रोय ।
के अब निज घर जाएत हो, केहो बिनु रहल अचेत ।
केकरा बस जीव पड़ि गेल हो, कोजेन मीरगा खा गेल खेत ।
चेतल निज घर जाएत हो, गुरु बिनु रहल अचेत ।
विखघर बस जीव पड़िगेल हो, मन मिरगा खा गेल खेत ।
चीत दे चेतब कडहारी हो, औघट लागल नाव ।
लक्ष चौरासी जीव रिनिआ हो, अटिक रहल कडहार ।
साहेब कबीरक मङ्गल हो शब्द परेखू टकसाल ।
ताहि उपर निज अच्छर हो, संगहि उतरहु पार ।

तिरहुत

तिरहुत गीत प्रभेद प्रवास मे मैथिली ओ मिथिला शैली गीतक प्रतिनिधित्व अतिप्रचीन काल सँ करैत, मैथिली गीतिकाव्यक प्रतीक ओ पहचानचिन्ह बनल रहल अछि । एहि मे शृंगारक संयोग ओ वियोग पक्षक भाव समाविष्ट रहैछ तथा एहि गीत प्रभेद मे प्रेमक प्रगल्भता, प्रगाढ़ता, तीक्ष्णता स्वाभाविकता ओ सरलताक अद्भुत समंजन रहैछ । एहि गीतिप्रभेद मे अनेक छन्दक प्रयोग देखि पड़ैछ आ ई अनेक भास मे गाओल जाइछ । महाकवि विद्यापति तथा हुनक परम्पराक काव्य मे एहि प्रभेदक विपुल संख्यक गीत भेटैछ । एहि गीति प्रभेद केँ मैथिली गीतिविधाक प्रचार-प्रसार मे विशिष्ट स्थान ओ प्रभाव रहलैक अछि । उदाहरणार्थ महाकवि विद्यापतिक ई पद द्रष्टव्य अछि–

कुञ्ज भवन सँ निकसल रे रोकल गिरिधारी ।
एकहि नगर वसु माधव हे जनुकरु वटमारी ।
छाडु कन्हैया मोर आँचर रे फाटत नव साड़ी ।
अपजस होयत जगतभरि रे जनु करिअ उघारी ।
संगक सखि अगुताएल रे हम एकसर नारी ।
दामिनि आए तुलाएल रे एक राति अन्हारी ।
भनहि विद्यापति गाओल रे सुनू गुणमति नारी ।
हरिक संग किछु डर नहि रे तोहँ परम गँवारी ।

एहि प्रभेदक एकटा अन्य भासपरक गीतिक उदाहरण अछि–

मोंहि तेजि पिया मोरा गेलाह विदेश ।
कौन परि खेपब वारि वयेस ।
नैन सरोवर काजर नीर ।
ढरकि खसल पहु धनिक शरीर ।
संज भेल परिमल फूल भेल वासे ।
कोन देश पिय मोरा पड़ल उपासे ।
भनहि विद्यापति सुनु ब्रजनारि ।
धइरज धय रहु मिलत मुरारि ।[१०२]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली पर एहि प्रभेदक गीतिक स्पष्ट प्रभाव अनेक पद मे भेटैछ यथा–

प्रेम प्रीत लए सखिआ हे पिआ अटकल ओहि देश ।
काँचकली फुलकलिआ हे हमधनि वारि वयेश ।
हुनि मलिया नहि बूझए हे हम नहि वारि कुमारि ।
एकहु सिंगार नहि कएलहु हे डोली लागल दुआरि ।
गंठी सामर नहि बान्धल हे खोंइछा न जोगार ।
भवजल नदिआ मयाजुनि हो साजनि करए गोहार
साहेब कबीर के मङ्गल हो शब्द परेखु टकसार ।
बहुड़ि न एहि जग आएब हो जीवन हए दिन चार ।[१०३]

मासाश्रित काव्य

मैथिली ऋतुपरक गीत मे चौमासा, छओमासा ओ बारहमासाक विशिष्ट स्थान अछि। ई सभ मासाश्रित गीति प्रकार थिक । चौमासा मे आषाढ़ सँ आश्विन धरिक, छमासा मे छओ महीनाक तथा बारहममासा मे बारहो मासक प्रकृतिचित्रण द्वारा समान्यत: विरह ओ संयोगक वर्णन देखल जाइत अछि ।

मैथिली लोकगीतक एहि लोकप्रिय प्रभेदक किछु गीत महाकवि विद्यापतिक रचित अछि यथा–

मास असाढ़ उनत नव मेघ । पिआ विसलेखें रहओ निरथेघ ।
कओन पुरुख सखि कओन से देस । धरब तहाँ मञे जोगिनि बेस ।।
मोर पिअतम सखि गेल दुर देस । जौवन दए गेल साल सन्देस ।
साओन मास बरिस घन वारि । पन्थ न सूझए निसि अँधिआरि ।
चौदिस देखिअ बीजुरि रेह । हे सखि कामिनि जिवन सन्देह ।
भादव मास बरिस घन घोर । सभ दिस कुहकए दादुर मोर ।

चेउँकि-चेउँकि पिआ कोर समाए । गुनमति सूतलि आद्धम लगाए ।।
असिन मास आस घर चीत । नाह निकारुन भेल न हीत ।
सरवर खेलए चकवा हाँस । विरिहिनि वैरि भेल आसिन मास ।
कातिक कन्त दिगन्तर वास । पिअपथ हेरि हेरि भेलाहु निरास ।
सुख सुखराति सबहुकाँ भेल । हम हिअ साल सामि दए देल ।
अगहन. मास जीव भेल अन्त । अबहु न आएल निरदए कन्त ।
एकसरि हमे धनि सुतओ जागि । नाह.................मोंहि आगि ।
पूस खीन दिन दीरघि राति । पिआ परदेश मलिन भेल काँति ।
हरओ चौदिसि झाँखओ रोइ । नाह-विछोह का जनु होइ ।
माघ मास घन पड़ए तुसार । झिलमिल केचुआ उनत थन हार ।
पुनमति सूतलि पिअतम कोर । विधिबसे दैव वाम भेल मोर ।
फागुन मास धनि जीव उचाट । विरहे विखिन भेलि हेरओ बाट ।
आओल मत पिक पञ्चम गाव । से सुनि कामिनि जिवहु सन्ताव ।
चैत चतुरगुन पिआ परबास । (मालि न जानए) कुसुम विकास ।
भमि-भमि भमरा कर मधुपान । नागर भए पहु भेल अआन ।
वैशाख तवए खर मरन समान । कामिनि कन्त हनए पञचबान ।
नहि जुड़ि छाहरि, न वरिस बारि । हम जे अभगिनि पापिनि नारि ।
जेठ मास ऊजर नव रङ्ग । कन्त चहए खलु कामिनि संङ्ग ।
रूपनाराएन पूरथु आस । भनहि विद्यापती बारह मास ।।[१०४]

एहिना हिनक एक गोट बारहमासाक स्वरूप अछि–

वैशाख मैना कहथि कृपि सँ गौरी कोना रहति कुमारि यो ।
गौरी जोग वर जोहि लावह वितलं मास वैशाख यो ।
जेठ नारद फिरथि चहु दिशि जोहल भँगिया भिखारि यो ।
कहथि नारद सुनहु त्रिभुवनपति चलह व्याहन आज यो ।
अषाढ़ हेमत घर वरियात लायल देखल सकल समाज यो ।
काज राज सब छोड़ि सखि सब देखु हर बरियात यो ।
सावन वर बौराह आयल वसहा पीठ असवार यो ।
एहन उमत वर हेमत लायल पैर फाटल बेमाय यो ।
भादव मैना भेलि व्याकुल धुनथि सिर कपार यो ।
घटक के हम की बिगारल की विधि लिखल लिलाट यो ।
आसिन मैना गेलि अङना मन दुख अगम अपार यो ।
आबि हम विष घोरि पीअब मरव जल बिच जाय यो ।
कातिक शंकर भस्म त्यागल कैल गंगा स्नान यो ।

रसाहि बज्जन अंग लपटल भेल सुन्दर रूप यो ।
अगहन मैना भेलि हरषित लावथि गाइनि बजाय यो ।
पूस सखि सब गीत गाबह त्रिभुवनाथ जमाय यो ।
पूस सखि सब छाड़ि वैसलि देखथि रूप अनूप यो ।
चलह सखि सब करबह मोहक देखि नैन जुड़ाय यो ।
माघ शंकर भेला व्याकुल जोहथि आक धथूर यो ।
गहन उमत वर हमत लायल भाँग हुनक अधार यो ।
फागुन शिव सँ कहथि गौरी सुनु शिव अर्जी हमार यो ।
एक बेर भस्म उतारू शंकर देखत हेमत समाज यो ।
चैत मैना भेली हरसित पुरल मन अभिलाषा यो ।
भनहि विद्यापति ई पद गाओल मिलल त्रिभुवननाथ यो ।

मैथिली लोकगीतक ई प्रभेद सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे नहि देखि पड़ैछ । तथापि एकर छन्दपरक प्रभेदक प्रभाव कबीरक एहि पद मे देखल जा सकैछ–

एकमास दुइ मासा भेल । तानीभरनी बरोबरि भेल ।
तीन मास चउमास भेल । पुरइन पत्र थीर भए गेल ।
पाँच मास छओ मासा भेल । सत्तरि कोठली तैयारी भेल ।
सात मास नओमासा भेल । पूरन ब्रह्म बसेरा लेल ।
कहए कबीर मन नटुआ भेल । कायापुर नगरी नचाओल गेल ।

यद्यपि एकर रचना प्रक्रिया दसमासी सोहरसँ साम्य रखैछ मुदा एकर छन्द महाकवि विद्यापतिक छन्दपरक बारहमासा सँ मिलैत अछि । सन्तकबीर भणित मैथिली पदावलीक एक गोट पद मे पड़िवा सँ पूर्णिमा धरिक प्रत्येक तिथिक माध्यमे योगसाधनाक क्रमिक परिणति द्वारा चित्तवृत्तिक निरोध कय परब्रह्मक साक्षात्कारक वर्णन भेल अछि । एहि पद पर सेहो बारहमासा शैलीक प्रभाव स्पष्ट देखि पड़ैछ । एहि पद मे कहल गेल अछि–

सन्त प्रसाद भए मन निर्मल । हरि कीर्तन महि अनदिन जागा ।
पड़िवा प्रीतम करहु विचार । घट महि खेलए अघट अपार ।
काल कल्पना करए न जाए । आदि पुरुष महि रहए समाए ।।
दुतिया दुइ करि जानए अंग । माया ब्रह्म रमय सब अंग ।।
ना ओह बढ़य न घटता जाय । अकल निरञ्जन एकहि भाइ ।।
तृतीया तीनि सम करि लावै । आनन्द भूल परमपद पावए ।।
साधु संगति उपजय विश्वास । बाहर भीतर सदा परगास ।।
चौथहि चञ्चल मन कंर गहहु । काम क्रोध संग कबहु न बहहु ।।
जल थल मांह आपहि आप । आपहि जपहु आपना जाप ।।
पांच तत्व तत्व बिस्तार । कनक कामिनी युग व्यवहार ।।

प्रेम सुधा रस पीवए कोय । जरामरण दुख फेर न होय ।।
छठि षटचक्र चहु दिशि धाय । बिनु परिचय नहि थीर रहाय ।।
दुविधा मेटि खिमा गहि रहहु । कर्म धर्म कर शूल न सहहु ।।
सातै सति करि बाचा जाणि । आतम राम लेहु पहिचाणि ।।
छूटए संसा मिटि जाए दुक्ख । सून्य सरोवर पावहु सुक्ख ।।
अष्टमी अष्टधातु कर काया । तामे अकुल महानिधि राया ।।
गुरु गम ज्ञान बतावहि भेद । उलटा रहए अभंग अछेद ।।
नौमी नवए द्वार के साधि । बहती मनसा राखहु बाँधि ।।
लोभ मोह सब बिसरि जाहु । युग युग जीवहु अमर फल खाहु ।।
दशमी दह दिश होए अनन्दा । छूटए मर्म मिलल गोविन्दा ।।
ज्योति स्वरूप तत्व अनूप । अमल न मल न छाह न धूप ।।
एकादशी एक दिश धावए । तओ योनि संकट बहुरि न आवए ।।
सीतल निर्मल भए सरीरा । दुरि बतावत पाओल नीरा ।।
बारसि बारहो गए सूर । अहर्निश बाजए अनहद तूर ।।
देख्या तीहुलोक पीड़ । अचरज भेल जीव तें सीउ ।।
तेरसि तेरह अगम बखानि । अर्द्ध उर्द्ध बिच सम पहिचानि ।।
नीच ऊँच नहि मान प्रमान । व्यापक राम सकल समान ।
चौदिशि चौदह लोक झँझारि । रोम रोम मँह बरहि मुरारि ।।
सन्त सन्तोषक धरहु धियान । कथनी कहिअए ब्रह्मगियान ।।
पून्यो पूरा चन्द्र प्रकाश । पसरहि कला सहज परगास ।।
आदि अन्त मध्य होय रहा वीर । सुखसागर महि रमहि कबीर ।।

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीओ पर मैथिली लोकशैलीक मासाश्रित शैलीक प्रभाव स्पष्ट देखि पड़ैछ आ ई गीतिरूपक तँ **विद्यापति पदावली** मे प्राप्त अछिए, जे दुहु' महाकविक पदावलीक शैली साम्य कँ दरसबैत अछि ।

समदाउनि ओ निर्गुण

समदाउनि गीतशैली मिथिलाक अत्यन्त लोकप्रिय गीत शैली थिक । एहि मे बेटीक विदाइक अवसर पर जे कारुणिक स्थिति उत्पन्न होइछ तकर अभिव्यंजना रहैछ । एही शैलीक एक गोट गीतशैली थिक 'उदासी,' जाहि मे प्रिय व्यक्तिक चल गेलाक बाद वातावरणक चित्रण रहैछ । एहि तरहँ समदाउनि ओ उदासी एके शैलीक गीत रहितो एकटा मे जँ कन्याक विदाइक करुणा देखि पड़ैछ तँ दोसर मे जमाए आदिक गमन सँ उत्पन्न रिक्तताक वर्णन रहैछ ।

क्रमश: समदाउनि गीत शैली कँ व्यापक आयाम भेटैत गेलैक अछि आ ई एहनो गीत कँ समेटि लेलक अछि जाहि मे आत्माक भौतिक ओ नश्वर शरीरक परित्यागक वर्णन कयल गेल । एही प्रकारक पद कँ निर्गुण पदक रूप मे जानल गेल । एहि तरहँ समदाउनि जतय

विप्रलभक स्थितिक चित्रण सँ सम्बद्ध होइछ तर्तहि निर्गुण करुण विप्रलंभसँ अनुप्राणित शान्तरसक गीत थिक ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे निर्गुण ओ समदाउनि शैलीक गीत बहुलतया भेटैछ यथा–

अइसन निरमोहिया से जोड़ल पिरितिया
बिछुड़इत बिलमो ने होय आहे सखिया ।
गओना कराय पिआ देहरी बैसोलन्हि
अपने चलल परदेश आहे सखिया ।
सासुजी के घर मे ननदि भेल बइरिन
हमरो गुजर कोना होय आहे सखिया ।
फाड़बइ मे संखा चूड़ि फारबइ मे चोलिया
से धरबई जोगिनिआक वेष आहे सखिया ।
दास कबीर एहो गावल समदउनिआ
करबइ मे पिआक उदेश आहे सखिया ।[१०९]

हिनक समदाउनि मे शरीर ओ सांसारिक विषयक निस्सारता तथा निर्गुण पद मे बहुधा देहसँ आत्माक विछोहक वर्णन भेटैछ यथा–

सुन्दरतन देखि मत भुलू सखिआ । एहो तन संगहु न जाए ।।
एहो तन होए माटि के बरतनमा । टोनमा लगइत फूटि जाए ।
एहो तन होए कागज के पुड़िया । बुन्द पड़ैत गलि जाए ।
एहो तन होए रामा सुखली लकड़िया । अगिया लगइत जरि जाए।
एहो तन होए रामा धुआँ के घरबा । पवन लगइत उड़ि जाए ।
साहेब कबीर एहो गाओल समदौनिआ । सन्त जन लिऔ न बिचारि।
एमकी गवना बहुड़िओ नही अओना । फेरु न मनुष अवतारा ।[११०]

निर्गुण

नाम भजु नाम भजु सकल भरम तजु ।
बारहो जतन से पिजड़ा बनाओल रे की ।
गढ़िए सदिए सुगना कैलो तैयारी ।
ताहि भीतर सुगना एक बोलय रे की ।
भाए बाप घेरने छल सुगना बोलैत छला ।
सगुना उड़इते केयो ने परेखल रे की ।
जाहि मन्दिल मे एतेक सुख कयलहुँ ।
ताही मन्दिरवा अगिया लगाओल रे की ।

एक कोस गेला सुगना दुइ कोस गेला ।
धुमि धुमि मन्दिर के निरखै रे की ।
अगिया लगल तन मे भसम उड़ल छन मे ।
पाँच लकड़िया देल फेंकि पलटि नहि ताकय रे की ।
साहेब कबीर इहो गावल निरगुनिआ ।
जेहने पीसब तेहने उठायब रे की ।[१११]

महाकवि विद्यापतिक समदाउनि मे पौराणिक प्रसंगक आधार पर कन्याक विदाइक प्रसंगक वर्णन भेल अछि यथा–

सोन सन धीया के तपसिया नेने जाइयै
बाबा मुख पड़ल उदास ।
की जे खेलीं बेटी की जे पहिरलीं
किए बेटी भेलीं विरान ।
खीर जे खेलों बाबा चीर पहिरलौं
सिन्दूर लेल भेलों वीरान ।
सोन रूप रहितय बाबा तोरि कय गढ़बितहुँ
सिन्दूर फेरलो ने जाय ।
भनहि विद्यापति सुनहु मनाइन सब
धीया सासुर जाय ।[११२]

हिनक एक गोट समदाउनि एहि रूपक भेटैछ–

सुतल छलहुँ बाबा के हवेलिया अझके मे आयल कहार ।
लाले लाले डोलिया सबुज रंग ओहरिया लागि गेल बतिसो कहार।
माए बाप मिलि एक मति केलनि डोलिया देलनि पइसाई ।
लए दए निकसल बिजुवन सखिया जाहि वन माए न बाप ।
एक कोस गेली सीता दुइ कोस गेली तेसर मे फेकल ओहार ।
घुरि जाउ भइया कि घूरि जाउ लोकनिआ अम्मा के कहबनि बुझाए
अम्मा के कहबनि पाथर भए बैसती हमहूँ बइसब हिआ हारि ।
भनहि एहि विद्यापति गाओल समदाओन सभ बेटी सासुर जाय ।[११३]

हिनक एहि पदक स्पष्ट प्रभाव कबीरदासक समदाउनि पर देखि पड़ैछ, यथा–

खेलइत छलौंहु हम सुपती मउनियाँ
अँचके मे आएल संवाद ।[११४]
x x x
लाले लाले डोलिया सबुज रंग ओहरिआ ।
लागि गेल बतिसो कहार ।[११५]

एहि ठाम सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली पर विद्यापतिक लोक [illegible] पदावली शैलीक स्पष्ट प्रभाव देखि पड़ैछ । मिथिलाक लोकजीवनक गीतिशैली एहि दुइ पदावली मे गृहीत भेल अछि । सन्त कबीर भणित विशुद्ध मैथिली पदावली तँ वस्तुतः [illegible] सकैछ जे सर्वथा अकृत्रिम ओ लोकशैली पर आधारित गीत अछि ।

रहस्यवादी विचारधारा

सन्त कबीरक स्थान रहस्यवादी कवि मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानल जाइत छनि । आचार्य रामचन्द्र शुक्लक अनुसार साधनाक क्षेत्र मे जे अद्वैतवाद अछि, काव्यक क्षेत्र मे सैह रहस्यवाद थिक ।'' डॉ० रामकुमार वर्मा कहलनि अछि जे 'रहस्यवाद जीवात्माक ओहि अन्तर्हित प्रवृत्तिक प्रकाशन थिक जाहि मे ओ दिव्य ओ अलौकिक शक्ति सँ अपन शान्त आ निश्छल सम्बन्ध जोड़य चाहैछ । ई सम्बन्ध ओतएधरि बढ़ि जाइछ जे दुनू मे अन्तर नहि रहि जाइछ ।''

सृष्टिक आरम्भहि सँ मनुष्य ओहि परम सत्ताक खोज मे लागल अछि जे एहि सृष्टिक संचालक आ नियन्ता अछि । एही परमसत्ता कँ ईश्वर कहल गेल अछि । ईश्वर कँ तकबाक दुटा प्रधान मार्ग अछि- दर्शन ओ भक्ति । दर्शन ईश्वर कँ तकबाक बौद्धिक प्रयत्न अछि आ एहि मे ज्ञानक प्रधानता विशिष्ट मानल गेल अछि। भक्ति ईश्वर कँ तकबाक हार्दिक प्रयत्न थिक । एहि मे भक्त अपन समस्त प्रेम, विश्वास ओ श्रद्धा ईश्वरक सगुण स्वरूप पर अर्पित कय दैत अछि । मुदा एहि दुनू मार्ग मे रहस्यक कोनो स्थान नहि अछि ।

जखन भक्त ईश्वरक निर्गुण स्वरूप पर अपन भक्ति अर्पित करैछ तँ भावनाक क्षेत्र मे ओकर अद्वैतवादी वृत्ति काव्यक क्षेत्र मे रहस्यवाद कहल जाइत अछि । सन्त कबीरक काव्य मे निर्गुण आराध्यदेव कँ भक्ति ओ हृदयक आलंबन बनाय रहस्यवादक सूत्रपात कयल गेल अछि।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदीक अनुसार 'रहस्यवाद शब्द काव्यक एकटा धाराविशेष कँ सूचित करैछ । ई प्रधानतः ओहि सँ लक्षित होमएवला ओहि अभिव्यक्ति दिस संकेत करैछ जे विश्वात्मक सत्ताक प्रत्यक्ष, गम्भीर ओ तीव्र अनुभूतिक संग सम्बद्ध अछि । एहि अनुभूतिक वास्तविक आधार हृदय होइत अछि जे वैयक्तिक चेतनाक मूल स्रोत थिक । एहि मे अहम् आ इदम् कें भावनाक लोप भए जाइछ । एकर तीव्रता ततेक अधिक घनीभूत होइछ जे अनुभवकर्ता कँ अनुभूत वस्तुक संग पूर्ण तादात्म्यक अनुभव होमय लगैत छैक । ओ ओकर रंग मे रँगि जाइछ आ द्वैतपरक संस्कार होइतो ओकर उद्गार मे अद्वैत सूचक भावक समावेश भए जाइत छैक । ज्ञात ओ ज्ञेयक ई एकीकरण ओकरा विचित्र दशा मे आनि दैत छैक एवं ओकर अनुभूतिक अभिव्यक्ति मे स्वभावतः अस्पष्टता आबि जाइत छैक ।''

'रहस्यवादी कविक अनुभूति ओकरा एकटा दार्शनिक अद्वैतवादीक कोटि मे आनि दैत छैक किन्तु वस्तुतः ओ अद्वैतवादी नहि रहि जाइछ । अद्वैतवादीक तार्किक मनोवृत्ति ओकरा अनेक सँ एक दिस लय जाय कोनो शून्यवत् अज्ञेय वस्तु धरि पहुँचा दैत छैक । मुदा रहस्यवादीक दशा एही प्रकारक नहि रहैछ, ओ ओहि वस्तु धरि अपन अन्तर्दृष्टिक सहायता सँ प्रवेश करैछ आ ओकरा संग तन्मयताक आनन्द मे मग्न भय जाइछ । ओ दशा ओकरा किछु विचित्र जकाँ

[illegible] करैत छैक आ ओ [illegible] करैत छैक [illegible]

[illegible] रहस्यवादक तीन टा सोपान कहल गेल अछि । [illegible]

वस्तुक प्राप्तिक हेतु सब प्रकारक कष्ट [illegible] हेतु तत्पर रहैत अछि । [illegible] अवस्था मे साधक कँ ओहि तत्त्वक पूर्ण परिचय प्राप्त भए जाइत छैक [illegible] विचित्र आह्लाद सँ आनन्दविभोर भए उठैछ । [illegible] अवस्था मे साधक पूर्ण सिद्धावस्थाकँ प्राप्त कए ब्रह्म मे लीन होयबाक स्थिति मे आबि जाइछ । अद्वैतवादीक भाषा मे [illegible] जीवन्मुक्त [illegible] कहल जाइछ । जीवन्मुक्ति एहि साधक [illegible] अवस्था मे आबि सिद्धावस्था कँ प्राप्त कए ब्रह्म सँ ऐकाकार भए [illegible] जकाँ [illegible] भए जाइछ।

रहस्यवादक दृष्टिसँ सन्त कबीर भणित ओ विद्यापतिक मैथिली पदावली पर विचार कयला सन्ताँ एहि दुनू मे अत्यन्त साम्य देखि पड़ैछ । माधुर्य भावना कँ रहस्यवादक हेतु अत्यन्त आवश्यक मानल जाइत अछि ।'' आ जहिना महाकवि विद्यापतिक पदावलीक [illegible] गीत माधुर्य भावनासँ ओतप्रोत अछि तहिना सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे माधुर्य- प्रधान रचना भेटैछ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे निर्गुण ब्रह्मक हेतु सर्वत्र पिआ शब्दक व्यवहार भेल अछि । ई अपना कँ सर्वत्र निर्गुण ब्रह्मक पत्नीक स्वरूप मे चित्रित कए जीवात्मा ओ परमात्माक माधुर्यक चित्रण कएलनि अछि यथा-

> ताहु हे काइली अमरपुर देशवा
> जहाँ बसे पिआ हमार हे
> पिआ लागि हम परदेशिनि भा जनि
> अङ्ग मे भभूति रमाए हे ।
> अद्भुत रूप अखण्डित बालम्
> श्वेत ध्वजा फहराइ हे ।।

विद्यापति पदावलीक विषय यद्यपि राधाकृष्णक लीलाविलासक पौराणिक सन्दर्भ [illegible]

अछि आ ई शास्त्रीय रसपक्षीय दृष्टिकोण सँ भिन्न अछि । तथापि हिनक राधा ओ कृष्ण कें प्रतीक रूप मे ग्रहण कय कताक विद्वान हिनक रसपक्षीय पदावलीक रहस्यवादी व्याख्या कय हिनक पदावली कें रहस्यवादी विचारधाराक कविता कहलनि [illegible] । डॉ० ग्रियर्सन एहि मतक अगुआ छथि । ई १८८० ई० मे बंगालक सहजिया मत सँ प्रभावित भय विद्यापतिक पद कें वैष्णव स्तोत्र वा भजन अथवा धार्मिक गीत मानि ओकर रहस्यात्मक व्याख्या कयने [illegible] अछि जे ओ सभ वैष्णव पद वा भजन थिक । .... जहिना सोलोमनक गीत कें क्रिश्चियन पादरी गबैत छथि तहिना भक्त हिन्दू विद्यापतिक द्युतिमान पद कें अन्यतम [illegible] कामभावनाक अनुभूतिक संग गबैत छथि ।

विद्यापतिक पदावली कतेको शताब्दी सँ बंगाल मे प्रचलित रहल अछि । बंगाल मे वैष्णव धर्मक बहुत प्रच[illegible] छल तथा विद्यापतिक गान वैष्णवगणक मध्य कीर्तनक रूप मे प्र[illegible] छल, अत: विद्यापति स्वाभाविक रूपें वैष्णव भक्त मानि लेल गेलनि । एही क्रम मे बंगीय वैष्णवक सहजिया सम्प्रदाय मे विद्यापति कें सात रसिक भक्त मे सँ एक मानल जाय लगलनि । हुनकालोकनिक मतें विद्यापतिक समस्त पद सहजिया भावक थिक । [illegible]

सहजिया मत सँ प्रभावित डॉ० ग्रियर्सन अपन ग्रंथ **ट्वेन्टी वन वैष्णव हॉम्स** मे मिथिलाक विभिन्न कविक वैष्णव पदावलीक व्याख्या करैत एतय धरि कहि देलनि अछि जे 'जीव आ ब्रह्मक तेहन सम्बन्ध होइछ जेहन प्रेमी आ प्रेमिकाक होइछ' । [illegible]

ग्रियर्सनक उक्त कथनक आधार पर डॉ० नगेन्द्र नाथ गुप्तक कहब छनि जे विद्यापतिक राधाकृष्ण पदावली मे जीवात्मा परमात्मा कें ताकि रहल अछि आ हुनका सँ एकान्त मिलन हेतु चिन्तित अछि । संसार ईश्वर प्रेम सँ परिचित नहि अछि, फलत: ओ एहि मे बाधक बनैछ। ई देखि ईश[illegible]न्वेषी भक्त संसार कें त्यागि शान्तिमय वन मे जा कय एकान्त [illegible]न करैत अछि। विद्यापति एकर [illegible]र्णन शब्दान्तरमे कयने छथि : [illegible]

डॉ० जानार्दन मिश्र ग्रियर्सनक पंक्ति कें उद्धृत करैत कहैत छथि जे 'विद्यापति अपना कें पत्नी (राधा) बुझि ईश्वरक (कृष्ण[illegible]) उपासना पतिरूप मे करैत छलाह । हिनक कहब छनि जे भजन पदावली आध्यात्मिक विचार आ दार्शनिक गूढ़ रहस्य सँ परिपूर्ण अछि । डॉ० मिश्र अपन कथन कें प्रतिपादित करैत जे तर्क सभ उपस्थित कएने छथि ताहि मे महत्वपूर्ण तर्क सभ ई अछि जे वैष्णवलोकनि पूजाकाल **विद्यापति पदावली** आ जयदेवक **गीतगोविन्दक** पाठ करैत छथि । विद्यापतियुग मे रहस्यवाद बेस प्रचलित छल । नर-नारीक रूप मे जीवात्मा-परमात्माक जे उपासना-पद्धति तखन प्रचलित छल, विद्यापति अपना कें ओहि मे प्रवाहित कय देलनि । निर्गुणवादी सन्त जीवात्मा आ परमात्मा स्त्रीपुरुष रूप मे देखैत छथि, मुदा ओ व्यक्ति विशेषक द्योतक नहि छल । विद्यापतिक वर्णन मे विशेषता ई अछि जे ओ शिव पार्वती एवं राधाकृष्ण आदि व्यक्ति विशेषक अवलम्बन कय ब्रह्म एवं जीवक विवेचन कयने छथि । डॉ० मिश्र अपन विचारानुकूल दुइ चारिटा शिवपार्वती सम्बन्धी पदक व्याख्या

[illegible]

डॉ० [illegible] विद्यापति पदावली [illegible] अद्वैतवादी [illegible]

विद्यापति [illegible]

[illegible] एकात्मबोध मे कान्तिमान अनुभव करैत छथि [illegible]

[illegible] उपरोक्त व्याख्या [illegible] विद्यापति पदावली मे [illegible] अद्वैतवाद, रहस्यवाद आदिक अद्भुत [illegible] विशिष्ट उपादानक [illegible] निर्गुण मत ओ माधुर्यभावना । वस्तुत: [illegible] छथि । विद्यापतिक राधा ओ कृष्ण [illegible] प्रतिनिधित्व करैत छथि । हिनकालोकनिक माधुर्यक चित्रण [illegible] रहल अछि, यथा—

एकहि वचन [illegible]
x x x
बरिस [illegible]
x x x
निसि निसिअर [illegible] भुअङ्गम [illegible]
तरुन तिमिर निसि, तैअओ चललि [illegible]

एहि तरहें महाकविक विभिन्न पद मे ईश्वर प्रेमक तीव्रता, आकर्षण एवं [illegible] अद्भुत निदर्शन भेटैछ । सांसारिकता मे लीन मनुष्य एहि तीव्रताक अनुभव नहि कय सकैछ। हिनक पदावली मे परमात्माक प्रेम मे आबद्ध जीवक [illegible] तथ्यक रोचक अभिव्यंजना देखि पड़ैछ ।

महाकवि विद्यापतिक पदावली मे रहस्यवादक प्रथम सोपान मे जीवात्माक [illegible] कें एहि पद मे देखल जा सकैछ—

माधव [illegible] [illegible] [illegible]
अधर न हास, विलास न [illegible]

आवक वारि सुधाकर सम नयु बान्ध सुधा धुनि बाजी ।
कोकिल [illegible] कानन कुञ्जिनाराम देखि सब आनन्द बाजी ।
हृदयक हार धार धेल मुक्तनि नयन न होए निरोध ।
मुखि सब आए खेलाइनि रहए करए नयु मन किछुओ न बोध ।
गाडल चान्दन मृगमद कुङ्कुम सब नैवन सुभ लागि ।
धनि सम्मीन पीन उरो फिरइत अर्गलिनि रहइत जागि ।
दूति उपटल मुनि गुन समिरल नखनहि बलनाह धाई ।
माधवनी प्रति राघवसिंह कवि कवि विद्यापति गाई ।।

एहि पद मे जीवात्माक उत्कंठाक अत्यन्त सजीव चित्र देखि पड़ैछ। माधव परमात्माक प्रतीक रूपे गृहीत छथि। सखि सांसारिक मायाजगतक स्नेह सम्बन्धी सधक चान्दन, मृगमद, कुंकुमादिक अनुलेपन विषयक प्रतीक रूपे गृहीत अछि। धनि आ वामा जीवात्माक नारीस्वरूपक प्रतीक थिक। एतावता जीवात्मा आ परमात्माक माधुर्यक एहि पद मे अत्यन्त सुन्दर चित्रण भेल अछि जे निराकार ब्रह्मक प्रति माधुर्यक अद्भुत सम्मिश्रण सँ रहस्यवादक सुन्दर उदाहरण उपस्थित करैछ।

रहस्यवादक दोसर सोपान मे जीवात्मा आ परमात्माक पूर्ण परिचयक आह्लाद महाकवि विद्यापतिक एहि पद मे देखल जा सकैछ-

दारुन वसन्त जते दुख देल । हरि मुख हेरइत सब दुर गेल ।
जत जत छल मोर हृदयक साध । से सब पूरल हरि परसाद ।
कि कहब हे सखि आनन्द ओर । चिर दिने माधव मन्दिर मोर ।।
रभस आलिंगन पुलकित भेल । अधरक पाने विरह दुर गेल ।
भनहि विद्यापति आब नहि आधि । समुचित औखधे न रह बेआधि।।

हिनक जीव आ परमात्माक दाम्पत्य प्रेमक निदर्शन एहि पद मे देखल जा सकैछ

जनम कृतारथ सुपुरुस संङ्ग । सेहे दिवस जओ नहि मन भंङ्ग ।।
हृदयक आनन्द मुख परगास । तरनि तेजें होअ कमल विकास ।।
भल भल माइ हे कुदिवस भेल । हरिनिधि मिलल सकल सिधि भेल ।।
एकदिस मनिमय नवनिधि हेम । अओका दिस नवरस सुपुरुस- पेम ।
निकुती तौलि कएल अनुमान । प्रीति अधिक थिक के नहि जान ।।
प्रीतिक सम हे दोसर नहि आन । जाहि तुलना दिअ अपन परान ।।
भनइ विद्यापति अनुपम रीति । दम्पतिकाँ होअ अचल पिरीति ।।

तेसर अवस्था मे जीवात्माक ब्रह्मलीन होयबाक स्थितिक चित्रण एहि पद मे देखल जा सकैछ-

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
विद्यापति [illegible]

एहि स्थिति मे जीवात्माक आध्यात्मिक [illegible] एहि पद मे देखल जा सकैछ

कि कहब रे सखि इह दुख ओर । बाँसि निसास गरल तनु मोर ।।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] । कि कहब विद्यापति [illegible] ।।

सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो रहस्यवादक तीनू सोपानक चित्रण देखि पड़ैछ। प्रथम सोपान मे जीवात्माक द्वारा परमात्माक प्राप्तिक आकुलता एहि पद मे द्रष्टव्य अछि-

बहिआँ पसारि पिआ के खोजलहुँ पिआ नहि मिलला हे ।
रतन मोबइल भेल भोर धीरज कोना बान्धब हे ।

दोसर सोपान मे जीवात्मा ओ परमात्माक पूर्ण परिचयक आह्लाद एहि पद मे देखल जा सकैछ-

अद्भुत रूप अखण्डित बालम् श्वेत ध्वजा फहराई हे ।
श्वेत आसन पर पिआ बिराजए अमरपुर ओहि ठाम हे ।।

तेसर सोपान मे जीवात्माक सिद्धावस्था ओ ब्रह्मलीन होएबाक स्थिति एहि पद मे देखल जा सकैछ अछि

छुटल नैहरवाक आस ससुर बसलमा ।
x x x
खुलि गेल भरम केवाड़ गुरु मुख देख [illegible] ।।

सन्त कबीर द्वारा प्रयुक्त कन्त, दुलहिन, सिन्दूर, काजर, सोहाग, कोबर, अहिवात आदि शब्द दाम्पत्य-प्रेमक द्योतक अछि। हिनक मूल उद्देश्य आत्मा ओ परमात्माक आध्यात्मिक मिलनक अभिव्यंजना करब छल। हिनका आत्मा ओ परमात्माक दाम्पत्य सम्बन्ध ओ मधुर भाव

सर्वाधिक प्रिय छलनि। एहि सम्बन्ध कें प्रकट करवाक हेतु अनेक पद मे ई विवाहोक चित्र प्रस्तुत कएलनि अछि, यथा–

सतगुरु चलल बिआहन सत सुकृत संग लाए ।
बाजन बाजए गहामही अनहद धुनि घहराए ॥
पाँच पचीस बरिअतिआ सांहं चौर ढराए ।
अजपा दर्शन दुरलभ चलु चलु वदन निहारि ॥
अर्द्ध-अर्द्ध दोउ लांकनिआ समधी तीनि संआन ।
दसमि दोअरिआ चहाचही दुलह भेल निरबान ॥
शिव शक्ति गंठी बन्धन सेनूर बन्दीनाम ।
अक्षय वृक्ष तल कोहबर तहमा पाओल विसराम ॥
देल आशिष अमरपद जुगन जुगन अहिबात ।
सन्त कबीर कहि देलनि बिआह बनल अब सांच ॥[१८०]

दृश्यकूट ओ उलटबाँसी

दृश्यकूट ओ उलटबाँसी काव्य मे विशिष्ट अभिव्यक्ति-प्रणालीक रूप मे परिगृहीत अछि। दृश्यकूट वस्तुतः शाब्दिक चमत्कार द्वारा कोनो कथ्य कें एहि रूपें निरूपित करबाक कला थिक, जाहि सँ लक्ष्यार्थ कें पकड़बाक हेतु पर्याप्त मानसिक श्रमक आवश्यकता होइत छैक। शब्दक ई चमत्कार ओ अभिव्यक्ति-शैलीक ई कौशल बाह्य स्वरूप सँ नीरस ओ शुष्क देखि पड़ैतो काव्य सौन्दर्यक सृष्टि मे सहायक तथा अवगाहक के पुष्कल आनन्द देबामे समर्थ होइत छैक। लीक सँ पृथक काव्यरचनाक प्रवृति एहि चमत्कारिक रचनाक कारण बुझना जाइछ।

विद्यापति पदावली मे दृश्यकूटक अनेक उदाहरण भेटैत अछि। एकरा समस्त अर्थनिरूपणक हेतु बहुधा अत्यधिक मानसिक श्रमक आवश्यकता होइछ। उदाहरणार्थ–

प्रथम एकादस दए पहु गेल ।
सेहो रे बेतित मोर कत दिन भेल ॥
रितु अवतार वएस मोर भेल ।
तैअओ न पहु मोर दरसन देल ॥[१८१]

एहि पद मे प्रथम ओ एकादश सँ क्रमशः व्यंजनक प्रथमाक्षर 'क' आ एगारहम अक्षर 'ट' मिलाकए 'कट' अर्थ लेब तथा रितु आ अवतार सँ क्रमशः छओ आ दश मिलाकए १६अर्थ लेब सर्वथा मानसिक श्रम ओ बहुज्ञताक अपेक्षा रखैछ।

गणित ओ कवि-प्रौढ़ोक्तिक समन्वय द्वारा महाकवि विद्यापतिक एक गोट पद मे नायिकाक मनोभावक चित्रण एहि रूपें भेल अछि–

माधव, बूझल तुअ गुंन आज ।
पचगुन दसगुन सएगुन दसगुन संहओ देलह कओन काज।
चालिस काटि चारि चौठाई से हमसे पहु माग ॥
कपटी कान्ह केलि नहि जनलन्हि कएलन्हि जनमक आग।
साठि काटि दह बिन्दु विवरजित संवत कर उपहास ।
पहुक विसाद सहए नहि पारिअ दुइ बुन करब गराग ।
नवां बुना दए नवां वाम कर से उर हमर पगान ।
से हरखित मुह हेरि होअए नहि कारन कंओ नहि जान ।
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति करटि कंअ बाधा ।
अपन जीव दए परिह बुझाबिअ कमल नाल दुइ आधा ॥[१८२]

एहि पद मे द्वितीय पंक्ति मे ५x१०x१००x१०=५०००० सँ पचासो हजार बेर शपथ खयबाक संकेत देल गेल अछि। तेसर पाँती मे चालिस सँ चारि घटाय छत्तीसक चौथाई अर्थात नव द्वारा नायक नायिकाक नवयौजनक संकेत देल गेल अछि। पाँचम पाँती में साठि मे दस घटाय पचासक चन्द्रमा स्वरूप गोल विन्दु अर्थात शून्य हटा देने पाँच प्राप्त होइछ जाहि सँ पाँच लोक (पंच, समाज) द्वारा नायिकाक उपहास कयल जयबाक संकेत देल गेल अछि। नवो बुना दए नवो वामकर द्वारा नओ पर शून्य वाम भाग सँ नवपद्म द्वारा लीलाकमलक संकेत देल गेल अछि। छठम पाँती मे दुइ बुन सँ दू पर शून्य बीस अर्थात् विषखाय मरबाक संकेत देल गेल अछि। एतावता पर्याप्त मानसिक श्रमक बाद जे अर्थ निरूपित होइछ से कविक काव्यकला, वर्णन-चातुर्य ओ उक्ति- विच्छित्तिक परिचय दैछ।

एही तरहें हिनक एक गोट दृश्यकूट अछि–

हरि-पति-हित-रिपु-नन्दन-वैरी-वाहन ललित गमनी ।
दिति नन्दन रिपु नन्दन-नागरि रूपें अधिक रमनी ॥
सिव । सिव । तमरिपु - बान्धव - जनी ।
रितुपति-मित-वैरी-चूड़ामनि-मित समान रजनी ॥
हरि-रिपु रिपु-प्रभु तसु रमनी तसु तात सरिस कुचसिरी ।
सिन्धु तनय-रिपु-रिपु-रिपु-बैरिनि वाहन माझ उदरी ॥
पञ्चतनय-हित-सुत गुने पाबिअ विद्यापति कवि भाने ।
[राजा सिवसिंह रूपनाराएन लखिमा देवि रमाने] ॥[१८३]

एहि पद मे नायिकाक सौन्दर्यक वर्णनक हेतु शब्दजाल बुनल गेल अछि। हरि पति-हित-रिपु-नन्दन-वैरी-वाहन सँ तात्पर्य वानरक पतिसुग्रीवक हितैषी रामक शत्रु रावणक नन्दन मेघनादक शत्रु इन्द्रक वाहन अर्थात् ऐरावत अछि, जकरा समान ललित चालिवाली नायिका कँ कहल गेल अछि। नायिकाक सौन्दर्य दितिनन्दन-रिपु नन्दन-नगरी अर्थात दैत्यक शत्रु विष्णुक पुत्र कामदेवक पत्नी रति सँ अधिक कहल गेल अछि। तमरिपु-बान्धव-जनी

सँ चन्द्रमाक बन्धु कुमुदिनीक जनी शरद ऋतु केँ उपस्थापित कयल गेल अछि । चारिम पाँती मे वसन्तक मित्र कामदेवकशत्रु शिवक चूड़ामणि अर्थात चन्द्रमाक मित्र पूर्णिमाक राति होयबाक संकेत देल गेल अछि । पाँचम पाँती मे बेङ्गक शत्रु सापक शत्रु गरूड़क प्रभु विष्णुक रमनी लक्ष्मीक पुत्र बेल सँ नायिकाक कुचक उपमा देल गेल अछि । छठम पाँती मे समुद्रकपुत्र राहुक शत्रु विष्णुक शत्रु मधुकैटभक शत्रु दुर्गाक वाहन सिंह समान पातर नायिकाक डाँड़ केँ कहल गेल अछि । सातम पाँती मे पञ्चतनय कुन्तीक हित कृष्णक पुत्र कामदेवक प्रताप सँ एहन नायिका केँ प्राप्त होयबाक वर्णन भेल अछि ।

एतावता एहि पद मे अर्थनिरूपणक हेतु अत्यधिक मानसिक श्रमक आवश्यकता होइछ, मुदा अर्थनिरूपणक बाद अद्भुत आनन्दक प्राप्ति होइछ ।

कविक एकगोट पद मे धर्मक अभिव्यक्त हेतु जाहि उक्ति-वैचित्र्यक सहायता लेल गेल अछि से सर्वथा हृदयग्राही भेल अछि—

लिखब उनैस सताइसक संग ।
से पुनि लिखब पचीसक संग ॥

एहि ठाम उनैस, सताइस ओ पचीस क्रमशः व्यंजन वर्गक उनैसम अक्षर 'ध' सताइसम अक्षर 'र' तथा पचीसम अक्षर 'म' के अभिव्यक्त करैछ ।

एही प्रकारक हिनक किछु कूट पदावली सभ थिक—

माधव, जाइते देखलि पथ रामा ।
गरुड़ासन-सख-तातक वाहन तासम गति अभिरामा ॥
x x x
माधव, माधव, होहु समधान । तुअ बिनु करब भुवन रितुपान॥
प्रथम पचीस अठाइस भेल । तासम वदन हेम हरि लेल ॥
पचिस अठारह बिस तनु जार । छिति सुत तेसर से जिब मार ॥
x x x
हरि रवसुनि हरिगोभय गोभरि
गोतम गोरि लोटाइ रे ।
हरि-रिपु-रिपु-मुख विदित वसन देय
गोदिसे विदेसे बैराइ रे ॥
x x x
हरिरिपु रिपु सुअ अरि बल भूषण
तसु मोअण अछ ठामा ।
पञ्च वदन अरि वाहन रिपुसूत ।
सुत अरि पएले नामा ॥

महाकवि विद्यापतिक किछु विशिष्ट दृश्यकूट अर्थानुसन्धानक अपेक्षा रखैछ यथा—

कुसुमित कानन कुञ्ज बसी । नयनक काजर घोरि मसी ॥
नखसञो लिखलन्हि नलिनीक पात । लीखि पठाओल आखर सात ॥
प्रथमहि लिखलन्हि पहिल वसन्त । दोसरें लिखलन्हि तेसरक अन्त ॥
लिखि नहि सकलिह अनुज वसन्त । पहिलहि पद अछि जीवक अन्त ॥
भनइ विद्यापति आखर लेख । बुधजन होथि से कहिथ विशेख ॥
x x x
तीनिक तसर तीनिक वाम । तीनिक तसर घनिकर ठाम ॥
तीन तीन कए राखलि फूल । तीनिक तसर माधव भूल ॥
तीनि तीनि कए उठलिह भाखि । तीनिक तेसर माधव साखि ॥
भनइ विद्यापति तीनिक नेह । नागरकाँ थिक नारि सिनेह ॥

एतावता विद्यापतिक दृश्यकूट मे शब्दक चमत्कार अत्यन्त स्पष्ट देखि पड़ैछ । एहि मे पौराणिक सन्दर्भ ओ सांख्यिक कवि-प्रौढ़ोक्तिक माध्यमे चमत्कार उत्पन्न कयल गेल अछि । हिनक एकटा दृश्यकूट पद मे जानकीक जीवनकथा केँ अत्यन्त चमत्कारिक ढंग सँ प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहि मे कहल गेल अछि—

रे नरनाह सत भजु ताही । जाहि नहि जनक जननि नहि जाही ॥
बसु नइहर सासुरा केर नाम । जननिक सिर चढ़ि गेलिह गाम ॥
सासुक कोरहि सुतल जमाए । समधि विलह तञो विलहल जाए ॥
जाहि उदर सञो बाहर भेलि । से पुनि पलटि ततहि चलि गेलि ॥
भन विद्यापति सुकवि सुजान । कविकेँ कवि कह कवि पहिचान ॥

एहि तरहेँ एहि मे सीताक जन्म, रामवनवास तथा सीतक पृथ्वी-प्रवेशक कथा अप्रस्तुत प्रशंसा ओ व्याजोक्तिक माध्यमे कहल गेल अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एही प्रकारक एकगोट दृश्यकूट पदक चारि गोट पाँती एहि रूपक अछि—

जननी के जायल जननी नाम ।
जननी के पीठ चढ़ि घुमल गाम ॥
कहहि कबीर एक अचरच भेल ।
सासुयक पीठ पर जमाय चढ़ि गेल ।

अवश्ये सन्त कबीर सेहो चमत्कारक सर्जनाक हेतु एहि विशिष्ट अभिव्यक्ति शैलीक प्रति उन्मुख छलाह ।

हिनक एहि प्रवृतिक चरम अवस्था हिनक उलटबाँसी कहल जायवला पदावली सभ मे भेटैछ, जकर हिनक पदावली मे बाहुल्य अछि । उलटबाँसीक हेतु कबीर दास ततेक ने लोकप्रचलित भए गेल छलाह जे हिनका सम्बन्ध मे लोकोक्तिए कहल जाइत रहल अछि—'कबीरदास के उलटे वाणी, बरिसे कंबल भीजे पानी ।'

[illegible] काव्यरूप मे प्रतीकक चयन मे जनप्रचलितधाराक प्रतिकूलता तथा उक्ति-वैचित्र्य [illegible] विशेष ढंगक प्रयोग [illegible] विशिष्टता देखि पड़ैछ । साधक परमपुरुष कें प्राप्त करबाक हेतु संसारक सामान्य [illegible] प्रतिकूल चलब आवश्यक बुझैत छथि । ब्रह्मानन्दक अवर्ण्य अनुभूतिक वर्णन उलटबाँसी [illegible] मे सांसारिक क्रियाकलापक उनटा ढंग सँ वर्णन कय देखाओल जाइत अछि । [illegible] सँ श्रोता वा पाठक विस्मयविमुग्ध रहि जाइत अछि अथवा एकरा निरर्थक बुझि [illegible] दैछ । मुदा निर्गुण परम्पराक साधक वा मनस्वी एहन पद मे निहित आध्यात्मिक [illegible] गुरु-कृपा, परम्परा आ चिन्तन-मनन सँ ग्रहण कय रहस्य धरि आ जुमैत छथि आ [illegible] रहस्यक उद्‌घाटन भेला पर विशेष मानसिक तृप्ति अथवा संसार सँ विरक्तिक अनुभव करै छथि । एहि शैली मे रचित काव्यरूप मे रहस्यात्मक भाषा, अद्‌भुत परिवेश, प्रतीकात्मकता सूक्ष्म आध्यात्मिक तत्त्वक विरोधात्मक प्रतीक द्वारा उपस्थापन, असंगतियुक्त अभिधार्थ तथा अर्थ लगएबाक चुनौतीपूर्ण सम्बोधन रहैत अछि, जे जिज्ञासु कें आध्यात्म चिन्तनक मार्ग प्रशस्त करैत अछि । उदाहरणार्थ ई पद देखल जा सकैछ–

चुआए अमीरस भरत-ताल जहाँ शब्द उठए असमानी हो ।
सरिता उमड़ि सिन्धु कें सोंखए नहि किछु जाए बखानी हो ॥
चान्द सुरुज तारागन नहि उहाँ नहि उहाँ रएनि बिहानी हो ।
बाजा बजे सितार बाँसुरी ररंकार मृदुवानी हो ।
किरीट झिलमिल उहाँ झलकए बिनु जल बरसए पानी हो ।
शिव अज विष्णु सुरेस सारदा निज निज मत उन्मानी हो ।
दस अवतार एक तत राजे स्तुति सहज सेआनी हो ॥
कहए कबीर भेद की बतिया बिरला कोइ पहिचानी हो ।
कए पहिचान फेरू नहि आबए जम जुलमी किरवानी हो ॥

एहि पद मे 'सरिता उमड़ि सिन्धु कें सोंखए' ' बिनु जल बरसए पानी हो' आदि पद मे विरोधमूलकता तथा अद्‌भुत तत्त्वक समावेश बुझना जाइछ । एहि मे चान्द, सुरुज, शिव, अज, विष्णु, दशावतार आदि प्रतीकक माध्यमे साधना मार्गक सूक्ष्म-तत्त्वक विवेचन कएल गेल अछि तथा 'बिरला कोइ पहिचानी हो' द्वारा अर्थ अनुसन्धाता कें चुनौती देल गेलैक अछि ।

वस्तुत: एहि पदक माध्यमे सन्त कबीर योगसाधानाक अत्यन्त गूढ़ प्रक्रिया कें रूपकक माध्यमे अभिव्यक्त कयलनि अछि । एहि मे भरततालसँ तात्पर्य अछि ब्रह्मरन्ध्र । ब्रह्मरन्ध्र मे सहस्रकमलदल अछि आ ओकरा मध्य मे चन्द्रमा अछि जे निरन्तर अमृत क्षरित रहैछ। योगसाधना द्वारा योगी एहि अमृत कें पीबि परमानन्दक प्राप्ति करैत छथि । अमृतक क्षरण कें 'बिनु जल बरसए पानी' द्वारा अभिव्यक्त कयल गेल अछि । ब्रह्मरन्ध्र मे सूर्य ओ चन्द्रमाक प्रकाश नहि जाइछ, जकरा 'चान्द सुरुज तारागन नहि उहाँ, द्वारा अभिव्यक्त कयल गेल

अछि । 'बाजा बजे सितार बाँसुरी ररंकार मृदुवानी हो' सँ शरीरक भीतर [illegible] समुद्र गर्जन, मेघगर्जन आदि शब्दक सदृश बाजक शब्द तथा [illegible] मधुर शब्दक निरूपण कयल गेल अछि, जे योगसाधनाक क्रम मे योगी कें सुनाइ पड़ैत अछि आ क्रमश: मन स्थिर भेला पर ई शब्द सभ सुनाइ पड़ब समाप्त भए जाइत छैक । [illegible] ध्यानावस्था मे योगीक चित्त रमि जाइछ आ ओ संसार सँ निर्द्वन्द्व भए जाइछ । 'सरिता उमड़ि सिन्धु कें सोंखए' द्वारा कबीर कुंडलिनी शक्तिक जागरण द्वारा षट्चक्र भेदनक निरूपण कयलनि अछि । कुंडलिनी शक्तिक जागरण द्वारा ब्रह्मरन्ध्र मे आत्मा पहुँचि गेला पर आत्मा शरीर सँ स्वतन्त्र भए जाइछ आ योगी कें आत्मब्रह्मक साक्षात्कारक आनन्द भेटैत छैक, जकरा 'स्तुति सहज सेआनी' द्वारा अभिव्यक्त कएल गेल अछि । एहि तरहेँ सन्त कबीरक उलटबाँसी जँ गूढ़ार्थप्रयोग द्वारा हठयोगक शिक्षा रूपकक माध्यमे प्रस्तुत करैछ तँ लोकसामान्यक अभिधार्थ ग्रहण कयला पर असंगत बुझना जाइछ । वैह असंगति ओ गूढ़ प्रयोग उलटबाँसीक अन्यतम विशिष्टता थिक ।

एतावता सन्तकबीरक उलटबाँसी जतय आध्यात्मिक प्रतीकक माध्यमे अर्थवैचित्र्य उत्पन्न करैत देखि पड़ैछ, ततय महाकवि विद्यापतिक दृश्यकूट शब्दजालक द्वारा चमत्कार उत्पन्न करैत देखि पड़ैछ । दुनू कविक काव्य मे कथनशैली मे विचित्रता ओ विशिष्टता उत्पन्न करबाक ध्येय सन्निहित अछि । प्रतीक विधान उलटबाँसी शैलीक मूल तत्त्व थिक आ दृश्यकूट मे पौराणिक सन्दर्भ तथा कविप्रौढ़ोक्तिक विशिष्टता अछि । सामान्य सांसारिक मान्यताक विरोधमूलक अभिव्यक्ति द्वारा उलटबाँसी शैली मे साधक कें आत्मज्ञानक शिक्षा देबाक प्रयत्न होइत छैक, मुदा दृश्यकूट काव्यरसिकक शास्त्रज्ञता ओ रसपेशलताक कसौटी होइत अछि ।

एहि दुहू शैली मे जे एकटा खास साम्यक बिन्दु अछि, से थिक पदान्त मे चुनौतीपूर्ण उक्तिक समावेश । उलटबाँसी शैली मे सन्त कबीर पदान्त मे 'बिरला कोइ पहिचानी हो' 'बिरला बूझे' जो या पदका अर्थ लगावै ताको नाम विज्ञानी' आदि उक्ति द्वारा कथ्यक मर्म कें बुझनिहार कोनो विशिष्ट साधकेटा कें मानलनि अछि तथा एहने साधक कें चतुर, सुजान कहलनि अछि। दोसर दिस महाकवि विद्यापति 'भनइ विद्यापति बुझ रसमन्त' कविकँ कवि कह कवि पहिचान' बुधजन होए से कहए बिसेख' आदि चुनौती द्वारा अपन दृश्यकूटक मर्म कें बुझनिहार ओहने व्यक्ति कें मानल अछि जे रसिक हो, कविक हृदय रखैत हो वा विशेष रूपें बुद्धिमान हो ।

सिद्धलोकनिक सन्ध्याभाषा मे रचित गूढ़ार्थ-प्रयोग मे सेहो उलटबाँसी शैलीक विशेषता परिलक्षित होइछ । एहू भाषाक मर्म कें बुझनिहार कें सिद्धाचार्य लोकनि चुनौती दैत छथि जकर रिक्थ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ महाकवि विद्यापतिक पदावली मे भेटैछ । सन्ध्या भाषा मे रचित सिद्धाचार्य ढेंढणपाएरक ई पद द्रष्टव्य अछि–

बेंग संसार बाड़हिल जाअ ।
दुहल दूधिकि बेंटे समाअ ॥
बदल बिआएल गविआ बाँझे ।

पिता दहिए एतिना माँझ ॥
जां मां बुज्झो मां धनि बुधी ।
जां मां चोर सांड साधी ॥
नित नित पिआला पिहपम जूजह ।
ढंढपाएर गांत विरलें बुझअ ॥

'गांत विरले बुझअ' कँ सन्त कबीर 'बिरला कोइ पहिचानी हो' आ महाकवि विद्यापति 'बुधजन हाए में कहए विसेख' कहि अभिव्यक्त कयलनि अछि ।

विद्यापतिक भावाभिव्यंजनताक वक्र-प्रवृति हिनक किछु व्याजोक्तिमूलक पदहु में देखि पड़ैछ यथा–

हमं युवती पति गेलाह विदेस । लग नहि बसए पड़उसिहु लेस ॥
सासु ननन्द किछु अओ नहि जान । आँखि रतौन्धी, सुनए न कान ॥
जागह पथिक, जाह जनु भोर । राति अन्धार, गाम बड़ चोर ॥
सपनेहु भाओर न देअ कोटवार । पओलेहु लोते न करए विचार ॥
नृप इथि काहु करथि नहि साति । पुरुख महत सब हमर सजाति ॥
विद्यापति कवि एह रस गाव । उकुतिहि [कामिनि] भाव जनाव ॥

हिनक साङ्गरूपकत्वक किछु चमत्कारपूर्ण उक्ति तथा विशेषोक्तिमूलक पदहु में अभिव्यक्ति शैलीक चारुता स्फुट अछि जे हिनक कूटपदहिक जहाँ कतोकठाम श्रमपूर्वक अर्थनिरूपण ओ तत्पश्चात आनन्दतिरेकक सर्जक अछि ।

भणिता

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापतिक पदावलीक भणिताक तुलना कएला सँ ई स्पष्ट होइछ जे जहिना महाकवि विद्यापति अपन पदान्त में अपन नाम देब युगीन काव्यरूपक हेतु आवश्यक बुझलनि तदनुरूपे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली में सेहो पदान्त में कबीरक नाम भेटैत अछि । महाकवि विद्यापतिक पदावली में जतय हिनक नामक संगहि हिनक विभिन्न आश्रयदाताक नाम भेटैत अछि, ततय सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली में सन्त वा साधु कें सम्बोधन कए पद कें पूर्ण करबाक परिपाटी देखि पड़ैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली में अनेक ठाम 'साहेब कबीर' भणिता भेटैत अछि आ अनेकठाम हिनक नामक संग अन्यान्यो कबीरपन्थी संत वा हिनक शिष्य परम्पराक उल्लेख भेटैत अछि । जेना विद्यापतिक पदावली में आश्रयदाताक नामोल्लेख सँ हिनक पदरचना कालनिर्धारण में सौविध्य भेल अछि तहिना सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली में इतर कबीरपन्थी सन्तक नाम पदावलीक संक्रमणक उद्घाटक अछि आ ओहन रचना कबीरक मानबा में आपत्ति उठब स्वाभाविके कहल जा सकैछ । दुनू कविक किछु प्रमुख भणिता एतय उदाहरणार्थ प्रस्तुत कयल जाइछ–

विद्यापतिक किछु भणिता

(क) विद्यापति कविवर इहो गाओल जाचकजन क गती ।
हासिनि देइपति गरुड़नराएन देवसिंह नरपती ।
(ख) भनइ विद्यापति राड मुकुटमणि ।
जीवओ रूपनागएन नृपधरणि ॥
(ग) भनइ विद्यापति अभिमत सेवा ।
चन्दनदेइपति बैजल देवा ॥
(घ) विद्यापति कवि भाने ।
ओ नहि बुढ़बा जगत किसाने ॥
(ङ) भनइ विद्यापति सुनह भवानी ।
हर नहि निधन जगत केर सामी ॥
(च) भनइ विद्यापति सुनु हे मनाइनि कंओ ने बुझाएत जगत गुरु ।
राजा सिवसिंह रूपनाराएन सकल जाचक जन कलपतरु ॥
(छ) विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझ रसमन्त ।
देवसिंह नृपनागर रे हासिनि देवि कन्त ॥
(ज) भनइ विद्यापति से वर नागरि आनन पावए कोई ।
कंसदलन नारायण सुन्दर तसु रंगिनि पए होई ॥
(झ) विद्यापति कवि गाविहारे रस बुझ रसिक सुजान ।
देवि लखिमा कन्त जानए सिरि सिवसिंह भूप ॥
(ञ) कवि विद्यापति रभसे भाव ।
मलिक बहारदीन बुझ भाव ॥



डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' विद्यापति भणिता पर विचार करैत कहलनि अछि जे 'विद्यापतिक पदक प्रमुख ओ विशिष्ट गुण थिक भणिताक प्रयोग । बौद्धगान में सेहो भणिता भेटैत अछि। किन्तु ओहि में कविमात्रक नामोल्लेख अछि, जे स्वाभाविके थिक । विद्यापति सेहो अपन पद में सभ अपन नाम वा उपनाम देने छथि, मुदा ई जाहि-जाहि राजालोकनिक आश्रय में रहलाह ताहि -ताहि राजालोकनिक हुनक पत्नीक नामक संग उल्लेख कए देने छथि । आगाँक कविगण विद्यापतिक भणिता प्रयोग प्रणालीक अनुसरण कएल, केवल मैथिलीक कविएटा नहि, अन्य भाषाक कविगण सेहो ।[१६३]

सन्त कबीरक किछु भणिता

(क) कहए कबीर भजन बिन बन्दे जनम अकारथ जाइ ।
(ख) कहए कबीर सुनो भइ साधो विरले उतरे पारा हो ।
(ग) कहए कबीर सुनहु भाइ साधो अछत अन्न उपास ।
(घ) दास कबीर इह गावए निरगुनिआ

(ङ) साहेब कबीर अस दरजी पाबा
(च) कहए कबीर धर्मदास सञो शबद मे सुरति लगाबहु हो ।
(छ) साहेब कबीर कहि देल शबद परेखु टकसार ।
(ज) कहए कबीर राम रस माते जोलहा दास कबीरा हो ।
(झ) कहए कबीर सुनु धर्मन मेरो ओहि देस हो ।।
(ञ) साहेब कबीर एहो गाओल समदोनिञा
(ट) कहए कबीर सुनहु हे हंसा
(ठ) धरमदास एक बनिआ हो करए झुठे बजार ।
साहेब कबीर बनजारा हो करहि सत्य व्यापार ।।

व्याकरणिक पक्ष

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली**क भाषिक स्वरूप मे अनेक स्तर मे साम्य देखि पड़ैछ । दुहू मे समाने स्वर ओ व्यंजन ध्वनिक प्रयोग भेल अछि । मुदा **विद्यापति पदावली** मे जतय 'ए' संयुक्त स्वरक प्रयोग देखि पड़ैछ, सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एहि हेतु सर्वत्र 'ऐ' ध्वनिक प्रयोग प्राचीन हस्तलेख सभ मे देखि पड़ैछ । तहिना सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सानुनासिक ध्वनिक हेतु केवल अनुस्वारेक प्रयोग भेटैछ जखन कि विद्यापतिक पदावली मे 'चन्द्रविन्दु' ओ अनुस्वार दुहूक प्रयोग भेल अछि । कतहु कतहु 'न' सानुनासिकक प्रयोग सेहो सन्तकबीर भणित पदावलीमे भेटैछ ।

व्युत्पतिक दृष्टिञे रूढ़, यौगिक ओ योगरूढ़ तीनू प्रकारक शब्द दुहू पदावली मे देखि पड़ैछ । भैया, भतार, धरुआर आदि रूढ़, काआपुर, चरणामृत, भवजल, भवसागर, आदि यौगिक ओ दशमी दुअरिआ, भँवरगुफा, अक्षयवृक्ष, अष्टकमल, मकड़जाल, गगनमंडल आदि योगरूढ़ शब्दक प्रयोग सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे देखि पड़ैछ । महाकवि **विद्यापतिक पदावली** सँ पसुपति, सिरिफल आदि योगरूढ़, सरसिज,, मनसिज, पयोधर, मुक्ताहार आदि यौगिक तथा कमल, ऐपन, कैतब, आदि रूढ़ शब्द उदाहृत कयल जा सकैत अछि ।

उद्गमक दृष्टि सँ दुहू पदावलीक शब्दावली पर विचार कएला सन्ताँ महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे जतय हिनक तत्सम ओ तद्भव शब्दक प्रति उन्मुखता दृष्टिगोचर होइछ ओतहि सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे देशी शब्दक बहुलतया प्रयोग भेल अछि । विदेशज अरबी-फारसीक प्रयोगक दृष्टिञे महाकवि **विद्यापति पदावली** केँ सर्वथा असम्पृक्त कहल जा सकैछ, यद्यपि हिनक **कीर्त्तिलता**[१६४] आ **कीर्तिपताका** ग्रन्थ मे एहि प्रकारक विदेशज शब्द बहुलतया प्रयुक्त भेटैत अछि ।

उद्गमक दृष्टिञे शब्द प्रयोग

तत्सम ओ तद्भव प्रयोग मे **विद्यापतिक पदावली** ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक तुलना कएला उत्तर ई स्पष्ट होइछ जे विद्यापति तत्सम शब्दक विशेषतया प्रयोग

कयलनि अछि जा सन्त कबीर तद्भव दिस बेस उन्मुख छथि यथा

विद्यापतिक प्रयोग	**सन्त कबीरक प्रयोग**
पति, पिआ	पिआ, पलाए
मृग	मिरगा
दोला	डोली, डाँडी
सिन्दुर	सेनुरा
मन्दिर	मन्दिल, मण्डिल
बाँस	बसुलिया
कूप	कुइआँ
दीप,दीव	दीआ
काग	कौआ ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे प्रयुक्त किछु विशिष्ट देशी शब्दसभ अछि–घरुआर, देशाउर, फुलकलिआ, पेओन, बिछिआ, पैरी, फड़की, बेनटबा, नकबेसरि, पेठिआ, चिल्लर, ढील, फदर-फदर, पेटकुनिञा, हबकुनिञा, मउनिञाँ, बिढ़नी, पचाहिआ, आदि ।

किछु शब्दक प्रयोग मे दुहू महाकवि मे अन्तर देखि पड़ैछ यथा– भमर-भँआर, बालँमु-बलमा, आदि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक किछु शब्दपर अन्तर्प्रान्तीय भाषाक प्रभाव ओ संक्रमण कतोकठाम देखि पड़ैछ यथा– जब, तब, कीन्ह, दिहलन, उँहा, मछली, खसम, गलैचा, ढेबुआ, फकीरबा, घूँघट, बबरी, गावस, आदि, ।

किछु विशिष्ट शब्दक प्रयोग मे दुहू पदावली मे अर्थ ओ स्वरूपगत कोनो खास अन्तर नहि देखि पड़ैछ यथा–

धनि – सब धँनि कान्ह-कान्ह कए झूरए (विद्यापति)[१६५]
हम धनि बारि बएस (कबीर)[१६६]
सरोवर - सरोवर घाट बाट कण्टक तरु (विद्यापति)[१६७]
सुखि गेल सरोवर उकनि गेल पुरनियाँ (कबीर)[१६८]
अवघट – जाएब अओघट घाटे कन्हैआ (विद्यापति)[१६९]
अवघट घटिआ लए गेलि मोरि नैआ (कबीर)[१७०]
रतन - जौवन रतन अछल दिन चारि (विद्यापति)[१७१]
रतन केर कोहबर साजन (कबीर)[१७२]
सासु - सासु ननन्द नहि अछए समाज (विद्यापति)[१७३]
सासु मोरा सुतए चौबरिया (कबीर)[१७४]

संज्ञाक तीन रूप

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** दुहू मे संज्ञाक लघु, गुरु आ गुरुतम स्वरूप भेटैत अछि। गुरुतम रूपक निर्माण मे एहि दुहू पदावली मे 'बा' ओ 'इआ', इआ प्रत्ययक प्रयोग मे समानता देखि पड़ैछ यथा-सन्त कबीरक किछु पद द्रष्टव्य-

- ☐ आहि रे कोठरिआ मे प्रेम के पेटरिआ।
- ☐ जपल नाम निशनिआ।
- ☐ माया खाय जग संसरबा मे एतकत एलही ना।

सन्त कबीरक पदावली एहि प्रकारक गुरुतम शब्द प्रयोगक बहुलता दृष्टि गोचर होइछ।

महाकवि **विद्यापति पदावली** मे संज्ञाक गुरुतम स्वरूप निदर्शन तँ भेटैछ मुदा एकर संख्या सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक अपेक्षा अल्प अछि। उदाहरण हेतु हिनक किछु पद द्रष्टव्य अछि, यथा–

- ☐ तीति रजनिआँ तिनि जुग जनिआँ
  दिठिहुक ओत देसान्तर रे।[१३८]
- ☐ मत्त दादुरि डाके डाहकि फाटि जाएत छातिया।
  तिमिर भरि भरि घोर जामिनिन थिर बिजुरिक पाँतिया।
  विद्यापति कह कैसे गमाएब हरि बिना एहो रातिया।[१३९]
- ☐ के पतिआ लए जाएत रे मोर पिअतम पास।[१४०]
- ☐ सूतलि छलहुँ हम घरबा रे गरबा मोतिहार।
  राति जखन भिनुसरबा रे पिअ आएल हमार।
  कर कौसल करे कपइत रे हरबा उर टार।[१४१]
- ☐ जांगिआ एक हमे देखल गे माई।[१४२]

उपरांक्त पदावली मे इआ प्रत्यय सँ संज्ञाक गुरुतम रूप रजनी सँ रजनिआँ बनल अछि। इआ प्रत्ययक योग सँ छाती सँ छातिया, जोगी सँ जोगिआ, पाँती सँ पाँतिया, राति सँ रातिया पाती सँ पतिआ तथा 'बा' प्रत्ययक योग सँ गर सँ गरबा, भिनसर सँ भिनुसरबा, घर सँ घरबा तथा हार सँ हरबा गुरुतम रूप बनल अछि।

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे इआ, इआ तथा बा प्रत्ययक प्रयोग द्वारा संज्ञाक गुरुतम रूपक निर्माण मे समानता दृष्टिगोचर होइछ।

संज्ञाक लघु स्वरूप सँ गुरु स्वरूपक निर्माण मे दुहू पदावली मे सामान्यतः 'आ' एवं 'ई' प्रत्ययक योग देखि पड़ैछ। अकारान्त शब्द केँ आ प्रत्ययक योगें तथा इकारान्त शब्द केँ दीर्घ ईकारान्त बनाए दुहू पदावली मे संज्ञाक लघु रूप सँ गुरु रूपक निर्माण देखि पड़ैछ यथा–

विद्यापति- गोरि-गोरी, सरीर-सरीरा, करइला, भिनुसारा इत्यादि।

कबीर- हंसा, पिया, धनी, धागा, नयना आदि।

संज्ञाक लघु, गुरु ओ गुरुतम तीन स्वरूपक प्रयोग कोनो शब्द विशेषक हेतु सामान्यतः दुनू पदावली मे कम्मे देखल जाइछ। बहुधा दुनू पदावली मे कोनो एक वा दू रूपक प्रयोग सामान्य देखि पड़ैछ। यथा- **विद्यापति पदावली** मे प्रयुक्त किछु शब्दक तीनू रूप द्रष्टव्य अछि

लघु	गुरु	गुरुतम
रमनि	रमनी	रमनिआ
रजनि	रजनी	रजनिआ
हार	हारा	हरबा
सजनि	सजनी	सजनिआ

एहि पदावली मे किछु संज्ञा शब्दक कोनो दुइएटा रूप देखि पड़ैछ यथा–

सरीर	सरीरा	
	गमनी	गमनिआ
	भिनसारा	भिनुसरबा
पाँति	पाँतिया	
राति	रातिया	
गाछ	गछिया	

महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे किछु शब्दक केवल गुरुतम स्वरूपक प्रयोग देखि पड़ैछ यथा– चेरिआ, पतिआ, घरबा, जोगिआ, जोगिनिआ गरबा इत्यादि। लघु स्वरूपक प्रयोग सामान्ये अछि।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो येह स्थिति देखि पड़ैछ जकर किछु उदाहरण एतय उद्धृत कयल जाइछ यथा– आँचर-आचरबा, हाथर-हथरबा, जमुना-जमुनमा, निर्गुण-निर्गुनिआ, जम-जमुआ, पिआ-पिअबा, सुरित-सुरतिआ, कंवाड़-कंवड़िआ, चोर-चोरबा, दिन-दिनमा, नगर-नगरिआ, शब्द-शबदवा, नैहर-नैहरबा, झुमरा-झुमरिआ, धोबी-धोबिआ, आदि शब्दक दुटा स्वरूप देखि पड़ैछ तँ कोतवलबा, महलिआ, लहरिआ, पटजुड़बा, ओरिआ आदिक केवल एकेटा स्वरूप देखि पड़ैछ–

किछु संज्ञा शब्दक लघुरूप महाकवि विद्यापति मे, तँ गुरु वा गुरुतम रूप सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भेटैछ यथा–

खन (वि०)-खनिआ (क०), संज (वि०)-संजिया (क०), हाट (वि०)-हटिआ (क०), पीरीति (वि०)-पिरितिया (क०),चोर (वि०) चोरबा (क०), देश (वि०)-देशबा (क०), झुमरी (वि) झुमरा (क०) आदि।

एतावता सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे प्रयुक्त संज्ञाक लघु, गुरु आ गुरुतम रूपक प्रयोग मे जतय सन्त कबीर भणित पदावली मे गुरुतम प्रयोगक बहुलता अछि, ओतए विद्यापति मे तकर अभावे कहल जा सकैछ, जे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे लोकशब्दक प्राचुर्यक स्थिति स्पष्ट करैछ। दुहू पदावली मे किछुए पदक तीनू प्रयोग देखि पड़ैछ अन्यथा लघु-गुरु, अथवा लघु-गुरुतम वा गुरु-गुरुतम प्रयोगे देखि पड़ैछ। वा, इआ, इञा, आदि प्रत्यय दुनू पदावली मे गुरुतम संज्ञाशब्दक निर्माण हेतु तथा आ, ई सामान्यत गुरू शब्दक निर्माण हेतु देखि पड़ैछ। किछु संज्ञा शब्दक लघुरूप एक पदावली मे तथा गुरु वा गुरुतम रूप दोसर पदावली मे देखि पड़ैछ।

विभक्ति

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे कतोक विभक्तिक प्रयोग मे समानता भेटैत अछि।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक चतुर्थी विभक्ति मे 'लागि' शब्दक प्रयोग भेटल अछि जे **विद्यापति पदावली**क एहि विभक्तिक अनुगमन करैत देखि पड़ैछ।

एहि विभक्तिक बहुलतया प्रयोग विद्यापति कयने छथि यथा–

☐ रगड़ल चान्दन मृगमद कुंकुम
सभ तेजल तुअ लागि।[183]

☐ काँ लागि सुमुखि (पलटि) हसि हेरलह।[184]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो एकर प्रयोग भेल अछि, यथा–

पिआ लागि कोहबर छेबाओल।[185]

तृतीया ओ पंचमी विभक्तिक 'सञो' क प्रयोग मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे समानता दृष्टिगोचर होइछ, उदाहरणार्थ–

विद्यापति–
☐ न करिअ परसञो पिरीति।[186]
☐ हरिसञो लाओब नेहा।[187]
☐ मुख सञो दुर करु चीरे।[188]
☐ गुरुजन कहि दुरजन सञो बारि।[189]
☐ राधा सञो जब पुनु तोहें माधव।[190]

कबीर–
☐ निर्गुण सञो होएत विआह।[191]
☐ दूर गमनसञो साहेब आएल।[192]
☐ चारिम बिछुड़ल हँस सञो चकेबा।[193]

कतहु कतहु सञे विभक्ति सेहो देखि पड़ैछ यथा–

घर सञे बहार भेली सुन्दरी मउजिया।[194]

सर्वनामक बाद षष्ठी विभक्ति मे र, ग, तथा कर विभक्तिक प्रयोग विद्यापति पदावली ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे समरूपके देखि पड़ैछ, यथा

विद्यापति–
☐ वदन-चान्द तोर नयन-चकोर मोर।[195]
☐ अरे अरे भमरा तोहें हित हमरा।[196]
☐ किछु नहि दोस हमार।[197]
☐ बाटर बटोहिया कि तुहु मोरा भाई।[198]
☐ सबकर पहु परदेश बसि सजनी।[199]

कबीर–
☐ कओन रूप तोर पिअ के साजन।[200]
☐ मन मोरा हर्षल तूर हे।[201]
☐ जकरा लिअए नहि होइ।[202]
☐ तोहरे अछइते रोबए कामिनी रे की।[203]

षष्ठी प्रयोग मे 'केर' विभक्ति रूप मे दुहू पदावली मे देखल जाइछ यथा–

विद्यापति– ☐ सबहु पथिक केर एके सोभाब।[204]
कबीर– ☐ जितह यम केर मैदान।[205]

विद्यापति पदावली मे षष्ठी विभक्तिक रूप 'क' सेहो पुष्कल रूपें प्रयुक्त अछि यथा–

☐ रसिकक सरबस नागरि बानि।[206]
☐ धरब जोगिनिआक भेस रे।[207]
☐ परक दरब हो परसञो वाद।[208]
☐ तरनिक उदय लहत की चन्द।[209]

'क' विभक्तिक विकृत रूप मे संक्रमित प्रयोग 'के' सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भेटैछ– एकर किछु उदाहरण अछि–

☐ अजर के बटिया सोहाओन हो।[210]
☐ हमरा के नाम अधार हे।[211]
☐ दुलहिन के जारब आङ्ग हे।[212]

सप्तमी विभक्तिक प्रयोग मे **विद्यापति पदावली** ओ सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे अधिकांश स्थल पर अधिकरण कारकक प्रयोग 'मे' 'ए' एँ, चन्द्रविन्दु तथा हि, अहि, एहि आदि विभक्ति देखि पड़ैछ। कतहु कतहु 'मे पर' सेहो भेटैछ यथा–

☐ तड़ित लता पर तिमिर सम्हारल।[213]
☐ कनककदलि पर सिंह समारल ता पर मेरु समाने।[214] आदि।
☐ सासुक कोर मे सुतल जमाय।[215]

सप्तमी विभक्तिक प्रयोग मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे, मह, पर आदिक प्रयोग भेल अछि यथा–

- ☐ मन मह बाढ़य दुन्द ।
- ☐ भवन मे भेल इजोर ।
- ☐ द्वारे पर भए गेल ठाढ़ हे ।

पुरुष

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे उत्तम पुरुष सर्वनाम मे हम, हमे, मञे तथा मोञे कर प्रयोग भेल अछि, यथा–

- ☐ चढ़लहुँ हमे कनक पहाड़
- ☐ मञे तोरा पूछूँ भैया रे बटोहिया
- ☐ प्रथमहि छलहुँ हम आदि पुरुष संग
- ☐ देखलहुँ मोञे गुरू केर धाम

विद्यापति पदावली मे सेहो सर्वनामक उत्तमपुरुषक ई स्वरूप सभ भेंटैत अछि यथा–

- ☐ हम नहि आजु रहब एहि आँगन
- ☐ आज मञे हरि-समागम जाएब
- ☐ हमे युवती, पति गेलाह विदेस
- ☐ दूरहु [दुगम] एडि मोञे आबञो [226]

विद्यापति पदावली मे मध्यमपुरुष सर्वनामक हेतु तञे, तोञे, तोहें, तुअ आदि स्वरूपक व्यवहार भेल अछि यथा–

- ☐ ओ मधुजीबी तञे मधुरासि ।
- ☐ भावक भरमलि तोञे सखि मिरिगा नहि ओ कान्ह ।
- ☐ तोहें जगतारन दीनदयाम अतए तोहर बिसबासा ।
- ☐ कज्जल रुप तुअ काली कहिअए

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे 'तुअ' शब्द तँ भेंटैत अछि मुदा अन्य रूप मे तें, तोहि, तों आदि दृष्टिगोचर भेल अछि यथा–

- ☐ छाड़हु हंसा तुअ यमपुर हो [231]
- ☐ तें नीमा बड़भागिनी [232]
- ☐ प्रभु तोहि दरसन देल [233]
- ☐ तों मुरुख कछु मरम न जानहु [234]

विद्यापति पदावली मे अन्यपुरुष सर्वनामक शब्द से, ते ओ, हुन्हि हुनि आदि प्रयुक्त अछि यथा–

- ☐ से आवे जाहु ताहु देखि आएल [भेल भिन] बेवहार
- ☐ आछ पयाधार त मार दखाल
- ☐ भनहि विद्यापति सुनह नागर ओ नहि ओ रस जान ।
- ☐ कत - कत कहय हुनिक बेवहार

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सेहो, से, ओ, हुनि शब्दक प्रयोग भेटैछ यथा–

- ☐ से प्रभु भाग लगाय ।
- ☐ की ओ करए अहार हे ।
- ☐ हुनि मलिया नहि बुझए रे ।

कतहु कतहु एहि पदावली मे 'ता' शब्दक सेहो प्रयोग देखि पड़ैछ यथा–

ता संग निन्दिओ नहि आबए

अन्यान्य सर्वनामिक स्वरूप मे दुहु पदावली मे इ, ओ, आदिक प्रयोग मे समरूपकता अछि–

किछु समरूप प्रयोग एतय निदर्शनार्थ प्रस्तुत अछि–

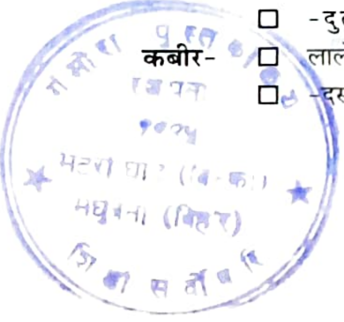
- ☐ इ -इ दुइ साजनि, जगत [भमए] सब अनुभव चाह ।
- ☐ -इ सभ जीव के कारण हो जीव राखल भरमाए ।
- ☐ ओ -ओ नवि नागरि गुनक आगरि भेलि निमालक माला ।
- ☐ की ओहि ओढ़न की ओहि आसन की ओ करए अहार हे
- ☐ के -वधक होएत के भागी
- ☐ के अब निजधर जायत हो
- ☐ सब -अनुपम रूप घटैते सब निघटल जत छल रूपक सारे ।
- ☐ सब सखिआ मिलि एकघर जाएब ।
- ☐ अपन -अपन कुसुम-रसे अपनहि माति ।
- ☐ अपन अपन गेंठि सम्हारि बान्धहु ।

विशेषण

गुणवाचक ओ संख्यावाचक विशेषणक प्रयोग मे सेहो दुहू पदावली मे समानता देखि पड़ैछ यथा–

विद्यापति-
- ☐ नील कलेवर पीत वसन घर
- ☐ चन्दन तिलक धवला ।
- ☐ -दुतुक संजुत सिकुर फूजल

कबीर-
- ☐ लाले लाले डोलिया सबुज रंग ओहरिआ
- ☐ -दस-पाँच सखी मिलि चलली बजरिया



सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे किछु विशेषण यथा जइसन,तइसन,अइसन,कइसन एतवे आदिक प्रयोग मे समानता देखि पड़ैछ यथा विद्यापतिक एहि प्रकारक किछु प्रयोग अछि–

जइसन सीनी चान्दक रेह ।[२५७]
तैसन सिंह तैसन सिआर ।[२५८]
एतबा बोलि कहब मोर सेवा [२५९]
कएलाहु साहस सिधि न पाबिअ अइसन हमर पाप।[२६०]
कइसन कए की बुझत अआन ।[२६१]

एहि तरहें सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक ई प्रयोग सभ द्रष्टव्य अछि–

- ☐ तइसन शब्द हृदय गहि राखहु जइसन पुरइन बसु पार हे।[२६२]
- ☐ अइसन कपड़ा धोइहें धोबिया दुविधा के दाग छूटि जाय हे।[२६३]
- ☐ एतबें वचनिआ सुनलनि साहेब [२६४]

मिथिलाक लोकजगत मे जइसन-तइसनक प्रयोग अत्यन्त लोकप्रिय रहल अछि। मैथिली लोकगीतक सामा-चकेबा गीतप्रभेद मे एकर प्रयोग तुलनाक हेतु व्यवहृत देखि पड़ैछ यथा–

जइसन नदिया सेमार तइसन भइया असवार ।
जइसन केराक थम्म तइसन भइयाक जाँघ ।
जइसन धोबियाक पाट तइसन भइयाक पीठ ।
जइसन रेशमक देश तइसन भइयाक केस ।
जइसन आमक फाँक तइसन भाइयाक आँखि ।
जइसन चानन बिरीछ तइसन भइया हाथक लाठी ।
जइसन जरल जराठी तइसन चुगिला हाथक लाठी ।[२६५]

लोकजगतक संगहि अइसन, जइसन,तइसन, कइसन आदि साहित्यहु मे प्राचीनेकाल सँ परिगृहीत रहल अछि। मैथिली साहित्यक आदि-गद्यग्रन्थ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक **वर्णरत्नाकर** मे औपम्य विधानक हेतु एहन बहुशः प्रयोग भेल अछि, यथा-**सखी वर्णना** मे कहल गेल अछि–

पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुँह श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि। काजरक कल्लोल अइसन भञुह। गथले फूले नर्म्मदाक शलाका पूजल अइसन षौप्पा परवाक पल्लव अइसन अधर। कनिअराक कर अइसन नाक। सीन्दुर मोति लोटाएल अइसन दान्त-वेतक साट अइसन बाँह। पारिजातक पल्लव अइसन हाथ। छोलङ्ग छोलल अइसन पयोघर। कांञ्चिवरली अइसन आदृरूक वान डमरुक माझा अइसन वेकण्ड। काकहक को अइसन जाँघ। विकसित स्थलपद्म अइसन चरण। नायिकाक दोसर शरीर अइसन।.. .. कामदेबक नगर अइसन शरीर। निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह। कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन। यमुनाक तरङ्ग अइसन भुञह। साँकरक शलाक अइसन नाक। सोनाक सीप अइसन कान। अन्धकार लता अइसनि विरनी। पावल विम्ब अइसन अधर। सहजें दालिव फुटल अइसन दान्त। कामदेवक पाश अइसन बाहु।[२६६]

कइसन ओ जइसनक प्रयोग सेहो एहि ग्रन्थ मे भेल अछि यथा पुनु कइसन अंह भउ कइसन तदन्तर भउ कइसन। पुनुकइसन देपु। आओ जइसन अइसन सैन्य सजि राजा चलल भउअह।

क्रियाविशेषण

दुहू पदावली मे जबे, तबे, आदि क्रियाविशेषणक प्रयोग समरूपक भेल अछि यथा

विद्यापति– ☐ चान्दबदनि धनि, चान्द उगत जबे ।
☐ दुहुक उजोर दुरहु सञो लखत सबे ।[२६७]

कबीर– ☐ जबे छलहुँ जननी के गरभ मे [२६८]
☐ तबे न सम्हारल हां [२६९]

क्रियापद

क्रियापदक प्रयोगक दृष्टिञे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे किछु विशिष्ट प्रयोग सभ एतय विवेच्य अछि। यथा-सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे 'अछि' क्रियापदक प्रयोग कयल गेल अछि–

चाँद सुरुज उहाँ अछि नाहीं ।[२७०]

विद्यापति पदावली मे अछि ओ अछ क्रियारूपक प्रयोग भेल अछि यथा–

- ☐ भनइ विद्यापति अछ परकार ।[२७१]
- ☐ नहि मोरा टाका अछि नहि धेनु गाय ।[२७२]

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली 'हउए' क्रियापदक प्रयोग एकर लोकजीवनक अतिशय निकटता, भापाक विकास तथा विशिष्टता कैं निरूपित करैछ। एहि पदावली मे कहल गेल अछि–

तोहरा के हउए धनी माए बाप सहोदरा
हमरा के नाम अधार हे ।[२७३]

शब्दसाधन

शब्दसाधनक दृष्टिञे दुनू पदावली मे क्रियापदक स्थिति पर विचार कयला उत्तर दुहू मे बहुत समानता देखि पड़ैछ यथा भूतकालिक कृदन्तक निर्माण मे अल प्रत्यक स्थिति दुहू पदावली मे द्रष्टव्य अछि ।

विद्यापति– बुझल, पिउल, जेओल, भूखल ।[२७४]
कबीर– मिलल, जनमल, भेल ।[२७५]

एतावता सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापति पदावलीक व्याकरणिक पक्ष कँ देखला सँ स्पष्ट होइछ जे विद्यापतिक मौलिकता ओ प्राचीन प्रयोगक विशिष्टताक कारणें यद्यपि हिनक पदावली मे विभक्ति प्रयोग, शब्दसाधन हेतु प्रत्यय विधान आदि मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली सँ असमानताक वृहत्तर परिसर अछि, तथापि दुनूक भाषाक मौलिक स्वरूप मे कताक विशिष्टता अत्यन्त निकटताक द्योतक अछि यथा शब्दक लघु, गुरु ओ गुरुतम रूपक प्रयोग, सार्वनामिक स्वरूप विशेषण ओ क्रियापदक अनेक स्तर मे समरूपकता आदि।

ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगक निर्बाधता

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** दुहू मे शब्दावलीक ह्रस्व ओ दीर्घ प्रयोगक निर्बाधता समरूपकें देखि पड़ैछ। ई निर्बाधता कखनो छन्दविधानक विवशता ओ कखनो कविकर्मक स्वातंत्र्यक रूप मे दुहू महाकवि द्वारा प्रयुक्त भेल अछि यथा–

विद्यापति- चन्द-चन्दा-रमनि-रमनी, गोरि-गोरी अरविन्द-अरविन्दा नारि-नारी, केलि-केली इत्यादि।

कबीर- दुलहिन-दुलहिनी, दिअरा-दीअरा, सखि-सखी, पिआ-पीआ इत्यादि।

भाव ओ अर्थ साम्य

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** मे किछु पद मे अत्यन्त भावसाम्य देखि पड़ैछ। सन्त कबीर जतय परालौकिक प्रिय सँ मिलन अथवा विरहक जीवात्मा ओ परमात्माक दाम्पत्यक रूपमे चित्रित कएलनि अछि, ओतए **विद्यापतिक पदावली** मे लौकिक जगतक मिलन ओ विरहक वर्णन अधिक स्फुट तथा रहस्यवादी माधुर्य बहुधा आरोपित सन बुझना जाइछ, तथापि दुनूक पद मे मिलन ओ विरह जन्य कामदशादिक वर्णन मे साम्यपरकता एहि भावसाम्यक कारण अछि। सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे पुनर्जन्मक अवधारणा नहि अछि, मुदा विद्यापतिक भक्ति साहित्य एहि अवधारणाक अनुगमन करैत देखि पड़ैछ, तथापि मानवजीवनक दैन्यक प्रति दुहू महाकविक भावधारा समरूपके होयबा सँ भावसाम्यक स्थिति देखि पड़ैछ। किछु पद, शब्द ओ भावसाम्य उदाहरणस्वरूप देखल जा सकैछ, यथा–

कबीर- सिमर फूल अकास मे से देखि सुगना लोभाए।
मारत लोल रूइआ उड़ि गेल सुगना चलल पछिताए॥[२२५]

विद्यापति- पातहि सञो फुल भमर अगोरल तरुतर लेल निवासे।
से फुल काटि कीट उपभोगल, भमरा भेल उदासे॥[२२६]

कबीर- एकहि वचन पिया रूसल हे साजन
अबकें आनत मनाए हे॥[२२७]

विद्यापति- एकहि वचन बिच भेल रे।
हसि पहु उतरो न देल रे॥

कबीर- भए गेलि नदिआ भयाओनि नहि कअओ आगन हो।
नहि खेवट करुआडि कमोने विधि पार उतरब पार॥

विद्यापति- एहि भवसागर थाह कतहु नहि भैरव धरु करुआर॥

कबीर- सत्य सुकृति करु नाव धैरज करुआरि धरु हे।
सखिआ हे शब्द सुरति करु मौज द्वार पर ठाढ़ रहु हे॥

विद्यापति- भनइ विद्यापति गुनमति नारि।
धैरज धए रहु मिलत मुरारि॥

कबीर- साहेब कबीर के मंगल हो शब्द परेखु टकसार।
बहुरि न एहि जग आएब हो फेरु न मनुष अवतार॥

विद्यापति- किअ भानुस पसु पाखि भए जनमिअ अथवा कीट पतङ्ग।
करम विपाक गतागत पुनु पुनु मति रहु तुअ परसङ्ग॥

कबीर- ई संसार संमर फल रुइआ उड़ि जाएत हे।

विद्यापति- कण्टक दरस परस भेल सजनी सीमर भेल परिनाम॥

कबीर- साहेब के उँची अटरिया तरे विषम बजार हो।
पाप पुन्न दोउ बनियाँ हीरालाल बिकाय हो॥

विद्यापति- ई संसार हाट कए मानह, सबओ लोक बनिजार।
जे जस बनिज लाभ तस पाबए, मूरुख मरहि गमार॥

कबीर- पाँच चोर बड़ जोर मुसल दिन राती हो।

विद्यापति- मुसए गेलहि धन, जागल परिजन
लगहि कलाओक चोरा॥

कबीर- पिआ कारण हम भए बाबरी
धएल जोगिनिआकें भेस हो।

विद्यापति- घरब जोगिनिआक भेस रे।
करब मञे पहुक उदेस रे॥

कबीर-	तिलएक डोली बिलमाए ।[२९४]
विद्यापति-	तुअ दरसन बिनु तिलाओ न रहई ॥[२९५]
कबीर-	कुञ्जभवन मोर नैहर साजन ॥[२९६]
विद्यापति-	कुञ्जभवन सञो निकसलि रे ॥[२९७]
कबीर-	मञे तोरा पूछूँ भैआ रे बटोहिया [२९८]
विद्यापति-	बाटरे बटोहिया कि तुहु मोरा भाई [२९९]
कबीर-	सतगुरु अंगना चन्दन-धन गछिआ [३००]
विद्यापति-	मोरा रे अँगनमा चनन केरि गछिआ [३०१]
कबीर-	आबि गेल बैरिन निन्द [३०२]
विद्यापति-	केहनि अभागलि बैरिनि रे भागलि मोर निन्द [३०३]
कबीर-	भिजि गेल पाँचो रंगबा साड़ी रे की [३०४]
विद्यापति-	छाडु कन्हैया मोर आँचर रे फाटत नव सारी ।[३०५]
कबीर-	गे माइ, सतगुरुं साहिब पाहुन अएला [३०६]
विद्यापति-	उपगत पाहोन रितुपति साह रे [३०७]
कबीर-	अम्बर चीर कराए हे [३०८]
विद्यापति-	आँचर चीर धरइ हसि हेरी [३०९]
कबीर-	खुलि गेल गगन केबाड़ [३१०]
विद्यापति-	माधवे आए कबाड़ उबेड़ल [३११]

इत्यादि

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ विद्यापतिक भाषाक तुलनाक दुइगोट पक्ष अछि-अभिव्यक्ति पक्ष ओ व्याकरणिक पक्ष । अभिव्यक्ति पक्षक अन्तर्गत दुहू कविक काव्यभाषा अबैत अछि, जाहि मे सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावलीक** रस-प्रवाह, अलंकार-योजना, छन्द-विधान, सन्दर्भ संयोजन, प्रतीकविधान ओ शैली मुख्यतः अबैत अछि जाहि मे अधिकतम तुलनाक बिन्दु निहित अछि । रस प्रवाहक दृष्टिञे विचार कयलासँ स्पष्ट होइछ जे दुनू महाकविक पदावली मे रसराज शृंगारक अभिव्यंजनाक संगहि अद्भुत ओ शान्त रसक अभिव्यंजना कँ प्रचुर अवसर भेटलैक अछि । महाकवि विद्यापति रसराज शृंगारक गायक होयबाक कारण एकर साङ्गोपांग ओ रसशास्त्रीय उपस्थापन अपन पदावली साहित्यक माध्यमे कयलनि अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे जीवात्मा ओ परमात्माक स्नेह ओ विरहकमाध्यमे रसराज शृंगारक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति अध्यात्मपरक भेल अछि । अद्भुत रसक अभिव्यंजना सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे गूढ़ योगसाधनापरक अभिव्यक्ति ओ उलटबाँसी मे देखि पड़ैछ । महाकवि विद्यापतिक पदावली मे किछु शैव पद शिवक स्वरूप मे अलौकिकता ओ हुनक पारिवारिक चित्र मे वैचित्र्यक सम्मिश्रणक चित्रण मे अद्भुत रसाभिव्यंजक दृष्टिकोण बुझना जाइछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीमे बहुधा निर्गुण ब्रह्म ओ योगसाधनाक अदृश्य ओ अलौकिक वस्तुक चित्रण मे अद्भुत रसक अभिव्यंजना भेल अछि । एहि पदावलीक सांसारिक निस्सारताक चित्र सँ सम्बद्ध पद तथा विरक्तिमार्गक निर्देशक समदाउनि ओ निर्गुण पद मे शान्त रसाभिव्यंजना भेल अछि । महाकवि विद्यापतिक भक्तिभावपूर्ण नचारी ओ महेशवाणी तथा कतिपय विष्णुपद ओ आंहि मे अभिव्यक्त भक्त हृदयक कातरताक चित्रण मे शान्त रसक अभिव्यंजना भेल अछि। एहि तरहें शृंगार, अद्भुत ओ शान्त रसक अभिव्यंजनाक दृष्टिञे दुहू महाकवि मे रस-प्रवाहक समरूपकता भेटैत अछि । तथापि महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे जतय लौकिक रतिभावक उद्दीपकता अछि ततहि सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक शृंगारभाव सर्वथा अध्यात्म सँ आवृत अछि । संगहि महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे रसराज शृंगारकँ जे विराट आयाम ओ शास्त्रीयता भेटलैक अछि, तकर सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीमे अभाव अछि ।

अलंकारयोजनाक दृष्टिञे सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापतिक पदावली** मे तुलना कयला सँ ई स्पष्ट होइछ जे उपमा, रूपक, अनुप्रास, पर्यायोक्ति, विभावना, उत्प्रेक्षा, अप्रस्तुतप्रशंसा, एकावली आदि अलंकारक दुहूठाम उपयोग भेल अछि, मुदा सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे एकर स्थिति सर्वथा स्वभावज अछि जखन कि शास्त्रीय दृष्टिबोधाक कारणें महाकवि विद्यापतिक अलंकार विधान कखनो आरोपितो लगय लगैत अछि । हिनक पदावली मे अलंकार विधानक प्राचुर्य देखि पड़ैछ जखन कि सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली मे से नहि अछि । साङ्गरूपकत्वक दृष्टिञे दुहू महाकवि विशिष्ट कहल जा सकैत छथि । दुहू महाकविक छन्द-प्रयोग मे अनेकठाम समानताक परिसर प्राप्त अछि ।

सन्दर्भ दृष्टिञे विचार कयला सँ ई स्पष्ट होइछ जे महाकवि विद्यापति सर्वत्र पौराणिक

सन्दर्भ पर सर्वथा अवलम्बित भलाह अछि, जखन कि सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली में प्रचुर पौराणिक परिवेशक अवसरक अछैतो बहुधा आध्यात्मिक सन्दर्भक उपयोग भेल अछि ।

प्रतीकविधान सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ महाकवि **विद्यापतिक पदावली** दुहूक अन्यतम विशेषता अछि । दुहू पदावली मे संख्यावाची ओ पारिवारिक तथा प्राकृतिक प्रतीकक बाहुल्य अछि । संख्यावाची, पारिवारिक वा प्राकृतिक प्रतीकक माध्यमे सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली बहुधा योगसाधना ओ अध्यात्मतत्वक शिक्षा कबीरक अभीष्ट देखि पड़ैछ । योगसाधनात्मक प्रतीकक प्रयोग मे तँ से उद्देश्य निहित भेटिते अछि । महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे योगसाधनात्मक प्रतीकक सर्वथा अभाव अछि । हिनक संख्यावाची प्रतीकक प्रयोग सामान्यतः तद्स्थानीय व्यंजन वर्णसमूहक वर्णविशेष कँ अभिव्यक्त कय दृश्यकूट पदक सर्जना ओ मानसिक-क्रीड़ा कहल जा सकैछ । पारिवारिक ओ प्राकृतिक प्रतीक मे कोहबर, विआह, भँवर कमल आदि हिनक पदावली मे सर्वत्र सौन्दर्य-साधना ओ लौकिक रसपिपासाक शान्त्यर्थ चित्रित भेल अछि । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भ्रमर, कमल, हंस आदि जीव, षट्चक्र ब्रह्मरन्ध्र आदिक प्रतीकार्थ निविष्ट अछि । कहल जा सकैछ जे कबीरक प्रतीक साधानापक्षीय ओ लौकिक जगतसँ तथा विद्यापतिक लोकजगत ओ प्रकृतिजगत सँ गृहीत अछि। तथापि सन्त कबीर मे प्रतीकक जे बाहुल्य आ वैविध्य अछि तकर विद्यापति मे अभाव अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ **विद्यापति पदावली** दुहू मे मिथिलाक लोकशैलीक गीतिमयताक विधान भेल अछि । दुहू महाकविक काव्य मे सोहर, वसन्त, चैतावर, घाँटो, झुम्मरि,लगनी,चाँचर, कोहबर आदि गीति प्रकारक प्रयोग भेल अछि जे सिद्ध करैछ जे दुहू लोकजीवन सँ पर्याप्त संजीवनी रस ग्रहण करैत रहलाह ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली ओ महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे अभिव्यक्त विचारधारा पर विचार कयला सन्ताँ ई स्पष्ट अछि जे विचारधारोक साम्य दुहू पदावली मे अछि । सन्त कबीर के निर्गुण सन्तपनम्परा ओ रहस्यवादक जनक मानल जाइत छनि । अनेक विद्वान महाकवि **विद्यापतिक पदावली**क आधार पर हिनको रहस्यवादी कवि सिद्ध कयलनि अछि। निर्गुण ब्रह्मोपासक सन्तकबीर माधुर्य भावनाक चित्रण कयलनि अछि, जकर निरूपण सगुण ब्रह्मोपासक **विद्यापतिक पदावली** मे प्रतीक रूपें ग्रहण कयला पर भेल कहल जा सकैछ । दुनू पदावली मे रहस्यवादक अनुरूप जीव ओ परमात्माक विरहकातरता, मिलन ओ सिद्धावस्थाक चित्रण भेटैत अछि ।

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे सन्त कबीरक कतोक उलटबाँसी भेटैत अछि जे अपन रचना प्रक्रियामे लोकजगत सँ उलटा कथन-शैली, गूढ़ार्थ बुझबाक चुनौती-पूर्ण सम्बोधन आदिक कारणें अत्यन्त प्रसिद्ध अछि । महाकवि विद्यापतिक पदावली मे एहन उलटबाँसी तँ नहि भेटैछ, तथापि हिनक किछु दृश्यकूट मे गूढ़ार्थ-प्रयोग हेतु शब्दजालक जटिलता

तथा अर्थनिर्वचनकार हेतु चुनौतीपूर्ण सम्बोधन समरूपक भेटैछ । दुहू महाकविक मौतासँ सम्बद्ध दृश्यकूट हिनका दुहूक साम्यबोध कँ आर अधिक स्पष्ट करैछ । महाकवि विद्यापतिक दृश्यकूट मे अर्थनिर्वचनक हेतु यद्यपि मानसिक श्रमक आवश्यकता पड़ैछ ठीक मुदा सन्त कबीरक उलटबाँसी जकाँ एहि हेतु गंभीर साम्प्रदायिक ज्ञानक आवश्यकता नहि होइछ ।

भणिता प्रयोगक दृष्टिऍ सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली ओ महाकवि **विद्यापति पदावली** दुहू मे पर्याप्त साम्य अछि, कारण दुहूक पदान्त मे भणिताक प्रयोग भेल अछि । महाकवि **विद्यापतिक पदावली** मे प्रयुक्त भणिता सँ विद्यापतिक काल, आश्रयदाता आदिक निर्धारण मे पर्याप्त सहायता भेटल अछि, तहिना सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक भणिता सन्त कबीरक विशुद्ध पदावली ओ संक्रमित पदावलीक निर्णय करयवा मे सर्वथा उपयोगी भेल अछि ।

कहल जा सकैछ जे निर्गुण ब्रह्मक उपासक सन्तकबीरक भाषा मे गूढ़ार्थ प्रयोगक बाहुल्य अछि । लोकजगत ओ आध्यात्मिक तथा साधनापक्षक अद्भुत सम्मिश्रण सँ हिनक काव्यभाषा अनेक स्थल मे अत्यन्त असामान्य भए गेल अछि जखन कि महाकवि विद्यापतिक काव्यभाषा शास्त्रीय प्रकृतिक सौष्ठव सँ युक्त अछि ।

दुनू महाकविक भाषाक तुलनाक दोसर आधार अछि व्याकरणिक स्वरूपक तुलना । एहि दृष्टिऍ देखला उत्तर स्पष्ट होइछ जे दुनू महाकविक पदावली मे मौलिक अन्तरक अछैतो समानतापरक अनेक विन्दु भेटैत अछि जेना-दुनू महाकवि संज्ञाक तीन रूप लघु, गुरु ओ गुरुतमक प्रयोग पदावली साहित्य मे कयलनि अछि । विद्यापतिक प्रयोग सन्त कबीरक प्रयोग सँ यद्यपि अल्प अछि तथापि एहू पदावली मे कोनो शब्दक तीनू स्वरूप आ कखनो कोनो शब्दक मात्र दुइएटा स्वरूपक प्रयोग भेल अछि । कोनो कोनो शब्दक लघु, गुरु वा गुरुतम मे कोनो एकोटा प्रयोग देखल जा सकैछ । सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे गुरुतम प्रयोगक बाहुल्य अछि । संज्ञाक गुरुतम स्वरूपक निर्माण मे बहुधा 'बा' ओइआ' प्रत्ययक प्रयोग भेल अछि, मुदा सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे 'मा' प्रत्ययक प्रयोग देखि पड़ैछ।

दुनू पदावली मे किछु विभक्ति-प्रयोग, सर्वनाम शब्द, विशेषण ओ क्रियारूप मे सेहो अनेकठाम समरूपकता देखि पड़ैछ तथा शब्द साधनपरक किछु प्रत्यय सेहो समाने बुझना जाइछ ।

एकर अतिरिक्त सन्त कबीर भणित मैथिली पदावली मे भाव ओ अर्थक साम्य सँ युक्त किछु पद सेहो दुनू पदावलीक हेतु विशिष्ट तुलनात्मक आधार प्रस्तुत करैछ ।

एतावता सन्तकबीर भणित मैथिली पदावली सँ **विद्यापति पदावली**क तुलना कएला उत्तर दुहूक अभिव्यक्ति पक्ष ओ व्याकरणिक पक्ष मे बहुतो स्थल मे समानता दृष्टिगोचर होइछ।

सन्दर्भ संकेत

१. डॉ० रामकुमार वर्मा-**कबीर एक अनुशीलन**, साहित्य भवन (प्रा०) लि०, इलाहाबाद, १९८३ ई०, पृ-५० ।

२. डॉ० दुर्गानाथ झा ''श्रीश''-**मैथिली साहित्यक इतिहास**, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, १९८९ ई०, पृ०-३६-३७ ।

३. [illegible] का सम्पादक **विद्यापति गीतावली** मैथिली अकादमी पटना [illegible] पद सं० [illegible]
४. **धनीधर्मदास की शब्दावली** भाग १, बेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद [illegible] शब्द [illegible] पृ० [illegible]
५. डॉ० [illegible] झा **मैथिली शैव साहित्य**, मैथिली अकादमी पटना [illegible] पृ० [illegible]
६. [illegible] **कबीर भजनमाला**, मुक्त विचार संगठन सीतामढ़ी [illegible] जिला मधुबनी संवत २०३८ भाग २ पृ०-३
७. रामदेवदास सँ प्राप्त सत्यादर्शन ।
८. **कबीर साहेब की शब्दावली** भाग २, बेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स इलाहाबाद १९२२ ई० शब्द-६, पृ० २९ ।
९. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-६३८ ।
१०. तत्रैव पद सं०-६३६ ।
११. तत्रैव, पद सं०- ५८८ ।
१२. तत्रैव, पद सं०- ६६५ ।
१३. तत्रैव, पद सं०- ६३९ ।
१४. तत्रैव, पद सं०- ४२४ ।
१५. तत्रैव, पद सं०- ३०६ ।
१६. तत्रैव, पद सं०- ५९४ ।
१७. तत्रैव, संख्या- ३३० ।
१८. सुरेन्द्र झा "सुमन" - सम्पादक- **गोविन्द गीतांजलि**, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, १९८० ई० पद संख्या - २९२ ।
१९. सोनेलालदास-पाण्डुलिपिकार-**आदि सन्देशा सन्त कबीर** (हस्तलिखित ग्रन्थ) गुरु महात्मा साहेब, मौजे खवासपुर, जिला-आरा, १९२७ ई० बचन-१७, साहर-१०५, पृ०-३५६ ।
२०. देखू क्र० सं०-३, पद सं० - ४८८ ।
२१. देखू, क्र० सं०-१९, साहर-१०८ पृ० सं०-१२० ।
२२. देखू, क्र० सं०- २ पृ०-६१ ।
२३. देखू, क्र० सं०- ३, पद सं०-६१ ।
२४. तत्रैव, पद सं०- ४५ ।
२५. तत्रैव, पद सं०- ६१ ।
२६. तत्रैव, पद सं०- ६९ ।
२७. अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" सम्पादक-**कबीर वचनावली**, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत २००८, पद-२०६, पृ०-२६६ ।
२८. देखू, क्र० सं०-३, पद संख्या- ६६५ ।

२९. देखू क्र० सं० ४ [illegible] पृ० [illegible]
३०. देखू क्र० सं० ३ पद सं० [illegible]
३१. देखू क्र० सं० ४ [illegible] पृ० [illegible]
३२. देखू क्र० सं० ३ पद संख्या [illegible]
३३. डॉ० [illegible] सम्पादक **कबीर ग्रंथावली** [illegible] २०३४ वि० पद [illegible] पृ० [illegible]
३४. देखू क्र० सं० ३ पद सं० [illegible]
३५. [illegible] संग्रहकर्ता-**[illegible] कबीर वचन संग्रह** [illegible] पृ० ३५ ।
३६. देखू, क्र० सं०-३ पद सं०-[illegible] ।
३७. [illegible] सँ प्राप्त [illegible]
३८. देखू, क्र० सं०-३ पद सं० [illegible] ।
३९. देखू, क्र० सं०-१९ बचन-१७, [illegible] पृ० [illegible]
४०. [illegible] शास्त्री सम्पादक **बीजक**, [illegible] वाराणसी, १९८२ ई० [illegible] पृ०-३३५ "[illegible]"
४१. तत्रैव "[illegible]"
४२. देखू, क्र० सं०-१९, बचन-१७ [illegible] पृ० [illegible] ।
४३. तत्रैव, [illegible]-१२८, पृ०-३६७ ।
४४. देखू, क्र० सं०-३, पद सं० १२३ ।
४५. तत्रैव, पद सं०-४९४ ।
४६. तत्रैव, पद सं०-२७४ ।
४७. तत्रैव.
४८. देखू- १९, बचन-१७, [illegible]-१२८, पृ०-३६७ ।
४९. देखू-क्र० सं०-३, पद सं०-७७ ।
५०. तत्रैव पद सं०-५७८ ।
५१. देखू-क्र० सं०-५, पृ०-८३ ।
५२. देखू-क्र० सं०-३, पद सं० ३५२ ।
५३. [illegible] शर्मा-**कबीर साहित्य और सिद्धान्त**, [illegible] १९८० ई०, पृ० ५२-५३।
५४. युगलानन्द बिहारी-**ज्ञानस्थित बोध**, [illegible] प्रेस, बम्बई, १९८१ ई०, साखी-११५, पृ० १६६।
५५. बच्चेलाल दास-**पारखमूल** (एकोत्तरग्रन्थ) श्री [illegible] पुस्तकालय, [illegible] शब्द, पृ० १४।
५६. तत्रैव ।

५७. देखु क्र० सं० ३५ मंगल-१ पृ०-२२ ।
५८. देखु-क्र० सं० ३ पद सं०-४४० ।
५९. देखु क्र० सं०-१९, बचन ६, मंगल-३७ पृ०-७८
६०. तत्रैव, मंगल-३९, पृ०-७९ ।
६१. देखु-क्र० सं०-३, पद सं०-६३४ ।
६२. देखु-क्र० सं० २, पृ०-५३ ।
६३. देखु क्र० सं० ५, पृ० ८२-८३ ।
६४. डॉ० विश्वेश्वर मिश्र-**महाकवि विद्यापति**, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, १९७० ई०, पृ०-४९ ।
६५. रामवृक्ष बेनीपुरी-सम्पादक, **विद्यापति की पदावली**, पुस्तक भण्डार, पटना, पद सं० २६३ ।
६६. देखु-क्र० सं०-२, पृ० २२६ ।
६७. डॉ० इन्द्रकान्त झा, सम्पादक, **मैथिली व्यवहार गीत संग्रह**, कमल प्रकाशन, पटना ४, १९८७ ई०, पद सं०-६०२ ।
६८. देखु-क्र० सं०-१९, बचन-१७, साहर-१०५, पृ०-३५६।
६९. देखु-क्र० सं०-३, पद सं०-३१७ ।
७०. तत्रैव, पद सं०-५४१ ।
७१. बालगोविन्द झा 'व्यथित' :- **मैथिली ग्राम गीत** ,मिथिलाचंल प्रकाशन, दरभंगा, १९८१ ई०, पृ०-१४४ ।
७२. देखु-क्र० सं०-६, बसन्त-३, पृ०-५२ ।
७३. देखु-क्र० सं०-७१, पद सं०-३८५ ।
७४. रामनाथ झा-सम्पादक **मैथिली प्रचीन गीत**, अनन्त प्रकाशन, दरभंगा, १९६८ ई० पद सं०-३६,३९,४० ।
७५. विवेक दास **कबीर साहब**, सं० कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, कबीर चौरा मठ, वाराणसी १९७८ ई०, पृ०-९३ ।
७६. कामेश्वरी देवी-**मिथिला संस्कार गीत**, मैथिली अकादमी, पटना, १९८० ई०, पृ०-१९८।
७७. देखु, क्र० सं०-५, पृ०-७१ ।
७८. रमानाथ झा - **निबन्धमाला**, दरभंगा प्रेस कम्पनी लि०, दरभंगा, १९६३ ई०, पृ० ५६।
७९. देखु क्र० सं०-१९, बचन-३९, चैंइत-९९, पृ०,७६७
८०. देखु क्र० सं०-७१, गीत सं०-४३२ ।
८१. देखु क्र० सं०-१९, घाँटो-१०२, पृ०-७६८ ।
८२. डॉ० शशिनाथ झा सम्पादक-**मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह**, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, १८०८ शाके १९८६ ई० पृ०-१३९ ।
८३. देखु क्र० सं०-६ झुम्मरि ९, पृ०-२६ ।

८४. देखु क्र० सं० ३ पद सं० [illegible]
८५. तत्रैव पद सं० [illegible]
८६. तत्रैव पद सं० [illegible]
८७. देखु क्र० सं० ३० जतसारी २ पृ० [illegible]
८८. देखु क्र० सं०-३ पद सं० [illegible]
८९. डॉ० रामदेव झा सम्पादक **मैथिली प्राचीन गीतावली** [illegible] पृ० १०३
९०. विभूति आनन्द [illegible] पटना १९८६ ई० गीत सं० [illegible]
९१. देखु क्र० सं०-७५, पृ० ९३ ।
९२. देखु क्र० सं०-४०, पृ०-३४२-३४३ ।
९३. रामइकबाल सिंह "राकेश" **मैथिली लोकगीत** [illegible] संवत-२०१२ पृ०-३२४ ।
९४. तत्रैव, पृ०-३२४ ।
९५. राजेश्वर झा **मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य** [illegible] १९७७ ई० पृ० १८४-१८५ ।
९६. देखु-१९, बचन-६, मंगल-३३, पृ०-७६ ।
९७. देखु क्र० सं०-६७, पद सं० २८५ ।
९८. देखु क्र० सं०-६५, पद सं० १९५ ।
९९. देखु क्र० सं०-३, पद सं० ७३ ।
१००. देखु क्र० सं० १९, मंगल-२१,पृ०-६९
१०१. देखु क्र० सं०-७१, पद सं०-६७८ ।
१०२. देखु क्र० सं०-९३, पृ०-२३४ ।
१०३. श्री बौआ साहेब, संकलक-**भजनावली** भाग १ कबीर [illegible] मंगल-२, पृ०-२ ।
१०४. देखु क्र० सं०-३, पद सं०-५६९ ।
१०५. देखु क्र० सं०-७६, पद सं०-३८९ ।
१०६. देखु क्र० सं०-१९, बचन-१६, शब्द २, पृ० २२० ।
१०७. देखु क्र० सं०-७६, पद सं०-७३ ।
१०८. देखु क्र० सं०-३३, पद,-१३६, पृ०-३०३ ।
१०९. देखु क्र० सं०-९३, पृ० सं०-१९० ।
११०. देखु क्र० सं०-६, समदाउनि प्रकरण-१ पृ० ६१ ।
१११. जलेश्वर दास सँ प्राप्त निर्गुण भजन ।
११२. देखु क्र० सं०-७१, पद सं०-६५२ ।

११३. तत्रैव, गीत सं०-६५६ ।
११४. देखू क्र० सं०-६, समदाउनि प्रकरण-४, पृ०-६३ ।
११५. देखू क्र० सं०-१९, समदाउनि-४१, पृ०-८० ।
११६. डॉ० लक्ष्मीदत् बी० पंडित, लेखक, **संत कबीर**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण १९६६ ई०, पृ०-२२७ ।
११७. तत्रैव, पृ०-२२७-२२८ ।
११८. देखू क्र० सं० ७५, पृ० १६-१७ ।
११९. तत्रैव, पृ०-१७ ।
१२०. देखू क्र० सं०-११६, पृ०-२२७ ।
१२१. तत्रैव, पृ०-२२५ ।
१२२. जलेश्वरदास सँ प्राप्त मंगलपद ।
१२३. देखू क्र० सं०-१९, वचन, ६, मंगल-३१, पृ-७५ ।
१२४. देखू क्र० सं०-६, मंगल, १४, पृ०-४३ ।
१२५. डॉ० जी० ए० ग्रियर्सन-**इन्ट्रोडक्शन टू ए क्रेस्टोमेथी ऑफ द मैथिली लैंगवज,** जर्नल ऑफ रायल एशिएटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, इक्सट्रा न० पार्ट-I,१८८० ई० पृ० -३६।
१२६. म० म० हरप्रसादशास्त्री, सम्पादक-**कीर्त्तिलता,** कलकत्ता प्रस्तावन १९२४ ।
१२७. डॉ जी० ए० गियर्सन, **टूवेनटीवन वैष्णव हीम्स** जर्नल आफ रॉयल आफ रायल एशिएटिकक सोसाइटी आफ बंगाल, इक्सट्रा न०पार्ट -१, १८८० ई० पृ०-१३३ ।
१२८. प० शिवनन्दन ठाकुर, संम्पादक-**महाकवि विद्यापति** मैथिली अकादमी श्रीकृष्णापुरी पटना-१,१९७९ ई० पृ०-६५ ।
१२९. तत्रैव, पृ०-१३६-१३८ ।
१३०. डॉ० सुभद्र झा सम्पादक-**साँग्स ऑफ विद्यापति** मोतीलाल बनारसीदास, बनारस, १९५४ ई०, पृ० ६५ ।
१३१. तत्रैव, पृ०-७३-७४ ।
१३२. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-४७६ ।
१३३. तत्रैव, पृ० सं०-५६६ ।
१३४. तत्रैव पृ० -२१७ ।
१३५. तत्रैव पद सं०-५२४ ।
१३६. तत्रैव पद सं०-५९९ ।
१३७. तत्रैव पद सं०-१५१ ।
१३८. तत्रैव पद सं०-१४३ ।
१३९. तत्रैव पद सं०-१४४ ।
१४०. देखू क्र० सं०-६, **पृ०-६०**

१४१. तत्रैव, मंगल-१४, पृ०-४३
१४२. देखू क्र० सं०-३५, जतसारी-२, पृ०-११४ ।
१४३. देखू क्र० सं०-६, जतसार-३, पृ०-१३ ।
१४४. देखू क्र० सं०-१९, वचन-६, मंगल-२९, पृ०-७४ ।
१४५. देखू क्र० सं०-३, पद सं० -६१६ ।
१४६. तत्रैव, पद सं०-६१५ ।
१४७. तत्रैव, पद सं० ६०९ ।
१४८. तत्रैव, पद सं०-६१४ ।
१४९. तत्रैव, पद सं०-६१७ ।
१५०. तत्रैव, पद सं०-६१८ ।
१५१. देखू क्र० सं०-१३०, पद सं०-९७ ।
१५२. तत्रैव, पद सं० २२५ ।
१५३. देखू क्र० सं०- ३, पद सं०-६१९ ।
१५४. तत्रैव, पद सं०-६९९ ।
१५५. तत्रैव, पद सं०-६१३
१५६. सुजनजी सँ प्राप्त पद ।
१५७. देखू क्र० सं०- १९, वचन-५ शब्द-३, पृ०-४८ ।
१५८. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-६८५ ।
१५९. तत्रैव, पद सं०-६१३ ।
१६०. तत्रैव पद सं०-६१४,६१८,६१९ ।
१६१. डॉ० दिनेश कुमार झा, **मैथिली साहित्यक आलोचानात्मक इतिहास**, मैथिली एकदमी, पटना, १९७९ ई०, पृ०-५२ ।
१६२. देखू क्र० सं०-३, पद स०-६०१ ।
१६३. देखू क्र० सं०-२, पृ०-५२ ।
१६४. डॉ० बाबूराम सक्सेना-सम्पादक **कीर्तिलता** नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सम्वत २०३२, द्वितीय पल्लव ।
१६५. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-१६५ ।
१६६. देखू क्र० सं०-१०३, पृ०-२
१६७. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-२८१
१६८. देखू क्र० सं०-६, भजन जतसार-१, पृ०-१२
१६९. देखू क्र० सं०-३, पद सं० १८५ ।
१७०. देखू क्र० सं०-६, जतसार-६, पृ०-१६ ।
१७१. देखू क्र० सं०-३, पद सं० ४४५
१७२. देखू क्र० सं०-१९, वचन-६, सोहर-१११, पृ०-७५

१७३. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-६०५ ।
१७४. देखू क्र० सं०-१९, वचन-६, सोहर-१११, पृ०-१२१
१७५. तत्रैव, घाँटो-१०२, पृ०-७६८ ।
१७६. तत्रैव, वचन -३१, पृ०-६५५
१७७. देखू क्र० सं०-६, झुम्मरि-१-पृ०-२७ ।
१७८. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-३४५ ।
१७९. तत्रैव, पद सं०-५६५ ।
१८०. तत्रैव, पद सं०-५७८ ।
१८१. तत्रैव, पद सं०-२८० ।
१८२. तत्रैव, पद सं०-३८ ।
१८३. तत्रैव, पद सं०-२२४ ।
१८४. तत्रैव, पद सं०-१७० ।
१८५. देखू क्र० सं०-१९, वचन-६, मंगल-३१, पृ०-७५ ।
१८६. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-३७० ।
१८७. तत्रैव, पद सं०-२४९ ।
१८८. तत्रैव, पद सं०-१७५ ।
१८९. तत्रैव, पद सं०-२२२ ।
१९०. तत्रैव, पद सं०-१९१ ।
१९१. देखू क्र० सं०-१९, पृ०-७९ ।
१९२. देखू क्र० सं०-६, मंगल-३, पृ०-३० ।
१९३. रामदेव दास सँ प्राप्त लगनी ।
१९४. तत्रैव, समदाउनि
१९५. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-३३६
१९६. तत्रैव, पद सं०-३४५ ।
१९७. तत्रैव, पद सं०-३४६ ।
१९८. देखू क्र० सं०-६५, पद सं०-२६३ ।
१९९. तत्रैव, पद सं०-१९४ ।
२००. देखू क्र० सं०-१०३, मंगल-३०, पृ०-३० ।
२०१. तत्रैव, मंगल-२८, पृ०-२९ ।
२०२. देखू क्र०सं०–३३, पृ०–२६९ ।
२०३. गंगाशरण शास्त्री सं०– **कबीर शब्दावली,** कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, वाराणसी, कबीर चौरामठ-१९७६ ई०, जतसारी-१, पृ०-९८ ।
२०४. देखू क्र० सं०-३, पद संख्या-७०६ ।
२०५. देखू क्र० सं०-१९, वचन-६, मंगल-५६, पृ०-९२ ।
२०६. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-४६३ ।

२०७. तत्रैव, पद सं०-४७६ ।
२०८. तत्रैव, पद सं०-४६६ ।
२०९. तत्रैव, पद सं०-३९४ ।
२१०. देखू क्र० सं०-१९, वचन.-६, मंगल-५६, पृ०-९२
२११. देखू क्र० सं०-६, मंगल-३, पृ०-३१ ।
२१२. तत्रैव, मंगल-२, पृ०-३० ।
२१३. देखू क्र० सं०-३, पद सं०-२७४ ।
२१४. तत्रैव, पद सं०-७० ।
२१५. देखू, क्र० सं०-६५, पद सं०-२४९
२१६. देखू, क्र० सं०-१९, वचन-१, मंगल-८, पृ०-८
२१७. देखू, क्र० सं०-३५, मंगल-१, पृ०-२२ ।
२१८. देखू, क्र० सं०-६, मंगल-३, पृ०-३० ।
२१९. देखू, क्र० सं०-१९, वचन-६, मंगल-३७, पृ०-७८ ।
२२०. देखू, क्र० सं०-१०३, मंगल-२८, पृ०-२९ ।
२२१. देखू, क्र० सं०-६, भजन मंगल-१, पृ०-२९ ।
२२२. देखू, क्र० सं०-१९, वचन-६ मंगल-३७, पृ०–७८ ।
२२३. देखू, क्र० सं०-३, पद सं०-३५ ।
२२४. तत्रैव, पद सं०-२०७ ।
२२५. तत्रैव, पद सं०-६०१ ।
२२६. तत्रैव, पद सं०-१३५ ।
२२७. तत्रैव, पद सं०-१६० ।
२२८. तत्रैव, पद सं०-१३२ ।
२२९. तत्रैव, पद सं०-६३८ ।
२३०. तत्रैव, पद सं०-३ ।
२३१. देखू, क्र० सं०-१९, वचन-२, मंगल-५६, पृ०-९२ ।
२३२. तत्रैव, वचन-१, मंगल-८, पृ०-८
२३३. तत्रैव ।
२३४. देखू, क्र० सं०-३५, पृ०-२३ ।
२३५. देखू, क्र० सं०-३, पद सं०-८१ ।
२३६. तत्रैव, पद सं०-१३५ ।
२३७. तत्रैव, पद सं०-८१ ।
२३८. तत्रैव, पद सं०-७०२ ।
२३९. देखू, क्र० सं०-१९, वचन-१, मंगल-८, पृ०-८ ।
२४०. देखू, क्र० सं०-३५, मंगल-२, पृ०-२३ ।
२४१. देखू, क्र० सं०-१०३, मंगल-२, पृ०-२ ।
२४२. देखू, क्र० सं०-६, निर्गुण भजन-३, पृ०-२० ।

२४३. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-४८५ ।
२४४. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-५, मंगल-५६, पृ०-१२१ ।
२४५. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-५०९ ।
२४६. देखु, क्र० सं०-३५, पृ०-२३ ।
२४७. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-७०४ ।
२४८. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-६, मंगल-२१, पृ०-६९
२४९. देखु, क्र० सं०-३, पद सं० ३०९ ।
२५०. देखु, क्र० सं० २०३, जलसार, पृ० ९४ ।
२५१. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-६७५ ।
२५२. देखु, क्र० सं०-६, मंगल-१४, पृ०-४३ ।
२५३. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-६७२ ।
२५४. तत्रैव, पद सं०-१७२ ।
२५५. देखु, क्र० सं०-१९, पृ०-८० समदाउनि -४१ ।
२५६. तत्रैव, जतसार, १४०, पृ०-३७४ ।
२५७. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-१३८ ।
२५८. तत्रैव, पद सं०-६२० ।
२५९. तत्रैव, पद सं०-५९० ।
२६०. तत्रैव, पद सं०-२३१ ।
२६१. तत्रैव, पद सं०-२०६ ।
२६२. देखु, क्र० सं०-३५, पृ०-२३ ।
२६३. जलेश्वर दास सँ प्राप्त मंगल ।
२६४. देखु, क्र० सं०-६, मंगल-३, पृ०-३१ ।
२६५. देखु, क्र० सं०-७१, पद सं०-५३६ ।
२६६. कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर-**वर्ण रत्नाकर**, रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल,१ पार्क सट्रीट, कलकत्ता, १९४० ई०, पृ०-५ ।
२६७. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-२१३ ।
२६८. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-१७, सोहर-१०६ पृ०-३५७ ।
२६९. तत्रैव, वचन-६, सोहर-१०७, पृ०-११९ ।
२७०. तत्रैव, वचन-६, दोहल-५१, पृ०-८७ ।
२७१. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-५९ ।
२७२. देखु, क्र० सं०-६५, पद सं०-१४३ ।
२७३. देखु, क्र० सं०-६, मंगल-३ पृ०-३० ।
२७४. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-१७३ ।
२७५. देखु, क्र० सं०-६, भजन मंगल-१, पृ०-१९ ।
२७६. जीवछ दास सँ प्राप्त पद ।

२७७. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-६३७ ।
२७८. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-६, लगनी-३१, पृ०-[illegible] ।
२७९. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-४७६ ।
२८०. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-२३, सोहर-[illegible], पृ०-[illegible] ।
२८१. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-३७ ।
२८२. [illegible] दास सँ प्राप्त सोहर ।
२८३. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-६६६ ।
२८४. देखु, क्र० सं०-१०३, मंगल-२१, पृ०-२२ ।
२८५. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-६४० ।
२८६. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-१६, सोहर-१०६, पृ०-३५७ ।
२८७. देखु, क्र०सं०-३, पद सं०-६९९ ।
२८८. देखु, क्र० सं०-४, सोहर-१, पृ०-५५ ।
२८९. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-६३४ ।
२९०. देखु, क्र० सं० -१९, वचन-१७, सोहर-१०५, पृ०-३५६ ।
२९१. देखु क्र० सं०-३, पद सं०-३५४ ।
२९२. देखु, क्र० सं०-४, शब्द-८, पृ०-१२ ।
२९३. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-४७६ ।
२९४. देखु, क्र० सं०-१९, पृ०-८० ।
२९५. देखु, क्र० सं० ३, प० सं०-२०९ ।
२९६. देखु, क्र० सं०-१०३, मंगल २८, पृ०-२९ ।
२९७. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-१८७ ।
२९८. देखु, क्र० सं०- १०३, मंगल-२८, पृ०-२९ ।
२९९. देखु, क्र० सं०-६५, पद सं०-२६३ ।
३००. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-६, मंगल-३१, पृ०-[illegible]
३०१. देखु, क्र० सं०-६५, पद सं०-२२२ ।
३०२. देखु, क्र० सं०-६, सोहर-६, पृ०-६० ।
३०३. देखु, क्र० सं०-६५, पद स-२२१ ।
३०४. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-१, लगनी-१३४, पृ०-[illegible] ।
३०५. देखु, क्र० सं०-६५, पद सं०-५९।
३०६. देखु, क्र० सं०-३५, मंगल-१, पृ०-२२ ।
३०७. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-३३५ ।
३०८. देखु, क्र० सं०-१०३, मंगल-२९, पृ०-३० ।
३०९. देखु, क्र० सं०-३, पद सं०-१०६ ।
३१०. देखु, क्र० सं०-१९, वचन-१०, लगनी-१३९, पृ०-[illegible] ।
३११. देखु, क्र० सं०-३ पद सं०-४३१ ।



परिशिष्ट 'क'

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक सूची

(एतय पुस्तकक पूर्व अध्याय सभ मे अपन सम्पूर्ण रूप मे प्रयुक्त सन्त कबीर भणित मैथिली पदक प्रथम चरण अक्षरानुक्रम मेँ सूचीबद्ध अछि ।)

	पदक प्रथम चरण		अध्याय	पृष्ठ
१.	अइसन निरमोहिया से जोड़ल पिरितिया	–	६	१९६
२.	अगिआ लगोलें तू नैहरवा	–	३	९३
३.	अजब नगर के कोठरिया	–	६	१८२
४.	अब कँह चलहु अकेला मीता	–	३	८०
५.	अब हम भेलि बहुरि जल मीना	–	१	२३
६.	आजु सुदिन शुभ शुभ घड़ी	–	१	२४
७.	आव मोरा भइले विआह	–	३	९०
८.	एक मास दुइ मासा भेल	–	६	१९४
९.	एकहि बूँद सँ सिरजल देहिया	–	३	९४
१०.	एलौं मे बालापन आब भेलौं	–	३	९२
११.	एहि परदेसिया जनु जोड़ु	–	४	११९
१२.	एहि भवसागर नैहर हो	–	६	१९१
१३.	कोने ठगवा नगरिया लूटल हो	–	४	१०१
१४.	करबो मे गुरू से अरजिया	–	३	८८
१५.	कुञ्ज भवन मोर नैहर साजन	–	३	८७
१६.	खेलइत छलौं हम सुपती मउनियाँ	–	३	८७
१७.	गगनघटा घहरानी	–	३	८४
१८.	घूमत-फिरत अइली ऐसी नगरिआ	–	४	११८
१९.	चढ़लहु हमे कनक पहाड़	–	४	९८
२०.	चढु मन गगन अटरिया हो	–	४	११९
२१.	चलु चलु जिअरा भला ओहि	–	६	१८३
२२.	चार दिन अपन नओबति	–	६	१६०
२३.	चुअए अमीरस भरतताल	–	६	२०८
२४.	जकर अँगना जम्हीरिया	–	४	१०२
२५.	जननी के जागल जननी	–	६	२०७
२६.	तेजु तेजु भवरा कमल केर आस	–	६	१७९
२७.	दिअरा बारू सखि दुलहनिआ	–	३	९३

परिशिष्ट 'ख'

सन्त कबीर भणित मैथिली पदावलीक संग्रह

मंगल १.

अजर के बटिआ सोहाओन हो, अजर परेखिअ घर जाए ।
दूर देश केर जिअरा हो, कोआघर रहल भुलाए ।
छाडहुँ हंसा तुअ यमपुर हो, लेहु मुक्ति केर पान ।
यम केर देसिआ छोड़ाबहु हो, जितह यम केर मएदान ।
काल कठिन दुर्ग दारुन हो, सेओ रहल घट घेड़ि ।
यमके देसिआ छोड़ाबहु हो, उतरहु भवजल पार ।
काम क्रोध मद तेआगहु हो, तेजहु भरम-बेवहार ।
इ सभ जीव के कारण हो, जीव राखल भरमाए ।
आसा देखु तमासा हो संशय लागल साथ ।
पकड़ि पकड़ि यम झोड़त हो, जीव के देइत संताप ।
निरगुण हम नहि देखल हो, शशि रहल कुम्हलाए ।
सकल मनोरथ पूरल हो, जीव के भेल उबार ।
साहेब कबीर के मङ्गल हो, सन्तोजन करहु विचार ।
बहुड़ि न एहि जग आएब हो, फेरु न देखब संसार ।।१।।

२.

अन्नपानी नहि पावइ दिन-दिन परम आनन्द ।
नारि-पुरुष मनझंखही मनमह बाढ़ए दुन्द ।
तेहि अवसर महादेव जाइत रहए कैलाश ।
नीमा पगु धएने पुछहिँ पुरबह मन की आस ।
तें नीमा बड़भागिनी अगले जन्म तप कैल ।
पछिली प्रीति के कारने प्रभु तोहि दरसन देल ।
जोलहा चित्त अतिव्याकुल रामानन्द पह गेल ।
स्वामी बालक पाबि कए अन्न पानि नहि खाए ।

रामानन्द तब ध्यान धरि नीक वचन सुनाए ।
सात दिवस के बाछिया बालक वृष्टि कराए ।
तत्खन ताकर थन चलु ताहि खबाओ गाए ।
दयावन्त प्रभु भए मन से प्रभु भोग लगाए ।
चलु घर बाछी पकड़ि बालक वृष्टि कराए ।
तत्खन ताकर घर चलु काशी अचरज आए ।
धर्मदास बर पाओल सुख बिलसुअ संसार ।
नाना-बरन सोहाओन सुत सम्पति पलिवार ।
कहए कबीर धर्मदास सजो सुनहु सभ सन्त सुजान ।
पिआ मिलु सुख उपजु यम जितल मएदान ।
साहेब कबीर केर मंगल जो गाबए सतभाव ।
भवजल नदिआ भयाउनि सत्यलोक सिधाए ॥२॥

३. एकहि हे सखि एक संग बिलसए एकहि पलंग रहु सोइ हे ।
तब तब पिया मोहि देल जगाए जब जब आलस होइ हे ।
एक सखि पूछए पिआ के पिआरी, दोस पूछए साधु भाए हे ।
कओन रूप तोर पिअ के साजन सो मोहि कहहु बुझाए हे ।
अद्‌भुद रूप अखण्डित साहेब आबए बास सुबास हे ।
श्वेत-कमल पुरुष विराजए असंख्य ज्योति परकाश हे ।
साहेब कबीर मुख मङ्गल गाओल सन्तोजन लिअउ विचारि हे ।
एमरिक गओना बहुरि नहि आओना फेरु न मनुष अवतार हे ॥३॥

४. गे माइ सतगुरु साहिब पाहुन आएल भवन मे भेल इजोर ।
चरण पखारि चरणामृत लेलहुँ जनम सुफल भेल मोर ।
सतगुरु शबद स्वर्ग शिर उपर मन न करए बड़ जोर ।
एहि कायागढ़ मे जीव ओझराएल घरहु के सुधि गेल मोर ।
एहि कायापुर मे देखहु तमाशा बहुतबिधन बस चोर ।
इंगला-पिङ्गला सुषमन साधो पकड़ि मँगाएब पाँचो चोर ।
पाप पुण्य दुनू बनिआँ बैठल कएल काया को ओर ।
बिनु सतगुरु बुड़ए मझधारा कहए कबीर बन्दी छोर ॥४॥

गुन कए कवरी गुन कए जब लागि [illegible] हो ।
पुनि धनी [illegible] हो ।
जब लागि राज पिता घर गुन कहिलहु हो ।
सासु ननदि के बोलन दुलर का नेह हो ।
आए भाट ब्राह्मण लगन पठाइन हो ।
लगन सुनत गओनहि के शुभ [illegible] हो ।
बाजन बाजए गह गहा नगर उठए झनकार हो ।
प्रियतम कतहु नहि देखल आएल [illegible] हो ।
लए गए उतारल ताहि घर जहँ देखिअ न दुआरि हो ।
मन मन झखए दुलहिनी काह कीन्ह करतार हो ।
जो सखे जनितहुँ ऐसन गुन कहितहुँ हो ।
जहतहुँ साहेब के देसवा परम सुख पबितहुँ हो ।
चोलिले बबरी चोलिले चोलि लेहु दिनचारि हो ।
एहि संगहि सब छुटिहए कहए कबीर बिचारि हो ॥५॥

६. दुलहिन मनसजे आनन्द रहहु निर्गुणसजे होएत बिआह ।
लगन सुदिन प्रभु से चाहहु शबद परेखु टकसाल ।
गाबथि पाँच सोहागिनि बिलसए अलप-बएस ।
चन्द्र लगन शिर हे सेन्दुर यमकेर मारहु मान ।
कोहबर बैठहु कामिनि गुरु-मुख कन्यादान ।
निर्गुण सासुर पाओल अरपओ दोनहु कर जोड़ि ।
अजर अमर वर पाओल अजर अमर ओ देश ।
जिन्हि भवसागर छोड़ाओल छुटि गेल यमकेर देश ।
साहेब कबीरकेर मङ्गल हंसा भेल नेहाल ॥६॥

७. पाँच सखिअ मिलि बैठलहुँ हो, खेल रचलहुँ हमार ।
गुरु के वचन कइसे टारब हो, सत जाएत हमार ।
खेलइत रहलहुँ कदमतर हो, तन गेल अलसाए ।
आबि गेल बैरिन निन्दिआ हो, कछु कहलो न जाए ।

पिआ लागि पलँगा ओछाओल हो, फूल देल छिड़िआए ।
ताहि पर बैठला साहेब हो, अधरस बेनियाँ डोलाए ।
मिहि लेहु मिलि ? हु सखि सब हे, निअरे चलि आए ।
दूसरे बैठल मोर साहेब हो, लेअओने चलि जाए ।
साहेब कबीर के मङ्गल हो, शब्द परेखु टकसार ।
बहुरि न एहि जग आएब हो, फेरु न मनुष अवतार ॥७॥

८. पाँच पचीस बरिअतिआ दुलहिनि प्रान हे ।
दुलहा सब-गुण आगर रूप निधान हे ।
सुभ दिन लगन सोचाइ के हौइहएँ बिआह हे ।
दुलहिनि मनहि आनन्द से होएत बिआह हे ।
सुरति के बेनिआँ दुलहिनि सहजे डोलाइ हे ।
एकटक पिआ संग निरखहु तृप्त करहु नेह रे ।
भ्रमर गुफा बिच कोहबर प्रभु देल इजोर हे ।
छत्र विराजए तहाँ बसु पुरुष पुरान हे ।
श्वेत सिंहासन छत्र विराजए तहाँ बसु पुरुष पुरान हे ।
सुख बरनि नहि जाए कहूँ केही भाँति हे ।
जानहि सन्त सुजान पिआ रंग रात हे ।
एह मङ्गल सतलोक सन्त जन गाब हे ।
कहहि कबीर सतमाव तो लोक सिघाव हे ॥८॥

९. प्रथमहि छलहु हम आदि पुरुष-संग तब हम रहलहु कुमारि हे ।
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल बिआह हे ।
का संग रसलहुँ का संग बसलहुँ का संग कएलहुँ धरुआर हे ।
का संग देश देशाउर घुमलहुँ कोन पुरुष के नारी हे ।
पाँच संग रसलहुँ पञ्चीस संग बसलहुँ तीन संग कएलहुँ धरुआर हे ।
संगहि मे देश देशाउर घुमलहुँ एक पुरुष एक नारि हे ।
साँपिन रूप हम शहर बसलहुँ डँसलहुँ मञे चारिउ वेद हे ।
ससुर भैंसुर मिलि एक मत कएलहुँ अचरज कहलो न जाइ हे ।

एक आद्या तीनि रूप धराए छन्न मति बुद्धि विस्तार हे ।
कहए कबीर सबके मन मोहे सन्त कोई उतरए पार हे ॥९॥

१०. मङ्गल बोलु सतगुरु हे ।
अरही वनके खरही कटाओल बिन्दावन कटि बाँस हे ।
रिमिझिमि रिमिझिमि बुन्द बरिस गेल भिजए नेहरवा के लोक हे ।
अगर चन्दन लए घर लिपाओल गज मोती - चौका पुराएल हे ।
अलस-कलस केरा पुरहर बैठाओल मानिक लेसु अहलाद हे ।
साखी रहु साखी रहु चान्द सुरुज मनि हंसा-पुरुष के बिआह हे ।
देबहु हे दुलहिनि दुइ फल हे एक नाम एक पान हे ।
अमर देस सञे संनुरा मंगाएल हंसा पहिरत मांग हे ।
सइति चलु सइत चलु दुलहिनि नाम के सेन्दुरा लिलार हे ।
अओन-पओन-केर डोलबा फनाओल अमर लागल ओहार हे ।
साहेब कबीर एहो मङ्गल गाओल सन्तोजन लेहु न विचार हे ॥१०॥

११. शील-मिल द्वीप मुक्तिके मङ्गल तहाँ जाइ पगुधारा हे ।
भादव मास निशा अँधियारी रिमझिम जल बरिसए गुरुबाड़ी हे ।
मारग गम नहि पंछीकेरा तहाँ जाइ करु वास हे ।
सोबत से सहतेजि जगाए तपसी आनि बुझाइ हे ।
उठि अकुलाइ गुरु सब हेरि चरण गहए उठि धाए हे ।
पुरण भाग हमारो साहेब कोटि मानु छबि आए हे ।
कहत सुनत तोहि बिलम्ब न लागए चुन्दरी कहाँ ताहि पाँच हे ।
सोबत से सहतेजि गए चुनरी पिआ पहिराए हे ।
एहि चुनरीमे हीरा-मोती झालर लागल किनार हे ।
एहि चुनरीमे लाल धरै हे लागल चार बटबार हे ।
घूँघटमे जो चाँद सूर्य हए गगन ज्योति उजिआर हे ।
चुनरी पहिर मने मन डोलए एहि मन काल शिकार हे ।
पहिरि चुन्दरी सत-व्रत धागा धागा लागल पिआरि हे ।
कहए कबीर अमर सहतेजि मुक्ति भेद कहि देल हे ॥११॥

१२. सतगुरु अंगना चन्दन-घन गछिआ मोतिअन लागल हार हे ।
रतनकर कोहबर साजन पिआ मोरा अलप-बएस हे ।
पिआ लागि कोहबर छेवाओल सार्जान सुरतिक डोरी लगाए हे ।
ताहि पैंमि कए हम धनि मृतब अबके जगाओनहार हे ।
पिआ लागि हम परदेसिनी साजन अङ्गमे भभृति रमाएब हे ।
एकहि वचन पिआ रूसल हे साजन अबके आनत मनाए हे ।
बाट रे बटोहिआ कि तोंही मोर भैआ आब के आनत मनाए हे ।
हमरो समदिआ पिआ आगु कहिहह पलको न लाबहु बार हे ।
कहए कबीर सुनहु हे सुन्दरि सुनहु सुलच्छनि नारि हे ।
एमरी गआंना होएतहु सासुर साजन कन्त-पिआ केर पास हे ॥१२॥

१३. सुतलि छलहुँ एक संग सजनी एकहि पलंग रहु सोइ हे ।
जब जब मन मोरा आलस आबए तब गुरु देल जगाए हे ।
कोइ सखी कहे पिआ के पिआरी कोइ पुछए साधु भाव हे ।
कओन वरण तोर पिआ छौ सखिआ कओन वरण वा देश हे ।
अदभूत रूप अखण्डित बालमु श्वेत ध्वजा फहराइ हे ।
श्वेत आसन पर पिआ बिराजए अमरपुर ओहि देश हे ।
साहेब कबीर एहो मङ्गल गाओल सन्त मिलि लिअहु न विचारि हे ।
अपन-अपन गेंठी सम्हारि बान्धहुँ उहमाँ न पैंच-उधार हे ॥१३॥

१४. सुनु सखि सुनु सखि सुनु सखि साजनि सुनि लिअ प्रेम विलास हे।
हंसा-हंसिन एक संग क्रीड़ा पुहुप दीप अमिवास हे ।
चारि भानु कामिनीकेर शोभा अम्बर चीर कराए हे ।
सदा विनोद सुकृत संग शोभा दर्शन करए अघाए हे ।
पहुप-वितान बनल एक उत्तम हंसनकेर विश्राम हे ।
वृक्षा एक अमृत फल लागल सन्तन केर सुख धाम हे ।
पूरन उदित उदयपुर पाटन सहज ज्योति परकाश हे ।
हीरा-लाल झलामल झलकए अष्ट कमल गुरु वास हे ।
चान नहि उहमा सुरुज नहि उहमा उहाँ नहि वरन-विचार हे ।
कहहि कबीर जे ओहि घर पहुँचए सेहे जन सन्त हमार हे ॥१४॥

१५. सोहं सोहं सुनि लेहु साजन सोहं बसए कओन देश हे ।
जो सतगुरु मोहि सोहं लखाओल होएब मञे तनिकर चेरि हो ।
कायानगर ओ सोहं बसत हए हृदय पत्र करए निवास हे ।
तों मुरुख कछु मरम न जानहु सोहं तोहर पास हे ।
की ओहि ओढ़न की ओहि आसन की ओ करए अहार हे ।
से सतगुरु मोहि कहि समुझावहु जासञे होए प्रकाश हे ॥
श्वेत ओढ़न शब्दहि आसन शब्दहि करए आहार हे ।
पाँच तत्त्व लए अक्षर बनाहए निह-अक्षर बसु पार हे ।
पुरइन पत्र पर कमल फुलाएल भमरा रहल लुभाए हे ।
तइसन शब्द हृदय गहि राखहु जइसन पुरइन बसु पार हे ।
साहेब कबीर-मुख मङ्गल गाओल सन्तोजन लेहु न विचारि हे ।
अबरी के बेरि उबारहु साहेब फेरु न भुलब करार हे ॥१५॥

१६. हंसा पुरुष वर साजि चलल दल पाँच रतन दल-माह हे ।
आदि अन्त एकहु नहि हुँनकहु अनहद शब्द निसान हे ।
अखंड मंडिल घर चौक पुराओल मारग सिलहट दीप हे ।
मेरुडंड शिर पुरहर थापल चान्द सुरुज बारु दीप हे ।
इंगला-पिङ्गला दुनो गंगा जमुना बहु त्रिवेणी संगम घाट हे ।
भअंर-गोफा केर कोहबर थापल दसमी दोआरि ब्रहमा बास हे ।
साहेब कबीर जहाँ रमित रमिअ रहु-गुरु गमी गुरु गमो जानि हे ।
विधि बेहबार एकहु नहि हुनकहु नाम के सेन्दुरा लिलार हे ॥१६॥

पद १७. अगम दुर्गम गढ़ रचलहुँ बास जामहि जोति करए परगास ।
बिजुली चमकए होए अनन्द जिह पौड़ए प्रभु बाल गोबिन्द ।
इहु जिउ राम नाम लओ लागए जरा मरन छुटए भ्रम भागए ।
अबरन बरन सओं मन ही प्रीति हओं महि गावत गावहि गीत ।
अनहद शब्द होअए झनकार जिह पौड़ए प्रभु श्रीगोपाल ।
खण्डल मण्डल-२ मण्डा तीनि स्थान तीनि तिय खण्डा ।
अगम-अगोचर रहत अभिअन्तर पार न पावए के धरणीधर मन्तर ।

कदली-पुहुप-धुप परगास रज पंकज महि लेल निवास ।
द्वादस दल अभिअन्तर मन्त्र जहँ पौड़ए श्रीकमला कन्त ।
अध उरध मुख लागल कास सुन्न मण्डल महि करि व रे परगासु ।
ऊहां सूरज नहि चन्द आदि निरञ्जन करए अनन्द ।
मं ब्रहाण्ड पिण्ड से जानु मान सरोवर करि स्नानु ।
सोंह से जकर होए जाप जकरा लिपए नहि होइ पुन्न अरु पाप ।
अबरन बरन घाम नहि छाम अबरन पाइअ गुरु की साम ।
टारि न टरए आबए नहि जाए सुन्न सहज महिं रहय समाए ।
मन मद्धे जाने जे कोए जे बोलए से आपहि होए ।
जोति मन्त्र मनि अस्थिर करए कहए कबीर से प्राणी तरए ॥१॥

१८. कर पल्लव के बल खेलए नारि पण्डित जो होए से लेअ विचारि।
कपड़ा नहि पहिरए रहए उघाड़ि निरजीवै सो धन अति पिआरि ।
उलटी पलटी बाजए सेहे तार काहुहि मारए काहुहि उबार ।
कह कबीर दासनकेर दास काहुहि सुख देअ काहुहि उदास ॥२॥

१९. जे माया रघुनाथ केर बौरी खेलन चलु अहेरा हो ।
चतुर चिकनिआँ चुनि चुनि मारए काहु न राखए नेरा हो ।
मौनी बीर दिगम्बर मारए धरए तें योगी हो ।
जंगलमे के जंगम मारए माया किनहु न भोगी हो ।
वेद पढ़इते पाँड़े मारए पूजा करइते स्वामी हो ।
अर्थ विचारए पण्डित मारए बाधल सकल लगामी हो ।
श्रृंगी ऋषि वन भीतर मारए शिर ब्रह्मा केर फौड़ी हो ।
नाथ मच्छन्दर चलु पीठ दए सिंघलहूँ मे बोरी हो ।
साकट के घर कर्त्ता-धर्त्ता हरि भक्तन केरि चेरी हो
कहए कबीर सुनहु सन्तो जञो आबए तञो फेरी हो ॥३॥

२०. पहिला पूत पिछारी माई गुरु लागि चेलाकेर पाई ॥
एक अर्चभो सुनहु तुम भाई देखइत सिंह चराबए गाई ।

जल की मछली तरुवर ब्याई देखइत कुतिा लए गइ बिलाई ।
तलंर बेसा ऊपर सूला तिसी केर पेड़ लागए फल फूला ।
घांड़ा चढ़ि भैंसी चराओन जाई बाहर बाएल गओनि घर आई ॥
कहए कबीर जे इह पद बुझए राम रमए तसु सब किछु सुझए ॥४॥

२१. बालमु आएल हमरहि गेह रे तोहि बिनु दुखिआ देह रे ।
सब कोइ कहए तुभारी नारी, मोकह एह संदेह रे ।
एकमेक भए सेज न सोबए तब लागि कइस नेह रे ।
अन्न न भावए नींद न आबए गृह-बन धरए न धीर रे ।
जेञो कामी केरि कामिनि पेआरी, जेञो पिआसलके नीर रे ।
अछि केओ ऐसन पर उपकारी पिअ, सञो कहए सुनाए रे ।
अब तो बेहाल कबीर भेल छथि बिन देखहि जिउ जाए रे ॥५॥

२२. अब युग जितले सही तूँ ननदिआ जुलुम कइले गे ।
बिन धरतीके बगिआ लगाओले बिन फूल भ्रमरा लोभाओले गे ।
बिन नदिआ के नाव चलओले सुर नर मुनि से खेवओले गे ।
बिना दूध के दही जनमओले माखन काछि के रखले गे ।
राम रूप से वाम मङ्गओले शिव से चोखा बटओले गे ।
कहहि कबीर सुनहु माइ साधो सन्त के अन्त नहि पओलेगे ॥६॥

२३. देखन चलहु तोरि ऊँची रे अटरिआ ।
पाँच पचिस तीर घर बनिआँ मन राजा चौधरिआ ।
मुनसी हए कोतवाल ऊहाँ के चहु दिशि लागलि बजरिआ ।
आठ कोठरिआ नओ दरबाजा दश जे लागि केबरिआ ।
खिड़की खोलि पिआ हम देखल ऊपर झाँप झपरिआ ।
चढ़ि अटारी खुजलि केबाड़ी गहि नाम की डोरी ।
चांद सुरुज दोउ तंबुआ तानए । तेहि बिच परिहए डगरिआ ।
कहहिं कबीर सुनहु भाइ साधो गुरुके चरण-चित हेरिआ ।
सब सन्तन मिलि पार उतारि गउ झँखए ले मुरुख अनरिआ ॥७॥

शब्द २४. भाइ रे ! अद्‌बुद रूप अनूप कथा हए कहु तओंके पतिआई।
सब घट रहल समाई ।
लक्षि बिनु सुख दारिद्र बिनु :ख निन्द बिना सुख सोबए ।
यश बिनु ज्योति रूप बिनु आशिक रतन-बिहूना रोबए ।
भ्रम बिनु गंजञ्जन मान बिनु निरखत रूप बिना बहुरूप ।
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनन्द अइसन चरित अनूप ।
कहहि कबीर जगत हरि माणिक देखहु चित अनुमानी ।
परिहरि लाख लोग कुटुम तजि भजहु न सारङ्गपानी ॥१॥

२५. अपने घट दिआ ना बारु रे ॥ टेक ॥
नामकेर तेल सुरति केरि बाती ब्रह्म अगिन उदगारु रे ।
जगमग जोति निहारु मन्दिरमे तन मन धन सब बारु रे ।
झूठी जानि जगत केरि आशा बारंबार बिसारु रे ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो आपन काज संवारु रे ॥२॥

२६. अवधू अमल करए से गाबए ।
जब लगि अमर असर ना होबए, तब लगि प्रेम न आबए ॥ टेक॥
बिनु खाए फल स्वाद बखानए, कहत न शोभा पाबए ।
बिनु गुरु ज्ञान गँठिके हीने, नाहक वस्तु भुलाबए ।
आँधर हाथ लेअ कर दीपक, करि परकास देखावए ।
अओरन आगे करए चांदना, आपु अंधेरे धाबए ।
आँधर आप आँधर दस गोहने, जगमे गुरु कहाबए ।
मूल महलकी खबर न जानए, अओरन को भरमाबए ।
लए अमृत मूरुख रंड सीचए, कलपवृक्ष बिसराबए ।
लए कए बीच ऊसर मे बोअए, पाहन पानी नाबए ।
लागि आग जरए घर आपन, मूरख घूर बुताबए ।
पढ़ि गुनि जे पण्डित भूलए, ओकहि कओन समुझाबए ।
कहए कबीर सुनहु हो गोरख, इह सन्तन नहि भावए ।
हए कोई सूर पूर जग माही, जे इह पद अर्थाबए ॥३॥

२७. आएल दिन गओनाके हो, मन होअए हुलास ।
पाँच भींड़ के पोखरि हो, जामे दस दोआरि ।
पाँच सखी बैरिणी भे इ हो, कस उतरब पार ।
छोट मोट डोलिआ चन्दन के हो, लागल चारि कहार ।
डोलिआ उतारए वृन्दावनमा हो, जहाँ कोइ न हमार ।
पईओं तोरि लागजो कहरवा हो, डोली घर चिनबार ।
मिलि लेब सखिआ सहेलरी, मिलए कुल-पलिबार ।
साहेब कबीर गाबए निरगुन हो, साधो करि लेहबिचार ।
नरम गरम सओदा कए लेह, आगे हाट न बाजार ॥४॥

२८. आज मोकहं मिलि गेल वंदी-छोड़ ।
सतगुरु मिलए करम जे मेटल, पाँचो इन्द्रिय जोड़ ।
तीरथ बरत मे ढूंढ़ि हम अएलहुँ, कि बुझए वेदक सोर ।
शतशब्द सञे परिचय भेल, घटल जे मनकी जोड़ ।
अमर देश के पान पाओल, यम सञे तिनुका तोर ।
आपमे ओजे नूर दरसए, सन्त करु हए सोर ।
तिरगुन केर जे फन्दा तोड़ल, चिनहल पाँचो चोर ।
पाँचो पचीसो पाबिकए, हिनके लेलनिह कोर ।
आवागबन केर मेटल कलपना, लागल निजघर डोर ।
चौदह तबकसञे सुरति निकलए, साठि शून्न गेल फोड़ ।
साहेब कबीर सन सतगुरु मिलला, छुटि गेल नरक अघोर ॥५॥

२९. उठि पछि लहरा पिसना पीस ॥ टेक ॥
ढोरु पछोरु पलक छिन दम दम अनहद जाँत गङगु तोरे सीस ।
कर बिन चलए झींक बिन निघरए बंकनाल चलए बिस्वा बीस ।
मन मैदा मेही करि चालहु चोकर तजि देहु पाँच पचीस ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो आपुइ आबि मिलए जगदीश ॥६॥

३०. एहि समधिन जग ठगए मजगूत ॥ टेक ॥
एहि समधिन के मात पिता नहि, आओर धिआ ना पूत ।
एहि समधिन के गाँओं ठाँओं नहि, करत फिरए सगरे अजगूत ।
ठगत ठगत एहि सुरपुर खाए, ब्रह्मा विष्णु महेश के खाए ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो, ठगनी कए अन्त काहु नहि पाए ॥७॥

३१. खेलइत रहलुँ अंगनमाँ सखी संग साथी हो ।
आइ गओन निगिचाए, बदन भए धूमिल हो ।
पहिले गओनावाँ अएलहुँ प्रतिआके भेजलन हो ।
देखि कुवाँ के रूप, मनहि पछितएएलहुँ हो ।
कुवाँ भीड़ भेल भारि, ते गागर फूटल हो ।
कओन उत्तर घर देव, हाथ दोउ छूछे हो ।
घर मोरि सासु दारुनी, तो ननद हठीली हो ।
केहि से कहब दुख आपन, संगी न साथी हो ।
ठाढ़ि मोहारे धनि सुरकए, मनहि पछिताइल हो ।
पिआ मो-सऽ मुखहु न बोलए, कओन गुन लागल हो ।
सजन की ऊँची अटरिआ ताहि चढ़इत लजाऊँ हो ।
कल नहि लेत पहरुआ, कओन विधि जाएब हो ।
गज गज मोतीके हार, तो दीपक हाथे हो ।
झमकि कए चढ़लु अटरिआ, पुरुष के पासे हो ।
कहए कबीर पुकारि । सुनहु धर्म आगर हो ।
बहुत हंस लए साथ, उतरु भवसागर हो ॥८॥

३२. गुरु मोहि घुँटिआ अजर पिआए ॥ टेक ॥
जब से गुरु मोहिं घुटिआ पिआओल, भई सुचित मेटी दुचिताई ।
नाम ओषधि अधर कटोरी, पिबइत अघाए कुमति गेलि मोरी ।
ब्रह्मा विष्णु पीबि नहि पाओल, खोजत, संभू जन्म गमाओल ।
सुरत निरत कर पिबए जे कोई, कहए कबीर अमर होए सोई ॥९॥

३३ जकर लगन गुरु सऽ नाहीं ॥ टेक ॥
ते नर खर कुकुर-सम जग मे, बिरथा जन्म गमावही ।
अमृत छोड़ि विषय रस पिबए, धृग धृग तिनकए ताई ।
हरी बोल की कोरी तुमड़िआ, सब तीरथ करि आई ।
जगन्नाथ केर दरसन करिकए, अजहु न गेल कड़ुवाई ।
जइसन फल उजाड़ के लागी, बिन स्वारथ झड़ि जाई ।
कहए कबीर बिनु बचन गुरुके, अन्त काल पछिताई ॥१०॥

३४ जोगिआ के ढूढ़इत जन्म बीतल, केअओ देखल भाइ हो ।
जोगिआ के काँख मे झोरबा, हीरा लाल जमाहिर हो ।
जे मागए से ताहि देअ, जाके दिल दरिआबी हो ।
जोगिआ के अबइत जेह देखल, तकर पुरल कमाइ हो ।
पाँच सखी के दुलहिनि केअओ, दुलहा कोई देखहु भाइ हो ।
जोगिआ के रूप अनूप हए, अलमस्त दिबाना हो ।
तीनि भुअन जोगी रमि रहु, फेरु घटंही समाना हो ।
कहए कबीर पुकारि कए, सुनहु धर्मदासा हो ।
बाहर ढूंढ़े ना मिलए, दिल ढूढ़हु भाई हो ॥११॥

३५ निरभय होइ कए जागु रे मन मोर ॥ टेक ॥
दिन कए जागहुँ राति कए जागहु, मूसए नाभ घर चोर ।
बाबन कोठरी दस दरबाजा-सब मे लागए चोर ।
आगे जेठ जिठनिआँ पाछे, संग मे देओर तोर ।
कहए कबीर चलु गुरु के मत मे, का करिहए जम जोर ॥१२॥

३६. नैहरबा हमरा नहि भावए ॥ टेक ॥
साँईक नगरी परम अति सुन्दर, जहँ कोइ जाए न आबए ।
चाँद सुरुज जहँ पवन न पानी, के संदेश पहुँचाबए ।
दरद इह साँई केर सुनाबए ।
आगे चलहु पन्थ नहि सूझए, पीछे दोष लगावए ।

केहि विधि समुरे जाएब मोरि सजनी, बिरहा जोर जनावए ।
विषम रस नाच नचाबए ।
बिनु सतगुरु अपन नहि कोई, जे इह राह बताबए ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो, सपने न प्रीतम पाबए ।
तपन इह जिअ के बुझाबए ॥१३ ॥

३७. नैहर मे दाग लगाए आइलि चुनरी ॥ टेक ॥
ऊँ रंगरेजबा के मरम न जानए नहि मिलए धोबिआ, कओन करए उजरी।
तन के कुंड़ी ज्ञान केर सोदन साबुन महँग बिकाए एहि नगरी ।
पहिरि ओढ़ि कए चललि ससुररिआ गाँओ केर लोग कहए बड़ी फुहरी ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो बिन सतगुरु कबहु नहि सुधरी ॥१४॥

३८. फदर फदर करु हरखनिआँ, कहु गुरुकं नाम लेबं कोन खनिआँ।
ई पाँचो परपंच किओहए, माया देल गरदनिआँ ।
अन्तकाल हबकुनिआँ कटबे, मरइत बेरि पेटकुनिआँ ।
पाँच पचिस के संग मे भुले, छुटि गेल नाम-निसनिआँ ।
जब यम राजा आन पड़ेगा, बाँन्हि देतहु ओ घरनिआँ ।
माया मोह मे भुलि पड़ा हए, चेतब कओने खनिआँ ।
बिनु सतगुरु बिनु नाम भजन, के जएबह नरक निदनिआँ ।
अमरपुर के सओदा कएल हे, जपिले नाम-निसनिआँ ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो, तब होएब महरनिआँ ॥१५॥

३९. भँवर उड़ए बक बैठल आए, रएनि गेलि दिवसो चलि जाए ।
हल हल काँपए बाला जीबा, नहि जानओ की करिहह पीबा ॥
काँचे बासन टिके न पानी, उड़ि गउ हंस काया कुम्हिलानी ।
काग उड़ाओत भुजा पीड़ानी, कहहिँ कबीर एह कथा सिरानी॥१६॥

४०. भुला मन समुझाबए जे पए भूला मन समुझाबए ।
अरब-खरब लए दरब गाड़ए, खरिचन खान न पाबए ।
जब यम आबि करए कंठ घेरो, दए दए मैन बुझाबए ।
बांड़ बबूर अब फल चाहए, से फल कड़ुओ पाबए ।
खोटा दाम गाँठि लए डोलए, भलि भलि वस्तु घोलाए ।
गुरु-परताप साधुकेरि संगति, मन-बाँछित फल पाबए ।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, बिमल बिमल गुण गाबए ॥१७॥

४१. मानुष जनम सुधारहु साधो, धोखे काहे बिगाड़हु हो ।
अइसन समय बहुरि नहि पइहह, जनम जुआमति हारहु हो ।
गुड़ा गुड़ी खेआल जहि भूलए, मूल तत्त्व लओ लाबहु हो ।
जब लगि घटसओ परिचय नाही, तब लगि कछु नहि पाबहु हो ।
तीरथ व्रत आओर जप तप संजम, जे करनी मति भूलहु हो ।
करम फन्दमे युग युग पड़बह, फिरि फिरि जोनि मे झूलबहु हो ।
नहि कछु नहाए ना कछु धोएलह, ना कछु घण्ट बजाबहु हो ।
ना कहु नेती ना कहु धोती, नाकहु नाचए गाने हो ।
सिंगी सेल्ही भभूत अओ बटुआ, साइं स्वांग सजे न्यारा हो ।
कहए कबीर मुक्ति जओ चाहहु, मानहु शब्द हमारा हो ॥१८॥

४२. रतन जतन करि प्रेम केर तत धरि,
सतगुरु इमरित नाम जुगत केर राखब रे ।
बाबा घर रहलुँ बबुई कहएलहुँ,
सैंआ घर चतुर सआन, चेतब घरबा आपन रे ।
खेलत रहलहुँ मजे सुपती मौनिआँ ।
औचक आएल लेनिहार, चलब केसिआ झाड़ि रे ।
एक तो अंधेरी राती, चोरबा मुसल थाती,
सैआँ के बान कुबान, सुतल गोड़बा तानि रे ।
चुनि-चुनि कलिआँ मजे सेजिआ बिछओलहु,
बिना रे पुरुषबा के नारि, झँखए लए दिन ओ राति रे ।
ताल झुराइ गएले फूल कुम्हिलाए गएले,
उड़त हंसा अकेला, कोइ नहि देखल रे ।

अब का झाँखए लू नारि, बैठल मन मारि,
एह बाटं मांतिआ हेराएल रे ।
दास क ेर इह गाबए निरगुनिआँ,
अबकी उहवाँ जाएब, तो फिरि नहि आएब रे ॥१९॥

४३. लोगा तों तओ मति के भोरा ।
जेओं पानी पानी महँ मिलि गउ तेओ धुरहि मिलहि कबीरा ।
जेओं मैथिल को सांचा वासा तोहर मरण होए मगहर पासा ।
मगहर मरए सो गद्दह होए भल परतीति राम़ सओ खोए ।
मगहर मरए मरण तो राम लजाबए ॥
की काशी की मगहर ऊसर जोपें हृदय राम बसु मोरा ।
जओं काशी तन तजहि कबीरा तओ कहु रामहिं कओन निहोरा ॥२०॥

४४. साँइ दरजी केर कोइ मरम न पाबा । टेक
पानी केर सुई पवन केर धागा अष्ट मास नव सीअत लागा ॥
पाँच पेवँद केर बनल रे गुदरिआ तामे हीरालाल लगावा ।
रतन जतन केर मुकुट बनाबा प्रान पुरुष के लए पहिरावा ।
साहेब कबीर अस दरजी पाबा बड़े भाग गुरु नाम लखाबा ॥२१॥

४५. साँई केर संग सासुर आइलि ।
संग न सूति स्वाद न जानलि गेल जौवन सपनहि केर नाँई ।
जना चारि मिलि लगन सोधाई जना पाँच मिलि मंडपछाई ।
सखी सहेली मङ्गल गाबए दुख सुख माथे हरदी चढ़ाबए ।
नाना रूप पड़ल मन भाँवरि गांठि जोड़ि भइ पतिकी आई ।
अरघ दए दए चलिलि सुबासिनि चौकहि राँड़ भेलि संग साई ।
भेल बिआह चललि बिन दूलह बाट जाइत समधी समुझाई ।
कहए कबीर हम गओना जएबे तरब कन्त लए तूर बजाई ॥२२॥

४६. सुतलि रहलु मओ निन्द भरि हो, गुरु देलन्हि जगाए ।
चरण कमल के अंजन हो, नएना लेलुँ लगाए ।
जासओ निन्दिआ न आबए हो, नहि तन अलसाए ।
गुरु कर वचने निज सागर हो, चलु चलिहओ नहाए ।
जनम - जनम के पपवा हो, क्षण मे डारब धोआए ।
एहि तन के जगदीप कएल, स्रुत बतिआ लगाए ।
पाँच तत्त्व के तेल चुआए, ब्रह्मा अग्नि जगाए ।
सुमति-गहनमाँ पहिरलहुँ, कुमति देलहुँ उतारि ।
निर्गुण मँगिआ सम्हारलुँ हो, निर्भय सेन्दुर लाए ।
प्रेम पिआला पिआए के हो, गुरु देल बौराए ।
विरह पिआला पिआए के हो, गुरु देल बौराए ।
विरह अगिनि तन तलफए हो, जिअ किछु न सोहाए ।
ऊँच अटरिआ चढ़ि बैठलहुँ हो, जहँ काल न खाए ।
कहए कबीर बिचारि के हो, यम देखि डराए ॥२३ ॥

४७. हम का ओढ़ाबए चदरिआ, चलती बेरिआ ॥ टेक ॥
प्रान राम जब निकसन लागए उलटि गेल दुनू नएन पुतरिआ ।
भीतर सओ जब बाहर लाए छुटि गेल सब महल-अटरिआ ।
चार जना मिलि खाट उठाओल रोवत लए चलए डगर-डगरिआ ।
कहए कबीर सुनहु भाइ साधो संग चलत ओहि सुखल लकड़िआ॥२४॥

सोहर ४८. एक दिन सतगुरु साहेब मेथुरा मे पगु देलन्हि हो ।
खेमसरी नारी सोहागिनि धाए करि चरन गहु हो ।
कहे खेमसरी सुनु सखी सब आज मोरा भाग जागल हो ।
सतगुरु पुरुष - पुरान आजु दरसन देलनिह हो ।
चरन पखारि हम चाखब भवन छिटाएब हो ।
फूलक शय्या बिछाएब ताहि गुरुके बैठाएब हो ।
कहे खेमसरी करजोड़ि आरती-विधि भाखहु हो ।
साज सकल हम आनब बरनि सुनाबहु हो ।

सेत - बसन सेत - आसन केरा - करपूर धरु हो ।
नारिकेर पूगीफल पान मधुर - घृत आनहु हो ।
ततछन-आनल साज आरती विधि साजि रहु हो ।
जगमग ज्योति उजिआर अखण्डित ज्योति बरु हो ।
कहए कबीर धर्मदास सञो सतगुरु चिन्हहु हो ॥१॥

४९. चान्दनि राति उजिअरिआ भए गेल अँधिअरिआ हो ।
साधो पापी पपीहा अधरतिआ पी-पी शब्द सुनाबए हो ।
पपीहा शब्द मोहि लागल मन बएरागल हो साधो ।
खोजइत फिरिअ प्रभु आपन दोसर जानल हो ।
एक वन गेल दोसरि वन गेलहुँ तेसर वन हो साधो ।
अमिअ भयाबल शरीर नएने भेल सागर हो ।
भए गेल नदिआ भयाओनि नहि केअओ आपन हो ।
नहि खेंबत करुआड़ि कञोने विधि ऊतरब पार ।
साहेब कबीर सोहर गाओल मनुआँ बौराओल हो ।
अजर अमर घर जाव परम पद पाओल हो ॥२॥

५०. जीनके अंगना जमीरिया से कैसें सोबै हो ।
महर महर आबे बास नीन्द कैसे आबए हो ।
काटो पेड़ जमीरिया के पलंग बनावल हो ।
ताप्र बैठो सइआँ मोर तो बेनिआँ ढुराबहु हो ।
सासु मोर सोबत अटरिआ ननद चौबारे हो ।
सइआँ मोरे सोबत पलंगबे मै कैसेक जगाबहुँ हो ।
साई मोरे गोसाई तुम सब - लाऐक हो ।
पाँच चोर घर मुसत दीआ न उजालै हो ।
उठि न तोर मरोर और ललकारत हो ।
ज्ञान - खड्ग लीए हाथ तो चोरवन मारत हो ।
सैआँ मोरे आहो पिआ जोरे मीलैआ हो ।
अँमा तो मोरे अँमाफल उपर झालर हो ।

जंत्र बाजत मंदिला बहुत सोहाओन हो ।
तुम जीन जानो सुहेलरी ऐह परमार्थ हो ।
गाबे साहेब कबीर सदा सुख पाओल हो ।
सो सतलोक सिधाए बहुर नही आवोत हो ॥३॥

५१. बारंबार जगाओल केअओ नहि जागल हो ॥ ललना रे ॥
कठिन सोच जिआ मोर मोह बड़ लगाए हो ।
जबे छलहुँ जननीकेर गरभमं तबके सम्हारल हो ॥ ललनारे ॥
जिन देलन्हि मनप्रान ताही बिसराओल हो ।
छाड़हु कपटी केर संग विषय रस त्यागहु हो ॥ ललना रे ॥
मातु पिता पक्ष तेजि गुरु-पक्ष लागहु हो ।
पहिरहु अनुभव चीर कुटिल सभ छोड़हु हो ॥ ललना रे ॥
हँसि पिआ देलन्हि सोहाग कन्त उर लाबहु हो।
ई संसार सेमर-फल रुइआ उड़ि जाएत हो ।
जे नर भक्ति विहून पाछे पछताओत हो ।
साहेब कबीर सोहर गाओल गाबिकए सुनाओल हो । ललनारे ॥
सन्तजन लेहु न विचारि परमपद पाओल हो ॥४॥

५२. सतनाम सुख-सागर, अधम उघारन हो साधो ।
लइत नाम तरि जाए मेटए जम-झागड़ हो ।
जबे रहु जननीके गरभ तबे न सम्हारल हो साधो ॥
जेहि देल तन-मन-परान ताहि बिसराओल हो ।
छोड़हु कपट केर प्रीति विषय रस तेआगहु हो साधो ।
मातु पिता कुल तेआगि साहेब संग लागहु हो ।
पहिरहु निर्भयके चीर कुटुम लजबाबहु हो साधो ।
हँसि पिआ देल सोहाग कन्त उर लाबहु हो ।
सतनाम गुन गाबहु चित न डोलाबहु हो ।
कहहि कबीर सतभावो अमर पद पाबहु हो ॥५॥

५३. सुतल रही भरम निन्द विषसजे मातल हो ।
सतगुरु देल जगाए चलहु सुख-सागर हो ।
एक नाम चित देहु अमृत-रस पीबहु हो ।
कहइत सुनइत तरि जाए छुटए यम-झगड़ हो ।
एक नाम सुख-सागर प्रेम उजागर हो ।
दया-भाव लबलीन असत जनि बोलहु हो ।
एह संसार सीमर-फूल रुइआ उड़ि जाएत हो ।
जे नर भगति बिहून सेहे पछताओल हो ।
साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि सुनाओल हे ।
हिलि मिलि क सतसंग उतरु भवसागर हो ।।६।।

५४. सुतलि रहलहुँ मजे सखिआ तो विषकर आगर हो ।
सतगुरु देल जगाए पाओल सुख-सागर हो ।
जब रहलि जननी केर ओदर पर न सम्हारल हो ।
जब लगि तनमे परान न तोहि बिसराएब हो ।
एक बुन्द साहेब मन्दिल बनाओल हो ।
बिना नेव के मन्दिल बहुत काल लगाल हो ।
इहमाँ गाम न ठाओ नहि पुर-पाटन हो ।
नहि न बाट-बटोही नहि हित आपन हो ।
सेमर एक संसार भुइआँ ओङघराएल हो ।
सुन्दर भक्ति अनूप चलए पछताइत हो ।
नदी बहए अगम अपार पार कइसे पाएब हो ।
सतगुरु बैसल मुख मोड़ि काहि गोहराएब हो ।
सतनाम गुन गाएब सत न डोलाएब हो ।
कहए कबीर धर्मदास अमर घर पाएब हो ।।७।।

५५. सुमिरहु सिरजनहार जेहे गरभ सजो उबारल हो साधु ।।
खबरि करहु ओहि दिन सजो जे कओल करार करु हो ।
केकर करब भरोसा सबहि बिराना जगमे हो साधु ।
होइते परात डेरबा टूटल हटिआ उसरि गेल हो ।
ज तुरंग-पथ पालकी अओर सुत परिजन हो साधु ।
जेहि दिन अओता चपरासी पकड़ि लए जाएत हो ।
सुन्दर देहिआ देखि जनि भुलु जिनगी एह जग मे थोड़ा दिन के हो।
साधु फुकि देतहु अगिआ लगाए जरत जइसे सुखलि लकड़ी हो ।
सबहि एहि जग बिराना केओ न आपन हो साधु ।
कहए कबीर पछताबह भमरा जब उड़ि जाएत हो ।।८।।

५६. सुमिरहु सिरजनिहार जिन गर्भ सँ उबारल हे ।
सखिआ हे जिन प्रभु दिहलन तन धन प्राण ताहि बिसराओल हे।
छाड़हु कपटी संग विषय - रस त्यागहु हे।
छाड़हु माता-पिता संग साथ गुरु पथ लागहु हे ।
पहिरहु अनुभव चीर कुल के लजाबहु हे ।
सखि हे हँसि पिआ दिहलन सोहाग कन्त उर लागहु हे ।
एहि जग सबहि मोसाफिर काहु के घर नहि आपन हे ।
सखिआ हे होइत प्रात डेरबा टूटल हटिआ उसरि गेल हे ।
साहेब कबीर सोहर गाओल गाबि के सुनाओल हे ।
सखिआ हे हिलिमिलि करु सतसंग चलहु सुख सागर हे ।।९।।

झुम्मरि ५७.

चलु सखि चलु सखि प्रेम-विलास झुम्मरि खेलहु सतगुरुकेर पास।
सेत सिंघासन छत्र अंजोर मकर तार घर लागल डोर ।
सत सुकृत जहाँ बैठल आनन्द मानिक जोति बरए अति चन्द ।
चहुदिशि होअए ज्ञान-प्रकास सतगुरु सन्त कबीर-सुबास ।।१।।

५८. चलु चलु सखिआ पिआ फुलबड़िआ ।
मिलि कए चलु चलु पिआ-फुलबड़िआ ।
अमर के पात पर चलल सुरजितिआ ।

लोढ़ि लोढ़ि भरलि हम दउरिआ ।
एक हम ठाढ़ि ठाढ़ि अरज करइत हए ।
रा॰] पिआ निज शरण अपनवाँ ।
पुहुप-चंगेरिआ सखिआ रूप अनूप हए ।
अमरपुर मञे अमर - दरबार ।
पुरुष - रूप देखि मनुआँ भुलाए गेल ।।
हुलसि हुलसि पहिराबए गले हार ।
साहेब कबीर एह गाओल झुमरा ।
भाग बड़े जनिक लागल लगनिआँ ।।२।।

५९. जुलुम कइले ना गे जुलुम कइले ना माया भइले जग ठकनिआ जुलुम कइले ना।
महुआ के पेड़ से माया दरुआ चुबओले से सबके पिअओले ना ।
माया योगिआ फकिर से छपाए रखले ना,
ब्रह्मा के ठकले माया विष्णु के ठकले से शिव के ठकले ना ।
माया - भँगिआ पिलाए के शिव के ठकले ना ।
दुआरे दुआरे माया रोदना पसारे से एतकत अएलही ना ।
माया खाए जग संसरबा से एतकत अएलही ना ।
साहेब कबीर एहो गाओल झुमरिआ से भाग बड़ो हए ना ।
जिनका लागल लगनिआँ से भाग बड़ो हए ना ।।३।।

६०. दैबा बरिसए साओनमा रिमि-झिमि ।
एहि हम जनितहु गुरु के आओनवाँ ।
ने ओतए कोनो हमर जे मोति-भवनबाँ ।
बिछिआ मोर बीच भेल सेज यम-घरबा ।
गले हरबा सेहो भेल विखधरबा ।
नहि शोभए चूड़ी पैड़ी नहि मुखपनमा ।
की नहि शोभए हो बेसरि बाजुवन बा ।
बारह फड़किआ के तेरह बेनटबा ।
पैसि गेल हो भरम के चोरबा ।
पिआ के पबितहुँ मञे करितहु नेहोरबा ।
निरभए भए सुतितहु भरि कोड़बा ।
साहेब कबीर एहो गाओल झुमरा ।
रस लए उड़ि गेल रे भओंरबा ।।४।।

६१. बेरिआ सबेरिआ बारि लेहु दिअरा ।
समुझि कए देखहु तो घटहिं मे पिआ ।
एहसन संसार सार सकल यमु धरबा ।
कओने विधि भवजल उतरब परबा ।
छाड़ु मन दोविधा काम-क्रोधबा ।
की भजिलेहु गुरु के नाम अधरबा ।
नाम जहजबा भजिले केओटबा ।
हिलि मिलि भवजल उतरब पारबा ।
साहेब कबीर एहओ गाओल झुमरा ।
भक्तिगति जन केओ केओ पाओलि ।।५।।

६२. सुनु सखि सुनु सखि, मतो हमार ।
पाओल हमे सतगुरु, दीनदयाल ।।
चरनामिर्त पाएब भरिपूर, आवागमन गएबै मोरि दूर ।।
पाए वहैं प्रवाना पान, अब नहि मोरा जमसञे काम ।।
पाएब प्रसाद उपजब गेआन, अब धरिहञो सतगुरु धेआन ।
सनिञे सबद मन भअउ अधीर, चरनकमल चित राखहु कबीर।।६।।

६३. सुमति सखी तोञे करहु सिंगार हमे अइलहु तोहि लेबए हार ।। टेक।।
तीनहु वस्तर श्वेत सोहाए, चित चूड़िआ हाथ पहिराए ।
सन्त के सेंदुर मांग संवार, अतर-फुलेल शीश पर ढार ।
आतम अन्तर फूल लव लाए, एहि लगन सतलोक सिधाए ।
नेह की नकबेसरि नाथ, एक पलक बिसरु मति साथ ।
शब्द विमान अरु चारि कहार, कहओ कबीर पाँचो मुक्ति द्वार।।७।।

बसन्त ६४.

बुझ-बुझ पण्डित मनचित लाए, कबहु भरल बहए कबहु सुखाए ।
खन उगए खन डुबए खनआह, रतन न मिलए पावए नहि थाह ।
नदिआ नहि साँकरी बहए नीर, मच्छ न मरए कमल रहए तीर ।
पोहकर नहि बाँधल तह घाट, पुरइन नहि कमल मह बाट ।
कहहि कबीर ई मनकेर धोख । बैठल रहए चलन चहए चोख ॥१॥

लगनी ६५.

आउ धनी - धनी बैठिऔ शबदवा सुनि
सखिआ हे अमृत नाम आहार से घोड़ि पिअब रे की ।
आब की करैछ धनी पड़ल निकुँज वनमे।
सखिआ हे जमुआ से पड़ल अरारी कओन विधि जीतब रे की ।
एक त अन्हारी राति दूसर केओ संग न साथी ।
सखिआ हे गुरु के महलिआ बड़ी दूर, कओन विधि जाएब रे की।
साधु - संगत करु हे अभिअन्तर ध्यान धरु।
सखिआ हे ज्ञान कोठरिया करु थीर से यम से जीतब रे की ।
साधु - संगत करु हे अभिअन्तर ध्यान करु ।
सखिआ हे ज्ञान कोठरिआ करु थीर से यम से जीतब रे की ।
चौदहो नागिन के बीच मे डोलिआ फनाओल साहेब ।
सखिआ हे तिहपुर पड़ल ओहार से गुरु घर जाएब रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआँ गुरु के चरणगहु से सजनिआँ।
सखिआ हे हाथ के रत्न भुलाइ, कोना घर जाएब रे की ॥

६६. अपने पिआ केर सजे होएब सोहागिनि अहे सजनी ।
भइआ तजि सइआँ संग लागब रे की ।
सइआँ के दुअरिआ अनहद बाजा बाजए अहे सजनी।
नाचहि सुरति सोहागिनि रे की ।
गंग-जमुन के औघट घटिआ हो अहे सजनी ।

नैहर पर जोगिआ पठ आओल रे की ।
देखओ सतगुरु मूर्ति के किरना हो अहे सजनी
जोगिआ रूप देखए जाएब रे की
दास कबीर एह गाओलि लगनिआँ हो अहे सजनी
सतगुरु अलख लखाओल रे की ॥२॥

६७. इन्द्र धवन मेँ चमकली रमनिआँ ।
केसिआ सम्हारि बान्हल पर जूड़बा कि आहो राम हो ।
माथा लेल बाँस के नंगेरिआ बिहुसहलहि पर आएब रे की ।
गेहुमा पिसन चलल गुरु अनमारिआ ।
नहि देखओ बैठकी नहि रमवेनिआँ कि आहो राम हो ।
कओन विधि गहुमा जोगाएब कओने गुन गाएब रे की ।
चन्दन छेवि छेवि बैठकी बनाओलि
मोरबा के पंख सजे रसवेनिआँ हे, सखिआ कि आहो राम हो।
ननदि-भौजैआ जतबा पिसब प्रभु गुन गाएब रे की ।
जतबा के उपर सहर बजारवा ।
हीरा मोती लागल मकड़िआ हे सखिआ कि आहो राम हो ।
बाँहआँ उलारि झिकबा देबए नवरतन तिनहु सोधब रे की ।
पिसइत पिसइत मोरा चोली भींजि गेल ।
आओर भिजल लंबी केसिआ हे सखिआ कि आहो राम हो ॥
अँचरा उठाए लोर पोछब जगत लोग मोहब रे की ।
एक तो रमनिआँ दोसरे विरहिनिआँ ।
देओरा बैठल जंघा जोड़िआ हे सखिआ कि आहो राम हो ।
बिना रे गओना कइसे जाएब जगत लोग हँसत रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओलि लगनिआँ ।
समुझि-समुझि घरबा चलु गे सजनी कि आहो राम हो ।
जेहो नर रहल अचेत पाछे पछताओत रे की ॥३॥

६८. ओहाँ से करार करि आएल, हिआँ मायाके बन्धन मे भुलाएल।
रजनी हे असकर आएल, असकर जाएब रे की ।
आएल यम कोतबलवा पकड़ि चढ़ाओत डोलिआ ।
सजनी हे ताहि समय मे केओ न छोड़ाओल रे की ।
माइ-बाप-बन्धु सुत तिरिआ, केओ न करए धरहेरिआ ।
सजनी हे सभक अछइते यम लेने जाएत रे की ।
साहेब कबीर एहि गाओल लगनिआ ।
सजनी हे पंचकठिआ फेकइत नतवा टुटल रे की ।।४।।

६९. काआपुर नगरी मे लागेले बजरिआ अरे सजनी गे ।
आओरो दस लागल केबाड़ अगम घर दूर बसु रे की ।
शिर लए चलु सजली चङ्गेरिआ अरे सजनी गे ।
खुलि गेल गगन केबाड़ पिसू जतसरिआ रे की ।
तन करु कीलिआ मन करु मकरिआ अरे सजनी गे ।
सुरति निरति दअओ जोतिआ लागल गुन अइसन रे की ।
सत्तरि कोठरी बहत्तरि खीरकी अरे सजनी गे ।
रिमि-झिमि बहल बेआर पिसइत मन लागल रे की ।
बिनु कठताल पखाउज बाजए अरे सजनी गे ।
बिनु खसम उठए रंग गगन घर गरजल रे की ।
गंगा-यमुनमा के सुरसरी-धरबा अरे सजनी गे ।
केओट हए मतबाल पार कइसे जाएब रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओलि जतसरिआ अरे सजनी गे ।
सन्तोजन लेहु न विचारि उतरु भवसागर रे की ।।५।।

७०. काआपुर-सहर मे लागल बजरिआ अरे सजनी गे ।
चलहु सखी ओहि देसबा जहाँ बसु बालमु रे की ।
काआपुर-काशी-बनारस बसि गए अरे सजनी गे ।
कोटि-तीर्थ ओहिठाम निरखइत मन लागल रे की ।

दस-पाँच सखी मिलि चलली बजरिआ अरे सजनी गे ।
गगन मंडिलवा के रूप देखि मन मातल रे की ।
सत्तरि कोठा बहत्तरि कोठली अरे सजनी गे ।
रिमि-झिमि बहए बेआर हंसा सुख पाओल रे की ।
सुरति निरति के घोड़वा बनाओल अरे सजनी गे ।
ताहि पर हंसा असवार अगम-घर दुर बसु रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल जतसरिआ अरे सजनी गे ।
पुरुषके भेद-अभेद केअओ केअओ पाओल रे की ।।६।।

७१. चलु सखि देखन गुरु के नगरिआ भरबै निर्मल नीर गगरिआ ।
सखिआ हे कुइआँ के रूप अनूप गगन घट भीतर रे की ।
चारू भर लागल बेली-फुलबड़िआ अजब मोहाओन जहाँ गुरु के नगरिआ।
सखिआ हे सुरतिके डोरिआ लगाएब भरि भरि पिअब रे की ।
पिऐत पिऐत मे सालल हिंअरा तब लखि पाओल ज्ञानक जिअरा ।
सखिआ हे खुलि गेल भरम-केबाड़ गुरु-मुख हेरब रे की ।
द्वादश उपर पिआ पुर-पाटन अधर गलैचा जहाँ गुरु के सिंहासन ।
सखिआ हे जगमग ज्योति उजिआर झलक झलकाओल रे की ।
साहेब कबीर चरण कमल गहु धर्मदास गुलामी सिधारहु ।
सखिआ हे भए रहु चरण अधिर से चुक बकसाबहु रे की ।।७।।

७२. दिन-चारि रजनी भजन करु सजनी ।
आहे मन सजनी हे ऐहन समैआ फिर नहि पाओल रे की ।
दश-पाँच सोतिआ बहल एक नदिआ।
आहे मन सजनी हे ओहि दह पुरनिआँ घन लागल रे की ।
दह-एक ननुनी कमल-दह सोभनी।
आहे मन सजनी हे ओहि फुल भमरा लुभाएल रे की ।
सुखि गेल सरोवर उकनि गेल पुरनिआँ।
आहे मन सजनी भँवरा उड़ैत कोई न परेखल रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआँ ।
आहे मन सजनी ढुढ़ैत ढुढ़ैत दिनमा बीतल रे की ।।८।।

७३. धरती आकाश बनल दुनू जतबा किलबा सुमेरु बिच लागल रे की ।।टेक।।
केहु देल गेहुवाँ, केहुरे दउड़िआ केहु रे पठाअल जतसारी रे की ।।
सासु देल गेहुवाँ, ननदि, दउड़िआ गोतिनी पठाओलि जतसारी रे की ।
चोखे चलु जतबा झमकि लेहु झिकबा देवरा भुखल भैआ पाहुन रे की।
जतबो न चलइ मकड़िओ न रबई हथबा धएलए कामिनि रोबए रे की ।
घोड़बा चढ़ल रामा करहि पुछरिया केकर तिरिआ रोबए जतसारी रे की ।
जाँघ तेरो थाकल बहिआ घुन लागल तोहरे अछइते रोबए कामिनि रे की।
घोड़बा से उतरि रामा, जँघिआ बइठाओल अपने पटुकबा लोरबा पोछल रे की।
तोहरा पटुकवा प्रभुजी दर दरबटिआ हमारे अचरबा, लोरबा पोछहुँ रे की ।
दास कबीर एह गाओलि लगनिआँ बहुड़ि न आएब एहि जतसारी रे की ।

७४. निशि दिन गगन गरजए तोरि अँगना ।
कइसे समझाएब मञे दिल अपना कि आहे राम हो ।।
सागर गेल सुखाए कमल कुम्हलाएल रे की।
सुतलि रहलि मञे पिआ संग सेजिआ ।
दसमी दोअरिआ घुमए लागल केबड़िआ कि आहे सजनी हे।।
बिना कुंजी पट खुलल चित मोर डोलल रे की ।
सासु हठीली घर ननदि दरुनिआ ।
सैंआ सञो लहरा लगाबए बलजोरिआ की आहे सजनी हे ।।
कओन बहाना घर जाएब सैंआं समझाइब रे की ।
ऊँची अटरिआ के दसमी दुअरिआ ।
तीन सए साठ लागल घनकोरबा कि आहे सजनी ।
कपटी भेल मोरा कन्त अन्त न पाओल रे की ।
साँकरि कुँइआ पाँचो पनिहारिनि ।
एक लए डोरिआ भरए नएना कि आहे सजनी।
पनिआँ भरइते घैला फुटल संग मोरा छुटल रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओलि लगनिआँ ।
समुझि बुझि घरबा चलसु सजनिआ कि आहे सजनी ।
प्रेम के कुंजी बनाएब रसे रसे खोलब रे की ।।१०।।

७५. पाँच सखी मिलि गहुमा पिसए गेलि ।। कि आहो राम हो ।
कबधरि पिसब कब घर जाएब रे की ।
तन सञे पिसब हम सुरति सञे जाएब ।। कि आहो राम हो ।
गुरु के शबदबे चालनि झारब रे की ।
दश-पाँच सखि मिलि फुलबा लोढ़ए गेलि ।। कि आहो राम हो ।।
जेहिवन केओला फलाएल रे की ।
फुलबा लोढ़इत रहलि कि मेघबा बरिसि गेल ।। कि आहो राम हो।।
भिजि गेल पाँचो रंगबा साड़ी रे की ।
तितले भिजले धनि चढ़लि अटरिआ ।। कि आहो राम हो ।।
जाहि वन योगिआ धुनिआँ लगाओल रे की।
मुखहु न बोलए योगी पलकिओ न ताकए ।। कि आहो राम हो ।।
योगिआ सुरतिआ हिआ मोर सालइ रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल जतसरिआ ।। कि आहो राम हो ।।
अपन-अपन गैंठि सम्हारि बान्हहु रे की।।११।।

७६. पाँच पचिस केर लागल हटिआ सओदा करए हम अएलहुँ पेंठिआ ।। किअए रामा हो ।।
गुरु-गोविन्द-गुन गाएब, गहुमा पीसब रे की ।
गहुमा जे भरि भरि रातके चंगेरिआ पिसए बैसलहि मन जतसरिआ ।। किअए रामा हो ।।
सत्गुरु पिसनिहार पिसइते मन लागल रे की ।
अर्ध-ऊर्ध्व के दुइ पल्ला जँतबा चान-सुरुज के लागल हथरा ।। किअए रामा हो ।।
किलबा के बलिहार सोहं सुर बोलल रे की ।।
तनके कड़ाही सुरतिके दिबाड़ी ब्रह्म अग्नि उदगारी ।
से पुड़िआ छनाएब रे की ।। किअए रामा हो ।
सेहो पुड़िआ लए जएबहु सनेस पिआ के जेमाएब रे की ।।
मोहन चलला गुरु के नगरिआ भल भेल छुटि गेल भैआके दुअरिआ ।। किअए राम हो ।।
छुटि गेल नैहरा के आस सासुर वास सुख पाओल रे की ।।
साहेब कबीर एहि गाओल लगनिआँ समुझि बुझि पगुधरु हे सजनिआँ ।। किअए राम हो ।।
जे नर रहए अचेत से पाछे पछताओत रे की ।।१२।।

७७. पश्चिम दिशा से मेघ एक उमरल घटा एक उमरल।
बरिसल बूँद भिजल मोरा अंगिआ।
सखिआ हे सागर गेलि सुखाए कमल व म्हलाएल रे की ।
सरयुग-तीर बहल एक नदिआ बैरि बैठल घटबार पाँचो भैआ
सखिआ हे बैरि बैठल घटबार से पार कोना जाएब रे की ।
लादि सादि कं चलल व्यपरिआ संगहु के सखी सब भेलि बनिआँ।
सखिआ हे कुल-परिवार सब बेमुख भेल मुखहु न बोलए रे की।
साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआ, उसरल हाट निकसि गेल बनिआ।
सखिआ हे सौंदा करिओ न भेल फिर पछताएब रे की ।।१३।।

७८.
बड़ जोगे बड़ तपे कुइआ खनाओल डोरिआ बटइत दरिआ लागल रे की।
टुटि गेल डोरिआ भथिए गेल कुइँआँ रुसिए चलल पाँचो पनिहारिनि रे की।
पाँच सखि मिलि चललि जमुनमाँ बटिआ रोकल मन-मोहन हे सखिआ ।
कहहि कबीर सुनहु पाँचो हे रनिआ जपइत रहु गुरु के नाम हे सखिआ।।१४।।

७९. रिमझिम बुँद बरिसए निशि-रतिआ कासञो कहञो दिल अपने बतिआ ।
सखिआ हे सरोबर गेल सुखाए कमल कुम्हलाएल रे की ।
अवघट घटिआ लए गेलि मोरि नैआ
ताहि चढ़ि बैठल आओर पाँचो भैंआँ ।
सखिआ हे केवट भेल मतवाला
से पार कोना होएब रे की ।
तन करु नैआ प्रेम खेबैआ, सुरति के डोरी करु पतबरिआ ।
सखिआ हे गुरु शब्द खेवनहार से पार होए जाएब रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल निर्गुनिआ समुझि समुझि पग धरहु सजनिआ ।
सखिआ हे ज्ञान गेठरिआ करु थीर से यम से जीतव रे की ।।१५।।

८०. रुइआ ओटि ओटि कइलि गुनाओन घर नहि खरची दोबरि धुनाओन ।। किअए हे सेजनी ।।
कइसे कए लुगबा पहिरब कइसे दिन काटब रे की ।
एक टकाके चरखा बनाओल ढेबुबहि टेकुआ चमरख लाओल ।।कि अएहे सजनी
एक अधेला के धुमना मडाइ, माल्ह माजब रे की ।
उलटि पलटि धुनि रुइआ धुनाओल सहज सरुपी पिउरी बटाओल ।। किअए हे सजनी ।।
चुटकी सम्हारि रु। काटल ऐंठनो नहि लागल रे की ।
एक ताग बनल दोसर गेल टुटि । चिल्लर जञो काटल उठल टिहुकि ।। किअए हे सजनी ।।
तब धुनिअहि गरिआओल मोरे रुइआ काँचहि रे की ।
एक तो नारी अलप-सुकुमारी चिलरे ढ़िलबा से रचलु घमारी ।। किअए हे सजनी ।।
अपने रहनिआँ नहि चेतहु काहे गारी पारहु रे की ।।
साहेब कबीर एह गाओल लगनिआँ साधु सन्त सबकं मन भाओल । कि अए हे सजनी ।।
सन्त जन लेहु न बिचारि प्रेम-पद पाओल रे की ।।१६।।

समदाउनि ८१.
चलहु चलहु सोहागिनि निज घर हे अपना ।
सेजिआ तो हरिके सुन्न भेल सोहागिनि बटोहिआ-संग हे रसलिहु।।
खेलि खेलि ले सोहागिनि पाँचो छएलबाके संग मे ।
भसुरा तोहरो छुटि गेल सोहागिनि पचीसो रंग हे रंग मे ।
चलहु चलहु सोहागिनि दीपक लिहल हाथ मे ।
भानु रैया दुलहा सोहागिनि निशि-दिन रहए तेरा साथ मे ।
चलहु चलहु सोहागिनि अमिअ सरोबर-धार मे ।
बाबा के नगरिआ हो साहेब तेजलो नहि जाए ।
साहेब कबीर एहओ सोहागिनि गाओल समदउनिआ ।
मिलि चलु आहो हंसा निज-कुल हे अपना ।।१।।

८२. मिलि चलु सखिआ दिवस भेल हे रतिआ चित भेल जग-सञे उदास।
पाँच भैआ के एक बहिनो दुलहिनि निशिदिन फिरए उदास ।
सासुर हमरो दूर बसु साजन । नैहर नहि भेल बास ।
लाले लाले डोलिआ सबुजि रंग ओहरिआ लागि गेल बतीसो कहार ।।
गोड़ लागु पैआँ पडु अगिला कहरिआ तिल एक डोली बिलमाए ।

आएल समदिआ उठि चलु साजन जहाँ होएत सत-बेवहार ।
अओन-पओन के डोलिआ हे साजना अमर पड़ल ओहार ।
कओने भैआ जएतै संग मोर हे सखिआ कओने लगओतइ पार ।
सगुण भैआ जएतइ संग मोर हे सखिआ निर्गुण लगओतइ पार ।
भवजल नदिआ अगमबहु सखिआ कओने विधि उतरब पार ।
नैआ हमरो सत्यके साजन सतगुरु धएलन्हि कड़ुआरि ।
साहेब कबीर एहि गाओल समदउनिआँ सन्तोजन लिअ न बिचारि ।
अपन अपन गैंठि समारि बान्हु ओतए नहि पईंचा-उधार ॥२॥

८३. मिलि लेहु मिलि लेहु मिलि लेहु सजनी ।
की आहे सुनु सजनी ॥ हंसा गओनमा बड़ी दूर रे की ।
तनसञो मिलि लेहु । परेम सञे बुझि लेहु ।
की आहे सुन सजनी । नाम अमृत रस पिअहु रे की ।
बाट रे वटोहिआ की तोही मोर भैआ ।
की आहो भाइ हो एहि बाटे देखलहु सतगुरु बालमु रे की ।
देखलहुँ मञे देखलहुँ अगमपुर हटिआ ।
की आहे सुनु सजनी सतगुरु बालम हंसा परिबोधल रे की ।
कतेक दुख कहबइ भैया पन्थुक जन ॥ की आहो भाई हो ॥
पिआ गुन सुमरइत हिआ मोर सालइ रे की ।
एकहि पलंग सेज पिआ संग बैठलहुँ ।
की आहे सुनु सजनी मोरा लेखे बसए दुरँतर रे की ।
एक हम सुन्दरि नारी दोसरे मञे पिआ के पिआरी।
की आहो भैया हो ।
कओन अओगुन रे पिआ परितेजलि रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल समदाउनि ।
की आहो भैआ हो ।
सन्तोजन लेहु न विचारि रे की ॥३॥

निर्गुण ८४.

अरे मन सजनी करके हिंडोलवा कदम झुलब रे की ।
गगन मंडल बिचे क के हिंडोलवा आगे मन सजनी ।
उहमा बसइ सतगुरु बालमु रे की ।
माए बाप देलक गहना, सेहओ भेल जीव के लहना ।
आगे मन सजनी मरहुक बेरिआ गहना उतारल रे की ।
चारि जना मिलि खटिआ उठाओल आगे मन सजनी ।
संग न जाएत सहोदर भाइ रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनिआँ ।
आगे मन सजनी सन्तोजन लेहु न विचारि रे की ॥१॥

८५. एहि जग कोइ नहि अपना । ककरा सञो बोलब सखिआ ।
जइसे पुरइन पत्र नीर। चित डोलल सखिआ ।
बाबा-भैआ निर्मोहिआ लिख-भेजहु न पतिआ ।
पन्थ हेरइते दिनमा बीतल हो दुखित भेल अँखिआ ।
आएल डोलिआ, आएल कहरिआ यम रोकल दुअरिआ ।
कर्म चलल संग-साथ धरम धरहेरिआ ।
भवजल नदिआ भयाउनि कइसे जाएब सखिआ ।
बिचहि मिलल पिआ मोर देखल भरि अँखिआ ।
साहेब कबीर निर्गुण गाओल कहि गेल एक बतिआ ।
अजर अमर घर पाओल हो तेजहु कुल जतिआ ॥२॥

८६. दिन चारिकेर जीवन हो गरब न करिअह कोइ ।
कि चित्त लाबहु आपन हो कि चित्त लाबहु पिऊ ।
झुलइ पांच सोहागिनि हो प्रेम के हिडुला लगाइ ।
जाके पिआ परदेसिआ हो सगुन करए दिन राति ।
सगुन करए पन्थ चितबए हो पिआ अटकल ओहिदेस ।

कत ? ललना घर आओत हो पगु झाड़ब लमी केस ।
कथीलए अइसन चालओ अनधन हो कथीलए ऐसन चलहु भंडार।
संग किछु नहि जाएत हो देखहु हिरदए बिचारि ।
साहेब कबीर कर निरगुन हो शब्दपरेखु टकसाल ।
करु सन्त संगति जिउ हो कन्त मिल तओ बड़ भाग ।।३।।

८७. पिआ देखओ तोरा संग मे तोर देखओ अओरो रंग मे ।
कि आगे मन साजनि भरम सओ मनुआँ भुलाएल रे की ।
जब से आएल पिउ तबसे आएल जिउ ।
आगे मन साजनि देखि देखि नएना जुड़ाएल रे की ।
पाँच पचिस तीनी दसमी दोअरिआ झीनी ।
आगे मन साजनि चिन्हइत चिन्हलहुँ प्रितम आपन रे की ।
साहेब कबीर एहो गाओल निरगुनिआँ।
आगे मन साजनि मुरति मे सुरति लगाबहु रे की ।।४।।

८८. सुतलि छलहु हम भरम-नीन गुरु मोरा देल जगाए ।
ता संग निन्दिओ नहि आएल उहमा तनु न अलसाए ।
गुरु के चरण करु हे अंजन राखहु नएन लगाए ।
जासओ निन्दिआ न आवए हो नहि तन अलसाए ।
प्रेम के तेल धनी हे चुआबहु सुरतिके बाती चढ़ाए
नाम चिनगिआ दिअरा बारहु ज्योति जरए सारी राति ।
कुमति के गहना धनी हे उतारहु सुमतिके करिअ श्रृंगार ।
नाम सिन्दुरिआ मंगिआ सम्हारहु दुरमति दुविधा बहाए ।
अष्ट कमल द्वादस उपर तहमा चोरबो न जाए ।
साहेब कबीर सन सामरथ देखि देखि काल डेराए ।।५।।

परिशिष्ट–'ग'

मिथिलाक कबीरपन्थी सन्त-कविक परिचय ओ हुनक मैथिली पदावली

धर्मदास

मिथिला मे धर्मदासक भणिता सँ अनेको पद भेंटैत अछि। ई धर्मदास कबीरपन्थक छत्तीसगढ़ी शाखाक संस्थापक धनी धर्मदास सँ इतर कोनो मैथिल कबीरपन्थी सन्त, साधक आ कवि छलाह। हिनक एकटा रचना एतय उद्धृत कयल जाइछ जे जीवछदास, 'भजनाहा' सँ प्राप्त कयल गेल अछि :

अजहु न आयल पिया मोर हे, अंदेशवा हमरा लागल रहो ।
जहिया से पिया व्याहि के गेला, तब से गेला विदेश ।
पिया पिया हम रटितं रहलौं, कबहु न आयल संदेश हे ।
शील सम्मत के चोली पहिरलौं, कसमश रंग लगाई ।
ज्ञान के तेल से मंछिया समारब, सुरति के सिन्दुर लगाई ।
धर्मदास एहो अरजी करतु है, सुनि लियौ विनती मोरि ।
एमरी के बेरिया अइब पियवा, बान्हब सुरतिया के डोरि हे ।

कृष्णाकारखदास

ई विशिष्ट कबीरपन्थी महात्मा निम्न जातिक छलाह आ कबीर मठ, लक्ष्मीपुर बगीचा, रोसड़ा मे उच्च जातिएक महन्थ होएबाक परम्पराक विरोध कय परवर्त्तीकाल मे वचनवंशीय आचार्य गद्दी, महादेव मठ, रोसड़ाक स्थापना कयने छलाह, जकर वर्णन सविशेष पूर्व अध्याय मे कयल जा चुकल अछि। एतय हिनक एक गोट प्राप्त पद कें प्रस्तुत कएल जाइछ :

धर्मदास तुम्ह सन्त सुजाना ।
एतना बात पुछौ में तो आना ।।
सत सुक्रीत अग्या मोहि दीन्हा ।।
जीव छोड़ाए काल सो लीन्हा ।।
नर नारी जीव सकल जहाना ।।
भ्रम त्रसी जीव काल समाना ।।
पाचम जनम राजा परवासा ।।

बहुता करही भोग बीलासा ॥
राजा घर होए कन्याकुमारी ॥
जानही ताही बहुत नरनारी ॥
सखी सह लीन कर्त रंगराता ॥
मातु पीता नहि सुन्दर भ्राता ॥

नन्द्रामदास

नन्द्राम दास ब्रह्मपुरा (मुजफ्फरपुरक) वासी छलाह । हिनक गुरुक नाम बलरामदास आ शिष्यक नाम रघुनाथदास छल । ओ अपन निवास स्थान पर रहिकए भजन करैत अपन जीवन यापन करैत छलाह । ओतए अपन **'शब्द संहिता' 'वाणीप्रमोद'**क रचना प्रारम्भ कएल। दुर्भाग्यवश ओकरा बिना पूरा कएने परलोक चलि गेलाह । आगाँ हिनक शिष्य रघुनाथ दास ओकरा पूरा कएल । हिनक एक गोट पद अछि–

राज विराज भई पल माहिं परी यमराज सों काज तवेंजु
भूलि गई सब साज समाज रही कछु लाज न तेज तवेंजु
न कियो सतसंग न प्रेम उमंग कथा परसंग सुने न कबेंजु
कहे नंद् निदान चले जब प्राण कहाँ हरिध्यान समान अबेंजु ॥

हरिचरणदास

हरिचरण दास पूर्णिआ जिलाक कमया नामक स्थानक निवासी अग्रहरि वैश्य छलाह । हिनक जन्म १८८३ मे भेल छल । हिनक पिताक नाम बेचू साह छल । हिनक शिक्षा मिड्ल कक्षा धरि भेल छल । मिडिल पास कएलाक पश्चात ओ पुलिस विभाग मे हवलदार नियुक्त भेलाह। परन्तु ओ एहि पद कें अस्वीकृत कए मधुबनीक एकटा प्राइमरी स्कूल मे अध्यापनक काज करए लगलाह । एहि पद पर ओ बहुत दिन धरि रहलाह । थोड़बे दिनक बाद हिनका संसार सँ स्वभावत: विरक्ति भए गेलन्हि ।

हिनक बिआह फारबिसगंज सब डिविजन (पूर्णिया)क हरिपुर नामक ग्राम मे भेल छल। ओहि गामक दक्षिण मुसहरि नामक गाम मे एकटा महन्थ गंगादासक अखाड़ा छल, जतए ओ सर्वदिन जाथि । आगाँ चलि ओ गंगादासजीसँ ततेक प्रभवित भेलाह जे ओ हुनका सँ दीक्षा लेलन्हि आ स्वयं कबीरपन्थी मठाधीश भए गेलाह ।

ओ अपन जीवनकाल मे कतेको बेर कबीरपन्थीक सभा आयोजित कएलन्हि । बरख मे एकबेर अनन्त चतुर्दशी कें आरती चौका होइत छल, जाहि मे नवका लोक सभकें दीक्षित करैत छलाह । हिनका सम्बन्ध मे कतेको चामत्कारिक घटना सुनल जाइत अछि ।

कमयावासी तारामोहन प्रसादक अनुसार हिनक दुइ काव्य रचना छल

१–**हरिचरणामृत पतसई**
२–**चिंतामणि**

एहि स सँ दोसराक एखन पता नहि चलि सकल अछि । ओ सन १९८३ ई०क ... दिसम्बर कें १०० वर्षक अवस्था मे परमधाम सिधारलन्हि ।

आचार्य रामभरोस साहेब

हिनक जन्म धाइन्थ विष्णुपुर ग्राम मे अहीरकुल मे भेल छल । हिनक पिताक नाम कृष्णदी गोप आ माइक नाम सुखमती देवी छल । हिनक माता वचनवंशक शिष्या छलथिन । हिनक पिताक असामयिक मृत्युक बाद हिनक माता दयादी प्रताड़नाक अनुभव कए हिनका लए कए वचनवंशीय आचार्य गद्दी, महादेव मठ, रामड़ा लए अनलथिन, जाहि सँ सहजहि हिनका आध्यात्मिक परिवेश भेटि गेलनि । परवर्तीकाल मे ई आचार्य गद्दी पर आसीन भेलाह आ साहित्य सृजन, भजन, कीर्त्तन आ उपदेश मे लागल रहलाह । कहल जाइत अछि जे ई अपन उत्तराधिकारी शिष्य कें सात गोट अपन गुरुगम्भीर ग्रन्थक पाण्डुलिपि समर्पित कएने छलथिन। हिनक एकटा पद एहि स्वरूपक भेटैछ–

जस जल कमल रहे जल माही ।
फूल फूले जल पावे नाही ॥
जो फूल लिप्त होय जल माही।
विनसि जाय कछु विसमय नाही ॥

महात्मा मुनीन्द्र साहेब

महात्मा मुनीन्द्र साहेबक जन्म सन् १९०५ ई० मे बिहार प्रान्त स्थित मधुबनी जिलाक अड़ेर बरही टोल मे कांइरी कुल मे भेल छल । हिनक जन्म एकटा परम्परागत सन्त परिवार मे भेल। परिणामस्वरूप बाल्यावस्थहि सँ सन्तपरम्पराक छाप हिनका पर पड़ए लगलैन्ह । हिनक पिताक नाम सोनेलालदास आओर माएक नाम मुद्रिकादेवी छल । हिनक माए एक उच्च कोटिक साधिका छलथिन्ह जे आध्यात्मिक भेदक सरल विधि जनैत छलीह । हिनक पिता कबीर पन्थक एकटा मानल सन्त छलाह । हिनक शान्त प्रकृति कें देखि माए हिनका मौनी बाबी कहथि आ तें हिनक नाम मुनीन्द्र रखलन्हि । ई सहजयोग सत्संग केन्द्र, अड़ेर, बरही, टोलक वर्तमान आचार्य छथि ।

हिनक धर्मप्रचारक क्षेत्र पहिने देहात छल आ दलित, शोपित आ अशिक्षित वर्ग कें ई दीक्षित कयल । सहज योग केन्द्रक स्थापनाक बाद हिनक धर्मप्रचारक क्षेत्र शहर आ शिक्षित वर्ग भय गेल अछि । वर्तमान समय मे हिनक शिष्य बिहार राज्यक अतिरिक्त मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम, उड़ीसा, पंजाब, दिल्ली आ विदेश मे कनाडा, अनटोरियो, सिकागो टोरंटो, हांगकांग, ताइयान, लन्दन आ नेपाल मे पाओल जाइत छथि ।

सन् १९४५ ई० मे खजौली गाम मे एकटा सन्त सम्मेलनक आयोजन भेल छल जाहि मे दू भाइक बीच ई विवाद उठल जे राम पैघ कि कबीर । श्रीमुनीन्द्रदास सत्संग कार्यक्रम मे आएल छलाह । हुनका आमंत्रित कएल गेल आ ओ सात गोटेक मण्डलीक संग सभास्थल पर पहुँचलाह आ उपस्थित जन समूह आ दुनू भाइ कें अपन व्याख्यान सँ संतुष्ट कएलनि। पछाति हिनक व्याख्यान **'सत्यवाणी सन्देश'** नामक पोथी मे प्रकाशित भेल ।

हिनक प्रवचन आकर्षक, तर्कपूर्ण, प्रभावशाली आ साँचक अन्वेषणार्थ प्रेरणादायक होइत अछि । ओ खजुरी आ एकतारा पर भजन नीक जकाँ गबैत छथि ।

एखनधरि महात्मा मुनीन्द्र साहेब द्वारा लिखल पाँचटा पोथी प्रकाशित भए चुकल अछि। ओ अछि–

१–सत्यवाणी सन्देश
२–रहस्य चिन्तामणि
३–परमार्थ दर्पण
४–भेदमणि
५–प्रार्थनावली

एकर अतिरिक्त हिनक अनेक अप्रकाशित पोथी आ प्रवचनक संग्रह अछि ।

हिनका द्वारा रचित मङ्गल जे मैथिली मे अछि, निम्नप्रकारक अछि–

हम नहि आजु रहब एहि जग मे, पाओल सतगुरु कंत हे ।
एहि जग केओ नहि शुभ चिंतक, विषय बसात बहंत हे ॥
ओरियानिक पानि बरेड़ी लागल, बूझथि साधु संत हे ।
नयनक माझे सुषमनि बटिया, मनहि सतगुरु कंत हे ।
झलकइत जोतिया सदिखन निरखल अनहद बाजल यंत्र हे ।
बजइत जंत्र समाधि लागल, महासुन्न पर जंत हे ॥
भ्रमर गुफा चढ़ि देखि अपन घर अलख अगम अनंत हे ।
सच्चिदानन्द मुनीन्द्र परमगति परमानन्द झड़ंत हे ॥

श्री रामनन्दनदास

श्री रामनन्दन दास ग्राम-इचरुआ, पत्रालय आन्धा, जिला मधुबनीक निवासी छथि । हिनक जन्म सन् १९.. ई० मे भेल छल । ओ श्रीलक्ष्मण साहेबक शिष्य आ लक्ष्मण सेवा आश्रम इचरुआक आचार्य छथि । हिनक निम्नलिखित रचना अछि

१. **श्री सद्गुरु कबीर**
२. **मुक्ति पथ** (उपन्यास)
३. **मानव शिक्षा** (काव्य)
४. **नन्दन कुसुमाञ्जलि** (गीतावली) अप्रकाशित
५. **बीजक की टीका**
६. **समाज कल्याण** (निबन्ध)
७. **प्याग** (उपन्यास)
८. **गुरुजी के जीवन चरित्र ।**

डॉ० रामदेवदास शास्त्री

डॉ० रामदेव दास शास्त्रीक जन्म १० जुलाइ १९२९ ई० मे मधुबनी शहर मे भेल छल। सम्प्रति ई सूड़ी हाईस्कूल मधुबनी मे सहायक शिक्षकक पद पर कार्यरत छथि । अपन व्यस्त जिनगी बितबैत ई मिथिला मध्य कबीर-पन्थक प्रचार-प्रसार मे सदिखन लागल रहैत छथि। सदगुरु कबीर आश्रम, सुरतगंज, मधुबनीक ई वर्त्तमान आचार्य छथि । हिनक गुरु श्रीकान्त दास रहथिन्ह । शास्त्रीजीक सम्बन्ध वचनवंशीय आचार्य गद्दी महादेव मठ सँ अछि । हिनक रचना सभ अछि–

१. **जीवन लक्ष्य**
२. **साधना और सद्गुरु**
३. **सदगुरु कबीरोपासना दर्पण**

श्री जीवछदास

श्री जीवछदासजीक जन्म एक कबीर पन्थी निर्धन परिवार मे २७ फरवरी १९५५ ई० मे खुटौना प्रखण्ड (मधुबनी जिला)क भजनाहा नामक गाम मे भेल छल । हिनक पिताक नाम श्री रामखेलावन दास अछि । ई माए बापक एकलतुआ संतान छथि । हिनक पितामह सहरसा जिलाक वासी छलाह । कोशी नदीक तबाहीक कारणें श्रीजीवछदासजीक पिता अपन सासुरमे

[illegible] । [illegible] [illegible]

[illegible] कार्यरत छथि ।

[illegible] कबीर पन्थी परिवार मे [illegible] कारणे कबीर दर्शनक प्रचार [illegible] हिनका पर पड़ल ओ कबीर पन्थक कतेक सन्त महन्थक [illegible] । कबीर ओ आन कबीर पन्थक प्रचार प्रसार मे [illegible] रहैत छथि । कबीर भजनमाला नामक हिनकर छोट पोथीक संग्रहकर्ता सेहो छथि । कबीर दर्शनक [illegible] [illegible] एकटा संगठन एक विचार संगठन (आपन थाउट ऑर्गेनाइजेशन) नामक संस्था संस्थापित [illegible] अछि । एहि संस्थाक सदस्य अपन नामक आगाँ उपनाम मे 'मुक्त' लिखैत छथि नहि कि जातिगत उपनाम ।

हिनक किछु काव्य रचना अत्यन्त हृदयग्राही ओ विशुद्ध मैथिली रचना थिक, जाहि मे हिनक कबीरपन्थी फक्कड़ता तथा कविकर्म-कौशलक निदर्शन भेटैछ । यथा—

नियति

कि थाकल पथिक बढ़त आगु ॥०॥

आँखि थाकल कुंठित भेल बात
थाकल साँस शिथिल सब गात
हारल पौरुष जीवन समर मे
चलु एखनो धरि मद त्यागु ॥०॥

[illegible]टकि रहल अछि अर्गा त आशा
[illegible] लागल भेल दिशा दिशा
[illegible] घुमइए बेर-बेर चिता
नहि अवसर अछि जल्दी भागु ॥०॥

नीजक सब अस्तित्व मिटा
पग मारि टारि देत पथ सँ हटा
चुप-चाप जीवु खा भीखक अन्न
कि शीश चढ़ला नीज हक माँगु ॥०॥

दाँत देखा पहिर सिर ताज
सिंह करए निष्कंटक राज
खाएत एक-एक के पार लगा
पागल कतबो की शरण लागु ॥०॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मत्वर चढ़ा निज रक्त धार
उत्सर्ग कएल सब अधिकार
विच्छिन्न मोह बस पड़ल आव
संतप्त अग्नि सँ दागल छी ॥०॥

कतयो करु कंठ फाड़ि क्रन्दन
अछि भोथ पड़ल सब चक्र सुदर्शन
भांग पीबि भगवान सुतल जब
तँ नीकें अछि जे भागल छी ॥०॥

सुदामा झा

हिनक विशेष परिचय प्राप्त नहि अछि, मुदा कंठी धारण करबाक सम्बन्ध मे हिनक एकगोट पद अत्यन्त लोकप्रचलित अछि । यद्यपि कंठीधारण कबीरपन्थ ओ वैष्णव सम्प्रदाय दुहू मे समान रूपें अभिगृहीत अछि, तथापि हिनक ई कवित्त पद कबीराहा बाह्योपचारक एकटा विशिष्ट तत्त्व-निरूपणक दृष्टिओ उल्लेख्य अछि–

काठही हरत हर काठ मे फरत फार
काठही जलाइ के भूख के बुझात है ।
काठही के हर बहे काठही से घर बान्हे
काठही के काटि-काटि मुर्दा के जलात है।
काठही के खाट चौकी काठही के बेंच
काठही पलंग पर सेज लगात है ।
काठही के रेलगाड़ी काठही जहाज होत
काठही के नौका पर पार उतरात है ।
काठही के घूमि घूमि देवादेवी पूजियत
काठही के जगन्नाथ तीन लोक जात है ।
कहथिन सुदाम झा सुनु नर मुण्ड सठ
जाके गले काठ नही सूकर समान है ।

साहेबरामदास

मैथिली साहित्यक सन्त कवि मे साहेबरामदासक नाम अग्रगण्य अछि । हिनक समय [illegible] साल अर्थात १७४६ ई० क धतपत [illegible] जाइछ । ई महाराज नरेन्द्र सिंहक राजत्वकाल मे भेल रहथि । ई कुसुमौल गामक मैथिलब्राह्मण छलाह तथा पुत्रक देहान्त सँ पीड़ित भ' वैरागी भए गेलाह । परवर्तीकाल मे म० नरेन्द्र सिंहक स्त्री म० पद्मावती द्वारा पचाढ़ी मौजा [illegible] दान पाबि ओतहि पचाढ़ी कुटी बनाए रहय लगलाह । हिनक ख्याति अलौकिक सिद्ध पुरुषक रूप मे छल । हिनका सम्बन्ध मे अनेक किंवदन्ती अछि, यथा भीतक हाँकब, जहल मे रहितहुँ नित्य गंगास्नान करब आदि । ई लोकजगतक श्रद्धाक केन्द्र बनल छलाह ।

हिनक मान्यता वैष्णव भक्त कविक रूप मे रहल अछि । ई अपन पद बनाय-बनाय भजन-कीर्तन करथि । हिनक पदसभ विभिन्न राग ओ रूपक मे रचित भेटैछ । डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनका भक्तिमार्गीय कहलनि अछि, नहि कि ज्ञानमार्गी । से हिनक पदावलीक अवलोकनहुँ सँ स्पष्ट अछि । मुदा हिनक भक्ति-मार्ग मे मधुर रसक प्रधानता ओ विभिन्न वादक सम्मिश्रण देखि पड़ैछ । उदाहरणक हेतु किछु भणिताक पद देखल जा सकैछ–

निर्गुन सगुन पुरुष भगवान, बुझि कहु साहेब करइछ ध्यान ।
x x x
धैरज धरिअ मिलला तोर कान्त, साहेब ओ प्रभु पुरुष अनन्त ।

एहि तरहें विशिष्टाद्वैत ओ मधुरभावक चित्रण हिनक उपरोक्त पद सभ मे देखि पड़ैछ। मिथिलाक कबिराहा सम्प्रदाय मे हिनक किछु गीतक श्रद्धापूर्वक गायन होइत अछि, जकरा एतय उद्धृत कयल जाइछ–

१.

आयल पतिया हे साहेब के सुनि मन आनन्द भेल ।
पतिया बाचैत छतिया विहुँसल नयना से ढरि गेल नीर ॥
बाबा जन बून कुसुम फल हम धनी लोढ़न जायव ।
ओही फूल सड़िया रंगायब पेन्हीय ओढ़िय सासुर जायब ॥
बिन सोना कैसन अभरन बिन मोती कैसन गिरमल हार ।
बिन रे अम्मा के कैसन नैहर पिया बिनु केहन शृंगार ।

औंगन मोरा लखे त्रिभुवन पर लागय दिवस अन्हार ।
मँजिया पर लागय कारी नगिनियाँ हुँसिय बलम डसि लेल ।।
साहब राम हे सम्हारहु सपना एहो संसार ।
जिवत हरि गुण गायब तन छुटैत पछतायब ।।

२.

करिया भवन मन हे अपना जी लागि बिलुखे शरीर ।।
काया कंचन गहवा टुटल छुटि गेल कुल परिवार ।
दरमी दुअरिया यम गेकल अब यम करैछ उजारि ।।
प्रेम नगरिया हटिया लागल जहाँ हिरा रतन बिकाय ।
चतुर चतुर सौदा करिया मुरख चलल पछताय ।।
साहेबराम सम्हारहु सपना एह संसार ।।

३.

सतगुरु अंगना चनन गाछ मोतीयन लुबुधल डाढ़ि
अमर रतन कर कोहबर हम धनी अविल कुमारी ।।
पिया लय बंगला हे छबावल सुरति वेरी लगाय ।
ताही पैसी हम धनी सुतलौं आब केयो दिहल जगाय ।।
पिया लय हेवय हम दुतनी अंग लेव विभूति रमाय ।
एकही वचन लय पिया रूसल आब केयो देतै मनाय ।।
बाट रे बटोहिया भैया लागह तोही मोरा लागह हित भाय ।।
हमरो सम्बाद पिया जी कहिह मेटी देत क्रोटि अपराध ।।
साहेब राम सम्हारहु सपना एहो संसार ।
जिवत मे गुरु गुण गायब तन छुटैत पछतायब ।।

उक्त गीतक अतिरिक्त निम्नांक्त गीत जीवछ दास (भजनाहा, परसाही, लौकही, मधुवनीक **कबीर भजनमाला** मे संगृहीत अछि ।

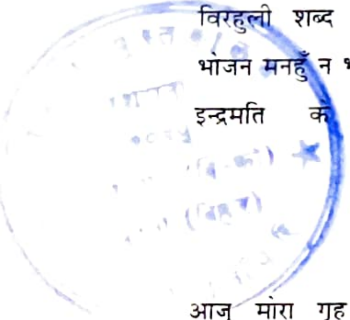
इन्द्रमति रानी

गुरु के चरणिया धरि गु है । बैहरवा डूबा जाजय जानी ।
काम संग रमली ... संग ... है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।
क्रोध संग केली धकआ है बैहरवा डूबा जाजय जानी
पाँच संग रमली पच्चीस संग ... है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।
तीन संग केली धकआ है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।।
नरकक लोक मन वहीं ... है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।।
ससुरा मे पिया अलबेला है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।।
इन्द्रमति रानी कहे करजोड़ है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।।
सुसुरा मे उड़त अंगोर है बैहरवा डूबा जाजय जानी ।।

२.

पिया-पिया सुनिय पियरिया लागल हे देहिया
कतहु न देखय सखीया पिया निर्मोहिया ।।०।।
बंगला छोवौली लगौली धन खिड़किया
खिड़की के ओटे ओड़ली पिया से सनेहिया ।।०।।
पाखड़ा खुनवली लगौलों धन बगिया
बगिया सुरतिया देखि के धड़कल मोरा हियरवा ।।०।।
नगरे नगरे बौकी हंसा करैछे हे पुछरिया
कतहु न देखिये साहब पियवा निर्मोहिया ।।०।।
बाट रे बटोहिया से तुही मोरा रे भइया
एही पथ देखल साहब पियवा निर्मोहिया ।।०।।
कायापुर नगरिया अमरपुर हे हटिया
खेमसरि संग मे साहब खेलैय जुआ सरिया ।।०।।
इन्द्रमति एहो गावल विरहुलिया
हमरा क लय चलु अमर पुर नगरिया ।।०।।

३.

रंग महल रानी सुतल कंचन सिंहासन हे ।।०।। सखीया हो ।।
तक्षक रूप धरि काल नाग रानी व. डाँसल हे ।।०।।
विष के लहरिया भेलय जोर विष
रायं-रायं व्यापल हे ।।०।। सखीया हे ।।
दौड़हु दीन-दयाल से रानी के काल डाँसल हे ।।०।।
रानी के सुरतिया एती जोड़ से
सतगुरु आयल हो ।।०।। सखीया हे ।।

विरहुली शब्द दिहल लखाई से रानी उठी बैठल हे ।।०।।
भोजन मनहुँ न भावे की नयन नीन्दियों न आयल हे ।।०।। सखीया
इन्द्रमति के विश्वास, कबीर गुरु पावल हे ।।०।।

खेमसरी नारी

आजु मोरा गृह साहब आयल आयल दीन दयाल हे ।।
प्रेम भाव लय घर म्ल पीतल आँगन चौदिश पोतावल हे ।।
चंदन लेई-लेई चौका पुरल संद बैठल भरिपुर हे ।।
स्वेत ही आशन उत्तम वासन श्वेत चनवा बनाई हे ।।
ताहि आशन पर बैठु मोरा साहब शब्द सुरति ठहराई हे ।।
नारियल आनल ' और सुपारी और बरौना पान हे ।।
अक्षय वृक्ष ज्योति झलकावल सत्य पुरुष दरशाई हे ।।
अएल कलश नव पुरहर बैठावल मानिक लेशु प्रहलाद हे ।।
सब संतन मिली आरती उतारे गावे मंगल चारि हे ।।
खेमसरी नारी यह मंगल गावल सुनु लेहु पुरुष हमार हे ।।
एमरी के गवन बहुरी नहीं अवना फिर नहीं मनुष अवतार हे ।।

परिशिष्ट – 'घ'

मिथिलाक कबीरपन्थी सन्तक परिचय

रघुनाथदास

रघुनाथ दासक निवास स्थान पहिने ब्रहमपुरा (मुजफ्फरपुर) छल । बाद मे ओ विभिन्न स्थान पर भ्रमण करैत रहलाह । थोड़ेक समयक लेल ओ गण्डकीक तीर पर धानापुर मे रहलाह। हिनक जीवनक अन्तिम दिन जाहि स्थान पर बीतल ओहि स्थानक नाम गयोपुर-बखरी छल। ओ भजनी, भोगी, साधक छलाह । हिनक सम्बन्ध मे कतेक चमत्कारपूर्ण कथा प्रचलित अछि । हिनक प्रमुख शिष्यक नाम माँजीराम दास, जिज्ञासीराम, हरिनाम आ कृष्णादास छल। कहल जाइत अछि महराजाधिराज दरभंगा नरेश प्रताप सिंह हिनक समकालीन छलाह । ओ आश्विन बदी फसली सन् १२९३ मे परलोक सिधारलनि । हिनक कोनो स्फुट रचना नहि भेटैत अछि ।

रीझनदास

रीझनदासक कुटी लहेरियासराय स्टेशन सँ सटले पूब कबीलपुर नामक गाम मे छल ! कबीरपुर गाम सम्प्रति कबिलपुर कहल जाइत अछि । संभवतः कबीरपुरक नामकरण हिनके द्वारा स्थापित कबीर-कुटीक आधार पर भेल अछि । रीझनदासक समाधि ओहि गामक एकटा चौक पर स्थित अछि । हिनक पुत्र मक्खनदास धरि ई कबीरकुटी कबीरपन्थी लोकनिक सम्मेलन तीर्थ बनल रहल, मुदा मक्खनदासक नावल्द रहबाक कारणें हुनक पत्नीक मृत्युपरान्त ई कुटी क्रमशः विलीन भए गेल अछि । मक्खनदास ओ हुनक पत्नीक मृत्युक (१९६६ ई०)क बाद दूर दूर सँ कबीरपन्थी सन्तलोकनि आबि निर्गुण भजन गबैत भण्डारक आयोजन कयने छलाह, से ज्ञात भेल । ई कबीर आश्रम गृही छल । सम्प्रति ई कबीरकुटी यद्यपि कालक गाल मे चल गेल अछि आ एकटा खण्डहरक ठिमकाक रूप मे वर्त्तमान अछि, मुदा एकर स्मृति गामक नाम मे सर्वदाक हेतु सुरक्षित रहि गेल अछि । रीझनदास ओ मक्खनदासक योगी, साधक ओ भजनिञा प्रकृतिक एकनिष्ठ कबीरपन्थी होयबाक चर्चा अछि । कबीरपुरक पारम्परिक कबीरपन्थी साधकक ई अन्तिम कड़ी छलाह ।

पं० रामावतार साहेब

पं० रामावतार साहेबक जन्म एक मध्यवर्गीय अहीर कुल मे सन् १९२० मे भेल छल। सन् १९४९ ई० मे कबीर मठ, सतमलपुर, समस्तीपुरक तत्कालीन आचार्य महन्थ प्रेम प्रमोद साहेबक ई उत्तराधिकारी भेलाह । सम्प्रति ई कबीर मठ, सतमलपुर, समस्तीपुरक आचार्य महन्थ छथि । ई बनारस सँ पूर्व मध्यमाक परीक्षा उतीर्ण छथि । वर्त्तमान मठक जीर्णोद्वार हिनकहि द्वारा भेल अछि । ई वैरागी छथि । अपन उत्तराधिकारी नियुक्ति कए चुकल छथि, जिनकर नाम श्री नागेन्द्र दास अछि ।

महन्थ माधव गोसाईं

महन्थ श्रीमाधव गोसाईं, कबीर आश्रम, समस्तीपुरक वर्तमान आचार्य छथि। श्रीमाधव दासजी भगलू गोसाईंक शिष्य छथि। श्रीभगलू गोसाईं कबीर आश्रम, समस्तीपुरक पाँचम आचार्य रहथि। श्रीमाधव गोसाईं १९३३ ई० मे गद्दी पर विराजमान छथि। १९९१ ई० मे श्री ज्ञानानन्द गोस्वामी कें अपन उत्तराधिकारी नियुक्त क' चुकल छथि।

श्रीमाधव गोसाईंक जन्म समस्तीपुर जिलाक अन्तर्गत बसौनागाम मे एक मध्य वर्गीय गृहस्थ परिवार मे काइरी जाति मे भेल छल। हिनक पिताक नाम हकरू महतो अछि। हिनक परिवार पारम्परिक कबीर पन्थी परिवार अछि। दान-पुण्य करबा मे हिनका विशेष रुचि छनि। ई बसिक स्कूल नवादा आ सन्त कबीर कालेज समस्तीपुर कें आर्थिक मदति करैत छथि। सगहि काशी, हरिद्वार, सोनपुर मे समय समय पर साधु भोजन करबैत छथि। ई वैरागी छथि।

श्री सियारामदासजी

श्री सियाराम दासजीक जन्म साल १३२० मे भेल छल। हिनक पिताक नाम स्व० विकनदास छल। हिनक निवास स्थान ग्राम-मौजे महेशपुर, टोले-चिल्कापट्टी जिला-सहरसा छल। ई दुखियादास द्वारा मदनेश्वर स्थान (अंचल अन्धराठाढ़ी, जिला मधुबनी) मे पढ़ब लिखबा लेल आनल गेलाह। ई सन् १९३८ मे वैरागी भेलाह। मदनेश्वर स्थानक आचार्य महन्थ नारायण दास द्वारा कबीर पन्थमे दीक्षित भेलाह। सम्प्रति ई कबीर जागा आश्रम, अन्धराठाढ़ी (जिला- मधुबनी)क आचार्य महन्थ छथि।

श्री श्यामलाल साहेब

श्री श्यामलाल साहेब कबीर आश्रम, ब्रह्मोत्तरा (भदुली)क आचार्य छथि। हिनक जन्म १३१७ साल मे यादव कुल मे भेल छल। हिनक पिताक नाम स्व० निर्मल दास साहेब छल आ माएक नाम धनियाँ देवी। हिनक दूटा बिआह भेल छल। पहिल बिआह दुबिआहीक श्री बालगोविन्द यादवक पुत्री सँ भेल छल, जाहिसँ एक पुत्र जन्म लेलक। दोसर बिआह सोजौल गाम मे चेथरू यादवक पुत्री सँ भेल, जाहि सँ दुइटा पुत्री जन्म लेलक। हिनक शिक्षा पाचवाँ वर्ग सँ अधिक धरि नहि भए सकल। पाँचवा वर्ग ओ सन् १९२८ ई० मे परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। पढ़ाइ छोड़लाक बाद ई गृहस्थ जीवन बिताबए लगलाह। परंच देशक परिस्थितिक अनुसार ई० १९३७ ई० सँ राजनीति मे सक्रिय रूप सँ भाग लेमय लगलाह आ मण्डल कांग्रेसक अध्यक्ष, थाना कॉंग्रेसक सदस्य पद कें सुशोभित कएलन्हि। स्वतन्त्रताक बाद सन् १९६१ सँ १९७३ ई० धरि स्थानीय कपिलेश्वर सहयोग क्रय-विक्रय संघक मंत्रीक पदकें सुशोभित कएलन्हि। श्री श्यामलाल साहेब बड़हुलिया स्थानक महन्थ श्री १०८ मुन्नीदास साहेब द्वारा कबीर पन्थ

मे दीक्षित भेलाह। ई आचार्य गद्दी [illegible] श्री [illegible] आचार्य पद [illegible]

श्री फलाहारी साहेब

श्री [illegible] दासक [illegible] फलाहारी दास अछि। हिनक जन्म [illegible] ई० मे [illegible] कुल मे भेल छल। हिनक पिताक नाम [illegible] दास आ माताक नाम [illegible] छल। हिनक बिआह [illegible] पुत्री सँ भेल छल। हिनक शिक्षा मात्र सातवाँ वर्ग धरि भए सकल। [illegible] ई [illegible] रूप मे [illegible] आ [illegible] काँग्रेसक [illegible] पद कें सुशोभित कएलन्हि। [illegible] मे ई बड़हुलिआ कुटीक [illegible] साहेब सँ दीक्षित भेलाह। [illegible] पर रहि गेलाह। [illegible] मे श्री फलाहारी दास सँ [illegible] भेलाह। [illegible] उप-मुखिआक पद कें सेहो सुशोभित कएलन्हि। सन् [illegible] ई० मे कबीर आश्रम [illegible] दोसर आचार्यक रूप मे गद्दीनशीन भेलाह। [illegible] आचार्यक [illegible] साहेबक हिनका पर विशेष कृपा छलनि। हिनक शाखा कुसमार आ [illegible] मे अछि। [illegible] मे हिनक [illegible] गद्दी चलबैत छथि। हिनक शिष्य दिल्ली, बंगाल, [illegible], नेपाल, मधुबनी, समस्तीपुर आ मुजफ्फरपुर मे पसरल अछि।

आचार्य महन्थ श्री ठाकुरदास

आचार्य महन्थ श्री ठाकुर दास जी सम्प्रति कबीर साहेबक मठ, लक्ष्मीपुर बगीचा, [illegible] महन्थ छथि। हिनक जन्म एकटा मध्यवर्गीय गृहस्थ परिवारक अहीर जाति मे भेल छल। हिनक जन्म-स्थान गाम-मौजी, बखरी, जिला बेगूसराय (बिहार) अछि। ई [illegible] ई० मे [illegible] मध्यमा पास कएलन्हि। १९३३ ई० मे ई सूरत आ अहमदाबाद गेल रहथि। ई कबीर पन्थ मे श्रीअवध दास तत्कालीन आचार्य महन्थ लक्ष्मीपुर बगीचा, [illegible] सँ दीक्षित भेलाह। ई गुरुक भक्ति मे सदिखन तल्लीन रहैत छलाह। गुरुक सब प्रकारक सेवाक लेल अपना कें समर्पित क' देने छलाह। गणेशदासजीक उत्तराधिकारीक रूप मे श्री ठाकुर साहेब [illegible] मे लक्ष्मीपुर बगीचा, गद्दी पर आसीन भेलाह। मिथिलाञ्चलक [illegible] सम्पूर्ण क्षेत्र मे हिनक शिष्य वा मठ पसरल अछि।

आचार्य महन्थ श्रीयदुदास

आचार्य महन्थ श्री यदुदास जी सम्प्रति वचन वंशीय आचार्य गद्दी, महादेव मठक बड़ महन्थ छथि। हिनक जन्म सन् १९४३ ई० मे ग्राम-[illegible], जिला-खगड़िया मे मध्यवर्गीय तेली जाति मे भेल छल। हिनक पिताक नाम मिश्री दास अछि आ पिताक तीन बेटा मे ई सबसँ छोट बेटा छथि। ई मात्र प्रवेशिका धरि पढ़ि सकलाह। हिनक गुरु [illegible] छलथिन्ह। १९५९ ई० मे ई उत्तरवाड़ी मठक आचार्य नियुक्त भेलाह तथा [illegible] ई० मे आचार्य गद्दी

कृष्णा कागखी शाखा, महादेव मठक दखिणबाड़ी मठक महन्थ भेलाह । हिनक शिष्य बिहार, बंगाल, आसाम, गुजरात, उत्तरप्रदेश आ नेपाल मे पसरल अछि ।

आचार्य महन्थ श्री विद्यानन्द साहेब

श्री विद्यानन्द साहेबक जन्म ८ जुलाइ १९५२ ई० मे ग्राम-पितौंझिया, पत्रालय-पसराहा, जिला-खगड़िया (बिहार) मे एक मध्यवर्गीय कोंइरी कुल मे भेल छल । हिनको परिवार पहिने कबीर पन्थी छल आ मुख्यत: कृषि पर आधारित छल । हिनक पिताक नाम श्री अयोध्या सिंह तथा माताक नाम श्रीमती रत्ना देवी अछि । श्रीविद्यानन्द साहेब चारि भाइ मे सबसँ छोट छथि ।

श्री विद्यानन्द साहेब उच्च शिक्षित आचार्य महन्थ छथि । ई सन् १९८२ ई० मे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय सँ शास्त्रीक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह तथा एम० ए० 'संस्कृत विषय मे' मगध विश्वविद्यालय सँ १९८४ मे पास कएलन्हि ।

शिक्षाक ई विशेष अनुरागी छथि । ई आधा दर्जन शिक्षण संस्थानक संस्थापक, संरक्षक वा सचिव छथि यथा–सदगुरु कबीर विद्यापीठ, सुपौल बाजार, विरौलक संरक्षक, सन्त कबीर रामजीवन महिला महाविद्यालय, रोसड़ाक संस्थापक, महन्थ विद्यानन्द शास्त्री आयुर्वेदिक फार्मेसी महाविद्यालय, रोसड़ाक सचिव व संरक्षक, सन्त कबीर उच्च विद्यालय, दोडीहा, कुशेश्वर स्थान, दरभंगाक सचिव । ई गरीब आ मेधावी विद्यार्थी कैँ यथासम्भव सहायता दैत छथिन्ह ।

सन् १९६७ ई० मे जखन श्री विद्यानन्द साहेब प्राक विज्ञानक छात्र छलाह, तखन महर्षि मेंही परम हंसजी महाराज कृष्णाघाट भागलपुरक सम्पर्क मे आबि कबीर पन्थ मे प्रवेश कयलन्हि। २१ मइ १९७१ मे जखन ओ स्नातक विज्ञानक छात्र रहथि महादेवमठ, रोसड़ाक आचार्य महन्थ सँ कबीर पन्थ मे दीक्षित भेलाह । २६ जुलाइ १९७१ ई० मे ई गृहत्याग कयलन्हि आ ओही वर्ष श्रावण पूर्णिमामे हिनक वैराग्य-संस्कार भेलन्हि ।

श्री कबीर मन्दिर सुपौल बाजार, पो-बिरौल, जिला-दरभंगाक ई० १९७४ मे महन्थ नियुक्त कएल गेलाह तथा ओतए मार्च १९७६ धरि महन्थ रहलाह । मार्च १९७६ ई० मे श्री विद्यानन्द साहेब वचनवंशीय आचार्य गद्दी, महादेव मठ, रोसड़ाक महन्थ द्वारा महादेव मठक महन्थ नियुक्त कएल गेलाह । महादेव मठक महन्थक देहावसानक बाद श्री विद्यानन्दजी १६ नवम्बर १९७६ सँ महादेवमठ रोसड़ाक गद्दी पर विराजमान छथि ।

परिशिष्ट – 'ख'

अधीत ग्रन्थक सूची

१. अष्टछाप पदावली – सं० डॉ० ललितेश्वर झा, हिन्दी साहित्य परिषद ल० ना० मि० विश्वविद्यालय, दरभंगा, [illegible] ।

२. आदिसन्देशा सन्तकबीर – गुरु महात्मा साहेब मौजे [illegible] जि० शाहाबाद, हस्तलिखित । म० मोहनलालदास मौजे [illegible] जिला मधुबनी, सम्वत ११ पूस रोज सोम ८ बजे दिन म समाप्त ता० –१९-१२-२३ ई० (हस्तलिखित ग्रन्थ)।

३३. उच्चतर मैथिली व्याकरण – पं० गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णापुरी पटना–१, १९७९ ।

४. उत्तरी भारत की सन्त परम्परा – परशुराम चतुर्वेदी, भारती भण्डार, प्रयाग, सं० २००८

५. एन इन्ट्रोडक्सन टू द मैथिली लैंग्वेज ऑफ नार्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर क्रेस्टोमैथी एण्ड भोकेबुलरी – डॉ० जी० ए० ग्रियर्सन, एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १८८१ ।

६. कबीर – महन्त पं० मकशूदन दास, स्थान-बड़ा आर भाया-खजौली, दरभंगा, १९७१ ।

७. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, प्रा० लि०, ८, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली १९८५ ।

८. कबीर-एक अनुशीलन – डॉ० रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद, १९८३ ।

९. कबीर – एक विश्लेषण, स०-डा० शिवदान सिंह 'चौहान', पब्लिकेशन डिवीजन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली–८ द्वितीय संस्करण, आश्विन १८८०, अक्टूबर १९५८ ।

१०. कबीर और कबीर पन्थ – डॉ० केदार नाथ द्विवेदी हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, १९६५ ।

११. कबीर कसौटी – बाबू लैहना सिंह साहब, गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, कल्याण, मुंबई, सं –२०४०, सन्–१९८४ ।

१२. कबीर काव्य का भाषाशास्त्रीय अध्ययन — डॉ० भगवत प्रसाद दुबे, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–६–१९६९ ।

१३. कबीर ग्रन्थावली — सं०–श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, चौदहम संस्करण, सं०–२०३४ वि० ।

१४. कबीर चरित्रबोध — श्री युगलानन्द-खेमराज कृष्णदास-बम्बई सं०–१९८७।

१५. कबीर जीवन चरित्र — गंगाशरण शास्त्री, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, श्रीसद्गुरु कबीर मंदिर, कबीर चौरा मठ, वाराणसी,–१९७६ ।

१६. कबीर — (द अपाजिट ऑफ हिन्दू मुस्लिम युनिटी) मोहम्मद हिदायतुल्लाह, मोतीलाल बनारसीदास, १९७७ ।

१७. कबीर पन्थ की जागृ शाखा — मुनीश्वर राय मुनीश कबीरमठ, जागृशाखा गुरुगादी, विदूपुर, वैशाली ।

१८. कबीरबीजक का भाषा शास्त्रीय अध्ययन — डॉ० शुकदेव सिंह, अनुराग, प्रकाशन, विशालक्षी भवन, शासनीय अध्ययन चौक, वाराणसी, १९७८ ।

१९. कबीर भजनमाला — सं० जीवछ दास, ग्राम-भजनाहा, पो०-परसाही, थाना-लौकहा, जिला-मधुबनी ।

२०. कबीर भजन माला सागर — सं० भगवती प्रसाद मिश्र, भोलानाथ पुस्तकालय,-१३५, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता–७ ।

२१. कबीर साहब — सं० विवेकादास, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र, सद्गुरु कबीर मन्दिर, कबीरचौरा मठ, वाराणसी, १९७८

२२. कबीर साहित्य और सिद्धान्त — ले० यज्ञदत्त शर्मा, अक्षरम् सोनीपत (हरियाणा), १९८४ ।

२३. कबीर साहित्य की परख — परशुराम चतुर्वेदी, भारती भण्डार, प्रयाग, सं०-२०११।

२४. कबीर साहिब की ज्ञान गुदड़ी— रेखते और झुलने, वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद १९७८ ।

२५. कबीर साहेब की शब्दावली — १ से ४ भाग, वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, १३ मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद, १९२२ ई० ।

२६. कबीर-सिंगर ऑफ द डिभाइन— विलियम डायर एस० एस० नवज्योति प्रकाशन, पटना।

२७. कबीर वचनावली — सं-अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी सं०–२००८ ।

२८. कबीर वाणी संग्रह — डॉ० पारसनाथ तिवारी, राका प्रकाशन, इलाहाबाद १९७५ ।

२९. कबीर शब्दावली — सं० गंगाशरण शास्त्री, कबीरवाणी प्रकाशन केन्द्र वाराणसी, कबीर चौरा मठ, १९७० ।

३०. कीर्तिलता — सं० बाबूरामसक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा काशी सं०–२०३२ हरप्रसाद शास्त्री, कलकत्ता १९२४ ।

३१. गीतगोविन्द — जयदेव, ठाकुर प्रसाद एण्ड बुकसेलर, राजादरवाजा, वाराणसी ।

३२. गीतनाद — सं० विभूति आनन्द, भवानी प्रकाशन, मुरलीधर प्रेस पटना–४, १९८६ ।

३३. गोविन्द गीतांजलि — प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा, १९६० ।

३४. चतुर चतुरभुज एवं गीत सप्तदशी — सं० डॉ० शैलेन्द्र मोहन झा, मिथिला प्रकाशन लहेरियासराय, १९६९ ।

३५. जर्नल ऑफ दि यूनिवर्सिटी ऑफ बिहार — भोलूम २, नवम्बर १९५६ ।

३६. टुवेन्टी वन वैष्णव हीम्स — डॉ० जी० ए० ग्रियर्सन ।

३७. द आरिजिन एण्ड डेभलमेन्ट ऑफ द बंगाली लैंग्वेज — भाल्यूम–१-३ सुनीत कुमार चटर्जी, मोतीलाल बनारसीदास बंगलोरोड, जवाहरनगर, दिल्ली–७ (१९२६), पुनर्मुद्रित)

३८. द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज — डॉ० सुभद्र झा, मुन्सीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लि०, ५४, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली–५५ १९८५ ।

३९. दिल्ली सल्तनत — डॉ० कौलेश्वर राय, किताब महल, इलाहाबाद १९८३।

४०. धनी धर्मदासजी की शब्दावली— भाग–२ वेलवेडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, १९८०।

४१. धातुपाठ — पं० दीनबन्धु झा, मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा–१९४९-५० ।

४२. निबन्धमाला — रमानाथ झा, दरभंगा प्रेस कं० लि०, दरभंगा–१९६३।

४३. पारखमूल — श्री बच्चेलाल दास, श्री लोकनाथ पुस्तकालय,-१७३, महात्मागांधी रोड, कलकत्ता–७

४४. बीजक
मूल-सर्वभगताहीशाखा, धनौती
मूल-हनुमानदास, फतुहा
मूल-कबीरचौरा, काशी
सारबोधिनीटीका, हनुमानदास, फतुहा ।
विन्दुस्वाद टीका, रूपलाल, लखनऊ,-१९२६ ।

४५. भक्तसुधा – श्री बौआ साहब, कबीर आश्रम, भरवारा, दरभंगा

४६. भजनावली भाग-१ –

४७. भविष्य पुराण –

४८. महाकवि विद्यापति – डॉ० विश्वेश्वर मिश्र, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा-१९७०।

४९. महाकवि विद्यापति – पं० शिवनन्दन ठाकुर, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१, १९७९ ।

५०. महाकवि सूरदास कृत भ्रमर गीतसार – रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन,नई दिल्ली-२१, १९७९ ।

५१. मिथिला परम्परागत नाटक सं०– सं० डॉ० शशिनाथ झा, 'विधावाचस्पति', कामेश्वर सिंह दरभंगा, संस्कृत विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर दरभंगा-१९८६ ।

५२. मिथिला भाषा विद्योतन – दीनबन्धु झा, मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा-१३५३ साल ।

५३. मिथिला संस्कार गीत – श्रीमती कामेश्वरी देवी, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी पटना-१, १९८० ।

५४. मैथिली ओ सन्ताली: सम्पर्क आ सामीप्य – डॉ० विद्यानाथझा 'विदित' मैथिली अकादमी,श्रीकृष्णपुरी, पटना-१, १९७७ ।

५५. मैथिली ग्राम-गीत – बालगोविन्द झा 'व्यथित', मिथिलांचल प्रकाशन, टावर चौक,दरभंगा-१९८९ ।

५६. मैथिली ग्रामर – जी० ए० ग्रियर्सन, रॉयल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण-१९०६ ।

५७. मैथिली प्राचीन गीत – सं० रमानाथ झा, अनन्त प्रकाशन, दरभंगा-१९६८ ।

५८. मैथिली प्राचीन गीतावली – सं० डॉ० रामदेव झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी पटना-१, १९७९ ।

५९. मैथिली लोकगीत – रामइकबाल सिंह 'राकेश', हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, सं०-२०१२ ।

६०. मैथिली व्यवहार गीत संग्रह – सं० डॉ० इन्द्रकान्त झा, कमल प्रकाशन, पटना-४। १९८७ ।

६१. मैथिली शैव साहित्य – डॉ० रामदेव झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१, १९७९ ।

६२. शैवसाहित्यक भूमिका – डॉ० रामदेव झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी पटना-१, १९८० ।

६३. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डॉ० दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१, १९७९ ।

६४. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा-१९८७ ।

६५. लोचनकृत रागतरंगिनी – सं० डॉ० शशिनाथ झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१, १९८१ ।

६६. वर्णरत्नाकर – सं० सुनीति कुमार चटर्जी एवं बबुआजी मिश्र, रायल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 'कलकत्ता,-१९४०।

६७. विद्यापति की पदावली – सं० रामवृक्ष बेनीपुरी, पुस्तक भंडार, पटना ।

६८. विद्यापति काव्यालोचन – डॉ० बासुकीनाथ झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी पटना-१, १९७९ ।

६९. विद्यापति गीतावली – सं० गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-१, १९८१ ।

७०. श्रीमद्भागवत –

७१. श्रीरामचरितमानस (मूलगुटका)– गीताप्रेस, गोरखपुर, सं-२०४६ ।

७२. श्रीमद्गुरु कबीर शाहब – रामनन्दन दास, रामावतार साहेब, सतमलपुर, समस्तीपुर, १९७७ ई० ।

७३. स्वसवं गोध – सं० युगलानन्द बिहारी, गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई ।

७४. सद्गुरु कबीर के विचार भाग-१ – बौआसाहब, कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम भरवाड़ा, दरभंगा ।

७५. सद्गुरु कबीर वचनसंग्रह – यं० श्रीमहन्थ सुक्खूदासजी साहेब, सद्गुरु कबीर ज्ञानश्रम, राजगीर ।

७६. सत्य की ओर (आध्यात्मिक मासिक पत्रिका – कबीर विचार प्रचार संघ, कबीर आश्रम, भरवाड़ा दरभंगा ।

७७. सन्तकबीर – डॉ० रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्रा० लि० इलाहावाद, १९६६ ।

७८. सन्त कबीर – डॉ० लक्ष्मीदत्त बी० पण्डित, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–१९७७ ।

७९. साँग्स ऑफ विद्यापति – डॉ० सुभद्र झा–मोतीलाल बनारसीदास, पो० बौ०–८५, बनारस, १९५४ ।

८०. हिन्दी साहित्य और ब्हिार प्रथम एवं द्रितीय खण्ड, स०– शिवपूजनसाहय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, (७ वी० शती से १८वीशती तक) प्रथम संस्करण, खृष्टाब्द–१९६०, १९६३ ।

८१. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना–६१९६१ ।

८२. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी सं०–२०४२ ।

८३. ज्ञानसागर – सं० युगलानन्द बिहारी, गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्टीम प्रेम, बम्बई ।

८४. ज्ञानस्थिति बोध – युगलानन्द बिहारी, गंगा विष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेड्कटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई ।



